प्रकाशक :—
विप्लव कार्यालय,
२१—हीवेट रोड,
लखनऊ

मुद्रक :—
साथी प्रेस
२१—हीवेट रोड,
लखनऊ

मर्पण.—

मानवता की मुक्ति और उत्थान के कार्य में
सक्रिय भाग लेने वाले साथियों को
सादर—

यशपाल

जिला जेल,
लखनऊ
६ मार्च १९४९

परिचयः—

गत फरवरी मास मे हमारी 'राष्ट्रीय' सरकार ने कोई भी कारण या अपराध बताये बिना मुझे राजनैतिक बन्दी बनाकर जेल मे डाल दिया। तब यही अनुमान करना पडा कि हमारी 'राष्ट्रीय' सरकार की दृष्टि में मेरे विचार, सार्वजनिक कार्य और प्रयत्न राष्ट्र हित के विरुद्ध हैं।

इस प्रसग मे यह कहना धृष्टता न होगी कि इस देश की स्वतत्रता और राष्ट्रीय भावना के लिये विदेशी सरकार के हाथों जितना हम लोगों ने (मैंने और मेरे साथियों ने) पाया है*, उतना शायद उन लोगों मे नहीं पाया होगा जिन्हे ब्रिटिश सरकार अपने भरोसे का समझ इस देश के राष्ट्रीय हित का उत्तरदायित्व सौंप गई है।

एक समय मुझे जेल से मुक्त करने के प्रश्न पर अंग्रेज गवर्नर के विरोध करने के कारण यू० पी० की कांग्रेसी सरकार को बहुत परेशानी उठानी पडी थी। मेरी रिहाई का प्रश्न सिद्धान्त की रक्षा का प्रश्न बन गया था। क्योंकि उस समय कांग्रेसी सरकार को विश्वास था कि अँग्रेज सरकार का कोपभाजन मुझे राष्ट्रीय भावना के कारण ही बनना पडा है। आज मेरे विचार, प्रयत्न और सार्वजनिक कार्य 'राष्ट्रीय' सरकार की दृष्टि में राष्ट्र के लिये अहितकार हो गये हैं।

मैं इस देश के हजारों लोगों में से एक उदाहरण हूँ। मेरी और मेरे समान हजारों की यह स्थिति, राष्ट्र के हित मे पैदा हो गये अन्तर-विरोधों का एक उदाहरण है। यदि भगतसिंह और चन्द्रशेखर आजाद आज जिन्दा होते, विश्वास से कह सकता हूँ, यही बात उनके साथ भी होती, वे भी किसी जेल मे होते।

---

* चौदह वर्ष का कारावास

इस बार 'राष्ट्रीय' सरकार द्वारा जेल मे बन्द कर दिए जाने पर Decisive Step पढते समय राष्ट्रीय हित के सम्बन्ध में पुस्तक के पात्रों के दृष्टि कोण मे अन्तर और विरोध देख इच्छा हुई कि इसका अनुवाद अपनी भाषा मे कर डालू।

* * *

पक्का कदम की कहानी अपना परिचय स्वय देगी। सक्षेप में कहानी का परिचय यह है:-

जार के शासन में तुर्कमानिस्तान पूर्णतः रुसी साम्राज्य के आधीन था। समाजवादी क्रान्ति से जार का तख्ता पलट कर ज्यों ही समाजवादी सोवियत ने शासन की शक्ति अपने हाथ मे ली, सोवियत ने राष्ट्रीय समता के सिद्धान्त के अनुसार रुसी साम्राज्य के आधीन सभी गुलाम देशों को रूसी राष्ट्र के समान और स्वतत्र घोषित कर दिया। इन देशो को आधीनता के बधन से मुक्त कर आत्मनिर्णय से सहयोग का अधिकार दे दिया गया।

अक्टूबर—१६१७ मे जार के शासन का अत हो जाने पर तुर्कमानिस्तान म विचित्र स्थिति पैदा हो गई। जार के शासन से दबी और कुचली मजदूर और किसान जनता ने मुक्ति की आशा का सास लिया। यह जनता रूस की समाजवादी सोवियत व्यवस्था के अनुसार खेती की भूमि का राष्ट्रीय करण और उद्योग धन्दो और व्यापार पर मजदूरो और मेहनत करने वाली सर्वसाधारण जनता का अधिकार चाहती थी। दूसरी ओर जारशाही का अग बन कर तुर्कमानी जनता के खून से समृद्ध होते आये तुर्कमानी सरदारों जागीरदारों और व्यापारियो के लिये जारशाही का तख्ता-पलट और समाजवादी व्यवस्था की स्थापना का प्रयत्न उनके अन्त की सूचना के समान हो गया। इस शोषक वर्ग के साथ ही मध्यम श्रेणी का वह भाग था जो देश को जारशाही के शोषण के बन्धनो में बाधने वाली नौकरशाही का अग बन कर ज़ारशाही की तनखाहो पर पल रहा था और इस अधिकार की धाधली से जनता को लूटकर अपना स्वार्थ पूरा करता आया था।

जारशाही के पतन से पैदा हो गई अव्यवस्था मे तुर्कमानिस्तान के सरदारों और खानों ने स्वतत्र राजा बन जाने के स्वप्न देखने आरम्भ किये।

उन्होंने तुर्कमानिस्तान की मजदूर-किसान जनता द्वारा कायम किये सोवियत शासन (पञ्चायती राज) के विरुद्ध हथियार उठा लिये। इस्लाम और राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के नाम पर जनता को बहका कर सोवियत शासन के विरुद्ध मोर्चे कायम किये गए। इन सोवियत विरोधी तुर्कमानी सरदारों और खानों की सहायता के लिए सोवियत शासन के विरुद्ध लडने वाले ज़ारशाही के बडे बडे जनरल तुर्कमानिस्तान में आ पहुचे। क्रान्तिकारी लाल सेना ने इन जारशाही जनरलों को हराकर रूस से भगा दिया था। विदेशी पूँजी-पति राष्ट्र इन जनरलों की सहायता के लिये प्रस्तुत थे। तीसरी बडी सोवियत विरोधी शक्ति थी ब्रिटिश साम्राज्यशाही जो ससार में समाज-वाद के फैलने की आशका को निर्मूल कर देने के लिए स्वय रूस में ही उसे कुचल देना चाहती थी। ब्रिटिश साम्राज्य-शाही ने अरबों रुपया, असख्य शस्त्र और हिन्दुस्तान से काफी सेना भी सोवियत विरोधी मोर्चे पर तुर्कमानी खानों, सरदारों और जारशाही के जनरलों की सहायता के लिये तुर्कमानिस्तान मे पहुचा दी थी। परस्पर एक दूसरे को छलकर भी अपने स्वार्थ साधने में यह तीनों शक्तियाँ समाजवादी सोवियत और लाल सेना के विरुद्ध सयुक्त मोर्चा बनाये थीं।

तुर्कमानिस्तान समाजवादी लाल सेनाओं और साम्राज्यवादी सफेद सेनाओं के सघर्ष का अखाड़ा बन गया। इस अवस्था मे तुर्कमानिस्तान की दिहाती और नागरिक जनता के किसी भी व्यक्ति के लिये निश्पक्ष और निरपेक्ष बने रहना सम्भव न था।

केर्बाबायेव ने उपरोक्त सघर्ष में भाग लिया था। उसने इसी वातावरण को लेकर तुर्कमानी भाषा में एक युवक अरतैक के इस सघर्ष के दुविधा पूर्ण वातावरण में एक पक्का कदम उठाने की कहानी लिखी है। अरतैक आरम्भ में जारशाही के शोषण और दमन के विरोध में राष्ट्रीय भावना से विद्रोही अजीजखाँ के साथ जान की बाजी लगाने मैदान में उतरा था। कुछ समय वह राष्ट्रीयता का दम भरने वाली, सोवियतविरोधी सफेद सेना का अफसर भी रहा और फिर सोवियत के पक्ष हो अजीज़खाँ और उसकी सरक्षक ब्रिटिश सेनाओं से लोहा लेता हुआ जग के मैदान में आहत हुआ।

पक्का कदम का नायक अरतैक तुर्कमानिस्तान के कृषि प्रधान समाज की प्रतिनिधि व्यक्ति है। अरतैक को किसी भी दृष्टि से विशेष परिस्थितियों

या विशेष घटना की उपज नहीं कहा जा सकता। अपने समाज के किसी भी साधारण व्यक्ति की भाँति वह जीवित रहना चाहता है और जीवित रहने का प्रयत्न करता है? उससे भूल भी होती है और वह भूल को पहचान कर सही राह को अपनाने का यत्न करता है। उसका लक्ष्य बहुत सीधा है:—जीवित रहने के अवसर की इच्छा और जीवित रह सकने के लिये सामूहिक रूप से प्रयत्न। अरतैक की कहानी ऐसे समाज के जीवन संघर्ष की कहानी है जिस समाज के सामने जीवन और मृत्यु का प्रश्न था'—सामन्तवादी और पूँजीवादी बँधनों मे बाँध कर रखने वाली, साम्प्रदायिकता से रंगी राष्ट्रीयता की भ्रान्ति मे साम्राज्यशाही की गुलामी के जुये में गला फँसा देने का या समाजवाद द्वारा स्वतंत्र मनुष्य बनने का।

स्वाभावतः ही अरतैक के जीनव की कहानी जीवन मरण के लोम हर्ष संघर्ष की कहानी है।

* * *

साहित्य का मार्ग अपनाने के समय से मैं मौलिक ही लिखता आया हू। मेरा विचार है कि अन्य समाजों की अनुभूतियों और परिस्थितियों को अपनी भाषा मे प्रतिबिम्बित करने की अपेक्षा स्वय हमारे अपने समाज मे ही देखने और कहने के लिये पर्याप्त सामग्री है परन्तु दूसरे समाज और देशों के अपने देश जैसी ही परिस्थितियाँ और समस्याये दिखाई देने पर तुलनात्मक दृष्टि से उनकी ओर देख लेना भी उपयोगी हो सकता है। इसीलिये मैंने पक्का कदम के अनुवाद मे श्रम किया है।

११ नम्बर बैरक,
ज़िला जेल, लखनऊ,
६—मार्च १९४९

यशपाल

१

तुर्कमानिया का देश अब समाजवादी रूसी सोवियत संघ का भाग है। इस समय तुर्कमानिया नहरो की सिंचाई से खूब सर-सब्ज बन गया है। वहा बहुत बडे पैमाने पर साझी खेती होती है। बड़ी बड़ी मिले मजदूरो की अपनी सम्पत्ति हैं और इनमे बहुत अधिक पैदावार हो रही है। तुर्कमानिया का प्रजातत्र राज्य पूर्ण स्वतन्त्र है, चाहे रूसी समाजवादी सोवियत सघ में रहे या उससे अपना सम्बन्ध तोड ले।

चालीस-पचास वर्ष पूर्व तुर्कमानिया का देश प्रायः मरूभूमि था। लोग डेराबासी ढग से रहते थे। भेड़, बकरिया और ऊट उनकी सम्पत्ति थे। खेती थोडी बहुत, जहा तहा होती थी। रूस के जार ने तुर्कमानिया को अपने साम्राज्य में जोड़ लिया था। स्थानीय पैदावार का कच्चा माल लेजाने के लिए एकाध रेल लाइन भी बना दी गई थी। नहरें बहुत कम थीं। तुर्कमानी जनता जीवन का डेराबासी ढग छोड खेती करने और स्थायी बस्तिया बना कर रहने लगी थी परन्तु पुराने रिवाज अभी छूटे न थे। लोग प्रायः ही छोलदारियों में रहते थे। छोलदारियों के ही गाव बस जाते थे। उस समय इस देश के रिवाज और पोशाक प्रायः ईरान और अफगानिस्तान से मिलते जुलते थे।

जार के शासन के समय तुर्कमानिया में उद्योग-धधे और कला-कौशल की उन्नति नहीं की गई। रूस के साम्राज्यवादी शासक तुर्कमानिया को अपने लिये कच्चे माल की मडी बनाये रखना चाहते थे। तुर्कमानी लोग दुःखी और असतुष्ट थे। १६१६ में तुर्कमानिया की जनता का असतोष देख एक तुर्कमानी सरदार अजीजखा ने जार के विरुद्ध बगावत कर अपना स्वतत्र शासन जमाना चाहा था परन्तु उसकी बगावत असफल रही।

सन् १६१७ के साल तुर्कमानिया में भयकर सूखा पड़ गया। जाड़ो

भर आकाश से जल की एक बूंद न गिरी। बसंत आया तो धरती से घास का एक कल्ला न फूट सका। नहरे, नाले, सोते सब सूख गए।

गरमी के दिन आए। झुलसी हुई धरती पर तपी धूल भरी आंधिया चलने लगीं। सूखे और जाडे से पशुओं के शरीर ठठरा भर रह गए थे। सिर लटकाए, घास के लिए तरसी आखे भूमि पर जमाए पशु भटकते फिरते परन्तु घास कहा थी? बसन्त जाते जाते पशुओं मे बीमारी फैल गई।

किसानो ने समय पर वर्षा की आशा से खेत जोत कर बीज डाल दिए थे। जुते हुए खेत धूल से भर गए और बीज के लिए डाला गया अन्न धूल मे मिल गया। किसान अपने रहे सहे पशुओ को अपनी आखों के सामने सूख कर मरते देख रहे थे। उनके कलेजे मुंह को आकर रह जाते परन्तु बेबस थे। पशुओ को क्या देते! बच्चो के लिए, अपने लिए ही कुछ न था।

'कोश' गाव के एक गलियारे मे बहुत से दुर्बल, निढाल किसान दीवारो की छाया मे धरती पर आ बैठे थे। चार आदमी धरती पर लकीरें बना 'बत्तीसी' खेल रहे थे। कुछ लोग नित्य नए आते दुखों की बाते कह सुन रहे थे। कुछ चुपचाप उदास बैठे थे। कई रूस के सम्राट जार के हुक्म से रूसी सेना मे मजदूरी के लिए जबरन भरती कर लाम पर भेज दिए गए अपने सम्बन्धिया का चर्चा कर रहे थे। हवा के झोंके इन लोगो पर तपी धूल फेंक जाते। इन लोगो के सिर पर आकाश मे भी धूल का बादल घिरा हुआ था।

एक किसान अपनी धूल भरी सफेद दाढ़ी मुट्ठी मे थाम, सूजी हुई नाक फुला, भूख से रूखे निर्बल स्वर में बोला—"ऐसे दिन तो भाई कभी देखे सुने न थे, अल्ला खैर करे'!

दूसरे बूढ़े किसान ने अपनी झुकी हुई पलके जवार के खेतों की ओर उठाईं। खेतों मे धूल का बवडर उठ रहा था। किसान के कलेजे से एक आह उठ आई। उधर से आखे फेर वह बोला—"भैया, अपनी उम्र मे काल देखा है और जाड़ा भी देखा है, पर ऐसे दिन नहीं देखे थे! पूरा साल बीत गया और एक बूंद पानी नहीं। जाने क्या होने को है? मौलवी लोग कहते हैं—कयामत से पहले ऐसा सूखा पडेगा कि धरती पर कहीं हरियाली नहीं रह जायगी। अल्ला खैर करे!" किसान ने अपनी ही बात से डर कर अपनी दाढी थाम ली।

समीप बैठे लोगो का ध्यान इन दोनों की बातचीत की ओर न था परन्तु नहर का मुशी अभी दूर ही था कि सब का ध्यान उस ओर खिंच गया।

मुशी पोखीवाला अपनी गढी हुई तोद का बोझ सम्भाले धीमे धीमे इन लोगों की ओर चला आ रहा था। समीप आकर पोखीवाला ने भीड की ओर देख पुकारा—"अरे सुना है तुमने ? लोग क्या कह रहे हैं ? ... रूस के जार की गद्दी छिन गई !"

मुशी की बात से लोग भौंचक रह गये। बत्तीसी खेलने वाले हाथ के गीटे लकीरों पर रखना भूल गये। सूजी हुई नाक वाले किसान ने विस्मय से अपनी दाढ़ी खींच ली और उसका मुह खुला रह गया। सब लोग पोखीवाला की ओर मौन देखते रह गये।

पोखीवाला अफसरी ढङ्ग से बोला—"लोग कह रहे हैं कि रूस मे 'रेवलूशा' हो गया है।"

किसान लोग समझ नहीं पाये कि 'रेवलूशा' क्या होता है ? अभी कोई रेवलूशा का मतलब पूछ भी नहीं पाया था कि पोखीवाला स्वय ही बोल उठा—"किसी को क्या कहे, सभी जानते हैं; दुनिया मे कैसे कैसे पापी पडे हैं ? लोगो के दिमाग फिर गये हैं। चाहते हैं दुनिया भर हड़प जाय ! ... ज़ार के राज जैसा न्याय पहले कभी देखा था ? तुर्कमान लोग कभी चैन से नहीं रहे। एक दूसरे का सिर काटते रहे परन्तु जार के राज मे यहाँ भी कैसा अमन रहा ! जार का राज गया तो देखना क्या होता है ? पिछले साल ही जार की सरकार के खिलाफ बगावत हुई थी तो क्या मिला ? अजीजखा और उसके दोस्त अरतैक के राज मे क्या मिला ? मिट्टी ही खराब हुई ? राजा बिन प्रजा ऐसे है जैसे बिन गडरिये भेडों का गोल ! बाघ भेडिये का दाव लगे तो मार खाय, चोर उचक्कों का मौका बने तो उठा ले जाय।"

दूसरा बूढा किसान माथे पर हाथ रखकर बोला—"भैया, मैं तो कह ही रहा था कि बडे बुरे दिन आ रहे हैं ...।"

सूजी हुई नाक वाले बूढ़े किसान ने उसकी बात काट दी—"अरे तो हो क्या गया ? कहते हैं न कि घरकी बुढिया मर गई, तो क्या बिगड़ गया ?

देखते ही जार का राज आया और इतने ही दिन में क्या नहीं देख लिया हमने ?" बूढ़ा किसान मुशी को कनखियों से देखता सुनाता गया—"दो दो कौड़ी के आदमी तुर्रमखा बन बैठे ! ···कैसे ? जार के जोर पर ही तो ? भले आदमियों को डडे के जोर हाँकते रहे इस बुढ़ापे मे"–उसने अपनी दाढ़ी दिखाकर कहा—"घर में एक ऊँट रह गया था, सो भी छीन लिया"—दूसरे बूढ़े किसान का कन्धा ठेल कर वह बोला—"और तुम्हारा एक ही तो जवान लडका था, बुढापे की लाठी। जबरन भर्ती मे पकड़ ले गये। जार को गरीबों की आह कैसे न लगती ? जार का जुल्म दूर हो तो अल्ला चाहे तो मेंह भी बरस जाय ! पिछड़ तो बहुत गया है। पर क्या ? बाल बच्चों के मुँह के लिये चार दाने ही सही ! ढ़ोर डगर के लिये भूसा चारा ही सही !"

मुशी ने कई बार बात काटनी चाही परन्तु किसान ऊँचे स्वर मे बोलता ही जा रहा था। उसकी बात समाप्त होने पर मुशी धमका कर बोला—"क्यो बे, सिर पर मौत नाच रही है ? होश में आओ क्या बक रहे हो ? अगर खबर गलत हुई तो ?"

बूढ़ा किसान और भी जोर से बोला—"तो हम देहाती, गरीब लोग क्या जाने ? ···तुम्हीं तो कह रहे थे ?"

मुंशी समझाने लगा—"अरे भाई अगर जार मर ही गया, रेवलूशन भी हो गया तो क्या ? जार के लड़के पोते होगे। उनमे से कोई न कोई गद्दी पर बैठेगा ही। यह बाते उसके कान तक पहुँचेंगी तो क्या होगा ? ····सोच समझ कर बात करनी चाहिये ! अल्लाह जार का इकबाल क़ायम रहे !"

मुशी अपनी बात पूरी नहीं कर पाया था कि बस्ती की 'रेडियो' उम्सा-गुल अपनी सिलवार घुटनों तक उठाये, अपने मालिक, अलनजर बे के घर की ओर भागती हुई बिना रुके समीप से पुकारती गई—"अरे भले लोगो, सुना है, बादशाह जार मर गया !"

उम्सागुल की बात सुन सभी लोग बोलने लगे—

"वल्लाह ···· क्या सच बात है ?······ज़ार मर गया ?"

"सच नहीं तो लोग कहते क्यो ? कोई बात होगी तभी तो कहते हैं।"

"अरे भाई, यों ही न उड़ गई हो ?"

"मुल्क मे बादशाह नही रहेगा तो राज किसका होगा ?"

"राजा नही रहेगा तो फिर लडाई कैसे होगी ?"

"लड़ाई चलेगी कैसे ? जब राजा सिपाही को लडने के लिये हुक्म नहीं देगा तो कोई लडेगा क्यों ? सिपाही को क्या जरूरत है लड़ने मरने की ?"

"मुशी बीच में बोल उठा—"बस यही तो रेवलूशा है।"

गरीब किसान चरकेज चुप बैठा सब की बाते सुनता हुआ समझ पाने का यत्न कर रहा था। मुशी की बात सुन वह पूछ बैठा—"मुंशी यह रेवलूशा क्या होता है ?"

मुशी ने सिर खुजाते हुये उत्तर दिया—"भैया मै क्या जानू ? यह तो धरती फोड़कर नया कुकरमुत्ता निकला है। सौदागर कोतुर का लडका अतेज कहता है, रेवलूशा इन्कलाब को कहते हैं।"

चरकेज बौखला कर बोला—"वाह भाई वाह, रेवलूशा इन्कलाब को कहते हैं ! इन्कलाब क्या होता है ? यह तो अधे की आंख से देखकर पहचानने की सी बात है। और क्या जाने भाई, रेवलूशा और इन्कलाब दोनों ही जार के लडके और पोते का ही नाम हो !"

एक दूसरा किसान हाथ फैलाकर बोल उठा—"हॉ भाई, ठीक तो है। पहले भी एक बार सुना था कि फिरगिस्तान में रेवलूशा और इन्कलाब हुआ है। सुनते हैं, रेवलूशा और इन्कलाब का चुनाव होता है जैसे अपने यहॉ मुशी और पंच का चुनाव होता है।"

एक और किसान ने बेपरवाही से कहा—'तो क्या है चुनाव होगा तो "वे" और मालिक लोगो की ही बात चलेगी ? जैसे अब "वे" और मालिक लोग अपने मन से मुशी चुन लेते हैं।"

'तुम भी क्या कह रहे हो ?"—एक और किसान पुकार उठा—"वे और मालिक लोग न रहे तो दुनिया कैसे चलेगी ?"

"तो फिर क्या है ?"--ऊँचे स्वर मे कोई बोल उठा -"इन्कलाब हुआ तो अपने को क्या ? गरीब आदमी की तो जैसे पहले मौत थी वैसी अब।"

"तुम्हारा दिमाग फिर गया है क्या ?"—मुशी पोखीवाला ऊँचे स्वर बोला—"सियार की मौत आती हैं तो गॉव के आस पास आ हूकने लगता है, ग़रीब के बुरे दिन आते हैं तो उसकी जबान बहुत चलने लगती है।"

सिर हिलाकर चरकेज ने कहा—"ठीक है भाई मुशी तुम ठीक कहते हो ! तुम आलिम आदमी हो !"—दूसरे लोग चरकेज की बात पर हँस दिये। चरकेज़ अपनी तीखी जबान के लिये माना हुआ था।

क्रोध से मुशी के नथुने और होंठ थिरक उठे। चेहरे पर से पसीना पोंछ उसने नसीहत की—"तुम लोगों में अब बुरे का कुछ ख्याल ही नहीं रह गया है। कूढ मगज आदमी से सिर मारने से भला है कि आदमी दीवार से सिर पटक ले।"

उत्तर की प्रतीक्षा न कर मुशी लौट पड़ा और अलनजर बे के खेमे की ओर चल दिया। परन्तु चरकेज पुकार उठा—'ठीक है भैया मुशी, ठीक राह पर जा रहे हो। वे लोग ही तुम्हारी बात ठीक से समझ पायेंगे।" दूसरे लोग कहकहा लगा उठे। मुशी तेजी से चलता हुआ घूम घूम कर ऐसे पीछे देखता जा रहा था कि पीछे से कुत्ते के आकर टांग पकड लेने की आशका हो ?

मुंशी के चले जाने पर किसान बहस करने लगे कि जार सचमुच ही मर गया है या नहीं, उसकी गद्दी छिन गई है या नहीं, और यदि ऐसा हो भी गया हो तो इससे देहात के लोगों का क्या बन बिगड़ सकता है ? चरकेज अपनी बात सुनने के लिए फिर हाथ उठा कर बोल उठा—"भाई, हम पूछते हैं जार के राज में भला किसका हुआ ?......किसान का भला हुआ ?.. मजदूरों का भला हुआ ?.. .सिपाहियों का भला हुआ ? तुम्हारा भला हुआ ? किसका भला हुआ ?"

"अरे हमारा क्या भला हुआ !"—एक के बाद दूसरा सभी लोग बोलने लगे।

"तो फिर"—दोनो हाथ उठा चरकेज बोला—'जार मर गया तो किसका नुकसान हुआ ? अपने को क्या ? जब सभी लोग जार से दुखी हैं तो उसकी गद्दी पलटेगी नहीं तो क्या ? नुकसान हुआ तो बाबाखा और होजा मुराद का हुआ ? अब उनकी हुकूमत नहीं चलेगी कि मन चाहा जिसे चार जूते लगा दिए ! अपने लोग जबरदस्ती भर्ती में पकडे गये हैं, शायद वे बेचारे लौट आए।'

"अल्ला करे .. तुम्हारे मुंह में घी शक्कर पड़े।"

"अल्ला चाहे अरतैक भी लौट आए !"

"दूसरे लोग लौटेंगे तो अरतैक भी लौटेगा !",

'इशा अल्ला !"

आकाश मे अब भी गर्द का बादल छाया हुआ था और हवा के झोंके किसानो के चेहरो पर धूल डाल रहे थे परन्तु अब उनकी गर्दने ऊची हो गईं और आखों मे आशा की चमक झलक आई।

उन दिनो तुर्कमानिया के गवर्नर जनरल कुरोपाल्किन थे। गवर्नर जनरल ने प्रान्तीय गवर्नर कोल्माकोव और कमिश्नर कर्नल वेलानोविच को आदेश दिया था कि जार के गद्दी से उतार दिए जाने और रूस मे क्राति होने का समाचार आम जनता मे फैलने न पाए। उन्हे आशा थी कि जार के समर्थक और उसकी सेनाये क्रान्तिकारियो को हरा कर फिर से जार का राजतन्त्र स्थापित कर लेगे। परन्तु तार घर मे काम करने वाले लोगों से और शहरों से आने वाले पत्रों से देहात में समाचार फैल ही गए। बात जिलो से जिला मे, गावो से गावो मे और छोटे छोटे खेमों तक पहुँच गई। ऐना के घर भी खबर पहुची।

उस समय ऐना अपने तम्बू मे बैठी कसीदा काढ रही थी। तम्बू की छत मे धुआ निकलने के लिए बनाए गये झरोखे से आती सूरज की किरणों मे उसका रेशमी चोला और उसके हाथ मे थमा कसीदा भी चमक रहा था। ऐना ने खबर सुनी और सोच रही थी, बादशाहो की गद्दिया कही ऐसे पलट सकती हैं और फिर रूस के बादशाह जार की गद्दी ? सल्तनते ऐसे पलटने लगे तो धरती ही पलट जाए। हो सकता है जार लडाई मे दूसरे बादशाह से हार कर कैद हो गया हो! पर मकान गिरता है तो ईंटे भी बिखर जाती हैं। जार के साथ ही उसके हाकिम और पत्र भी तो गिरेगे और वह शैतान अलनजर बे भी मरेगा। इन सब जालिमो पर अल्लाह का कहर गिरे! जार नहीं रहेगा तो उसके हाकिम, अफसर, उसकी पल्टने भाग जायेंगी। जेल खाने भी तो टूटेंगे! इशाअल्ला अरतैकजान जेल मे छूट जाये अरतैक मेरी आँखों का नूर! एक आह खीचकर उसने सोचा—"इन मीठे सुपनो मे क्या रखा है ? छ महीने हो गये उसकी कोई खबर भी तो नही मिली। ऐसी मेरी किस्मत कहा कि वह आजाये। लोग मुझे तसल्ली देने के लिये, बहलाने के लिये बनाते रहते हैं, अरतैक अश्काबाद के जेलखाने मे मजे मे है परन्तु कोई

उससे मिल नहीं सकता। दूसरे लोग मुझे जलाने के लिये कहने लगते हैं---अरतैक को लडाई में आगे के मोर्चे पर भेज दिया गया है। कोई कहते है—कि जालिमों ने उसे गोली मारदी है। या अल्ला ! इस छ: महीने में क्या नही सुना ! क्या नहीं देखा ! क्या नहीं सहा ! इतना दुख तो किसी पहाड पर गिरा होता तो पहाड चकनाचूर हो जाता। इतना गम किसी दरिया पर पडा होता तो दरिया सूख जाता।"

ऐना हज़ारों में एक थी। उसका रूप रग ऐसा था कि सारे चमन का जोबन समेटकर एक गुलाब खिल उठा हो। परन्तु इस दुख में उसका चेहरा उतर गया और उसकी मनियारी, काली आँखों की चमक मद्धिम पड़ गई थी। वह गर्दन झुकाये रहती। पुकारे जाने पर आँखे उठाती भी तो पलकें झुकी रह जाती। उसका सुडौल शरीर मुर्झा गया था, कधे झुक गये थे और चलती तो पाव लडखडा जाते। अरतैक की कैद की छः मास मे उस पर बीस बरस का बुढापा आ गया। ऐना की सौतेली माँ मामा बत्तख की चाल से झूलती हूई तम्बू मे आई। वह सदा से वेपरवाह थी। उस पर न तो ऐनाके दुख के पहाडका ही कुछ बोझ पडा और न 'तेजेन' में सूखा पड़ने का ही कुछ प्रभाव पड सका था। उसके भरे हुये चेहरे पर चिकने पसीने की चमक जैसी की तैसी बनी थी। न ठोडी के नीचे पडी लटों में और न उसकी आँखो की चमक मे ही अन्तर आया था। मामा ने सिर पर बधे बडे रूमाल के छोर से पसीना पोंछा और अपनी भारी-भारी निरपेक्ष पलकें उठा सौतेली लड़की की ओर देख पुकारा—"बिटिया, क्या हुआ है तुझे ? क्या उमर भर योंही बिसूरती रहेगी ! भला अब क्यों रो रही है ? अब क्या जार को रोरही है" ? ऐना बचपन से बहुत लजीली और भले स्वभावकी थी। परन्तु दुख के इस असह्य बोझ का प्रभाव जैसे उसके शरीर और रूप पर पड़ा वैसे ही उसके स्वभाव पर भी हुआ। पल पल दुखों और कष्टों से विरोध करती रहने के कारण वह चिडचिटी और जिद्दी होगई थी। सौतेली माँ के उपेक्षापूर्ण व्यवहार के कारण ऐना मामा से प्राय: ही चिढ़ी रहती। उसने गर्दन झुकाये ही उत्तर दिया—"जार क्या मेरी बला से सारी दुनिया मरजाय, मुझे क्या !"

"लाहौल विलाकुव्वत। देखो तो इस चुड़ैल को !" मामा चीख उठी "क्या जमाना आ गया है बाबा ? ऐसी डाइनें दुनिया मे पैदा हो गई हैं तभी तो दुनिया यों तबाह हो रही है।"

ऐना की काली भवें सिकुड़ गईं। गर्दन नीचे डाले ही उसने तिर्छी निगाह से मामा की ओर देखा ओर आखें झुका उत्तर दिया—"बात बात मे मेरे कलेजे मे कटारी मारती है ? आज बड़ी भली बन रही हो ! किसने मेरी जिन्दगी मुसीबत मे फँसाई है ? मुझे बरबाद किया ?"

मामा की समझ भी उसके शरीर के अनुकूल ही मोटी थी। ताने और बोली ठली का असर उस पर कम ही होता था परन्तु इस समय ऐना की बात सुन उसने दोनो हाथों से अपना चेहरा ढाप लिया और अल्लाह को याद करने लगी—

"अल्लाह पनाह दे !"

२

अलनजर वे अपनी सजी धजी छौलदारी मे चाय पीने बैठा था। उम्सागुल उतावली से तम्बू में आघुसी। जार के गद्दी से उतार दिये जाने की बात वह एक ही सास में ऊचे स्वर मे दोहराये जा रही थी! अलनजर वे ने सुना। उसे काठ मार गया। न तो वह आखे उठा बाहर ही देख सका और न होठ खोल पुकार ही सका। वह स्वप्न मे डर गये आदमी की तरह निश्चेष्ट रह गया। और फिर होश सम्भाल बोझ से दम तोडते जानवर की तरह हाफता हुआ उम्सागुल की ओर घूर कर वह चिल्ला उठा—"बदजात बादी, क्या बक रही है? होश मे आ! समझती है तू क्या बक रही है? अभी फासी पर लटकवा दूगा।"

वे की धमकी से उम्सागुल सुन्न रह गई। चेहरे का रंग उड गया। साहस कर वह थुथलाने लगी—"मा · ·मालिक, · मैं कह रही थी कि बा·· ·· बादशाह की मौ · मौत से मुझे बहुत रोना आया ·।"

"बदजात कहीं की, दिन भर अवारागर्दी करती है, दिन भर कुफ्र बकती है, दिन भर खुराफातका तूफान तोलती है। क्या कौए भरे हैं तेरे सिर में? तूही गाव भर में बकती फिरी थी कि अरतैक मेरे मुह पर थूक गया। हरामजादी, मेरा नमक खाकर मुझे ही गाली देती है। तुझे आज ही जिन्दा गडवाता हू।"

उम्सागुल का चेहरा धूलकी तरह बेरग होगया। कुछ कहने के लिये उसके होंठ हिले परन्तु अलनजर ने उसे धमका दिया—"चुप रह बदजात!"

वे क्रोध से काप रहा था। उसका मन चाय की ओर से फिर गया। चाय का प्याला उठा वह चायदानी मे लौटाने लगा।

हाथ काप रहे थे इसलिये चाय फैल गई। खिन्न हो वे ने होंठ काट

लिये और चाय के सुन्दर प्याले को दरवाजे से बाहर फेंक दिया। प्याला पक्की धरती पर गिरकर चूर चूर हो गया। बे को और भी क्रोध आ गया। उसने लात मार चायदानी को भी परे फेंक दिया। चायदानी एक ओर और ढक्कन दूसरी ओर लुढक गये। कालीन भीग कर लम्बा दाग सा बन गया।

कोने मे खडी उम्सागुल थर थर काप रही थी। लड़खड़ा जाने के कारण वह धरती पर बैठ गई।

अलनजर गम्भीर और काइया आदमी था। अपनी स्थिति और सम्मान का ख्याल कर वह बातचीत धीरज और ठहराव से करता था। परन्तु उस समय वह क्रोध मे बहक गया। वह कई दिन से मन ही मन उम्सा से कुढ रहा था और उस पर बरस पड़ने का अवसर ताक रहा था। इस समय यह भयकर समाचार भी उसी के मु ह से सुन बे आपे से बाहर हो गया। क्रोध का पहला उफान उतरते ही वह चिन्तित होने लगा··· · क्या यह खबर सच है? इतने मे बे की चहेती बेगम शादाब आकर प्याले के बिखरे हुये टुकडे चुनकर चायदानी को सम्भालने लगी। शादाब गर्दन झुकाये बोली—"सुनो न मालिक! सुन रहे हो?· ·तुम्हीं से कह रही हू, हुआ ·· · ! माफ कर डालो! मुआफी माग लेने से तो कत्ल का गुनाह भी बक्श दिया जाता है। यह तो तुम्हारी बादी ही है। सुना होगा तो इसके अपने ही होश उड़ गये होगे!"

बेगम की बात से बे के माथे के तेवर हल्के पड गए। उम्सा ने मालिक के चेहरे की ओर देखा और उसकी आखों से आसू बह चले। जमीन पर माथा टिका वह गिडगिडाने लगी—"या अल्लाह, अगर मैंने मालिक के लिए कभी सुपने मे भी बुरा चेता हो तो मैं यहा ही गर्क हो जाऊं।"

"अच्छा बस, अब बहुत मत बनो! ·· ··आसू पोछो! नही तो अभी तेरी आखों मे मिर्चें झुकवाता हूं!" बे ने धमकाया—"यह खबर कहा सुनी तू ने?"

उम्सा आसू पोछती हुई हिचकी लेकर गले मे रूधे आसू निगल रही थी कि तम्बू के दरवाजे में मु शी पोखीवाला आ खड़ा हुआ और घबराहट में सलाम बिना किए ही पुकार उठा—"अरे मालिक बे! सुना है?· ··· क्या कहर गिरा है, बादशाह जार गद्दी से उतार दिया गया। मुल्क में

रेवत्तूशा हो गया ! अरे·· "उम्सा तू पहले ही आ पहुंची ? ···· तूने तो वस्ती भर में ढिंडोरा पीट दिया होगा ! कहर खुदा का ···"

"हा मैंने जो सुना था, कह दिया"—हिचकी लेते हुए उम्मा बोली—"मालिक मुझ से नाराज हो गए···· ·"

मुशी ने फिर वे को सम्बोधन किया—"मालिक, बात ठीक है। मैं अभी शहर से ही आ रहा हू। घर जा कर चाय भी नहीं पी। तार घर में गवर्नर जनरल का तार मिला है।

मुशी की बात से वे के मन मे सन्देह के आधार पर रही सही आशा भी जाती रही। परन्तु अब वह अपने आप को सम्भाल चुका था। मुशी को सम्बोधन कर वह बोला—"आओ बैठो। चाय पिओ ! इसके बारे में भी जरा सोच लें !"

मुंशी की नज़र भीगे हुए कालीन पर जा पडी। शादाब की ओर देख उसने मुस्करा कर पूछा—"यह क्या ? घर में इतना छोटा कौन बच्चा आ गया कि जगह बिगाड दी ?"

"मुबारिक हो, बेगम।"

मुंशी की बात से शादाब बेगम पल भर को झेंप गई परन्तु उसने तुरत बात सम्भाल ली—"अरे मुंशी, बच्चे तो बच्चे ही ठहरे आखिर ! छोटी बिटिया जिद् कर बाप के लिए चाय लायी थी। बेचारी ठोकर खा गई। चायदानी उसके हाथ से गिर गई।"

"या खुदा, बेचारी के हाथ पाव पर छाला-वाला तो नहीं पडा बेगम ?"

"शुक्र खुदा का, पोखीवाला ! चायदानी दूर लुढक गई। बच्ची पर बूंद भी न पड पाई।"

बेगम की चतुरता की प्रशंसा के लिए वे ने मुस्करा कर उसकी ओर देख लिया।

पोखीवाला अपने घुटने समेट कर कालीन पर बैठा ही था कि छोलदारी की दहलीज पर मुहम्मदवली खोजा दिखाई दिया। मुहम्मदवली खोजा धर्मात्मा और आलिम आदिम समझा जाता था। बस्ती में उसका बहुत आदर था। वह मौलवियों के ढग का ऊचा पायजामा पहरे था। सफेद पायजामे के नीचे टखनो की लाल लाल खाल चमक रही थी।

वली को देख बे ने आदर में दोनों हाथ फैला स्वागत किया—"आओ, आओ! मौलाना खोजा आओ! तशरीफ रखो"—बे ने आदर की जगह कालीन के सिरे पर खोजा को बैठने का संकेत किया।

उम्सा ने बे की खागी सुन उसकी ओर देखा और मालिक की आंख का इशारा पहचान तम्बू से बाहर हो गई।

मुंशी पोखीवाला ने तुरन्त ही खोजा को सम्बोधन किया—"मौलाना जार के तख्त से उतार दिए जाने की खबर सुनी है!"

मुहम्मदवली खोजा अपने घुटने समेट गम्भीरता से कालीन पर बैठ गया। अपनी दुशाखी दाढ़ी हाथ में ले कालीन पर नजर टिकाये उसने उत्तर दिया—"मुंशी पोखी, खबर तो सुनी है लेकिन सोचा कि अलनजर बे के यहाँ चलूँ। सभी लोग राय लेने के लिये यहाँ आते हैं!... ताकि सही खबर मालूम हो सके।"

"मौलाना, तुम आलिम आदमी हो, शरियत जानते हो, तुम्हारी क्या राय है?"—मुंशी ने अपना प्रश्न दोहराया।

खोजा ने दाढ़ी हाथ में थामे, छोलदारी की छत की ओर आँखें उठा उत्तर दिया—"मुंशी पोखी, इसके मुत्तलिक एक फारसी शायर ने कहा है—दक्खिन, पच्छिम से बादल चढ़ता दीखे तो समझो कि अब बरसेगा! और अन्यायी राजा का ज़ुल्म बढ़ता दीखे तो समझो कि अब गिरेगा।"

"अन्यायी राजा...?"—अलनजर ने कुछ कड़े स्वर में पूछा।

मुहम्मदवली खोजा ने बे के स्वर की कड़ाई की ओर ध्यान न दिया और सहज स्वर में कहता गया—"हाँ, अलनजर बे, जार अपने वायदे से फिर गया। जब जार ने हमारा मुल्क लिया तो वायदा किया था कि मुसलमानों को फौजमें भरती नहीं किया जायगा, याद है? अब क्या हो रहा है?"

"तो तुम्हारा खयाल है कि जार के तख्त से गिरने का कारण यही है कि उसने मुसलमानों को फौजी मजदूरी के लिये जबरदस्ती भरती किया?"

बे का यह प्रश्न मौलाना को कुछ विचित्र सा जचा और उसका ध्यान बे के स्वर की ओर भी गया। खोजा ने बे के चेहरे की ओर देखा। बे अप्रसन्न था और खोजा को तीखी निगाह से घूर रहा था, मानो पूछ रहा हो यह नमक हरामी? बे की इस दृष्टि से मौलाना सिमिट गया, जैसे केंचुआ छू दिया जाने पर कुण्डली मार जाता है।

"नहीं मालिक, यह बात नहीं। यह बात गलत है। मुसलमानों के लिये जार से बढ़कर रहीम बादशाह तो दुनिया मे कोई हुआ नही। किताबों मे नौशेरवा न्यायी का नाम आता है परन्तु जार का न्याय उससे कहीं ऊँचा रहा। तुम्ही बताओ, जार के चालीस साल के राज में किसी मुसलमान की उगली में फास तक नहीं लगी और क्या इंसाफ चाहते हो? मालिक, पेड गिरता है जड में कीड़ा लगने से, जार तख्त से गिरा है तो यह अपने खानदानी झगड़ों की वजह से।"

मुशी ने वे की ओर देख खोजा का समर्थन किया—"खूब कहा मौलाना आमीन, आमीन!"

खोजा की बात से वे को सतोष हुआ। उसने भी समर्थन किया—"ठीक है मौलाना ठीक है। पेड़ जड़ मे कीडा लगने से ही गिरता है।"

मुहम्मदवली खोजा अवसर देख, अपने घुटने पर हाथ टिका झूलता हुआ वे के मन की सी बात कहने लगा था कि मुशी बोल उठा—"अरे भाई इस डाह का, जलन का बुरा हो! बादशाहो और वजीरों की बात क्या? अपनी ही बात देख लो! किसी पर जरा अल्लाह का करम हो जाय तो दूसरे ऐसे जलने लगते हैं मानो उन्हीं के पेट पर लात पड रही हो। अब मालिक को ही देखो! अल्लाह की बरकत है मालिक पर। चश्म बद्दूर। कितनो का भला होता है मालिक की बदोलत? पर ऐसे भी हैं जो मालिक से हिरख कर जले जाते हैं। जिस प्याले मे खाना उसी को ठुकराना।"

"ऐसे ही आमाल से तो दुनिया में सूखा पड़ता है"—मौलाना ने मुशी की बात पूरी की।

"लेकिन कमबख्त लोग समझते भी तो नहीं! मुसीबत आती है तो मरते भी तो ऐसे ही लोग हैं। अभी देख लो न? सूखा पडा है तो मालिक वे का क्या घट गया? ·· ··क्यों मालिक?"

शादाब बेगम मेहमानो के लिये चाय ले आई थी। उसे सम्बोधन कर वे ने सलाह दी—"शादाब मुशी पोली थके हैं। इनके लिये कुछ पुलाव मगवालो?"

मुंशी तम्बाकू की डिबिया खोल चुटकी भर तम्बाकू होंठ के नीचे दबाने को ही था। पुलाव का प्रस्ताव सुन उसने डिबिया बद कर जेब में लौटा दी और बोल उठा—"ओ मालिक खुद खुशकर दी मालिक ने। मालिक

का इकबाल बुलन्द हो। जार के वजीरों का क्या है? वजीरों ने ही जार के साथ दगा किया है! यह वजीर पहले जार के नाम से रियाया को नोचकर खाते रहे और मौका लगा तो जार को ही खागये। और रियाया को ही देखो। रियाया की परवरिश कौन करता है? हमारे मालिक वे! और यह भूखे, गरीब लोग वे को ही नोच कर खा लेना चाहते हैं। मौलाना इस दुनिया मे दगा ही दगा और बेवफाई है?"

मौलाना दाढी पर हाथ फेर बोले—"इस दुनिया मे नेकी का बदला बदी से ही मिलता है मुशी?"

अलनजर वे परेशानी अनुभव कर रहा था। हृदय मे उठता लबा सास दबा वह तम्बू की छत मे बधी डोरियों की ओर देखने लगा। एक लम्बी सास छोड वे बोला—"देश राजा के बिना बरबाद हो जायगा, जैसे बिन आदमी की औरत, जैसे बेलगाम घोडी! मुल्क और सल्तनतकी जड मे दीमक लग गया है.. ।"

मुंशी बोल उठा—" मालिक इस रेवलूशा से मेरा दिल बहुत घबरा रहा है. ।" वे ने अपनी भारी पलके उठा कर पूछा—"यह रेवलूशा है क्या बला?"

"सुना है, रेवलूशा मे कुछ लोग हैं जो जार की गद्दी पर बैठना चाहते हैं। सुना है यह लोग अपने मन से चुनकर किसी आदमी को गद्दी पर बैठायेंगे।"

"तो क्या सभी, जैसे तैसे लोग जो चाहेंगे, करेंगे?"

मौलाना खोजा गम्भीर चिन्ता मे अपनी दाढ़ी सहलाते हुये बोला—"ऐसे बागी लोगों को किताब मे नजिस और नापाक कहा गया है। लेकिन अल्लाह पाक की मर्जी के बिना कुछ नहीं हो सकता। अल्लाह बहुत रहम करते हैं। खुदा ऐसे लोगों को मौका देते हैं और अपने गुलामों के आमाल और करम देखते है। जो लोग खुदा को भूल जाते हैं, बगावत करते है, उन पर खुदा का कहर नाजिल होता है। यह सूखा पडना और जार का तख्त पलटना सब बागियों के गुनाहो का अंजाम है, यह सब कयामत के आसार हैं।"

मुशी पोखी मौलाना की बात न समझ पाया, न उसने उस ओर ध्यान ही दिया परन्तु वे यह बाते सुन चिन्ता मे चुप बैठा रहा। वह सोचने

लगा—"जार की सल्तनत पलट गई तो रियाया उठ खड़ी होगी, शायद जंग खत्म हो जाय और जंगी मजदूरी के लिये पकड़े गये लोग लौट आयेंगे। कितने ही बदमाश दिल में बदले की आग और जलन दबाये हुये हैं, लौटेंगे तो जरूर शरारत करेंगे। यहाँ भी बगावत होगी। क्या इन्तजाम हो सकेगा? भूखे नंगे लोग यों ही बलवा किये हुये हैं, जाने कब लूटपाट शुरू करदें? मावी जैसे लोग ही क्या कम हैं? मौका पाकर जो न कर डाले! जेल टूट गया तो? अगर अरतैक भाग कर आगया...?"
वे ने चिन्ता से एक गहरी साँस ली। उसके माथे पर पसीना छलक आया। शादाब की ओर देख उसने कहा—"बहुत गरम हो रहा है तम्बू के परदे उठवा दो!"

गरमी अभी कुछ अधिक नहीं थी। मार्च का महीना अभी लगा ही था। तम्बू के पर्दे प्रायः जून के महीने में उठाये जाते थे।

"क्या मालिक—"शादाब विस्मय से बोली—"गरमी तो अभी ऐसी नहीं है?"

वे कुछ उत्तर न दे चुप रह गया। उसके मन में चिन्ता और आशंका का जो भाड़ सुलग रहा था बेगम उसकी तपन क्या समझ पाती?

वे अपने जीवन में इतना व्याकुल कभी न हुआ था, उस समय भी नहीं जब कि उसने बड़ी तैयारी से अपने बेटे का व्याह गाँव की सुन्दरी ऐना से रचाया और बस्ती का बदमाश अरतैक ऐना को ले भागा। पाहुनों से मन की बेचैनी छिपाने के लिये वे कभी अपना बदन खुजाने लगता, कभी तबू की छत के झरोखों की ओर देखने लगता। गरम चायकी प्याली से उसे शरीर में कुछ ताजगी जान पड़ रही थी परन्तु मन अब भी वैसे ही उचाट था। बात करने को उसका मन न चाहता था। बहुत देर चुप रह वह बोला—"मौलाना खोजा, दिल घबरा रहा है। जान पड़ता है, दरअसल क़यामत के आसार हैं..."

३

जार की पुलिस अरतैक को तेजेन से अश्काबाद ले गई तो रेल के डिब्बे की खिडकियों मे लोहे के सीखचे लगे हुए थे। उसके हाथ पाव रस्सियो मे जकड कर बन्धे थे और उनमे घाव बन गए थे। इन घावो की कुछ दवा दारू न की गई। इन घावो पर कभी कभी टिंचर लगा दिया जाता था। टिंचर घावो पर ऐसे लगता था जैसे किसी मिर्चें छिड़क दी गई हो। अरतैक दात पीस कर इस पीडा को भी सह जाता। गाड़ी मे उसे एक सकरी बेंच पर लिटा दिया गया। उसके चारो ओर हथियार बन्द सिपाही खडे थे। किसी भी आदमी से कोई एक भी बात कर सकने का कोई अवसर उसे न मिला।

अश्काबाद की जेल मे अरतैक को एक सूनी, अधेरी कोठडी मे धकेल कर भारी-भारी किवाड बहुत जोर के धमाके से मूद दिए गए। किवाडों पर भारी ताला पडा रहता। अधेरी कोठड़ी मे धकेल दिया जाने पर अरतैक लोहे की एक खाट से टकरा कर गिरता गिरता बचा। कुछ देर तक अधेरे मे बैठे रहने के बाद वह लोहे की खाट की जगह पहचान सका और दीवार मे ऊचे पर एक सीखो से मढा झरोखा भी उसे दिखाई दिया।

इसके बाद उससे भेद पूछे जाने लगे:—

"तुमने जार की सरकार के खिलाफ बगावत की थी ?"

"हा"

"तुम्हारे साथ दूसरे और कौन लोग थे ?"

"सभी लोग थे।"

"तुमने ऐसा काम क्यो किया ?"

"जार का राज खत्म करने के लिए।"

"बागी अजीजखा की फौज मे तुम्हारा क्या ओहदा था ?"

"सिपाही"

"तुम्हारी बस्ती से दूसरे कौन आदमी अजीज की फौज मे थे?"

"मुझे नही मालूम।"

संगीनो से लैस सिपाही अरतैक को घेर कर खडे थे। अरतैक के इस उत्तर से अफसर ने सिपाहियो को इशारा किया। दो सिपाहियों ने अपनी संगीनों की नोकें अरतैक के शरीर में धंसा दीं।

अरतैक ने दातों से होंठ काट लिये और उत्तर दिया—"मेरे गाव का कोई आदमी मेरे साथ अजीज चपैक की फौज मे नहीं था। तुम चाहो तो मेरे बदन के टुकडे कर आग पर भून कर खालो लेकिन मेरे साथ कोई दूसरा आदमी नहीं था।"

उस अंधेरी कोटडी में अरतैक को छः मास बीत गये। इन छ. मास मे अरतैक को जेल के सिपाहियों और जाच पडताल करनेवाले अफसरो के सिवा और किसी को देखने का अवसर न मिला। अंधेरी कोठरी के किवाट में एक छोटा सा झरोखा था। इस झरोखे की राह दिन-रात मे एक बार रोटी का एक टुकड़ा और कुछ नमकीन गरम लप्स अरतैक को पेट भर लेने के लिये दे दी जाती। नित्त की हाजते भी उसे इसी कोठडी मे ही पूरी करनी पड़तीं। संगति के लिये केवल मक्खियां थीं और समय काटने के लिये वह खटमल मार सकता था। उसके कानों को केवल कोठड़ी के बाहर घूमने वाले सिपाहियों के कदमों की आहट और तालों में चाबियां घूमने की आवाज़ ही सुनाई दे पाती थी या जेल की दीवारो के बाहर से रेल के इंजन की सीटी सुनाई दे जाती। अरतैक को इस जीवन का अभ्यास भी हो गया। वह चुप बैठा-बैठा अपने गाव की बातें सोचता रहता, अपनी प्यारी ऐना को याद करता रहता। यह सब बातें उसे एक बहुत दूर बीते जीवन की, स्वप्न की बातें जान पड़तीं।

उस अंधेरी कोठड़ी में और न का सहारा बीती हुई बातों की याद ही थी। वही याद उसका धन थी। अपने घर की याद, बूढ़ी माँ की ममता की याद, अपनी छोटी चुनचुनी बहन की याद और प्यारी ऐना से विवाह की तैयारी की याद! बीती हुई घटनाओं की स्मृति की राह पर वह बीते दिन की ओर चलता चला जाता। इस राह का पहला पड़ाव उसका बचपन था और अन्तिम पड़ाव जेल की अंधेरी कोठडी। उसे अलनज़र बे के अत्याचार याद आते,—बस्ती पर उसका कैसा आतंक छाया हुआ था? वह

स्वयम भी उस आतंक का शिकार था। अलनजर उसके घर की सब संपत्ति समेट चुका था, उसका प्यारा घोड़ा भी उसने कुर्क करवा लिया था और अन्त मे उसकी मगेत, प्यारी ऐना को भी अपने लड़के बल्लेखाँ के लिये छीन लेना चाहता था। जारके राज के बढ़ते जाते अत्याचारो से तेजेन के किसानो के लिये जब चुपचाप मर जाने या बगावत करनेके सिवा कोई और चारा रह ही नहीं गया तो वे बगावत कर उठे। उस समय अरतैक ने समझा सहे हुए अत्याचारो के बदले का समय आया है। तब अरतैक ने समझा कि जनता और रियाया उठ खड़ी हो तो क्या कर सकती हैं, लोग क्या कुछ, कितना कुछ कर सकते हैं! उन घटनाओं को वह अब दूसरे ढग से सोचता। उन घटनाओं से उसे बहादुर अजीज चपैक की याद आती। और याद आता कि चपैक की बहादुरी लोगो को साथ ले चलने मे थी।

अजीज जार की सेना से हार कर भाग गया। उस समय अरतैक ने भी कोशिश की कि ऐना को लेकर भाग जाय। अलनजर बे ने अपने आदमियो को ले उसे घिरवा कर पकड़ लिया और जार की पुलिस के हाथ सौंप दिया। अरतैक का मुश्के बाधकर अश्काबाद लाया गया और उसे जेल की अधेरी कोठड़ी मे मूद दिया गया। यह सब एक सुपना था--पहाड़ की चोटी पर चढ़ कर वह एक दम खाई मे गिर पड़ा। वह बीता हुआ जीवन एक लबा सुपना था। वह सुपना कई भागों मे बटा हुआ था। कभी सुपने का एक भाग और कभी दूसरा अरतैक की याद में उभर उठता। उसे बचपन के और बगावत के साथी चरकेज और अशीर याद आने लगते और कभी अपने वैरी—अलनजर बे, बाबा खा, लॅगड़ा कुली खा—पटवारी और मौलाना मुहम्मदवली खोजा याद आते और उसका मन क्रोध और असफलता की कड़वाहट से भर जाता

महीने पर महीने बीतते गये। एक दिन अरतैक की अधेरी कोठड़ी के किवाड़ मे बना छोटा सा झरोखा खुला और एक मुस्कराता हुआ चेहरा उसे दिखाई दिया। अरतैक का मन इतना निराश हो चुका था कि उसने उस ओर देख कर भी ध्यान न दिया। उसे अपने नाम की पुकार सुनाई दी—"अरतैक बबाली, अरतैक बबाली।"

अरतैक को जान पड़ा—आवाज परिचित थी। यह जेलखाने के एक सिपाही की आवाज थी जो कभी कभी उसे मिश्री का टुकड़ा या मक्खन

चुपटी रोटी झरोखे से थमा देता था । यह चीजें लेने को अरतैक की इच्छा न होती तो भी वह सिपाही उसे दे ही जाता और दो चार बातें तसल्ली की कह जाता ।

पुकार सुन अरतैक उठ कर झरोखे के पास आया । सिपाही बहुत प्रसन्न दिखाई दिया । धीमे स्वर में सिपाही ने टूटी फूटी तुर्की भाषा में कहा—"बबाली, जार धूल चाट गया . . .जार गया ! तुम जल्दी अपना घर !"

सिपाही ने इधर उधर झांका और झरोखे को मूंद एक ओर सरक गया ।

अरतैक सिपाही की बात ठीक से समझ न सका परन्तु सोचने लगा—'क्या मतलब ?.. .जार धूल चाट गया ! क्या जार हार गया ? अगर ऐसा है तो शुक्र खुदा का . .!"

अरतैक रात भर सोचता रहा । उसे नींद न आई । लगभग पौ फटने के समय उसे नींद आई और उसने सुपना देखा-कि वह एक सीधी खड़ी ऊंची चट्टान से चिपका हुआ है, उसके पांव धरती पर नहीं लग पा रहे । वह चट्टान धीमे धीमे हिलने लगी, जान पड़ा कि चट्टान गिर पड़ेगी । अरतैक ने आंखें झुका नीचे देखा, वहां एक बड़ा अजगर बल खा रहा था । इस अजगर के नथुनों से धुआं निकल रहा था । अरतैक भय से कांप उठा अरतैक का साहस टूट गया । वह मौत का सामना करने की तैयारी करने लगा । सहसा उसने देखा कि नीचे बल खाते हुये अजगर के माथे से खून का फव्वारा छूट गया । लोहे का कवच पहने एक जवान अजगर के बड़े सिर पर सवार हो गया । इस जवान ने अपना हाथ अरतैक की ओर बढ़ा दिया अरतैक ने सहायता के लिये अपना हाथ उस बहादुर की ओर बढ़ाया । दोनों के हाथ छुते ही थे की अरतैक की आंख खुल गई ।

अरतैक का कलेजा जोरों से धड़क रहा था । धड़कन कुछ कम होने पर अरतैक सोचने लगा—"इस सुपने का क्या अर्थ हो सकता है ?" इस अंधेरी कोठरी को चट्टान मान लिया जाय और अलनजर को अजगर तो मेरी ओर सहायता का हाथ बढ़ाने वाला बहादुर कौन है ?" इसी कल्पना में डूबा अरतैक अपनी खाट पर लेटा रहा । दीवार में ऊंचाई पर बने झरोखे से सूर्य की किरणें सुनहरी सलाखों की तरह कमरे में खिंच गई थीं । [illegible] इन किरणों में नाचते कणों की ओर आंख लगाए दोनों गाल के सुनने की ही बात सोच रहा था । उसकी कोठरी के बारे में बातें करने तो

आहट सुनाई दी। इस शब्द से उसका ध्यान खुलते हुए किवाडो की ओर गया। मनमे उसने सोचा—इन कमबख्तो की पूछ ताछ जाने कब खत्म होगी? कब इससे छुटकारा मिलेगा?"

जेल का अफसर कोठडी में आया। अफसर की बाह पर एक लाल पट्टा बॅधा हुआ था। यह नई बात थी। अफसर ने हाथ मे थमे कागजों मे कुछ ढूढते हुए पूछा—"तुम्हारा नाम अरतैक बबाली है?"

अरतैक ने हामी भरी।

"अपना सामान उठाओ!"

"क्यों?"

"तुम अपने घर जाओ, तुम्हे छोड़ दिया।"

"अरतैक ने अविश्वास से अपने सीने पर हाथ रख पूछा—"मैं अपने घर जा सकता हू?"

"हा, हा घर जाओ, गाव जाओ, अपने बाल बच्चों के पास।"

अरतैक अपनी खाट से उछल पड़ा और उसने फिर पूछा—"जनाब, कोई भूल चूक तो नहीं है?"

"शुक्र खुदा का, कोई भूल नहीं है।"

"मजाक कर रहे हो?"

"नही, मजाक नहीं! जार ने धूल चाट ली। मुल्क अब आज़ाद है।" अफसर ने उसकी रिहाई का परवाना अरतैक को थमा दिया। और बिदाई मे हाथ मिलाने के लिए बाह आगे बढा दी।

अरतैक कोठडी से बाहर निकला तो उसका मित्र सिपाही दिखाई दिया। सिपाही ने मुस्करा कर कहा—कहो, मैंने कहा था न जार धूल खा गया?"

अरतैक ने सिपाही के गले मे अपनी बाहे डाल दीं और रूधे हुए गले से बोला—"तुम्हारी मित्रता कभी नही भूलूॅगा। तुम्हारा नाम?"

सिपाही ने अपना नाम बताया—"तिशेन्को"—"मैं अभी तक अकेला था"—अरतैक ने कहा—"आज से तुम मेरे भाई हुए।"

तिशेन्को ने भी अरतैक के गले मे बाह डाल कर उत्तर दिया—"मित्र मैं भी तुम्हे कभी न भूलूगा। हम दोनों भाई भाई हुये!"

जेल में आते समय अरतैक अपनी मां का एकलौता बेटा था। जेल से जाते समय उसे एक भाई मिल गया। दोनों ने सगे भाइयों की तरह विदा ली।

लोहे की मोटी मोटी सलाखें जडे जेल के बडे फाटक से बाहर निकलने पर अरतेक को जान पडा कि सुहावनी हवा उसके दाढ़ी से ढके चेहरे को सहला रही है। उस स्वतन्त्र वायु में श्वास लेने पर उसे अनुभव हुआ कि महीनों बाद वह भर पूर सांस ले पाया है। जैसे उसका दूसरा जन्म हुआ हो! सड़क के दोनों ओर बहती पतली नहरों के दोनों ओर हरी घास जगी हुई थी। पेड़ों पर नए फूटे कल्ले अभी पत्तियों का रूप न ले पाए थे। वसंत की वायु में नयी फूटती वनस्पति की महक समाई हुई थी। अरतेक और दूसरे कैदियों को यह दृश्य एक सुहावना स्वप्न जान पड रहा था। उन लोगों को विश्वास न हो रहा था कि वे लोग सहसा स्वतन्त्र हो गए हैं। अपने पैरों में बेड़ियों का बोझ न पा और जंजीरों की खनखनाहट न सुन पाने से वे लोग तेज चाल से चल रहे थे मानो अब भी भय हो कि पीछे से आकर उन्हें पकड न ले। वे लोग शहर के बाजार में पहुँच गए। लोगों ने उनकी ओर ध्यान भी न दिया। उन लोगों को भी शहर में कोई नई बात दिखाई न दी। कहीं कहीं लोगों की बातचीत में सरकार बदल जाने की बात सुनाई दे जाती। अरतेक पहले कभी अश्काबाद न आया था। शहर की चौड़ी चौड़ी सुथरी सडकें, ऊंचे मकान और सजी हुई दुकानें उसे बहुत भली लगीं। वह रेल में बैठा और उत्सुकता से तेजेन की ओर चल दिया।

अरतेक तेजेन पहुँचा। वह अपना घर और देश पहचान न पा रहा था। सब ओर रूखे, खुश्क मैदानों में रेत और धूल उड रही थी। न कहीं हरियावल न कहीं पानी का नाम। वसन्त का कोई भी चिन्ह कहीं दिखाई न देता था।

वसन्त के आरम्भ में तेजेन की छटा निराली ही होती थी। घन्टे घन्टे में उसका रूप रंग बदलती रहती। पल भर को सोंधी सीलन लिये वायु चेहरों को सहला जाती और दूसरे पल घटाटोप बादल आकाश पर छा जाते। इसके बाद हवा के तेज झोंके बादलों को उड़ा आंखों से ओझल कर देते। और फिर आकाश से धूप बरसने लगती। मैदानों में उड़ती धूल पीले बादि- लों के जाल न रुका जाती। धरती पर जगह जगह छोटी छोटी नालियां बहने

लगती। फिर सब कुछ जलमय हो जाता। जैसे अकस्मात वर्षा आ जाती वैसे ही पलक मारते बादल फट कर सूर्य की किरणे फैल जाती। धुली हुई घास के मैदान और वृक्ष किरणो मे सब्जे के खिलौनो की तरह चमकने लगते। पक्षियों के लाखो जोडे अपनी अपन बोली मे चहक उठते। सब ओर ज वन के राग की गू ज समा जाती।

हरी घास से ढके फूल से छिटके मैदानो मे, छाज जैसी बड़ी दुमे लट काए दुम्बा, भेड़े बिखरी दिखाई देती रहती और उनके पीछे मेमनों के जोडे कुलाचे भरते रहते। कही जाडों मे बढ गए बालों से ढके ऊ टों के झुण्ड मनमाना चारा पाकर सतुष्ट कुहान फुलाए घूमते रहते। ऊ टनिया अपनी कुण्डलीदार गरदनें फैला कर अपने दूध पीते बच्चो को पुचकारती दिखाई देतीं। घोड़िया थनो मे दूध भरे, अपने चचल बछरोके पीछे भागती हुई गावों की धरती को रौंद डालती। गौओं के टोल चरते चरते थक जाते और घास समाप्त न होती। वे उसी घास पर लेट पू छ से मक्खियों को हाकती जुगाली करने लगती। बस्तियों मे दो चार ही आदमी दिखाई पडते। किसान खेतों मे ही बने रहते। समय रहते ही वे बैलों को ले सील । धरती को जोत डालते या बस्ती के जवार के खेतों में क्यारिया बना सब्जी, तरकारी बोने लगते। खरबूजे, तरबूजे बो देने का भी यही समय था। नहरे बर्षा के जल से अघा जाती और पानी सडकों, पगडण्डियों पर फैल जाता। ऐसी बसन्त मे तेजेन के किसान वर्ष भर के लिये अन्न और दूसरे आवश्यक सामान का आयोजन कर लेते थे।

परन्तु अरतैक ने देखा कि उसके गाव की रूखी खुश्क धरती धूल से भरी थी। अपना देश वह क्या पहचानता, उसे अपने काले तम्बू का नामोनिशान भी कहीं दिखाई न पड रहा था। उसका प्यारा काला तम्बू जिसमे उसने जन्म से धूप, आधी और वर्षा से शरण पाई थी! उसकी मा? उसकी छोटी बहिन भाई को देख किलकती, फुदकती शाकिरा? सब कुछ कहा गया?

अरतैक विस्मय से बस्ती मे चारों ओर आखे दौड़ा खोज रहा था। और सब कुछ तो लगभग वैसा ही था परन्तु उसका तम्बू दिखाई न पड़ा। सब तम्बुओं की बस्ती से ऊपर सिर उठाये, अलनजर का फैला हुआ और ऊ चा तम्बू भी दिखाई दे रहा था। सब से अन्त मे ऐना के परिवार का तम्बू भी दिखाई दे रहा था। सब तम्बू अपनी जगह थे परन्तु अरतैक के

तम्बू की जगह खाली पड़ी थी।

खोया हुआ सा खड़ा अरतेक परेशान था कि क्या करे? अलनजर के तम्बू पर आँख पड़ने पर मन में ख्याल आया—पहले जाकर इसीसे समझ लूँ! ऐना के तम्बू को देख सोचा—उसका क्या हुआ होगा? ... पहले लोगों से माँ का पता ले? माँ जिन्दा तो होगी? बेचारी पर क्या बीती होगी, गरीब शाकिरा, उसका क्या हाल होगा?

दुविधा में अरतेक कितनी ही देर तक खड़ा ही रह गया, जैसे उसके पाँव जुड़ गये हों! कितने ही आदमी आकर पास से निकल गए। वह किसी को पहचान न पाया। ऐसे कब तक खड़ा रहेगा? वह एक ओर चल पड़ा। ऐना के तम्बू के सामने आ पहुँचा। उसे कोई झिझक न हुई, न ऐना की माँ 'मामा' और पिता मुराद की नाराजगी का ख्याल आया परन्तु इस तम्बू के द्वार पर पहुँचते पहुँचते फिर उसके पाँव जड़ होने लगे। आशंका हुई ... वह जिन्दा तो होगी, उसके बाप ने उसे कहीं ब्याह दिया होगा?

अरतैक की दृष्टि सब से पहले ऐना के पिता मुराद पर ही पड़ी। वह तम्बू के बाईं ओर घोड़ी के थान के समीप एक गढ़ा खोद रहा था। आहट पा मुराद ने आँखें उसकी ओर उठाईं और पहचान न सकने के कारण पल भर चुप, ध्यान से देखता रहा। पहचाना तो आगे बढ़ उसने अरतैक को सीने से लगा लिया। उमड़ आए आँसू बस में करने के लिये बूढ़े ने मुँह फेर लिया और बोला—"बेटा अरतेक, हम लोग तो तुम्हें देखने की आस ही छोड़ चुके थे। शुक्र अल्ला का! तुम्हें देख आँखें शीतल हो गईं। बेटा, बड़ा हौसला हुआ तुम्हें देख कर। तुम आ गये, अब कोई चिन्ता नहीं। बस, अब इस तम्बू को ही अपना घर समझो!"

मुराद का यह व्यवहार देख अरतेक विस्मय से अवाक् रह गया। उसका मन हाथ से जाता रहा। अहमदाबाद की जेल में मशीनों से कोंचा जाने पर भी वह अडिग बना रहा था परन्तु मुराद की इस ममता ने उसे पिघला दिया। उसका चेहरा गुलाबी हो गया, पाँव लड़खड़ाने लगे और माथे पर पसीना आ गया। बोलने का यत्न किया तो उसका गला रुँध गया।

मुराद ने कहा—"बेटा तुम चले गये तो ... अच्छा, भीतर जाकर आराम तो करो!" मुराद ने उसे तम्बू के दरवाजे की ओर धकेल दिया।

अरतैक दरवाजे पर आ कर फिर एक बार ठिठका औ सोचा--ऐना जरूर यहां ही है तभी तो उसके पिता ने मेरा इतना ख्याल किया और सोचा--एकाएक सामने जाने से ऐना कही घबरा न जाए ? आहट करने के लिए उसने दरवाजे पर से खांसा।

ऐना भीतर ही थी। महीन कसीदा काढते समय, रोशनी के लिये वह तम्बू के झरोखे से आती किरणों के नीचे बैठी हुई थी। किरणो के प्रकाश में तकिए पर काढे हुये कसीदे के अक्षर चमक रहे थे।

"दुआओं की गोद में·· ···"

दरवाजे पर अरतैक के खासने की आवाज ऐना के कान मे पड़ी और उसके खून में बिजली सी कौंध गई परन्तु उसने मन को बस कर समझाया क्यों पागल होती है; अन्धे को तो सदा ही आखों के सपने आते हैं। परन्तु उसकी आंखे तम्बू के दरवाजे की ओर उठे बिना न मानी। एक कद्दावर मर्द भीतर आता दिखाई दिया।ऐना की आखे विस्मय से फैल गई। वह अपनी जगह से उछल पड़ी—'अरतैक जान!" उसके होंठ पुकार उठे। उसकी बाहे अरतैक के गले से लिपट गई और सिर अरतैक के सीने पर जा टिका।

ऐना को सुध आई तो वह लजा गई। पीछे हट उसने अपने हाथों बीना कालीन बिछा कर अरतैक को बैठाया और उसके पास बैठ गई। उसके जीवन के स्वप्न साकार होगये, हृदय की बगिया फूल उठी, हृदय का उत्साह और आनन्द उसके चेहरे पर छलक आया। उसकी बडी बडी आखों की चमक और होटों के रग मे उसका खोया हुआ जोबन पल भर मे लौट कर उमड़ उठा। जैसे दुख के दुर दिन कभी आए ही न थे।

अरतैक की ऊगलिया ऐना के रेशमी बालों में उलझ कर फस गई। दूसरी बाह से उसे अपनी ओर समेट पिघले हुए गले से उसने पुकारा \"मेरी ऐना, मेरी जान, मेरी रूह, मेरा आँखों की पुतली ·· "

ऐना अरतैक की गोद मे सिमिट आई और उसके गाल पर अपना कोमल गाल रख, उसने धीमे से अरतैक के कान मे कहा—"मेरी जान, अगर तुम अब भी न लौटते तो मै जान दे देती। अब मै तुम्हे पल भर के लिये भी कही न जाने दूगी।"

कुछ पल अरतैक ऐना की बाहों में अपने आप को और दुनिया को

भूले रहा परन्तु मनमे चिन्ता उठने लगी। उसने पुकारा—"ऐना……" परन्तु चुप रह गया। ऐना अरतैक के मन की बात भाप गई—"अभी क्या अपने यहा नहीं गये ?" उसने पूछा और अरतैक की आखों में झाका। ऐना की बडी बडी रसीली स्वच्छ आखे सान्त्वना दे रही थी चिन्ता न करो डर की कोई बात नही

"हमारे यहा खैरियत तो है ऐना !" अरतैक ने पूछा। चिन्ता की कोई बात नहीं अरतैक ! तुम्हारे जाते ही तुम्हारे चाचा आये थे और मा और शाकिरा को साथ ले गये। उन्हे किसी तरह की कमी नहीं। अभी तीन दिन पहले भी उनकी खैर खबर मिली थी। शाकिरा के लिये एक टोपी काढ कर मैंने भेजी थी और अब्बा ने मा की पोशाक के लिये रेशम का थान और दूसरी जरूरी चीजें भी भेज दी हैं।"

"ऐना शुक्रिया तुमको !"—अरतैक ने सतोष से सास ली। ऐना ने मुस्करा कर विरोध किया—"वाह क्या कह रहे हो ! वो क्या मेरी मा बहने नहीं ? मेरे जिन्दा रहते उन लोगों को तकलीफ कैसे हो सकती थी ?" अरतैक का मन गदगद हो गया। वह कुछ कह न सका। पल भर बाद उसने पूछा—"ऐना उस बदमाश अलनजर ने तो जरुर तुम लोगों को परेशान किया होगा ?"

"अब जाने दो उस नीच की बात ! क्या होगा वह सब याद करके !" "नहीं कहो, मुझे तो दिन रात उस नीच से डर लगा रहता था कि जाने तुम्हे कैसे कैसे परेशान कर रहा होगा। क्या किया उसने ?—सुने बिना मुझे चैन न आयगा।"

"अच्छा सुनो"—ऐना बोली—"तुम्हे पकड़ कर ले गये तो मैं मुरदा सी पडी रहती। तम्बू से कभी ही बाहर निकलती। एक रोज मैं दरवाजे पर थी। अलनजर के आदमी मुझे पकड़ ले जाना चाहते थे। मैं धक्का देकर अलग हो गई। झगडे में मैं नीचे गिर पडी। मा चिल्लाने लगी "अरे जालिमो, लड़की को मारे क्यों डाल रहे हो ! इससे इसे अपने लड़के की बहू बनालो !" मुझे भी समझाने लगी-"ऐसे अपनी मिट्टी क्यों खराब कराती है ! वे बडा आदमी है, उसके यहां आराम भी होगा और इज्जत भी !

मुझे बहुत बुरा लगा। मैंने फटकार दिया—"अगर तुझे बे का इतना ख्याल है तो तू ही उस छोकरे के साथ जा बस !" एक रोज़ मा मुद

पर छलनी जैसे दाग भरे बल्ले को अपने साथ ले आई, बल्ले आकर मेरे कंधे पर हाथ रखने लगा। मैंने कालीन छाटने की कैंची खोल कर कहा—"हिमत है तो छू मुझे !" फिर मैंने मा को भी कहा--"अगर तू अब फिर इसे यहा लाई तो पहले मैं यह कैंची तेरे गले से पार उतारूगी और फिर खुद भी मर जाऊगी। इसी बीच अब्बा आ गये। मामला देख गुस्से मे उन्होंने बेलचा उठाकर मा की कमर पर दे मारा। मा ज़मीन पर गिर पडी और चिल्लाने लगी। बल्ले उठकर भागा। अब्बा बेलचा लेकर बल्ले के पीछे भागे। बल्ले डर के मारे सिर पर पाव रख कर छर हो गया। उसकी टोपी वहीं दरवाजे पर ही गिर गई।

दूसरे दिन खोजा मौलाना बहकाने आया। मैं आगे बढी कि उस बुढ्ढे की खबर लू। अब्बा ने मुझे रोक उसकी बात सुनने से इनकार कर कहा-"मौलाना और सब ठीक है लेकिन बे के यहा लडकी के रिश्ते की बात ले मेरे यहा मत आना।" मौलाना ने भी फिर सूरत न दिखाई। इसके बाद बे ने धमकी दी कि हम लोगों को बस्ती से निकाल देगा। पिता जी ने कहा बस्ती से तो मैं मर कर ही निकलूगा और देखा जायगा कि पहले मैं मरता हू कि बे मरता है। पिता जी न मेरा बहुत साथ दिया। मा तो सौतेल, ठहरी, वो सदा मिनमिनाती रही। मैंने भा कहा—तू बकती रहा कर तेरा कौन परवाह करता है।

भाग्य की बात! उसी समय तम्बू का दरवाजा खुला और मामा गाय दोह कर दूध का बर्तन हाथ से लटकाये भीतर आई। धूप से चौंधियाई आखों से वह अरतैक को तो पहचान न सकी परन्तु देखा कि लड़की किसी जवान मर्द के साथ अकेली हिलमिल कर बैठी हुई है।

मामा माथा पीट कर चीख उठी—"लागो, दुनिया ग़ारत हो गई! हाय इतनी बेहयाई! जवान लडकियों के ऐसे चालत्तर! जमान फट जाये और यह लोग फना हो जाय... ..."।

अरतैक कालीन से उठा और मामा के पास जाकर बोला—"अरे क्या कर रही हो मौसी! पहचाना नहीं मुझे? मै अरतैक हू, सलाम मौसी!"

मामा की आखे और हाथ दोनों ही हैरानी से फैल गये और दूध का बर्तन मामा के हाथ से गिर गया—"ओह बेटा अरतैक" मामा चिल्ला उठी और अरतैक को अपने हृदय से लगा लिया।

४

संध्या हो चुकी थी। बस्ती के चाय खाने (होटल) के मालिक जमरूदी के मकान में रोशनी जल चुकी थी। मकान के भीतर के कमरे में बस्ती के माल अफसर उमेद खा और खोजा मुराद, बडा मुंशी कुलीखालँगडा और दारोगा बाबा खा और दो तीन दूसरे भले लोग चाय पी रहे थे। बातचीत धीमे धीमे चल रही थी। चायखाने के मालिक जमरूदी को ऐसे मुर्दा दिल लोग पसंद न थे। वह अपने चाय खाने में हंसी, मजाक और शोर शराबा पसन्द करता था।

जमरूदी कमरे की चौखट के साथ सटा खडा, अपनी फैली हुई दाढी खुजाता हुआ अपने मेहमानों की ओर देख रहा था। मेहमानों के चेहरे पर उसे मुर्दनी ही दिखाई दे रही थी। कोई उसकी ओर ध्यान ही नहीं दे रहा था न कोई पुलाव जल्दी लाने या शराब लाने के लिये पुकारता था। जमरूदी यह भी न भांप पाया कि इन लोगों को किसने दावत पर बुलाया है? वह खड़ा खडा थक गया तो बैठ गया। बैठा बैठा उकता गया तो खड़ा हो गया और आखिर बोला—

"भलो लोगो, आज यह कैसी सुस्ती छाई हुई है? आपका खादिम जमरूदी हाजिर है। कोई हुक्म कीजिये!"—परन्तु जमरूदी की इस बात का भी कुछ असर न हुआ।

बस्ती के इन बड़े लोगों के उदास होने का कारण भी ठीक ही था। खबर मिली थी कि इलाके के गवर्नर कर्नल बेलानोविच हालत हाथ से निकलती देख, आग लगी झोंपडी मे बसने वाले चूहों की तरह, झोंपडी छोड भागे। बेलानोविच ने इलाके का इन्तजाम लेफ्टीनेंट कर्नल आतोनोव के हाथ में सौंप, स्वयं फेरूशा में, जनरल काल्माकोव के पडोस मे जा बसे, ताकि हालत और बिगड़ने पर तुरन्त भाग सकें।

बस्ती के अफसर लोग बेलानोविच को विदाई देकर चायखाने में आ बैठे थे। वे लोग अपनी स्थिति के बारे में चिन्तित थे। इन लोगों की सहायता से कर्नल बेलानोविच ने काफी सम्पत्ति बटोरी थी। कर्नल का सामान कई माल गाड़ियो मे भर कर उनके साथ भेजा गया था। यह भले आदमी परेशान थे कि अब वे किसके सामने सलाम करेंगे? और कौन इनके सिर पर अपने हाथ का साया करेगा। लेफ्टीनेन्ट कर्नल आन्तोनोव तो स्वय ही घबरा रहा था।

माल अफसर उमेदखॉ अपने फूले हुये गालों पर से पसीना पोंछ कर गम्भीर स्वर मे बोला—"कहते हैं न कि जाने पहचाने दुश्मन से लड लेना आसान होता है। इस हाकिम को हम समझ गये थे, वो हमे समझ गया था। उसका साया अपने सिर पर था। वो कभी हम लोगो पर बिगड़ता था, धमकाता भी था पर उसने कभी किसी का कुछ बुरा नही किया। यह तो एक नसीहत थी कि हम गलती न करें। उसका साया बाप का साया था। दारोगा ठीक कहते हैं—हम लोग अनाथ हो गये हैं। आन्तोनोव भी कोई आदमी है? ·· बिलकुल बेदम!

कुलीखा लगड़े ने मुंह मे दबा तम्बाकू का बीडा निकाल दरवाजे से बाहर फेंक दिया और होठों से टपकती लार हाथ से पोंछ कर बोला-- "बेदम का क्या मतलब? · · बेलानोविच सिर पर बैठा था तो वह कर ही क्या सकता था? कुत्ते को शह मिले तो भेड़िये पर चढ बैठता है। हम लोग साथ देंगे तो उसे हिम्मत बधेगी। अमले के बिना कोई गवर्नर क्या कर लेगा? उसे सल्तनत सम्भालने दो! फिर देखना, सल्तनत खुद सब कुछ सिखा देती है।"

दारोगा बाबाखा ने गम्भीरता से भौं चढाकर समर्थन किया---"ठीक है, कुली खा सही कह रहा है। हाकिम कोई भी हो, हुकूमत हमी लोगों को चलानी है! कुली खा के पांव में ख़म है तो क्या, दिमाग उसका दुरुस्त है भाई!"

मौलाना खोजा ने कुली खा के लगडेपन पर मजाक कर दिया। इस बात पर झगड़ा उठ खडा हुआ। दारोगा ने दोनों को समझा कर चुप कराया और दूसरी बात आरम्भ कर दी---"मौलाना! सुना नही, अरतैक लौट आया है।"

"कौन अरतैक?" मौलाना ने पूछा

"अरतैक को नहीं जानते ? हमारी बस्ती का लडका है ! याद नहीं उसका घोड़ा छिनवाया था ! अरे जिसने अजीज की बगावत में साथ दिया था ? उसे पकडवा कर अश्काबाद भिजवाया था ! याद नहीं ?"

"सीधे, सीधे कहो न" कुलीखा बोल उठा—"जिसने अलनज़र बे के लडके की बहू छीन ली और मालअफसर के मुह पर थूक दिया था और पचों को भी धमकाया गया ?"

खोजा मुराद को इस बात पर क्रोध आ गया। कमर में बधे मियान से चादी की मूठ की खजर खीच उसने कुलीखा को ललकारा—"मुह पर थूक दिखाऊ मैं ? कहो तो तुम्हारे मुह पर थूकू ?"

कुलीखां ने अपनी कमर से रिवाल्वर निकाल कर जवाब दिया—"मैं तुम्हारे बाप के मु ह पर थूकता हू।"

माल अफसर उमेदखा ने दोनों के बीच बचाव किया और समझाया—"क्या बचपन कर रहे हो तुम लोग ? अपनी उम्र और ओहदे का तो ख्याल करो।"

जमरूदी की एक बीवी एक बढिया पोशाक पहने, एक कढा हुआ दस्तरखान लेकर आई और मेहमानों के बीच बिछा गई। दूसरी बीवी आकर पुलाव का थाल रख गई और तीसरी शराब लेकर आई। जमरूदी टोंटीदार लोटा और चिलमची ले मेहमानों के सामने आ पूछने लगा- "कोई साहब हाथ धोना चाहते हैं ?"

उमेदखा आस्तीनें समेट पुलाव पर झुक गया और बोला—"दारोगा साहब, आपने ठीक वक्त पर शराब मगाई। शराब हमेशा हर मोके-मौजू है। शराब में यही तो बात है कि गुस्सा आ रहा हो, पी लीजिये, गुस्सा जाता रहेगा। आप खुश हों, पी लीजिये, मन उदास हो जायगा। तबीयत ठीक न हो, पी लीजिये, तबीयत सुधर जायगी और सेहत में पी लीजिये, तबीयत गिर जायगी।"

"यो कहो, शराब सबको बराबर कर देती है। समझदार और बेसमझ सब एक बराबर हो जाते हैं" दारोगा बोला। दारोगा की बात ठीक ही थी कुछ ही मिनिट बीते थे कि कुलीखा और खोजा मुराद आपसी झगडा भूल एक दूसरे से प्याले छुला छुला कर पीने लगे और मनमुटाव दूर हो गए।

खाना अभी चल ही रहा था कि एक हरकारे ने आकर खबर दी कि

रेलवाई लोगो की क्लब मे अभी हाल में पचों का चुनाव होगा। वहाँ सब लोगो को बुलाया गया है।

कुलीखा ने मुँह का गस्सा चबाते हुये हरकारे को हुक्म दिया- "अभी हमलोग खा ही रहे है। जब तक हमारा खाना खत्म नही होगा, चुनाव उनाव कुछ नहीं होगा। कह दो जाकर अभी हम लोग नहीं आ सकते।"

हरकारे को तो इन लोगों ने धमका कर लौटा दिया परन्तु मन मे दुविधा होने लगी पचों का चुनाव! यह एक नई बात थी। परन्तु इसमें अचम्भा क्या था? सभी बाते नई थीं। अब जार तो रहा नहीं। सभी लोग जार बन गये थे। सभी लोग तुर्रमखा न बैठे। सभी जगह सभा चुनाव और ऐसे ही झगड़े चल रहे थे। बेइन्तजामी फैल रही थी। कुत्ते अपने मालिकों को और बिल्लियों अपनी मालिकाओं को भूल गई थीं। लेकिन दुश्मन क्या कर रहा है, यह जानना भी तो जरूरी है। मौके की बात है, खुद को ही पच चुनवाया जा सकता है! न हो, अपने आदमियों को ही चुनवाया जाये' यह सब सोच कर' इन लोगों ने जल्दी ही चुनाव की सभा में पहुचने का निश्चय किया। और सभी लोग तुरत क्लब की ओर चल पडे।

चुनाव की सभा अभी शुरू न हुई थी। इस भीड़ में सभी लोग रूसी जवान ईवान चर्नीशोव की ओर देख रहे थे। चर्नीशोव रेलवाई की वर्दी पहने था। तेजेन शहर के तुर्कमानी और रुसी मजदूरों मे सबसे अधिक आदर चर्नीशोव का ही था। सभी लोग जानते थे कि चर्नीशोव जार और जार के अमलों का कट्टर दुश्मन था। लोग यह भी जानते थे कि बागी अजीज के साथियों और चर्नीशोव मे गहरी मित्रता रही थी।

अरतैक के मन में सबसे पहले चर्नीशोव ने ही अन्याय के विरोध का बीज बोया था। परन्तु अश्काबाद जेल स छूट कर लौटने के बाद अरतैक चर्नीशोव से मिल न पाया था। चर्नीशोव सभा के लिये बढती हुई भीड मे खड़ा सरसरी निगाह से आने वाले लोगों को देख रहा था। उसने देखा बाह पर लाल पट्टा बाधे एक फौजी सिपाही इधर उधर कुछ पूछता फिर रहा है। कुलीखा लगडे को देख सिपाही ने उससे भी अपना सवाल पूछा—"मैं अरतैक बबाली से मिलना चाहता हू, वह कहा होगा?" कुलीखा ने सिपाही की बात की ओर कुछ ध्यान दिया और एक ओर निकल गया।

चर्नीशोव बढकर सिपाही के पास पहुचा और बोला—"अरतैक बबाली से मिलना चाहते हो ? क्यों; क्या काम है उससे ?" मन ही मन चर्नीशोव घबराया—"अरतैक अभी हाल ही मे ते अश्काबाद से छूट कर आया है, क्या कोई और मुसीबत उसके सिर आ पडी ?"

सिपाही ने हामी भरी "हा मैं अरतैक से मिलना चाहता हू"। "इससे पहले तो तुम्हें तेजेन मे कभी नहीं देखा ?"—चर्नीशोव ने फिर पूछा—"कहा से आ रहे हो ?"

"अश्काबाद से।"

चर्नीशोव का सदेह और बढा—"क्या काम है अरतैक से ?—" उसने पूछा—"क्या सरकारी आमला है ?"

"नहीं"

"तो फिर क्या काम है ?"

"अरतैक मेरा गहरा मित्र है सिपाही ने मुस्करा कर उत्तर दिया—" मैं आज ड्यूटी पर यहां आया था। आशा थी मित्र से मिलूगा परन्तु निराश ही हो रहा हू। मुझे आज ही रात अश्काबाद लौट जाना है।"

इस सिपाही ने अपना नाम तिशेन्को बताया। तिशेन्को ने चर्नीशोव को अश्काबाद जेल में अरतैक से परिचय और मित्रता होने और जेल में अरतैक पर बीती बातो की कहानी सुनाई। चर्नीशोव ने भी बताया कि अरतैक उसका भी पुराना मित्र है। जेल से आकर अरतैक उसके मकान पर आया था चर्नीशोव मकान पर न था इसलिये अरतैक उसकी पत्नी से ही बात कर लौट गया। वह स्वयम् अरतैक को खोज रहा था। अरतैक शहर से चालीस मील दूर अपने गाव मे है।

चर्नीशोव और तिशेन्को आपस में बातचीत करने लगे। तिशेन्को को जब विश्वास हो गया कि चर्नीशोव कम्यूनिस्ट है तो उसने अश्काबाद की हालत उसे कह सुनाई कि मज़दूरों की जो पचायत चुनी गई है उसमें सब पुराने सरकारी अफसर, पादरी, सोशलिस्ट रेवोल्यूशनरी लोग भर गये हैं। तुर्कमान मजदूरों और किसानों में से कोई भी आदमी तुर्कमानी सोवियत में नहीं लिया गया। एक काउण्ट (बड़े जागीरदार) साहब जो इलाके के गवर्नर कोल्माकोव के दोस्त हैं, सोवियट के प्रधान बन बैठे हैं।

चर्नीशोव यह बातें पहले ही सुन चुका था और एक साथी को अपने

विचारों से सहमत पा उसे सतोष भी हुआ परन्तु उसने खुल कर बात न की। जार के राज में उसे बरसों पुलिस से सावधान रहना पडा था। अब जार का राज समाप्त हो चुका था परन्तु बे मतलब बात न कहना उसकी आदत हो गई थी। और उसने सोचा—कौन जाने तिशेन्को अश्काबाद के जार पक्षी लोगों का ही आदमी हो और उसका भेद लेना चाहता हो।

चर्नीशोव की इस सावधानी से तिशेन्को उसके मन का सन्देह भाप गया। परन्तु चर्नीशोव की रेलवे मजदूर की वर्दी देख तिशेन्को के मन में सन्देह होने का कोई कारण न था। वह चर्नीशोव को बाह से थाम एक और ले गया और उसे अपना पार्टी का टिकट दिखा दिया। तिशेन्को का टिकट देख चर्नीशोव ने दिल खोल दिया और तेजेन की हालत बताई कि शहर में कम्यूनिस्ट पार्टी का कोई सगठन नहीं। उसे छोड केवल दो और पार्टी-मेम्बर शहर मे थे और शहर के मजदूरों का भी कोई अच्छा सगठन न था। सभा शुरू होने का समय हो जाने के कारण उनकी बातचीत आगे न बढ पायी।

सभा मे सबसे पहले अश्काबाद की सोवियट से आये प्रतिनिधि ने लेक्चर दिया। उसने जारका अत्याचार समाप्त होने के लिये जनता को बधाई दी और कहा कि आजादी का यह युद्ध पूरी आज़ादी पाये बिना रोका नहीं जा सकता। उसने जनता को समझाया कि फिलहाल जो चालू सरकार कायम की गई है उसके फैसलो को सख्ती से पूरा करना होगा।

उसके बाद चर्नीशोव बोलने के लिये खडा हुआ। उसने कहा कि जार के राज मे तुर्कमानिया की हालत खराब होना जरूरी था क्योंकि जार और उसके गुट्ट ने रूस के बाहर के देशों का जनता को चूस लेने के लिये ही इन देशों और इलाकों को अपने राज के जाल मे समेटा था। उसने कहा कि जार की सरकार अपने सहायक जागीरदारों और बडे बडे धनी व्यापारियों को ही फायदा पहुँचाने की रीति पर चलती थी और जनता को असली हालत नहीं जानने देती थी। इस राज मे देश और जनता बरबाद हो रहे थे। जार ने इतना बडा जग छेड़ रखा था। परन्तु इस जग से जनता को मौत और कगाली के सिवा और कुछ नहीं मिला। उसने जार की सरकार के अत्याचारों की कई मिसालें सुनाई। उसने कहा कि यह जार की अत्याचारी नीति का ही परिणाम था कि १८१६ में तुर्कमानिया मे बगावत कर अजीज ने अपने देश को जार के राज और रूस से अलग कर लेने की

कोशिश की और जनता ने भी अजीज को सहायता दी क्यों कि जार के जुल्मों से जनता की जिन्दगी दूभर हो चुकी थी। उसने कहा—"पहले हम अपनी (अस्थायी) चालू सरकारसे यह माग करते हैं कि सबसे पहिले इस जंग को खत्म किया जाय। जंग से केवल धनी लोग फायदा उठा रहे हैं जनता इसमे पिसी जा रही है। जनता की सबसे पहली माग है कि किसानों को खेती के लिये जमीन और सिंचाई के लिये पानी मिले। ज़मीन, कारखानों और बाजार के प्रबन्ध पर जनता का कब्जा हो। अगर अस्थायी—(चालू) सरकार इस मार्ग पर नहीं चलेगी तो यह सरकार भी जार की सरकार जैसी ही बन जायगी।"

चर्नीशोव की बाते सुन कर सभा मे बैठे कुछ लोगों के चेहरों पर घबराहट झलकने लगी, खास तौर पर दारोगा, पंच और दूसरे पुराने सरकारी अफसर आपस मे ताक झाक करने लगे। उन्हे ऐसे जान पड़ा कि पिछले गदर के मामले में उनकी गिरफ्तारी की जाने वाली है। मुशी ने माल अफसर के कान के पास मुह कर कहा—"भैया अपने को क्या? जार हो, दारोगा हो सोवियट की पंचायत हो, अपनी बात चलनी चाहिये, फिर हम ही जार हैं।"

एक पच ने कहा—"यह लोग तो ऐसी बातें करते है कि अजीज़ की बगावत खुद गवर्नर ने, दारोगा ने, हमने कराई हो। शहर पर हमला करने वाले डाकुओं का कोई कसूर नहीं था।" यह तो अजीब तमाशा है?... दूसरा बोला—"चुप ही रहो, भैया! कोई सुन लेगा तो और मुसीबत होगी।"

चुनाव हो गया। चर्नीशोव और उसके साथियों के सिर तोड़ कोशिश करने पर भी चर्नीशोव को छोड़ दूसरा कोई मजदूर या किसान सोवियट मे न चुना जा सका।

दारोगा बाबाखा को चुनाव का यह खेल कुछ समझ न आया। "इस चुनाव से फायदा क्या?" वह सोचने लगा—"क्या चुने हुये लोग गवर्नर बनायेंगे?...तो फिर कर्नल अन्तोनोव क्या करेगा? गवर्नर और दूसरे बड़े हाकिमों के रहते तो अफसर मनचाहा करते रहे अब जब यह ढेरों आदमी हुकूमत चलायेंगे तो कैसे निभेगी? हुकूमत तो एक की चल सकती है पचासों की नहीं। गड़बड़ी मचेगी, शहर और गांव सब बरबाद हो जायगे और क्या!" साथ चलते माल अफसर को पुकार वह बोला—"खोजा मुराद

चुनवा तो अपनी समझ में आया नहीं।"

मे खुद इसका कुछ मतलब नहीं समझ आया—" माल
दिया।

गवर्नर क्या करेगा?"

ागे आगे लगड़ाता जा रहा था। यह बातचीत सुन उसने
दी और दारोगा के साथ साथ चलता हुआ बोला—"समझ
---गवर्नर को कौन कुछ कह रहा है? वह गवर्नर तो गवर्नर

ावियत के पञ्च क्या करेंगे? खाद ढोयेंगे?"

र के मातहत मददगार हो जायगे।"

एक लम्बी सास ली—"सभी कुछ सामने आया जाता है
तो अपनी आखों देख ही लेंगे।

५

खोये हुये बेटे को पाकर मा की छाती ठण्डी होगई। अरतैक की माँ नूरजहाँ ने बेटे का सिर सीने पर रख उसे चूमा। काँपते हुये हाथों से उसके शरीर और कपड़ों को सहलाती रही।

"मेरे बेटे, मेरे लाल! तू कहा चला गया था?" उसकी आंखों से झड़ते सतोष के आसू थम न पाते थे।

माँ के स्नेह की इस बाढ से स्वयम अरतैक की आखों मे भी आसू छलक आये। उसे जान पडा कि माँ के स्नेह की इस बहिया से १९१७ के सूखे से तपा तेजेन का पूरा देश सिंच गया।

शाकिरा भाई के गले में बाहे डाल मचल गई कि हम अब भैया को नहीं छोड़ेंगे।

अरतैक का चचा अधेर उम्र का आदमी था। उसकी दाढी खिचड़ी हो गई थी परन्तु शरीर की काठी मजबूत बनी थी। उसने अरतैक को सुनाया कि वह दो बेर तेजेन से अश्काबाद पहुँचा। दोनों बार वह तीन दिन और तीन रात जेल के फाटक के बाहर बैठा रहा। जिस किसी भी आदमी को फाटक के भीतर-बाहर आते-जाते देखता उसी से अपने भतीजे की बाबत पूछताछ करता और भतीजे से मिला देने के लिये गिडगिड़ाता परन्तु कुछ न बना। अब अपने भतीजे को सही सलामत घर आ गया देख चाचा का चेहरा खुशी से चमक उठा।

महीनों से सूना, उदास और बेरौनक दिखाई देने वाला काला तम्बू प्रसन्नता और उल्लास से चहक उठा। अरतैक के मित्र और परिचित और बहुत से लोग केवल उसका नाम सुनकर ही उससे मिलने और बधाई देने आ जुटे। जीत के जलसे का सा रग बंध गया। एक ओर बडी सी देग मे

पकता भेड का माम अपना सुरीला राग अलग से गुनगुना रहा था।

अरतैक का पडोसी बूढा गरीब किसान खादिम भी अरतैक से मिलने आया। खादिम को भी अलनजर वे ने बरबाद कर दिया था। उसने अपनी दुख की कहानी अरतैक को सुनाई "वे ने मेरी खत्ती खुदवा कर सब गेहू निकलवा लिया और पीट पीट कर मुझे अधमरा कर दिया ' ···।"

'खादिम बाबा, दिल छोटा न करो"—अरतैक ने तसल्ली दी—"जिंदगी रही तो एक दिन अलनजर को भी समझ लेंगे। तुम्हारा सब गेहू लौट आएगा।"

"तुम जिंदगी की शर्तों की बातें करते हो अरतैक बेटा!"—खादिम ने आस्तीन से आसू पोछते हुए कहा—"यहा मेरे बाल बच्चे सोते जागते भूख से तडपते रहते हैं और बे के अधाए हुए कुत्ते गेहूँ की रोटियों पर नाक सिकोड रहे हैं।"

"बाबा घबराओ नहीं। तुम भूखे रहोगे तो हम लोग भी भूखे रहेंगे, हम खायेंगे तो तुम भी खाओगे। जब तक अपना वक्त नही आता मिलजुल कर जैसे तैसे निबाहना होगा।"

"बेटा, जिंदगी मे तुम्हे देख लिया बस सब पा लिया। अब मुझे कोई दुख नही। तुम से अपने दुख की बात कहली। नहीं तो मैं अपनी बात किस से कहता।"—खादिम ने आसू पोंछ लिए और उसका चेहरा उत्साह से चमकने लगा, वह अरतैक को सुनाने लगा—"ऐना बहुत बहादुर लडकी है। उसने तुम्हारे पीछे कमबख्त वे का मुह कालाकर, उसकी नाक काटली! वे ने लोगों के सामने अपनी इज्जत रखने के लिए अपने लड़के बल्ले के लिये ऐना की जगह उस भोंडी बेहूदा छोकरी, अतैरी को ब्याह लिया। बे की बेइज्जती और परेशानी की बात सुनते समय खादिम हस हस कर जमीन पर लोट लोट गया! और फिर गम्भीरता से सीधे बैठ अपनी दाढी सहलाते हुए उसने पूछा—"बेटा अरतैक, अब ऐना को कब घर लारहे हो?"

"उसकी सौतेली मा 'मामा' भला मानेगी?"—अरतैक ने उत्तर दिया।

"अरे मामा? वो तो ऐसे मानेगी कि . ? अभी उसे मुराद के बेलचे का डण्डा भूला नही होगा। भूल गया होगा तो बेलचा तो अभी मुराद के पास है ही! ऐना को अब अपने घर आना ही चाहिये। वह अपने घर की

मालिक क्यों न बने ?"

"खादिम बाबा, तो फिर जैसे तुम कहोगे, होगा।"

"नहीं भैया, अब देर ठीक नहीं। बेचारी ने बहुत सह लिया। ऐना को जल्दी से जल्दी घर ले आने के लिये अरतैक स्वयं ही उतावला था। पर वह चाहता था, अलनजर से बदला लेने और ब्याह का जलसा एक साथ ही हो। ऐना को यह देर पसन्द न थी। उसने अरतैक को समझाया—"तुम बे की बात से मन क्यों खट्टा किया करते हो ? बेइज्जती तुम्हारी हुई है कि बे की ? बताओ ? तुमने उसके लडके को पीटा, उसका घोडा भी छीन लिया लिया और तुम्हारी ऐना तो तुम्हारे पास है। अब अगर वह बात बढाये तो तुम जवाब दो ! यों ही क्यों झगडा बढाना चाहते हो ? मैं ही जानती हूँ तुम्हे एक बार खोकर मैंने कैसे पाया है . अब यह झगडे में तुम्हें नहीं करने दूंगी।"

एक तरह ऐना की बात ठीक ही थी परन्तु अरतैक का मन न माना। बे से उसके अपने ही झगडे की बात तो न थी। सूखे के उस बरस मे बे ने अरतैक के घर का और दूसरे सभी किसानों के घर का सब अनाज समेट लिया था। बस्ती के बहुत से लोग अपना अनाज खो सोते-जागते भूख से तडप रहे थे। उस बरस तो फसल की कोई आस थी नहीं और कोन जानता था कि अगली फसल तक कितने मरेंगे और कितने जियेंगे। बस्ती के लोग यों मर रहे थे और बे मुट्ठी मुट्ठी भर अनाज के दामों ऊंट और घोडे खरीद कर समेटता जा रहा था। अरतैक यह सब कैसे सह जाता ?

ऐना और अरतैक की मा दोनों ही उसे शान्त रहने के लिये समझातीं रहतीं परन्तु उसके सीने की आग बार बार भड़क उठती थी। वह यह कैसे भूल जाता कि बे ने उसकी खान्दानी बस्ती से उसका तम्बू उखाड़ कर बाहर निकाल, उसका अपमान किया है। जब तक वह अपनी पुरानी जगह अपना तम्बू न जमाले अपमान को कैसे भूल जाय ! वह अपनी पुरानी जगह जमना चाहता था।

मा आशका ने विरोध करती थी—इस बात के लिये झगडा और मुसीबत सिर लेने की क्या जरूरत ? सभी जगहें एक सी ही हैं। बरसों बरसों मे क्या फरक फिर देखा जायगा, अभी रहने दो ! हमें यहां क्या तकलीफ है। उसके नाना ने भी समझाया—नहीं यह नहीं हो सकता।

अभी तुम कहीं नहीं जा सकते बरस भर से पहले मैं तुम्हें कहीं न जाने दूगा।

खादिम ने कहा, मा और चाचा ने जोर दिया, मुराद भी राजी था और ऐना को भी व्यर्थ देर भली न लग रही थी। इसलिये अरतैक ने ब्याह का दिन पक्का कर लिया। मुराद ने लड़की के लिये 'कल्याम' (लडकी का मूल्य) की कोई बात न की। उल्टे उसने कहा—"तुम लोग ब्याह के लिये जितने चाहे मेहमानो को न्योता दे लो। दावत का इन्तजाम मै खुद करूगा।"

अरतैक के मित्र, उसके चाचा के सगे सम्बधी और मित्र और अल नजर बे से नाराज सभी लोग इस ब्याह के अवसर पर इकट्ठे हुये। उस साल सूखे के कारण लोगो के घोडे अच्छी हालत मे न थे इसलिये बरात मे सवारो का वह रग न हो सका जो बे के लडके के ब्याह मे जमा था। फिर भी पन्द्रह घुड सवार और पन्द्रह स्त्रिया ऊटो की सवारी पर बरात की यात्रा मे चलीं।

बरात जान बूझ कर अलनजर बे के तम्बुओं के सामने से निकली और जान बूझकर खूब ही हल्ला किया, धूल उड़ाई और आकाश मे गोलिया भी चलाई। खादिम एक दुबले से टट्टू पर सवार, हाथ मे मोटा डडा लिये बरात के आगे आगे था। उसकी लम्बी लम्बी टागे टट्टू के पेट नीचे लटक रही थीं और उसके नगे पाव रकाबों से बाहर फैले हुये थे। बे के खेमों के सामने आकर खादिम ने ललकारा—"अबे ओ बे के गलीज कुत्ते, हिम्मत है तो निकल बाहर"।

बे की बहू अतैरी जली, शोर सुन भागी हुई खेमे के दरवाजे पर आई और खादिम को देख, कहकहा लगाकर हस उठी। बे का सबसे प्यारा घोड़ा 'मालकौश' इस गर्द गुबार, चीखो पुकार, गोलियो की गडगड़ाहट और रग बिरगे कपडों को देख भडक उठा और अगाड़ी पिछाडी तुडा बस्ती मे भाग निकला।

अलनजर बे का तम्बू बरात के पाव स उडी धूल से भर गया और बरातियो की दागी हुई बन्दूकों से उसके कान बहरे हो गये। क्रोध मे पागल हो उसने अपनी छोलदारी के कोने से दुनाली बन्दूक उठा ली और दरवाजे की ओर लपका फिर ठिठक गया। बन्दूक उसने एक ओर पटक सिर को दोनो हाथों मे थाम एक ओर तहा कर रखे हुये कालीनो पर जा बैठा। वह सोचने लगा—यह लोग किस तरह मेरा अपमान कर रहे हैं? मैने नकद सोने का

क्ल्याम (बहू का मूल्य) देकर लडके के लिये मुराद की लडकी ली थी। उसे यह लोग छीन ले गये। अब यहा आकर मेरे सामने मुह चिडा रहे हैं और मेरे सिर पर धूल डाल रहे हैं। क्या कयामत आ गई है! लोगों का अदब आबरू का कोई ख्याल नही रहा। जार मर गया तो क्या, मैं तो अभी जिन्दा हू! मैं यह अपमान नहीं सह सकता।

अलनजर ने फिर बन्दूक उठाली परन्तु इसी समय उसे पुकार सुनाई दी —"हाय मालिक, मालकौश भाग गया··· ···" वे तम्बू के दरवाजे की ओर लपका परन्तु दरवाजे पर आकर फिर ठिठक गया। बन्दूक उसके हाथ से सरक गई। उसे सूझ न रहा था कि क्या करे? उसका मन चाहता था स्वय अपना मुह नोच ले।

"मालकौश भाग गया······" चिल्लाती हुई शादाब तम्बू मे घुस आई परन्तु बे का चेहरा देख उसका अपना चेहरा फीका हो गया। वह और भी तीखे स्वर में चिल्ला उठी—"हाय मालिक तुम्हें क्या हो गया? गोली तो नहीं लग गई!"

बे ने सुध सम्भाली और शादाब को उल्टे हाथ से पीछे की ओर धकेल चुप रहकर लौट जाने के लिये कहा। शादाब डर कर तम्बू के पिछवाड़े से निकल गई।

रूमाल से मुह पोछ वह अपने आप को समझाने लगा—"जो हुआ होने दो! जुओं से तग आकर कोई अपना कपड़ा थोड़े ही जला देता है! इन कमीनों के मु ह लगने से क्या फायदा? यह कमबख्त सोते जागते भूख से बिलख रहे हैं इसीलिये तो मरने मारने का बहाना खोज रहे हैं! रसूल पाक का हुक्म है—"गुस्से को मारो!" मैं भी ताव मे आ गया था······अल्लाह ने बाह से थाम कर रोक लिया।"

× × ×

बरात के लोग मुराद के घर चाय पीने बैठे। बावर्ची ने बहुत शौक और कारीगरी से तैयार किये पुलाव के देग का ढकना खोल लकड़ी की कड़छी से पुलाव को हिलाया। दूर दूर तक महक फैल गई। मामा दुविधा में थी कि वह सबके साथ इसी खुशी मे साथ दे या कटकर एक ओर हो जाये? इस मामले में उसकी जो कुछ भी उपेक्षा और अपमान हुआ था इसे तो वह सह जाती कि लड़की का कल्याम नहीं लिया गया। कल्याम ही न लिया

जाता जो भी एक बात थी। यहां उल्टे दहेज दिया जा रहा था और दहेज के साथ बरात की खातिरदारी का खर्च भी लड़की के घर पर आ पड़ा था। मामा मन ही मन सोच रही थी—ऐसा तो कभी किसी ने सुना न था! व्याह से पहिली सांझ पति से उसकी काफी कहा सुनी हो चुकी थी। मन में तो वह चाह रही थी कि फिर बात बढ़ादे परन्तु मुराद के बेल्चे के डंडे की याद न भूलती थी। यह याद आ जाने पर वह कमर की डंडे से परिचित जगह को दबा कर चुप रह जाने के सिवा क्या करती?

अवसर के विचार से मामा ने भी अपना लाल रेशम का सबसे बढ़िया जोड़ा निकाल कर पहना था। मेल जोड़ में आई स्त्रियों के सामने उसने भरसक अपने मनका दुख प्रकट न होने दिया। परन्तु जब बहू को लेने आई स्त्रियां विदाई के लिये तैयार होने लगीं, वह बरात की स्त्रियों से विदाई का सगन मांगे बिना न रह सकी। बरात के साथ आई स्त्रियों ने नेग के पन्द्रह रूबल (रूसी रुपये) दे दिये परन्तु मामा अड़ गई कि और चाहिये। इस समय उसे मुराद के डंडे का भी डर न था, क्योंकि मेहमानों के सामने मुराद मार पीट न कर सकता था। बरात की स्त्रियों के लिये कठिनाई यह थी कि उनके पास उस समय और रुपया था ही नहीं।

अरतैक यह उलझन देख परेशान था। कुछ सोच कर वह झगड़े की जगह पहुंचा और ऊंचे स्वर में बोल उठा—"क्यों तुम सब लोग मामा के पीछे पड़ी हो जी? झूठ मूठ बातें बना रही हो?" वह बनावटी गुस्से में बरात की औरतों पर और ऊंचे चिल्ला उठा—"तुम्हारा ही नाम ले कर कोई ऐसी बातें कहे तो तुम्हें बुरा नहीं लगेगा? यों ही कहे जा रही हो। तुम उसकी बात तो सुनो! ढंग से बोलो! तुमसे वह पैसा क्या मांगेगी, अरे चाहे तुम ढंग से मांग लो तो और अपने पास से दे दे!"

मामा का सीना अभिमान से फूल उठा। गर्दन ऊंची कर वह बोली—"देख लो दूल्हा, कोई सुनता तो है नहीं, यों ही पीछे पड़ गईं। मुझे क्या ऐसा कमीनी समझ लिया है? मैंने कल्याम भी नहीं लिया। मैंने कहा, बरात का पुलाव हम करेंगे! तुम लोग कहो तो ऊंटों का भाड़ा भी मैं चुका दूं? घुड़सवारों का नेग मैं दे दूं? पर बात तो सुनो! दूल्हा बेटा, तुम्हीं समझाओ इन लोगों को। "मेरा तो जो कुछ है, अब तुम्हीं लोगों के लिये है।"

तेजेन में रिवाज चला आया है कि विदाई के समय दुल्हन को कालीन पर बैठाल कर, घसीटते हुये घर से बाहर ले जाते हैं। ऐना ने इससे इनकार कर दिया और एक चादर ओढ बाहर निकल आई। उसे ऊंट पर सवार कराने के लिये स्त्रिया आगे बढ़ी तो उसने इसमें भी सहायता लेने से इनकार कर दिया और लपक कर ऊट पर सवार हो गई।

६

खादिम, जब देखो अलनजर बे के लड़के बल्ले की शादी का किस्सा सुनाने लगताः—"जब बे ने ऐना को हथियाने मे मुंह की खाई और आस पास की बस्तियों में उसके नाम पर थू-थू होने लगी तो उसने दूर दूर की बस्तियों में बहू के लिये खोज करनी शुरु की। तेजेन के पच्छिम मे दूर बसने वाले अगेत खान्दान की उसने बहुत प्रशसा सुनी थी। बे ने उन लोगों के यहा सम्बन्ध मिलाने वाले भेजे।

बे ने अगेत लोगों की लडकियों की बहुत बढाई सुनी थी—अगेतों की बेटिया घर का दिया होती हैं। कहावत थी--अल्ला ने रुप बाटा था तो अगेतों की बेटिया दो हिस्से ले आई थीं और वैसी हीं वे सुघड़ और सुलच्छनी भी थीं। अगेतो की बेटी घर लाकर कभी कोई पछताया नही।

अगेत लोग पहले तो इस सम्बन्ध के लिये तैयार न हुये। उन्हे एत-राज था कि जिस दूल्हे की दुल्हन छोड़ गई उस घर में वे लोग अपनी लडकी कैसे दे दे? परन्तु फिर अलनजरों के खान्दान के नाम की बात से वे तैयार हुये तो कल्याम भी उन्होंने खूब बढाकर मांगा—चालीस ऊंट, चालीस रेशमी चोगे, चालीस भेडे, चालीस बोरे चावल, पाच घडे मीठा तेल, पाच पीपे चीनी और एक पीपा हरी चाय की पत्ती।

आखिर अगेतो की बेटी बुरके में मुह छिपाये अलनजर बे के खेमो मे आई और बल्ले के तम्बू मे उसका प्रवेश कराया गया। बे ने इस अवसर पर बस्ती के लोगों को दिल खोल कर दावतें दीं।

दूल्हे के घर की रसमें होने लगीं। बे के घर के लोग और मेहमान 'मुह दिखाई' के लिये बहू को घेर कर बैठे थे। बहू ने मुह उघाड़ने से इनकार कर दिया। इसके बाद दूल्हे के जूते उतारने की रसम की गई। बहू ने जूते उठा तो लिये परन्तु सम्भाल कर कोने में रखने के बजाय, क्रोध मे जूतों को बाहर

फेंक दिया। जब बहू को दूल्हे की खूंटी पर लटकी टोपी लाकर देने को कहा गया तो उसने बैठे बैठे सिर हिला दिया और उठी ही नहीं।

मेहमानों में से किसी ने चुटकी ली—"भैया बहू का मिजाज है। यह बल्ले खां को नचा देगी!"

परन्तु बल्लेखां बहुत प्रसन्न था। वह भौंवें चढ़ा कर बोला—"बल्लेखा को क्या अपने जैसा समझ लिया है!—यहां बीवी को इशारे पर न नचाया तो नाम बदल देना।"

बहू ने दूल्हे की बात सुनी तो आंचल की आड़ से उसकी ओर घूर कर देखा जैसे गली के कुत्ते अपने यहां घुस आये गैर कुत्ते को देखते हैं और दांत पीस लिये।

पहले चुटकी लेने वाला फिर बोल उठा—"हम शर्त बदते हैं बहू ने अगर बल्लेखा को हथेली पर सरसों जमाकर न दिखा दी।"

पहले दिन बहू अपना चेहरा दोनों हाथों में आंचल में लपेटे रही परन्तु दूसरे ही दिन उसने न केवल घूंघट उलट दिया बल्कि अपने तौर भी दिखने लगी। वैसे घर के लोगों ने प्यार से अतेरी का नाम "जली" (चमन की तितली) रखा था लेकिन महीना बीतते बीतते लोग उसे अतेरी बहरी* पुकारने लगे। उसके गठीले हठीले बदन की ऐंठन ओहरी तेहरी पोशाक में भी छिप न पाती।

शादाब दूसरी बहुओं को अपने हुक्म और दबदबे में रखती आई थी और उन्हें अपने घर के कायदे से चलाती थी। अतेरी ने सामना देने का पहले ही अवसर पर शादाब ने कान छू कर तोबा करली।

अतेरी ने पहले ही दिन सास को सुना कर कह दिया—"मैं कोई दुम लाती बच्ची तो हूं नहीं कि किसी से बोलना सीखूंगी.... किसी को हुक्म चलाने का शौक है तो अपनी लड़कियों पर पूरा किया करे।"

महीने भर में अतेरी की आवाज और कदमों की धमक घर के कोने कोने में गूंज उठी। लोगों की बात पूरी हुई—अतेरी मचमुच बल्लेखां के सिर पर चढ़ बैठी। शादाब दबे दबे कहती—"बाबा, यह तो ससुर को उंगली थाम कर नचाती है।"

---

* एक खूंखार शिकारी चिड़िया जो छोटे-छोटे पक्षियों का शिकार करती है।

एक दिन तन्दूर पर रोटी सेकने की बारी के लिये अतैरी का बड़ी बहू से झगड़ा होगया। बड़ी बहू ने कहा—"पहले आटा लेकर मैं आई हू। पहले मेरी बारी है।"

"बारी वारी मैं नही जानती"—अतैरी ने जवाब दिया—"पहले मैं रोटी सेकूगी। हट परे।"

अतैरी बड़ी बहू की परात परे हटाने लगी तो बडी बहूने उसका हाथ थाम लिया। अतैरी ने अपना हाथ छुड़ा एक हाथ बडी बहू की गर्दन मे डाला और दूसरे से उसका कमर बन्द पकड पहलवानो की तरह उठा राख के ढेर पर पटक दिया। ऊपर से उसके आटे की परात भी उसके सिर पर औंधा दी और गाली दे कर बोली—"यह ले खाज की मारी कुतिया! ले अपनी बारी ले।"

अलनजर बे के खेमों मे दो पाए तो क्या चौपाए भी अतैरी से कापने लगे। यहा तक कि बडे बडे बदमिजाज ऊट भी उसे देख ऐसे सन्नाटा मार जाते कि भेडिए का सामना हो गया हो। परन्तु एक बात किसी को समझ न आई कि अतैरी जाने क्यो, बे की भुलाई हुई, सताई हुई बेजबान पहली बेगम "मेहली" पर क्यों रीझ गई।

अतैरी को ससुराल आए अभी बहुत समय नहीं बीता था कि एक दिन बे ने मेहली को इतना पीटा कि बेचारी मे रोने चिल्लाने का भी दम न रहा। यह देख अतैरी गुस्से मे दात पीसती अपने रूमाल का छोर चबाती रही। उसका जी चाह रहा था कि मेहली की तरफ से बे की खबर ले परन्तु जैसे तैसे मन मार कर रह गई क्योंकि अभी वह नवेली दुल्हन थी और ससुर के सामने बोली नहीं थी। कुछ ही दिन बाद फिर अलनजर लाठी ले मेहली को पीटने लगा। अबकी अतैरी ने आ बे के हाथ से लाठी छीन ली और लाठी ले एक ओर खड़ी होगई।

बे की आखों से चिंगारियाँ बरसने लग गई। उसने एक ओर पड़ा बेलचा उठा कर अतैरी को ललकारा—"बदतमीज छोकरी, तेरी यह मजाल?"

अतैरी लाठी उठा और सीना निकाल बे के सामने आगई—"हिम्मत है तो मार मुझे देखू तेरी मर्दानगी?"

शादाब बेगम भागी हुई आई और बे की बाह पकड बोली—"क्या

जुल्म कर रहे हो ? शर्म नहीं आती ?"

अतैरी के सिर पर वार करने के लिए वे के हाथ में उठा बेलचा जहां का तहां रुक गया और धीमे, धीमे धरती पर आ टिका। वे अपना क्रोध वश में करने के लिए लम्बी लम्बी फुफकारें छोड़ता खड़ा था। अतैरी बहरी और आगे बढ़ आई। वे की ठोडी अपनी उँगली से उचका कर बोली—"जरा अपनी इस दाढ़ी का तो ख्याल कर! लानत है तुम पर! इस गरीब मेहली ने तेरा क्या बिगाड़ा है ? गरीब एक टुकड़ा खाकर चीथड़े लपेटे दिन काट रही है। सब जालिम इस गरीब को नोंच नोंच खा रहे हो!"

पिटते पिटते मेहली में इतना भी दम न रहा था कि पिटने का विरोध करती या रो भी सकती परन्तु अतैरी को अपनी ओर से बोलते देख मेहली का जी भर आया और वह चीख कर रो पड़ी। इसके बाद से मेहली पर मार न पड़ती। कम से कम अतैरी के आस-पास रहने पर कोई मेहली से कुछ न बोलता।

बहू के हाथों बेइज्जती सह कर अलनजर वे जल भुन गया। उसने अपने लड़के बल्लेखां को बुलाया और गाली देकर फटकारा—"तेरे जैसे लड़के से तो मैं बे औलाद मर जाता तो अच्छा था। तू एक औरत को काबू नहीं कर सकता ? तू दुनिया में क्या करेगा ? औरत को भी बस नहीं कर सकता तो सिर से टोपी उतार कर औरतों की तरह रुमाल बांध ले। औरत तेरी बांदी है या तू औरत का गुलाम है। तूने उसे सिर पर चढ़ा कर मेरी इज्जत धूल में मिला दी।"

बल्लेखां सिर लटका, आखें चुरा कर बोला—"मैं क्या करूं ? तुम्हीं ने उसे लाकर मेरे गले चक्की का पाट बांध दिया है।"

"मैं क्या करूं ?"—क्रोध में विवश हो वे भड़क उठा—"जा डूब मर किसी अंधेरे कुए में! अबे तू अलनजर की औलाद है ?……पूत पालने में ही सिखाए जाते हैं और बीबी को पहले दिन बस किया जाता है। मार मार कर भुजा दे कमबख्त को! मर जायगी तो लड़कियों की कमी नहीं है दुनिया में! बच रहेगी तो इशारे पर चलेगी! मर्द की आवाज पर औरत कांप न उठे तो वह मर्द क्या ? वह बलोच क्या ?"

बल्लेखां ने सिर झुकाए ही उत्तर दिया—"उसे मारना पीटना मेरे बस का नहीं। कहो मैं घर छोड़ जाऊं ?"

वे और भी नाराज हो गया—"मुंह काला करके दूर हो जा मेरे सामने से !"

वे, शादाब और वल्लेखा कोई भी अतैरी-बहरी को बस न कर सका। वे ने अपने विश्वासपात्र मित्रों से राय ली कि कुछ जादू टोना किया जाय, बहू को कैसे बस किया जाय? कोई भी उपाय न बता सका। मौलाना खोजा ने उसे समझाया—"मालिक वे, बिगड़ैल औरत से तो अजदहे भी कापते हैं"—अपनी बात के समर्थन में मौलाना ने किताब में पढ़ी एक कहानी सुनादी और फिर समझाया—"बिगड़ैल औरत का इलाज ? कम्बख्त को बेच नहीं सकते, घर से निकाल नही सकते, कत्ल नही कर सकते। बस खुदा हाफिज है। गले ढोल बध गया है तो गम खाओ, चुप बैठो। जितनी कूद फाद करोगे उतना ही ढोल और बजेगा। निभाने के सिवा उपाय क्या है। पड़ी रहने दो कमबख्त को !"

निराश हो वे खुदा से पनाह मागने लगा—"या अल्ला, इस मुसीबत से तेरे सिवा मुझे कौन बचा सकता है ?"

अतैरी-बहरी अपने जोर पर अलनजर वे के खेमों की मलका बन बैठी। मेहली बरसो सो मारपीट और उपेक्षा सह कर सूख कर काटा हो गई थी। उसकी सूरत भी घिनौनी और बेरौनक हो गई। अतैरी का राज मेहली के लिये फला। उसके दिन फिर गये। मारपीट न हो पाती और खाना कपडा भी मिलने लगा। शरीर पर मास चढने लगा। गालों पर सुरखी और आँखों में चमक आ गई। वह रेशमी पोशाक पहन सिर पर मशहदी शाल ओढ़ने लगी। उसकी चाल मे चुस्ती और मटक भी आ गई। अब वह कुये से पानी लेने जाती तो लोग घूरने भी लगते। और तो और अब वह अलनजर को भी भली लगने लगी . . ।"

× × ×

जग खत्म हो गई थी। मई के महीने मे वे का वल्लेखा के जन्म से पहले पला पलाया गोद लिया लडका मावेद भी लाम पर से लौट आया। वे ने महेली के रोने पीटने की परवाह न कर जार के अफसरों को प्रसन्न करने के लिये मावेद को लाम पर भेज दिया था। मावेद को जीता जागता लौट आया देख मेहली खिल उठी। अब महेली के ओठों पर हसी नाचती रहती, उसके गाल थिरकते रहते और निगाहे भी चचल हो उठीं।

मावेद के कुछ बदले हुये रंग देख अलनजर बे सनका। मावेद की चाल ढाल, उठना बैठना, बोलना, सभी बातें बदल गई थीं। अब वह रुसियो की तरह हाथ मिलाता था। वे अपने मन की शंका दबाये रहा और गोद लिये बेटे को प्यार से पुकार कर बोला—"आओ बेटा, तुम्हे देख जान में जान आई। दिन रात मन कांपता रहता था। लाम पर जाने कब क्या हो जाय? हजार शुक्र अल्ला का तुम आ गये। बेटा तुमने लोगों के सामने मेरा सिर ऊंचा कर दिया·· ····" बे शादाब बेगम को पुकार कर बोला—'बेगम, खुदा का शुक्र करो, घर का लड़का खान्दान का नाम उजला कर लाम पर से लौटा है। खुशी का मौका है। कुछ खाने पीने का इन्तजाम किया है तुमने! आने जाने वाले सभी लोगों के लिये भी चाय-पुलाव का खयाल रखना।" और फिर मावेद को सम्बोधन किया—"बेटा, मैं ही जानता हूं कैसे सीने पर पत्थर पर रख जार का जुल्म बर्दाश्त कर तुम्हें लाम पर भेज दिया। क्या कहूं, एक तरफ तुम्हारे लिये सीना कट-कट कर रह जाता था, दूसरी तरफ और मुसीबतें सिरपर टूट पड़ीं। मालकौश को डाकू उड़ा ले गये और फिर अजीज ने बगावत की तो लोगों ने गवर्नर के यहां जा कर चुगली करदी कि मैं भी बागियों के साथ हूँ। अब तुम्हें क्या बताऊं? तुम्हारे जाने के बाद मैंने गवर्नर के यहां दरखास्त दी कि कर्नल हमारे खान्दान से किनारा खाता है इसलिये मेरे बेटे को जबरन भरती करा लिया गया है। सुल्तान जार के वफादार खान्दाना के लड़का का लाम पर भेजा जाना बहुत बे इनसाफी है। तुम्हे वापिस बुलाने के लिये दरखास्त दी। मैं तो हर दम तुम्हारी राह तकता रहता था। हजार शुक्र है खुदा का कि मेरी मेहनत बर आई और जिन्दगी में तुम्हारा मुंह देख लिया।"

मावेद जानता था उसे बे ने स्वयम ही लाम पर भिजवाया था और उसका दिल अपने जबरन बने बाप से जला हुआ था। लौटकर उसने बे का दूसरा ही व्यवहार पाया। कुछ मेहली की ममता भरी पैनी-पैनी आँखों का भी असर था। उसके मन का क्रोध बुझने लगा। मावेद पर अपनी चिकनी चुपड़ी बातों का प्रभाव होता देख बे और भी बातें बनाने लगे—"बेटा, क्या कहूँ इतना समय तुमने लाम पर कैसे बिताया होगा? सोचते ही कलेजा मुंह को आने लगता है। पर बेटा तुमने मेरा नाम रौशन कर दिया। तुम्हीं घर के चिराग हो। बल्ले ने तो कुल का नाम डुबो दिया।

लाम पर तुम्हे खाने-पीने को भी तो ठीक से नहीं मिला होगा। कैसे दुबला गये हो। तुम्हे किसी बात की फिक्र की जरूरत नही। जरा खुराक बढ़ाओ और आराम करो! और अब तुम्हारे व्याह मे भी देर नही होनी चाहिये। जो लडकी तुम्हें जच जाय, बस तुम नाम भर बतादो! तुम्हारा व्याह हो जाय और फिर तुम्हारे लिये अलग से एक सफेद तम्बू लगवादूं तो मुझे संतोष हो।" शादाव को बुला कर बे ने हुक्म दिया—"लडके के लिये रेशमी जोडे बनवादो और मेहली से कहो, क्या करती है दिन भर? इसकी जरूरत खिदमत का ख्याल रखे! चाय और खाना हरवक्त उसके सामने रहना चाहिये।"

बे के मन मे मावेद से डर तो था। जब उसने नौजवान को फुसला कर अपने प्रति संतुष्ट कर लिया तो यह भी ख्याल आया कि बदमाश अरतैक जो न कर गुजरे गनीमत। ऐसे समय बल्ले अरतैक का सामना क्या करेगा? मावेद पर ही भरोसा किया जा सकता था। इसलिये मावेद का और भी अधिक लाड चाव होने लगा।

मावेद के साथ जबरन भरती किये गये बहुत से जवान मजदूरी के लिये बहुत दूर दूर के इलाकों मे भेज दिये गये थे परन्तु मावेद को भाग्य से तुर्कमानिया की रेलवे लाइन पर ही काम दिया गया था। वह दिन मावेद ने बडी कठिनाई से बिताये थे। उसने बे को सहायता के लिये कई पत्र लिखे परन्तु उसे कभी कोई उत्तर न मिला। उन पत्रों की बात याद आने पर बे कहने लगा—"बेटा, मुझे सदा चिंता बनी रहती थी जाने तुम पर क्या बीत रही होगी, विदेस मे गाठ का पैसा ही काम आता है। तुम्हारे लिये मैंने चार बार सौ सौ रुबल भेजे। दो बार तो डाकखाने से और दो बार उधर जाते जान पहचान के आदमियों के हाथ।"

"तुम तो जानते ही हो, इन डाकखानो का जैसा हाल है! पहुंचने की रसीद ही कभी नहीं मिली और न ही उन भले आदमियो ने लौट कर खबर द। रुपया तुम्हें मिल तो गया था?

भरती के समय मावेद धेला कौड़ी कुछ साथ न ले पाया था। पैसा जेब मे न होने से मावेद आवश्यक चीजो के लिये तडप तडप कर रह जाता। दूसरे साथियों और मजदूर को गरीबी मे तड़पते देख और उनकी बातें सुन सुनकर मावेद के मन मे जार की सरकार और इस सरकार की छत्र-छाया में ढेरो दौलत बटोर कर, दूसरो के कधो पर सवारी करने वालो के

प्रति घृणा और गुस्सा भरता रहा। वह मन में सोचता रहता--वे स्वयं आराम और मजे कर रहा है। मुझे मरने के लिये उसने यहाँ भेज दिया है अगर कभी घर लौटूंगा तो उस मक्कार जालिम से अच्छी तरह समझूंगा। इन विचारों के कारण लाम से घर लौटने पर मावेद गुमसुम बना रहता परन्तु बे के खुशामद के व्यवहार और मेहली के लाड प्यार से उसके विचार बदलने लगे। बे आँखों मे आँसू भर भर मावेद को अरतैक के दुरव्यवहार और दूसरी ज्यादतियों की कहानी सुनाता रहता।

"बेटा मुझे तुम्ही से उम्मीदे हैं"—अलनजर मावेद को समझाता—"बल्ले तो जैसा हुआ वैसा न हुआ। ये लड़का तो अपनी औरत से ही डर गया। तुम्ही अरतैक से बदला ले कर मेरी रुह को शाति दे सकते हो। नही तो कब्र में भी मेरे दिल मे बेइज्जती की आग दहकती रहेगी।"

मेहली के लिये तो मावेद का लौट आना मुर्दा शरीर मे जान पड जाने जैसा हुआ। वह मावेद के गले मे बाहे डाल, उसे चूम चूम कर परेशान कर देती। मेहली की बाहे गले पर छूने और अपने सीने पर उसका सीना बार-बार दबने से मावेद का शरीर चचल होने लगा। अतैरी की रक्षा में मेहली को किसी की मार और धमकी का डर न रहा था तिस पर उसे बहाना मिल गया कि बे ने उसे मावेद की खिदमत का खास ख्याल रखने का हुक्म दिया है—वह बे झिझक मावेद से चिपटी रहने लगी, जब देखो किसी न किसी बहाने उसी के पास बनी रहती। जब देखो मावेद के लिये चाय लिये खड़ी है। जब देखो साफ सुथरी चायदानी और प्याले को आंचल से रगड़ चमकाती रहती। सुबह के नाश्ते मे वह उसे ऊँटनी के दूध में शहद और मक्खन मिला कर देती। खिलाते पिलाते समय मावेद के शरीर से ऐसे सट कर बैठती कि उसकी छातिया मावेद के शरीर से दबती रहती और उसकी सास मावेद की मूछों मे उलझी रहती।

खाने, पीने, पहिरने की यह पौबारह देख मावेद सोचता--बचपन मे सही गरीबी और लाम पर भुगती मुसीबतों का बदला क्या अब व्याज समेत मिल रहा है? परन्तु मेहली की बाबत सोच उसे घबड़ाहट होने लगती। वह सोचता--यह क्या तमाशा है? मै अलनजर बे का लडका हू या मेहली का दोस्त? दोनो बाते साथ साथ कैसे चल सकती है? कई दिन तक वह इस दुविधा मे रहा आखिर एक दिन मेहली से उसने साफ-साफ बात की—

"देखो, मैसी, वे मेरा बाप है और तुम वे की वेगम हो।"

"पत्थर है वो तुम्हारा बाप ? जैसे तुम जानते नही ?"

"यह तो तुम ठीक कहती हो, लेकिन वे मेरे लिये बहू ढूंढ रहा है, और मेरा दिल तुमसे लग गया है ...... अब बताओ क्या होगा ?"

मेहली मावेद के गले मे बाहे डाल उससे चिपट गई और उसके गाल से अपना गाल सटा कर आखे मूद, घिघले गले से बोली—"नही यह नहीं हो सकता .... मैं तो जान रहते तुम्हे नही छोड़ूंगी।"

"लेकिन वे क्या करेगा ?"—मावेद का दिल धड़क रहा था।

"मैं कुछ नहीं जानती"— मेहली ने उत्तर दिया—"मेरे लिये जैसा खेमे के दरवाजे पर बधा हुआ 'अल्बा' (कुत्ता) वैसा वे।"

"लोग क्या कहेंगे ?"

"लोगो से मुझे क्या लेना है ? बकने दो लोगों को ? क्या जान दे दू लोगो के लिये ?"

"अगर वे जान गया तो ?"

"जब नहाने चली तो भीगने का डर ?" जिन्दगी भर मार ही तो खाई है। मेरा भी तो दिल है ?"

"तो फिर यहा गुजारा नही होगा !"

"मेरी जान, यहा कौन हमारे नाड़ गडे हैं ? दुनिया मे जगह की कमी नहीं है। यहा हमारे लिये कौन नेमतें रखी हैं। अल्ला ने हाथ-पाव दिये हैं। जहा हाथ-पाव हिलायेंगे चार रोटी कमा लेंगे, दिल को चैन तो मिलेगा।"

मावेद ने मेहली को सीने से लगा लिया। मेहली की गाले अनार के फूल की तरह गुलनारी हो गई।

"मेरी जान, मावेद ने मेहली के कान मे कहा—"सच कहू, मैं यहा बे के टुकड़ों की खातिर नही तेरे ही लिये पडा हू। नहीं तो इस बेईमान को कभी का लात मार जाता। तू मेरी, मैं तेरा ! जो होता है, हो ! लेकिन जब तक अपना इतजाम न हो जाय, बात दबाये रहो।"

मेहली ने सिर झुका कर अनुमति दी और सोचती रही—मैं किसी की

क्या परवाह करती हूँ। दुनिया जाय ठेंगे से। लेकिन अतैरी वहरी भाप गई तो बुरा होगा।

कुछ ही दिन बाद वे ने फिर मावेद से बात की—"बेटा, तुमने अपने ब्याह की बाबत कुछ कहा नहीं। बताया नही, कौन लडकी पसन्द आता है। न हो, मैं ही कोई लडकी देखू ?"

मावेद ने सिर झुकाकर उत्तर दिया—"अब्बाजान, यह साल जैसा बीत रहा है, सब तरफ परेशानी और तगी है। सभी तरह के झगडे बखेडे, चल रहे हैं। मेरा ख्याल था.... 'इस काम मे अभी जल्दी की जरूरत क्या ? जरा अमन और शान्ति हो जाने पर ही यह काम किया जाय तो ठीक हो।"

मावेद के उत्तर से वे का मन हरा हो गया—"बेटा तुम्हारे जैसे समझदार जवान से मुझे ऐसी ही आशा थी। जो तुम कहते हो वही ठीक है।"

७

अश्काबाद के जेल से छूटकर आने के बाद अरतैक ने १९१७ के दुश्काल का साल अपने परिवार में रह कर ही बिताया। वह जेल में कमजोर हो गया था। अच्छा खाना और आराम मिलने से उसका शरीर पनपने लगा। वह चाचा के साथ खेतों मे काम करता। उसका जीवन गाव के किसानो मे घुल मिल गया। वह उनके सुख दुख का भागी हो गया। पुराने परिचित चेहरों पर आंखे गड़ाये, उनकी बाते सुनता। वह सोचता रहता—लोग जारकी सरकार पलटने और आजादी की बाते करते हैं परन्तु कहा आजादी? कैसी आजादी? आखिर बदला क्या? तब और अब में अन्तर क्या हुआ?

जार फरवरी मे तख्त से उतार दिया गया था परन्तु सरकार का काम अब भी पुराने अफसरों के ही हाथ मे था। अफसर लोग जागीरदारों और दूसरे बडे आदमियो की राय और मदद से काम चला रहे थे। दो चार चेहरे और नाम बदल गए थे। गवर्नर को अब कमिस्सार पुकारा जाने लगा। दारोगा, माल अफसर जैसे के तैसे रहे। तेजेन में रेल के क्लब में हुई सभा मे जो पच चुने गए थे वे भी चालू इन्तजाम का साथ देने लगे।

शहरों मे गरीब लोगों और देहात के किसानो को जार की पुरानी सरकार और केरेन्सकी की नयी अस्थायी सरकार मे कोई भेद न जान पडा। दारोगा और दूसरे सरकारी अफसर पहले तो नयी पचायती सरकार से बहुत डरे। लेकिन कुछ ही दिन मे उन्होंने देख लिया कि घबराहट व्यर्थ थी। जार के राज मे कुछ तो डर जार के अफसरो का था, अब तो वे ही मालिक बन गए। गावों की जनता का हाल अकाल के कारण बहुत बुरा था—न अनाज, न मास, न दूध-घी! किसानों के शरीर सूखे चमडे से ढके ठठरी भर रह गए थे।

इस सूखे में किसान बरबाद हुए तो इसका कुछ असर दारोगा शबाखा, माल अफसर खोज.मुराद और कुलीखा पर भी पड़ा। मरे पिसे किसानों से इस हालत में क्या वसूली हो सकती थी? किसान लोग पेट की आग से व्याकुल हो, जमीनें छोड़ शहरों की ओर चले गए। जहा मौका पा कर कुछ मजदूरी-दिहाडी कर लेते और राशन की दुकानों के सामने घन्टों लाइन बांधे खडे रहते। जो लोग गावो मे रह गए वे रात के अधेरे में तीन-तीन चार चार आदमी मिल, लाठी, बेलचा और टूटी फूटी तलवारें ले, अलनजर वे जैसे अमीर लोगों की खत्तिया खोद अनाज चुरा लाने के लिए घूमते फिरते। कुछ हाथ लग जाता तो दस पाच दिन पेट भर अनाज पा जाते और कभी अनाज के बदले मार खा कर घर में सिर छिपा लेते। सरकारी अफसर इन लोगों का सामना न कर कतरा जाते। कभी कभी यह लोग इतना साहस कर जाते कि सरकारी डाक ही लूट लेते। ईरान से माल आने जाने पर सरकारी रोक थी, परन्तु अब चोरी चोरी सब कुछ आ-जा रहा था।

सरकारी अफसरों की आमदनी का बडा सहारा थी—किसानों से मिलने वाली रिश्वतें, नजराने और वसूलिया। किसानों की ऐसी हालत में उनसे कुछ पा लेने का अवसर न रहा। अफसरों ने अपने गुज़ारे के दूसरे तरीके निकाल लिए। अस्थायी सरकार ने गावों में सूखे और अकाल के कारण सहयोग सभाओं की मार्फत कुछ सामान सस्ते दामो देने का प्रबन्ध किया था। इसके लिए राशन कार्ड बाटे गए थे। अफसरों ने इन राशन कार्डों से ही अपना काम बनाना शुरू किया।

फरवरी की क्रांति के बाद, दूसरे सूबों की तरह तेजेन मे भी देहातों और शहरों में जनता की सहयोग सभायें बनादी गई थीं। जनता को कुछ बताए बिना सभी लोगों के नाम इन सहयोग सभाओं मे लिख लिए गए। गांव के सभी किसानों के नाम कार्ड बना दिए गए। इन कार्डों के हिसाब से शहर के राशन दफ्तरों में चीनी, चाय, मक्खन, रोटी वगैरा सरकार के यहाँ से मगा लिया जाता। अफसर लोग मन चाहे दामो इस माल की चोरबाजारी करते। किसानों को इस खेल का कुछ पता भी न था। उनके बाल बच्चे भूखे तडप रहे थे।

अरतैक का पुराना मित्र चरखेज अलनजर वे के ही गाव मे रहता था। एक दिन चरखेज तेजेन मे सहयोग सभा के दफ्तर मे गया। अवसर की बात, जिस समय चरखेज सहयोग सभा के दफ्तर में पहुँचा—कुलीखा और

मुरतज्जिम (अनुवादक) ताशेखा में झगडा चल रहा था। झगडा राशन कार्डों पर हो गया था और बात बात मे बहुत बढ गया।

"जुल्म की हद हो गई! अपनी पूरी बस्ती के किसानो के कार्ड तुमने ले लिए! तुम्हारा पेट नही भरा? अब मेरे यहा के किसानो के नाम भी भरे ले रहे हो! उनके नाम तुम्हे काटने पड़ेगे।"—ताशेखा चिल्ला कर बोला।

कुलीखा ने विरोध किया—"कौन कहता है यह नाम तुम्हारे किसानों के हैं? यह किसान तुम्हारे खरीदे हुए हैं? तुम्हारे गुलाम हैं? कौन हो तुम मुझसे नाम कटवाने वाले?"

"तुम्हे काटने पड़ेगे!"

"जबान सम्भाल कर बोल!" कुलीखा और बिगड़ उठा।

"क्यों, यह तेरे बाप की विरासत है?"

कुलीखा ने ताशेखा को बहन की गाली दे दी और ताशेखा ने उसके मुह पर घूसा दे मारा। दोनों गुत्थम गुत्था हो गए। दफ्तर की मेजे, कुर्सिया उलटने लगीं और आलमारी मे रखी हुई बोतलें गिर गिर कर टूटने लगी। पहरे पर खडे सिपाही ने यह झगडा देख सीटी बजा दी। ताशेखा ने कुलीखा की गर्दन दोनों हाथों मे ले ली और दबा कर उसका दम घोंट देने को ही था कि दारोगा बाबाखा दफ्तर मे आ गया। बाबाखा ने ताशेखा के हाथों से कुलीखा की गर्दन छुडवाई गर्दन छूटते ही कुलीखा ने एक वार ताशेखाँ के सिर पर कर दिया। परन्तु बाबाखा उन्हे फिर भिडजाने से रोक लिया और झगडे का कारण पूछने लगा।

"देखो इन बेवकूफो को?" कारण सुन उसने दोनों को फटकार कर कहा—"यह पढे लिखे आदमियों की हालत है कि नामो के लिये झगड रहे हैं! मैं तो काला अक्षर भैंस बराबर जानता हू लेकिन जितने चाहो नाम लिख सकता हू। नाम मैं बोलता हूँ। नामों की कमी है? तुम कार्ड लिख लिख कर ऊट लाद लो!"

"अरे बस्ती के किसानो के नाम खत्म हो गये हैं तो ढोर गोरू के नाम। जगल के जानवरों के नाम लिख सकते हो। लानत है तुम्हारी अक्ल पर! यह पढ़े लिखों का हाल है?"

चरकेज ने शहर से लौट राशन कार्डों का यह किस्सा अपने गांव मे और अरतेक के गाव मे सुनाया।

किसान हैरान थे—"सरकार किसानों के नाम पर राशन और सामान दे रही है। और खा जाते है शहर के अफसर मुहर्रिर! हमारे हाथ कुछ नहीं लगता!...... "

"ऊह, तुम किसान ही तो हो? किसान का क्या है? किसान ने अपनी कमाई, अपना हिस्सा कभी खुद खाया है?"

"अरे भाई उस रेवलूशा, इन्कलाब से क्या मिला?"

"इन लोगों ने तो कहा था कि जार मर गया। अब जार के दारोगा, माल अफसर, काजी, मुहर्रिर सब जायगे। किसान भर पेट खायगे पियेंगे! गरीब अमीर सब एक से रहेंगे और जाने क्या, क्या?"

"बातें तो ऐसे करते थे कि धरती पर ही बहिश्त बन जायगा।"

"हुआ क्या? जागीरदारों के हाथ और लम्बे हो गये! पहले यह लोग जार के नाम पर खाते थे, अब खुद जार बन गये।"

"अरे, जार मरा वरा कुछ नही?"

"अपने बडे-बूढों का ढग था कि जिस तम्बू में घर के लोग मरने लगें, उस तम्बू को फूक कर झोंपडी मे जा बसते थे।" चरखेज़ ने समझाया— "उन लोगों का कहना था कि तम्बू घर के लोगों को खाने लगते हैं। वैसी ही अपनी यह जिन्दगी है। भैया, या तो जिन्दा रहे, या मर ही जाय! रेंगते रहने में जिन्दगी क्या? किसान को या तो लोग दोहते जाते हैं या उसे कोल्हू में डाल कर पेर लेते हैं। जागीरदार और जार के लोग हमें मिटाये दे रहे हैं। यह लोग ही मिट जाय तो किसान जिन्दा रहे।

"चरखेज ने ठीक कहा भैया"—अरतैक बोल उठा· "एक बार फिर अजीज की तरह उठना होगा। उन लोगों को गिराना होगा।"

पिछले बरस की बगावत की सजा किसान अभी भूले न थे। किसी ने सिर झुकाये ही कहा—"तब भी क्या हुआ? दो उठे और मर गये। बाकी वैसे ही-पड़े रहे।"

लोग उठकर चले गये तो भी अरतैक सिर झुकाये बैठा धरती पर लकीरें खींचता कुछ सोचता रहा।

दूसरे दिन वह तड़के ही दारोगा बाबा खा के यहाँ पहुँचा। बाबा खा अरतैक की रुखाई और आँखों में बेचैनी देख भाप गया कि अरतैक झगडे के लिये आया है। शायद जेल भेजे जाने का बदला लेने आया हो!

बाबा खा ने समझदारी से काम लेना उचित समझा। अरतैक के लिये तुरत चाय और मिस्री मगाई और मुस्करा कर अगवानी के लिये बोला—"आओ भैया आओ, मुबारक हो घर लौटे हो! तुम्हे आये तो कई दिन हुये ! तुम्हारे यहाँ जाने की बात सोच ही रहा था। अब तब मे ही वक्त निकल गया। जब चलने को हुआ, कोई न कोई आ बैठा, कही न कही जाना पड गया। अरे सरकारी काम का कोई ठिकाना है। एक झझट हो तो बताऊ। जब तुम्हे वे लोग पकड कर ले गये, क्या बताऊ बेबसी मे चुप रह जाना पड़ा। भाई पडोस का नाता कोई मामूली चीज है ? सोचा, मुझे अब कितने दिन जिन्दा रहना है ? अब तुम्हारा मुह क्या देख पाऊ गा ? हजार शुक्र है अल्ला का ! हा तुम्हारा ब्याह हो गया मुबारक, मुबारक ! तुम्हारे दो हाथ की जगह चार हाथ हो गये। भाई तुमने अलनजर बे को खूब सीधा किया··· ··वाह !"

अरतैक बाबा खा को खूब समझता था। मन मे उसने सोचा यह मुझे कैसे बना रहा है ? बेवकूफ समझता है। वह चुप रह गया।

अरतैक की चुप्पी से बाबा खां भाप गया कि अरतैक उसकी बातों में नहीं आया। उसने पैंतरा बदला—'भैया अरतैक तुमने बहुत जुल्म सहा है। खैर इसका बदला तुम्हे अल्लाह के यहा तो मिलेगा ही लेकिन अब तुम्हारा ब्याह हुआ है। घर मे खर्च भी होता है। खर्च की जरूरत होगी। पडोसी से क्या पर्दा ? जिस चीज की, जिस मदद की जरूरत हो, अपना ही घर समझ कर कहना। अल्लाह के करम से इस घर में दो-एक आदमी के लिये कुछ हो ही सकता है। और फिर तुम्हारा तो यह अपना ही घर है, तुम्हारे जैसे बहादुर का तो हक्क है। तुम्हारे ब्याह के लिये एक बोरी गेहूँ और दो भेड़े रखवाली थी। क्या बताऊ, उलझनों में टलता ही गया, अब तक न भेज सका। मगवा लेना और अपना घर समझ कर जो जरूरत हो कह देना, तकल्लुफ करो तो मेरी कसम है !"

"एक बोरी गेहूँ, दो भेडे और जिस चीज की जरूरत हो!" कोई और सोचता—"कितनी मेहरबानी है ! अकाल के दिनो में यह कम नही है ? सम्भाल कर खर्चें तो तीन चार महीने का गुजारा है। और बेच लें तो पूरा तम्बू कालीनों से जगमगा उठे। आदमी छः महीने की मेहनत में भी इतना नहीं कमा सकता। इतने माल को कौन ठोकर मार सकता है। आज तो बाबा खा का मुह देखना मुबारक हो गया। मा और ऐना सुनेगी तो प्रसन्न

हो जायगी। इतने में से पडोसी खादिम की भी थोड़ी बहुत सहायता हो सकती है। आज तो खुदा छप्पर फाड कर दे रहा है।—परन्तु अरतैक ने यह नहीं सोचा। उसने सोचा—

आज तो यह खूब माल खिलाने को तैयार है। लेकिन इस बदमाश का माल जहर है। जब लोग भूख से बिलबिला रहे हैं, यह रिश्वत खाना हराम नहीं तो क्या है! जो भेड गल्ले से बिछडी, भेडिये के मुह गई। जहां साथ के लोग भूखे मरेंगे वहा मैं भी मरूगा। अगर साथ के लोग खा पायेंगे तो मे भी खा लूगा। साथियों का साथ छोड़ना सबसे बडा गुनाह है।

"बाबा खा,"—अरतैक ने उत्तर दिया—"आपकी मेहरबानी के लिये बहुत शुक्रिया। जैसे तैसे गुजारा चल रहा है। हाल तो सभी किसानों का बहुत बुरा है। सभी को मदद की जरूरत है!"

अपनी चाल खाली जाने से बाबा खा को निराशा के साथ ही क्रोध भी आ गया। मन ही मन कहा- "भूखे ही मरना चाहता है तो तुझे रोक कौन रहा है!"—अरतैक को जब उसने गिरफ्तार करवा पुलिस के हाथ जेल भेजा था, उस समय वह और भी बुरी तरह डाट सकता था परन्तु अब समय बदल गया था। भूख से तडपते किसान मरने मारने पर तुले थे। ऐसी हालत मे किसी एक से भी झगड़ा हो जाय तो बहाना पाकर गाव का गाव सिर पर आ पडे और घर बार लूट ले! तब बचाने कौन आयगा? गवर्नर आन्तोनोव तो खुद ही पर कटे बाज की तरह दुबका बैठा है।

पचायत? ·····उसकी परवाह कौन करता है। माल अफसर मुराद? वह पहले अपनी जान ही बचाले। क्या दिन थे कि कुलीखा से लिखवा कर एक दरखास्त खूफिया पुलिस को भिजवादी! एक अरतैक क्या, सौ अरतैक पल भर में मिट्टी में मिल जाते। परन्तु वे दिन तो अब थे नहीं। अपमान और क्रोध निगल कर बाबाखा दुखी स्वर में बोला—"भैया कुछ मत कहो! लोगों की हालत तो देखी नहीं जाती। सच कहता हू, यह हालत देख कर तो मुह में दिया अनाज बाहर को आता है। लेकिन कोई करे तो क्या! मैं अपना घर भर उठा कर बाट दूं तब भी क्या बनेगा? समुदंर में बूंद भर का भी तो फरक नहीं पडेगा! दिल पर जो बीत रही है, मैं ही जानता हू। कहने से क्या होता है! कुछ इंतजाम होना चाहिये भैया! अपने बूते भर कर ही रहा हू। सभी अफसरों और पचों के दस्तखत से एक दरखास्त सरकार के यहाँ मैंने लोगों की मदद के लिये भिजवाई

है। हम ने लिखा है—"देहात के किसान बरसों शहरो का पेट भरते रहे हैं। जार के अमले को, उसकी फौजों को खिलाते रहे हैं। मुल्क भर का पेट हम ने बरसों भरा है, अब किसानो पर मुसीबत पडी है तो क्या उनकी मदद नहीं करोगे? उन्हे भूखा मर जाने दोगे? मुसीबत में घर के जानवर को भी अपनी रोटी का हिस्सा बाट कर जिलाया जाता है। आज देहात का किसान दम तोड़ रहा है। आज उसके मुह में रोटी का टुकडा दो! कल तुम हम से दस गुना ले लेना। अर्जी अश्काबाद जा चुकी है। सूबे का कमिस्सार कोल्माकोव अपनो जान पहचान का है। देखो, कुछ तो किया ही जायगा ...।"

अरतैक इस बहानेबाजी से थक कर बीच ही मे बोल उठा—"बाबा खाँ, लोग कहते हैं कि सरकार देहात के किसानों के लिये अनाज और दूसरा सामान भेज रही है।"

"क्या कहते हो, यही होता तो और चाहिये क्या था? अरे मैं ही न आकर यह बात तुम से कहता?"

"लोग कह रहे हैं कि सहयोग सभाओं के दफ्तरो से सामान बट रहा है।"

"उह, वह तो शहरों के लिये है भाई, देहात के लिये कहा?"

"सुना है, सब सरकारी अफसर और मुहर्रिर हजारों राशन कार्ड दबाये बैठे हैं।"

"यह झूठी अफवाहे हैं। कह दे रात खेतों में खूब बारिश हुई तो क्या जबान थोडे ही पकड सकते हैं।"

"सुना है अफसर लोग फर्जी नामों से कार्ड बना रहे हैं। सुना है बाबाखा ऊटो के बोझा भर राशन कार्ड बनवा रहे हैं।"

बाबाखा का चेहरा सुर्ख होगया और गर्दन पर नीली नसे उभर आई, माथे पर त्योरिया गहरी होकर आखों में लाली आगई। अंगीठी की ओर थूक कर आखे झुकाये ही बाबाखा बोला—"अरतैक यह क्या दिल्लगी कर रहे हो तुम?"

"बाबखा, लोगो का पेट काटना दिल्लगी है?"

"लोगो का पेट कौन काट रहा है?"

८

उन दिनों चर्नीशोव को सैकड़ों ही उलझनें थीं। मिलने जाने वालों को कभी ही वह घर पर मिलता। अरतैक को भाग्य से वह घर पर ही मिल गया। सलाम दुआ होने पर पहले चर्नीशोव ने ही शिकायत की-"अश्काबार से लौट कर तुम यहाँ आए और मिले बिना ही चले गए। इन्तजार भी की। बड़े वैसे आदमी हो।"

अरतैक ने मुस्करा कर उत्तर दिया—"खूब, उल्टा चोर कोतवाल को डाटे ! मैं तुम्हारे यहाँ कितने चक्कर काट गया। तुम एक बार भी मेरे यहा न आए, अच्छे मित्र हो ! मेरा ब्याह हुआ, तुमने उसकी भी कोई परवाह न की। अच्छा, अगर तुम हमारे यहा आकर दस दिन के लिए न रहो तो फिर मैं भी कभी तुम्हारे यहा नहीं आने का।"

चर्नीशोव ने हंस कर अरतैक के गले में बाँह डाल दी और बोला—"अरे आयेंगे क्यों नहीं तुम्हारे यहा, अपना ही घर है। जरा वक्त ठीक हो लेने दो। आज कल तो देहात में तुम्हे अनाज-दाने की भी तकलीफ होगी ?"

"नहीं मित्र, ऐसी बात तो नहीं है। कम से कम मैं खुशकिस्मत हूं। मेरा चाचा और ससुर दोनों मदद कर रहे हैं। तुम आओ, तुम्हारे लिये दूध, मक्खन, मास सब हो जायगा।

"चलता तो तुम्हारे साथ ही लेकिन क्या कहूं, फसा हुआ हूँ बुरी तरह ! लोग छुट्टी नहीं देंगे।"

"हफ्ते दो हफ्ते के लिये भी छुट्टी नही मिलेगी ?"

"हफ्ते दो हफ्ते ? यहा घण्टे भर की भी छुट्टी नहीं है। आज कल तो रात में सोने के लिये भी समय नहीं।"

"ठीक कहते हो भैया"—अरतैक गम्भीर स्वर में बोला—"मैं भी सोच

रहा हूँ कुछ करना होगा, जार तो मरा परन्तु उसके बेईमान अफ़सरों के पंजे अभी तक जमे हुए हैं। इन लोगों से अपनी गर्दन छुडाने के लिए जनता को एक बार फिर उठना होगा।"

चर्नीशोव ने चेतावनी से उसकी ओर देख कर उत्तर दिया—"पिछले वर्ष अजीज के साथ बगावत में शामिल होते समय तुमने हमसे राय भी नहीं ली। मैंने तुम्हे तब भी कहा था कि जरा सोच विचार कर चलो परन्तु तुमने कुछ परवाह नही की। तुम्हे अजीज पर बहुत भरोसा था; अब कहा है अजीज ! तुम लोगों ने शहर पर हमला बोल दिया, हुआ क्या ? हम लोग जानते थे तुम्हारी बगावत का कुछ नही बनेगा। हम लोग तुम्हारी सहायता भी नहीं कर सके ! अलबत्ता, तुम लोगों पर हमला करने के लिए जो फौजी मोटरे आई थी उन्हे हम लोगों ने तोड़ गिराया। तुम्हे शायद यह पता भी नहीं लगा और न इससे तुम लोगों को कुछ फायदा ही हुआ। हम लोगों के कई काम के साथी उस समय मारे गए। यदि वे लोग रहते तो इस क्रान्ति के समय बहुत सहायक होते।" चर्नीशोव चुप होगया और कुछ सोचने लगा। अरतैक भी कुछ देर चुपचाप सोच कर सहसा बोला—"चर्नीशोव तुम्हारा खयाल है मैंने गलती की......"

अरतैक को सुन लेने का सकेत कर चर्नीशोव बोला—"जो हुआ सो हुआ। तुम्हारी बगावत मे एक तो कोई राजनीति समझने वाला नेता नहीं था और न तुम्हारी तैयारी ही ठीक ढग से हुई थी लेकिन फिर भी उस बगावत का भी अपनी जगह लाभ हुआ ही। यह अच्छा हुआ कि अब की तुमने मुझसे बात करली। दो महीने पहले तुम मुझे बगावत के लिये कहते तो मैं भी तैयार हो जाता परन्तु इधर रूस से आये कुछ पर्चे और किताबे मैंने पढी हैं और बात मेरी समझ में आई है। रूस से पार्टी के साथियों और लीडरों ने जो तरीका बताया है वह मुझे समझ आता है। रूस में दूसरी क्रान्ति की तैयारी हो रही है। किसी भी समय यह क्रान्ति हो सकती है। परन्तु यह क्रान्ति केवल सरकार का काम हाथ में ले लेने के लिये ही नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के लिये, सामाजिक क्रान्ति करनी होगी।"

अरतैक चर्नीशोव की बात के अन्तिम शब्दों का कुछ अर्थ न समझ पाया परन्तु इतना जरूर समझा कि कोई बड़ा परिवर्तन होने वाला है।

चर्नीशोव बोला—"केरेस्की की सरकार पूरी जमीन किसानों को बाटने

के लिये तैयार नहीं। यह सरकार मिलें मजदूरों के हाथ में देने के लिये तैयार नहीं। इस सरकार के अमल और जार के अमल में भेद ही क्या है? यह सरकार जग खत्म करने के लिये भी तैयार नहीं। बड़े व्योपारियों और पूजीवालों के फायदे के लिये यह सरकार लड़ाई चला रही है और गरीब जनता लड़ाई में गाजर मूली की तरह कट रही है। लोगों को मिला क्या? आजादी क्या हुई?—" इसके बाद चर्नीशोव अरतैक को ताशकन्द, बाकू और पेट्रोग्राड में मजदूरों की हालत के बारे में और मजदूरों पर नयी सरकार के दमन की बातें सुनाता रहा। और फिर बोला—"अरतैक, तुम ईमानदार आदमी हो। तुम इस सरकार के तरीके और चालों को समझो और देहात के किसानों के सामने यह सब बात रखो। एक बात मत भूलना, किसानों को जो कुछ करना हो, मजदूरों को साथ ले कर ही कर सकेंगे। यदि किसान अकेले बगावत कर बैठेंगे तो पिट कर रह जायगे। किसानों की बगावत में जो लोग नेता बनेंगे, वे खुद जागीरदार बन कर किसानों के सिर पर बैठ जायगे। किसानों को आजादी केवल मजदूरों की नेता बोलशेविक पार्टी ही दिला सकती है। इस पार्टी के बताये रास्ते पर चलने से ही सवाल हल होगा। वक्त से पहले कुछ कर बैठोगे तो अपने पाव कुल्हाड़ी मारोगे। अभी तुम किसानों को समझा कर अवसर के लिये तैयार करो ··"

अरतैक ने दारोगा बाबा खाँ की राशन कार्डों की चोरी की बात चर्नीशोव को सुनाई और ऐसे बादमाशों को ओहदों से हटाने का अनुरोध किया।

चर्नीशोव ने उत्तर दिया—"मै जानता हूँ खूब अंधेर गर्दी हो रही है। परन्तु अंधेर गर्दी करने वाले दो चार आदमियों को ठोक पीट कर निकाल देने से कुछ नहीं बनेगा। इससे किसानों की भूख नहीं मिट सकेगी। पहले ज़रूरी है कि किसान जनता को इन बातों का पता लगे और किसानों की ओट में इस इंतजाम के खिलाफ पंचायत में आवाज उठे। तुम्हें इस काम मे मैं पूरा सहायता देने के लिये तैयार हू।"

चर्नीशोव अरतैक को किसानों में आन्दोलन चलाने का ढग बता रहा था कि इतने में चरखेज तेज कदमों से भीतर आया। चर्नीशोव की बात काट कर गुस्से भरे स्वर मे उसने बताया कि बाबाखा आज शहर में आया है और अपने मालिकों—खोजा मुराद खां और कुलीखां ने अरतैक

की शिकायत उसने की है। उन लगों ने अरतैक का इतजाम करने का फैसला किया है। जान पडता है अरतैक पर फिर कोई मुसीबत आने वाली है। उसने अरतैक को इसके लिये सावधान रहने के लिये कहा।

अरतैक पहले ही भरा बैठा था। चरखेज की बात सुन वह उफन उठा—"यह लोग मेरा इतजाम करेंगे ? मैं , पहले इन लोगों का इतजाम किये देता हू। एक दफा मैं इन लोगों के हाथ पड गया यही क्या कम है। देखूगा मुझे कौन हाथ लगाता है ? जो पहल करे सो जीते—मैं ही क्यो न उनके यहाँ चलू ?"—उसने चरखेज से पूछा—"सहयोग सभा का दफ्तर है कहा ?"

पलभर के लिये चरखेज ठिठका—अरतैक कोई जल्दबाज न कर जाय ? और फिर सोचा—पहल करना ही ठीक है और बोला—"दफ्तर दूर नहीं है। चलो मैं तुम्हारे साथ चलू !" "लेकिन वहा क्या होगा ?"

"यह वहीं जा कर देखेगे कि क्या होगा ! यहाँ बैठे बात बनाने से क्या लाभ !"

चर्नीशोव ने अरतैक का चेहरा देख कर भाप लिया कि इस समय यह मानेगा नहीं परन्तु फिर भी समझाया—"अरतैक, सुनो, इस तरह जल्द बाज मत करो। मैं यह नहीं कहता कि तुम इन लोगो से मार खा जाओ परन्तु यह भी सोचो कि हम लोग अभी जिस तरीके से काम करने की बात कर रहे थे ···· जरा सम्भल कर चलो !"

"मैं तुम्हें बडे भाई की जगह मानता हू" अरतैक ने चर्नीशोव को उतर दिया—"परन्तु यह बात दूसरी है। मै एक बार मार खाचुका हू ··· अब की नहीं खाना चाहता !"वह चरखेज को साथ ले चल दिया।

इन दोनों के चले जाने के बाद चर्नीशोव इन लोगों के बारे मे ही सोचता रहा और अपनी पत्नी 'अन्ना' से बोला—"तुम इस लड़के को पहचानती हो ?—इन लोगों ने समझा होगा कि छः महीने जेल में सड़ा कर इसे दबा लिया। वो और भी आग बगोला बन कर निकला है। उसे धुन सवार हुई है तो उसे कोई रोक नहीं सकता। आदमी को होना भी ऐसा ही चाहिए, बस यह है कि राह से फिसल न जाय ! पर अकेला है ! अकेले आदमी को राह भटकते देर नहीं लगती ! "मुझे डर है वह मुसीबत में न फस जाय ! मैं जाकर देखता हू ··· " चर्नीशोव ने टोपी सिर पर रखी

और चल दिया।

अरतैक और चरखेज सहयोग सभा के दफ़्तर में पहुंचे और सभा के प्रधान से मिले। प्रधान साहब ने उनकी ओर देखा और बेपरवाही से आखें फेर लीं।

चरखेज बोला—"हम लोग 'कोश' के किसानों की ओर से आये हैं। हमारे यहा किसानों को खबर मिली है कि हम लोगों के नाम से राशनकार्ड बना बना कर आप के दफ़्तर के मुशी और हाकिम सभा का राशन खा रहे हैं। यही बात हम जाचने आए हैं। हम नामों की फहरिस्तें देखना चाहते हैं।'

प्रधान के माथे पर त्योरिया गहरी हो गईं। वे गुस्से में बोले—"हम तुम्हारे किसानों और मुशियों को नहीं जानते। जिन लोगों के नाम कार्ड हैं, उन्हें राशन दिया जाता है। हमारे यहा कोई फहरिस्तें नहीं हैं।"

अरतैक समझ गया कि यह साहब भी खाऊ हैं, लूट में अपना हिस्सा पाते हैं। सीधे सीधे बात नहीं सुनेंगे। परन्तु चर्नीशोव की बात याद कर वह नम्रता से बोला—"जनाब, हम लोग कागजात उठा कर ले नहीं जायगे। देख भर लेना चाहते हैं। हो सकता है, हमारा भी नाम आपके यहा हो!"

"मैं और कुछ नहीं सुनना चाहता!'

"यह तो न्याय नहीं है?"

"मैंने कह दिया कि कोई कागज नहीं दिखाया जायेगा!"

"हम देख कर जायगे!"—अरतैक मेज पर हाथ पटक ऊंचे स्वर में बोला।

प्रधान साहब सहम गये। मेज पर हुए धमाके से उनकी मोटी नाक पर टिका चश्मा फिसल गया। सँभल कर वे बोले—"आप लोग चिल्लाते क्यों हैं? यह हाट-बाजार की जगह नहीं, दफ्तर है।" वे फिर तेज हो उठे—"आप लोग बाहर जाइये!"

अरतैक ने हाथ बढ़ा उनकी ठोटी पकड़ ली, और बोला—"आंखें मत दिखाओ! अभी उठा कर नीचे पटक दूंगा। दफ्तर का सब रोब धरा रह जायगा। कागज निकालो!"—अरतैक ने दूसरे हाथ का घूंसा उनके सिर पर उठा कर दिया।

प्रधान साहब के कंधे सिकुड़ गये और एक लम्बा सास ले उन्होंने

कुर्सी की पीठ का सहारा ले लिया और फिर मुस्करा कर बोले—"अरे भाई, बिगड़ते क्यों हो? .....नाराज होने की बात क्या है? बैठिये तो! मैं तो यह पूछ रहा था कि आप लोग कौन हैं? आप गांव वालों की ओर से आये हैं, गाव के प्रतिनिधि हैं? सौ दफे देखिये कागजात! जो समझ न आये, मुझ से पूछ लीजिये! और वैसे आप को जो कुछ चाहिये, कहिये! इस समय तो चाय भी नयी आ गई है!"

अरतैक और चरखेज काग़जों में नाम देखने लगे। कोश के आस पास के सैकड़ों किसानों के नाम चढ़े हुये थे। अरतैक का भी नाम मौजूद था।

अरतैक ने पूछा—"इन लोगों के कार्ड कहा है?" "मेरा खयाल है"—प्रधान ने उत्तर दिया—"कुली खा के यहा होंगे या खोजा मुराद के पास!"

"यह हमारे कार्ड हमें मिलने चाहिये।"

"मेरे हाथ में तो हैं नही। यह कार्ड जांच कमेटी से मिल सकेंगे। हाँ इनकी लिस्ट चाहिये तो तुम मुझसे ले सकते हो।"

अरतैक ने उठ कर कहा—"चरखेज, जाच कमेटी को कहां खोजते फिरेंगे, आओ कुली खा के यहा चलो!"

चरखेज का दूसरी जगह जरूरी काम था परन्तु अरतैक इंतजार के लिये तैयार नही था। वह अकेला ही कुली खा के दफ्तर में पहुँचा।

कुली खा और बाबा खा एक साथ बैठे अरतैक की शिकायत मे दरखास्त लिख रहे थे। अरतैक को देख बाबा खा विस्मय से घबरा गया। कुली खा भी घबराया परन्तु अपने को सम्भाले रह और अरतैक को सम्बोधन कर बोला—"आओ, आओ, बैठो, क्या खबर है?"

अरतैक ने बिना लाग लपेट के सीधे ही उत्तर दिया—"खबर यह है कि सहयोग सभा के दफ्तर से मालूम हुआ है कि हमारे गाव के किसानों के सब राशन कार्ड तुम लोगों ने हथिया लिये हैं। अब अगर पेट भर गया हो तो हमारे कार्ड लौटादो!" "कैसे कार्ड?"

"बनो मत कुली खा। भोले मत बनो?"

कुली खा ने क्रोध में होंठ काट कर बाबा खां की ओर देख कर पूछा—"यह कौन आदमी है? .. बड़ा बदतमीज है!"

बाबा खा ने धीमे भारी स्वर मे उत्तर दिया—"इसे जानते होगे, यह

हमारी बस्ती का आदमी है—अरतैक न शाली !"

"ओ हो, अरतैक ? अश्काबाद की जेल में रह कर इसका मिजाज ठीक नहीं हुआ। फिर लोगों को भडका रहा है !"—कुली खा ने अरतैक की ओर देखा—"अच्छा किया तुम खुद आ गये, नही तो बुलाना पड़ता।"

"जब कहो मै हाजिर हो सकता हू।"

"अच्छा, इस बात को रहने दो, तुम्हे और क्या काम है ?"

अरतैक ने एक कुर्सी खींचली और कुली खा के साथ बैठ गया और मुस्करा कर बोला—"कुली खा, दूसरे काम बाद में होगे पहले कार्ड निकालो।"

लगडे मीर मुंशी ने मूछो पर हाथ फेर क्रोध मे पूछा—"हूँ, तुम मुझसे हिसाब तलब करने वाले कौन हो ?"

"मै अपने कार्ड तलब कर रहा हू !"

"तलब कर रहा हू ·····मेरे पास तुम्हारे पचानवे कार्ड हैं। लेकिन इस वक्त नहीं मिल सकते। कार्ड लेने है तो फरवरी की तीस तारीख को आना।"

इस मजाक से अरतैक के होंठ क्रोध से फड़क उठे। वह कुली खा के और नजदीक सरक कर बोला—"कुली खा, तुम हद से बढ रहे हो !"

"यह तो मेरी आदत ही है।"—कुली खा मुस्करा दिया।

"कार्ड नहीं दोगे ?"

"मै ने तुम्हें तारीख बतादी है।"

अरतैक का सिर घूम गया। उसे समझ न आया कब और कैसे उसके हाथ का मुक्का कुली खा की नाक पर जा पड़ा। कुली खां अपनी लगड़ी टाग पर गिर पडा। वह उठने का यत्नकर ही रहा था कि अरतैक ने धम्म-धम्म चार लाते उसकी पीठ पर जमादी। कुली खा फिर गिर पडा। उठने का यत्न न कर कुली खा ने जेब से पिस्तौल निकाल कर सम्भाली। अरतैक ने तुरत एक ठुड्डा उसके हाथ पर दिया। पिस्तौल कुली खां के हाथ से छिटक कर दूर जा पडी। अरतैक ने पिस्तौल उठा कर अपनी जेब मे रख ली। अरतैक ने कुली खां को कोट के कालर से पकड़ ऊपर उठाया और तख्त पर पटक उसके नाक, मुंह और जबडों पर कई मुक्के

जमाये। कुली खा बेदम हो जाने से चिल्ला भी न सका। बाबा खाँ दफ्तर से निकल जोर से चिल्लाने लगा—"दौडो-दौडो खून हो गया—। पुलिस ·· ·!"

इसी समय खोजा मुराद बौखलाहट मे चिल्लाता हुआ भीतर आया—"इकलाब, इंकलाब, बोल्शेविक, लेनिन!" परन्तु सामने का दृश्य देख विस्मय से उसकी बोलती बन्द हो गई। बडी कठिनाई से उसके मुह से निकला—"ई-इकलाब!"

उसके पीछे-पीछे आया चर्नीशोव। उसने गम्भीर स्वर मे खोजा की बात का समर्थन किया—"ठीक है, इकलाब की बात ठीक है। तार घर से खबर मिली है कि इकलाब हो गया है। उसने कमरे के चारों ओर आँख दौड़ाई। स्थिति समझ उसने आवेश से हाफते हुये अरतैक को बाह से थाम लिया और खीचता हुआ बाहर ले गया!"

"मैं तुम्हे जाने कहा कहा खोजता फिरा छोड़ो इस झमट को। कितने जरूरी काम है जल्दी आओ!"

६

पहली बार फरवरी १६१७ में क्रान्ति हुई थी। उसी वर्ष अक्टूबर में फिर क्रान्ति हो गई। रूस में केरेन्स्की की सरकार टूट गई और उसके साथ ही प्रान्तों और प्रदेशो की सरकारें भी टूट गई। गवर्नरों के अधिकार पचायतों के हाथ मे चले गये। परन्तु इन पचायतों में केवल कम्युनिस्ट और बोल्शेविक लोग ही नही दूसरे लोग, सोशलिस्ट, मेन्शेविक और मध्यम श्रेणी के बडे लोग भी थे।

जल्दी मे प्रायः यह भी हुआ कि महकमो—विभागों के नाम और दफ्तरों पर लगे साइनबोर्ड तो बदल गए लेकिन काम पुराने ढर्रे पर ही चलता रहा। अश्काबाद मे तुर्कमानी और अजरबैजानी मध्यम श्रेणी के लोगों ने एक प्रादेशिक कमेटी बनाली और इसका प्रधान जार के ज़माने के बडे अफसर कर्नल उरेज सरदार को बना लिया।

तेजेन में मजदूर और फौजी सिपाहियो के प्रतिनिधियो की एक नयी पचायत बन गई। इन प्रतिनिधियों में चर्नीशोव और कुलीखा चुन लिये गए। कुलीखा ने एक दम एलान कर दिया कि वह सोवियत सरकार का कट्टर पक्षपाती है।

ठीक इसी समय तेजेन में १६१६ की स्थानीय बगावत का नेता अजीज खा चापेक भी फिर से आ पहुँचा। तुर्कमानिया के बहुत से लोगो का अब भी अजीज खा पर बहुत विश्वास था और वे उसे अपना नेता समझते थे।

अजीजखां १६१६ की बग़ावत मे हार कर अफगानिस्तान भाग गया था और अब तक वहीं छिपा था। तेजेन में आते ही अजीज ने अपना संगठन शुरू कर दिया। अपना कार्यक्रम उसने किसी को न बताया परन्तु फिर भी भूख से तडपते और सरकार के प्रबन्ध से असन्तुष्ट लोग उसके सगठन में आने लगे। जागीरदार बे और अमीर लोग भी समाजवादी

क्रान्ति मे अपनी जागीरें और खजाने छिन जाने की आशका से उसका साथ देने के लिये तैयार हो गए और तेजेन के बडे-बडे व्यापारी भी सब ओर सकट और भय देख उसकी रक्षा मे जुटने लगे। अजीज के पास जो भी आता वह सभी को आश्वासन और रक्षा का भरोसा दे देता। अजीज ने तुरन्त अपनी इन्तजामी कमेटी भी बना ली! इस कमेटी मे वेमील नहर के इलाके से करीममुल्ला को, वेक नहर के प्रदेश से अल्ती सोपी को, ओतमेश नहर के इलाके से यारमुश काजी को और कयाल के इलाके से अलनजर वे को ले लिया। तेजेन और आस पास के देहात में दो सरकारें, दो फौजे बन गईः—एक अजीजखा की और दूसरी पचायत के प्रतिनिधियों की।

अरतैक दुविधा में था कि वह किस सरकार का साथ दे? उसकी इच्छा अपने मित्र चर्नीशोव के साथ पचायती सरकार की ओर रहने की थी। परन्तु इस पचायत मे चर्नीशोव के साथ जार के जमाने के दूसरे अफसर खास कर कुलीखा भी था। कुलीखा का जोर इस पचायत मे उसकी जार के जमाने की शक्ति से भी अधिक था। अरतैक को यह सहन न हो सका। अरतैक ने अपने मन को बहुत समझाया परन्तु वह कुलीखा का साथ देने के लिये तैयार न हो सका। वह किसी तरह भी कुलीखा का भरोसा न कर सकता था। उसने कुलीखा की नाक तोडी थी और वह जानता था कि कुलीखा बदला लिये बिना न मानेगा।

चर्नीशोव से मिलने पर अरतैक को उसने समझाया—"तुम किस दुविधा मे फसे हो? इतना सह कर भी क्या तुम्हारी आंखे नहीं खुली? मैंने हमेशा तुम्हारा साथ दिया है। अब हम लोगों का समय आया है और अब चूकना नहीं चाहिए। मैं मजदूर हू और तुम गरीब किसान हो! हम गरीब लोगों के लिये पचायत छोड़ और ठौर कहा!"

"कुलीखा जैसे गरीबों के साथ!"

"बेवकूफी मत करो अरतैक! तुम जानते हो हम लोगों का उद्देश्य सोवियत से ही पूरा हो सकता है!"

"भैया, ऐसे सापों के साथ बसने से तो बेवकूफ बनना भला।"

"इसका मतलब है… ?"

"नहीं हमारी मित्रता बनी रहेगी। हो सकता है फिर कभी हम लोगों का साथ हो जाय।"

चर्नीशोव अरतैक की इस जिद्द से खिसिया गया। उसे अरतैक पर बहुत विश्वास था और उसकी ईमानदारी और बहादुरी पर भरोसा था। परन्तु जाने क्यों उसका दिमाग फिर गया था। चर्नीशोव को अपने प्रति भी असन्तोष था कि वह अपने उद्देश्य के प्रति एक मित्र की सहानुभूति क्यों न ला सका। यदि अरतैक जैसे मित्र और किसान उसका साथ न देंगे तो वह क्या कर सकेगा ?

"तुम्हे अपना विरोधी बन जाने देने से तो अच्छा है तुम्हे गिरफ्तार करा दूं"—चर्नीशोव ने मुस्करा कर कहा—"अरतैक हो सकता है कुछ समय बाद तुम्हे होश आ जाय !"

अरतैक भी हंस दिया—"देख लो चर्नीशोव, यह है तुम पर कुलीखा की सगती का असर। तुम अपने मित्रों पर वार करने की बात सोचने लगे हो! अच्छा है भाई चल दूं! न जाने तुम कब सचमुच ही हमला कर बैठो !"

"चुप रहो अरतैक, क्या बकते हो !"

"अच्छा तुम जैसे कहो ! नहीं बोलूंगा भाई !"

"तुम हमारी सेना में पल्टन कमाण्डर क्यों नहीं बन जाते ?"

"तुम्हारे साथ में मामूली सिपाही बन कर भी रहने को तैयार हूं। परन्तु उस लगडे बदमाश के साथ मुझे जनरल बन कर रहना भी मजूर नहीं।"

"जिद्द मत करो !"

"यह मुझ से न हो सकेगा।"

चर्नीशोव आह भर धीमे धीमे समझाने लगा—"अरतैक तुम समझदार आदमी हो। जानते हो मैं तुम्हारा बुरा नहीं चेतूंगा। मेरी बात मानो। पचायतें तुम्हारी अपनी—किसानों और मजदूरों की है। किसान लोग इन पचायतों से ही ज़मीन और पानी पर अपना कब्जा कर सकते हैं। तुम छोटी छोटी बातों में उलझ रहे हो। कुलीखा आदमी बुरा है सही ? वैसे वह काम का आदमी है। इतनी सी बात के लिए तुम अगर पंचायती सरकार के विरुद्ध हो जाओ तो यह तुम्हारी अपनी सरकार और किसानों के साथ धोखा नहीं होगा ? तुम पचायत की तरफ नहीं होगे तो जाकर घर में बैठ नहीं रहोगे ! चुप बैठे रहना तुम्हारे बस का नहीं। तुम पंचायत का साथ नहीं दोगे तो अजीज का साथ दोगे ! तुम जानते हो, अजीज तो डाकू है। वह

जागीरदारों, मुखियों, अमीर किसानों और मौलवियों का गिरोह बना कर खुद सुल्तान बन जाना चाहता है।"

"चर्नीशोव तुम अजीज की बात रहने दो।"

"ठीक है, तुम उसकी निन्दा नहीं सुनना चाहते परन्तु मुझे सच्ची बात कहनी चाहिए। हो सकता है कुछ दिन तक अजीज तुम्हारे जैसे आदमियों को बहका ले और उसे कुछ सफलता मिल जाय। परन्तु उसकी चाल बहुत दिन तक नहीं चलेगी। आखिर तो जनता उसका भेद जानेगी ही। समझेगी कि वह जनता का शत्रु है या मित्र! एक हल्ले मे चाहे वह कामयाब हो जाय परन्तु उसके कदम टिक नहीं सकेंगे।"

चर्नीशोव की बात सुन अरतैक सिर झुकाए सोचता रह गया। चर्नीशोव को आशा हुई कि वह मान गया है। परन्तु अरतैक सहसा उठ खडा हुआ और अपना गुस्सा दबा कर बोला—"मैं पचायत सरकार का शत्रु नही हूँ। सोवियत सरकार के विरुद्ध मैं हाथ नही उठाऊंगा परन्तु कुलीखा और उसके मित्रो का मैं कट्टर शत्रु हू। जब तुम ऐसे लोगों को निकाल दोगे, तब तक मैं ज़िन्दा रहा तो स्वय ही तुम्हारे पास आजाऊंगा।" अपनी बात समाप्त कर अरतैक बाहर जाने के लिये दरवाजे की ओर चला—

"जरा ठहरो"—चर्नीशोव उसे अधिकार से पुकार बोला—"मेरी बात पूरी सुन लो। मैंने केवल अनुभव से कहा था कि यदि तुम हमारा साथ नही दोगे तो अजीज से जा मिलोगे। लेकिन तुम्हारी बात से साफ है कि तुमने अजीज का साथ देने की बात पक्की करली है। तुम एक बार अच्छी तरह सोचलो! तुम कहते हो तुम सोवियत सरकार के खिलाफ हाथ नही उठाओगे। अगर तुम अजीज के साथ मिलते हो तो यह कैसे सम्भव होगा? यह कैसे हो सकता है तुम पूरब भी चलो और पश्चिम भी चलो! जब तुम सोवियत के शत्रुओं का साथ दोगे, उनकी सहायता करोगे तो यह सोवियत पर चोट करना नही तो क्या होगा? उस समय पछताने से भी क्या लाभ होगा? हमे कौन झगडा लेकर चलना है, यह मामूली सवाल नहीं है। अपने झण्डे के लिये सिपाही को जान देनी पड़ती है। तुम झण्डे की बात नहीं सोचते, सोचते हो कि फला आदमी तुम्हे पसन्द नहीं। आदमी बड़ा है या झण्डा? और अगर कुलीखा जैसे आदमी से भी जनता का कुछ काम बन सकता है तो उससे काम क्यों न लिया जाय?"

अरतैक सिर झुकाये दरवाजे में खडा रह गया। उसके चेहरे पर परे

शानी और जिद अब भी मौजूद थी। चर्नीशोव की ओर देख बिना ह वह बोला—"यदि कुलीखा जनता के काम आ सकता है तो अजीज ने भी जनता की बगावत का झण्डा ऊंचा किया। जिस समय कुलीखा ज़ार के जनरलों की जूतियां चाट रहा था, अजीज तलवार सूत कर इन जनरलों के सिर नराश रहा था। यह तो तुम्हें भी याद होगा!"

"यही तुम्हारी भूल है!"—चर्नीशोव ने कड़े स्वर में चेतावनी दी—"अरतैक, याद रखो जनता भूल चूक तो माफ कर देती है परन्तु गद्दारी माफ नहीं करती।"

अपनी बात कह चर्नीशोव खिड़की से बाहर देखने लगा और अपना क्रोध रोके रखने के लिए अरतैक की ओर देखे बिना वह मेज पर उंगलियों से तबला सा बजाने लगा।

अरतैक उत्तर देने को हुआ परन्तु फिर कुछ भी न कह सिर लटकाए चुपचाप दरवाजे से निकल चला गया। वह सिर लटकाए ही गली से बाजार में पहुंच गया। आस पास से आने जाने वाले लोगों की ओर उसका ध्यान नहीं गया। बिना सोचे समझे वह चलता जा रहा था बिना किसी ख्याल के! बाजार में खूब जोर से खड़खड़ाहट कर चलती हुई एक बैलगाड़ी की लपेट मे आते आते बचा। पुल परसे पार होते समय वह पुल के खम्बे से ही टकरा गया। वह अचेत सी अवस्था में चल रहा था। जान पड़ता था वह अपना हृदय और सोचने, समझने की सब शक्ति अपने मित्र के यहां ही छोड़ आया है। उदासी से वह निर्जीव सा हो रहा था।

अरतैक पुल की दीवार पर झुक कर पानी की ओर देखता हुआ सोचने लगा—"दुख सुख के साथी चर्नीशोव से आज मेरा बिछोह हो गया! उस दिन जब मैं अश्काबाद जा रहा था, जब उम्मीद थी कि शायद मौत के घाट उतर रहा हूं तब केवल चर्नीशोव ही ढाढस बन्धाने स्टेशन पर आया था। चर्नीशोव ने सदा मेरे दुख मे साथ दिया। जब मैं कुछ सोच भी न सकता था, तब भी चर्नीशोव ने ही मेरी आखें खोली थीं। आज भी वह सगे भाई की तरह मुझे साथ न छोड़ने के लिये बार बार समझा रहा है...."

अरतैक के मन मे उबाल सा उठा कि चर्नीशोव के पास लौट जाय और अपने हाथों में उसका हाथ थाम कहदे—मैं तुम्हारे साथ हूं। परन्तु उसी समय कुलीखा का चेहरा उसकी आखों के सामने आ खड़ा हुआ!

चर्नीशोव के घर की ओर, मुड़ते मुड़ते उसके पांव ठिठक गए और एक

गहरी आह भर उसने कहा—"चर्नीशोव से मेरा कोई झगड़ा नहीं लेकिन मैं कुलीखा के साथ कभी नहीं चल सकता। या तो मैं ही रहूँगा या वह। कुलीखा का साथ करने से तो मैं अजीज का ही साथ करूगा।"

अरतैक दृढ निश्चय से बाजार की ओर चल पडा। वह अजीज के मकान की ओर बढा चला जा रहा था। "चर्नीशोव ठीक ही कहता है"—उसने सोचा—"इस जमाने में किसी भी आदमी के लिए चुप और अलग बैठना सम्भव नही। आदमी को इधर या उधर, किसी न किसी का साथ करना ही पडेगा। अजीज से एक बार बात करके देखना चाहिए। यदि उससे बात न बनेगी तो गाव लौट जाऊ गा।"

अजीज का खेमा, या दरबार अन्नाकोचक सराय में था। जिस समय अरतैक अजीजखा के यहा पहुंचा, वह एक गद्दे पर करवट से लेटा हुआ कुछ सोच रहा था। अरतैक का उदास चेहरा देख कर ही अजीज उसकी मानसिक अवस्था भाप गया। अजीज उठ कर पाल्थी मार कर बैठ गया और अरतैक को सम्बोधन किया—"कहो भाई अरतैक, क्या हो रहा है ?"

"आज कल जैसे दिन बीत रहे हैं, कोई क्या कह सकता है"—अरतैक ने उदास स्वर मे उत्तर दिया।

पिछले वर्ष की बगावत मे अजीज को अरतैक पर बहुत भरोसा था। वह उसे भूला न था, दूर अफगानिस्तान मे भी उसे अरतैक की याद आती रहती थी। अरतैक की उदासी का कारण पूछ कर उसने कहा—"मेरा जो कुछ बल है, वह तुम्हारे जैसे साथियों के भरोसे ही है। अरतैक, तुम मेरे दाहिने हाथ हो। किसने परेशान किया है, बताओ मुझे उस कमबख्त का नाम! मैं अभी उसका घर फूक कर, उसे नेस्तनाबूद कर दूगा। मेरे जिंदा रहते तुम्हे परेशान होने की जरूरत नहीं है।"

"अजीजखा, मेरी अपनी परेशानी की मुझे कोई चिन्ता नहीं है। तुम हमारे गरीब किसानों की हालत देखो"—अरतैक ने उत्तर दिया।

"ओह, तुम तो दूर की बातें कर रहे हो।"

लेकिन मेरा ख्याल था कि तुम भी इन बातों का ख्याल करते हो। पिछले बरस तो तुम्हें ऐसा ख्याल था !

"ख्याल मुझे अब भी है। तुम यह मत समझो कि मेरा दिल बदल गया है। यह भी न सोचना कि तुम्हारी आओ भगत नहीं की ? मेरा

दिमाग इस समय फिक्र में चकरा रहा है। सैकड़ों ही सवाल सामने हैं।"

"अजीजखा मैं अपना सवाल लेकर नहीं आया हूँ।"

"जो भी सवाल हो, कहो।"

"सवाल किसानों का ही है। मैं तुम्हे किसानों का रक्षक समझता रहा हू। पिछले बरस तुमने किसानों में एलान किया था, अगर बे लोग और जागीरदार तुम्हे दबाना चाहते हैं तो उन्हे उखाड फेंको। लेकिन आज जैसे लोग तुम्हे घेर बैठे हैं, में कुछ समझ नहीं पा रहा हू।

"तुम किन लोगों की बात कह रहे हो?"

"मे तुम्हारे सब साथियो को तो जानता नहीं। हा अलनजार बे को जरूर जानता हूँ। वह सदा जार के पक्ष में रहा है, जनता के पक्ष मे कभी न था। इस एक आदमी को देखकर मुझे दूसरे लोगों के बारे में भी सन्देह होता है। अलनजार बे वह आदमी है जो मेरे जैसे गरीबों का खून पीकर फूल रहा है। अगर तुम ऐसे आदमियों की सलाह पर चलना चाहते हो तो फिर जार के कारिन्दों और तुम्हारे काम में भेद ही क्या रहेगा?"

"अरतैक जरा सोच समझ कर बात करो।"

"मैं खूब सोच समझ कर ही कह रहा हूँ।"

अरतैक की इस दो टूक बात से अजीज सहम गया। सीतला के दागों से भरे उसके चेहरे पर परेशानी झलक आई और उसकी बटी बडी आँखों मे लाल डोरे फिर गये। अपने मन का भाव प्रकट न होने देने के लिये करवट बदल वह और आराम से बैठ, गम्भीर स्वर में बोला—"अरतैक तुम जानते हो मैंने जार के खिलाफ बगावत क्यों की थी? क्यो मुझे अपना वतन छोड़ कर भागना पड़ा? सिर्फ इस लिये कि मैं ज़ार के बदमाश कारिन्दों को खत्म कर देना चाहता था यह जान बूझ कर तुम मुझे जार के बराबर कैसे कह रहे हो?"

अरतैक पर अजीज की बात का गहरा प्रभाव पडा परन्तु फिर भी उसने गम्भीर स्वर में उत्तर दिया—"अज़ीज़ खाँ मैं अब भी तुम्हारी बात ठीक से समझ नहीं सकता। जो होगा सामने आ जायगा। दूध होगा तो दूध, और पानी होगा तो पानी। मैं तुम्हारी बराबरी किसी से नहीं कर रहा हूँ। परन्तु मैं तुम्हारा मित्र हूँ इसलिये साफ़ बात कह रहा हूँ।"

अजीज इस कड़ी बात से भी बिगड़ा नहीं। वह और भी नरमी से

बोला—"भाई, तुम मुझे जान नही पाये। मैं ज़ार के कारिन्दों की नस्ल मे से नहीं हूँ जो अपने मालिक के बूते पर कूदते थे। मैं खुद घर बार और सगे सम्बन्धियों के सुख दुख को समझता हू। चपैक सर्दार का खून है। कोई नही कह सकता कि मैंने कभी रियाया पर जुल्म किया है! मैं तुम्हारे मन की बात भी समझता हूँ लेकिन अल्ती सोपी और अलनजर बे मेरे भाई बन्द नहीं! और न उनकी बात मेरे लिये कुरान की आयत है। भाई यह तो राजनीति है। देहात में इन बड़े आदमियों की ताकत है। लोग अब भी इनकी बात मानते हैं। अगर दुश्मन से भी अपना काम निकल सके तो हर्ज क्या है? जब तक अपने कदम नहीं जमते, इन लोगों से मदद लेनी ही होगी। मैं उनकी बात सुनता हूँ, राय भी लेता हूँ, लेकिन फैसला तो मुझे ही करना है। तुम फिजूल बातों मे मत उलझो। तलवार सम्भालो।"

"नहीं भाई अजीज यह मेरे बस का नहीं। अलनजर बे के साथ मेरा निबाह नहीं! एक सराय में तो क्या, जिस गॉव या देश में वे रहेगा मैं नही रह सकता। तुम नाराज भले ही हो जाओ परन्तु वे तुम्हारे साथ है तो मेरे लिये तुम्हारे यहॉ जगह नहीं।"

"क्या बचपन कर रहे हो अरतैक? मैं तुम्हारे लिये सर्दार अजीज खा नहीं एक तुर्कमानी साथी हूँ। तुम बताओ तुर्कमान का यह कायदा है कि कोई भी इन्सान मेरे यहाँ आता है तो मुझे उसकी इज्जत रखनी है, अलनजर हो या कोई और हो। तुमसे मैं कोई सौदा नही कर रहा हू। लेकिन याद रखो मेरे साथ रहोगे तो तुम्हारे लिये तरक्की की राह खुल जायगी। मैं तुमसे जल्दबाज़ी के लिये नहीं कह रहा हू। तुम मन को खूब तौल लो। अलनजर है क्या? अगर वह तुम्हारे खिलाफ जबान भी हिलाये तो उसका घर तुम्हारे सामने फुकवा दूँ।"

"क्या कहूँ मैं?.. मैं तुम्हारा नौकर हूँ और वे तुम्हारा दोस्त है। तुम्हीं बताओ किसका हक ज्यादा है?"

"अज़ीज देखो, मुझसे कसम मत दिलावाओ। मेरी बात ही काफी है। तुम मेरे कदम जम लेने दो। अलनजर को मैं कान से पकड़ कर तुम्हारे हवाले कर दूंगा।

यदि इतनी बात चर्नीशोव ने कुली खा भी बाबत कहदी होती तो अरतैक आँख मूद उसके साथ हो गया होता परन्तु चर्नीशोव तो लगडे

का पक्ष ले रहा था। इसलिये अरतैक अजीज के पास में चला गया। लेकिन उसे क्या मालूम था कि जिस राह पर पाव रखा है वह उसे कहां से कहां ले जायगी। पिछले दिनों मे उसने जो कुछ सहा था उसके आधार पर वह अपने आप को खूब अनुभवी और पक्की समझ का आदमी समझने लगा था और उसका विचार था कि हालात के मुताबिक उसने बिलकुल ठीक मार्ग अपनाया है। क्रान्ति के बाद तेजेन में हथियारों की कमी न थी। अजीज ने अरतैक और काजिल खा को अपनी फौज का कमाण्डर बना दिया। अरतैक के कधों पर हरे रग के हिलाल और तारे के निशान लग गये। उसकी पीठ पर राइफल और कमर में तलवार लटकने लगी।

उसी समय तेजेन में पचायत की ओर से एक लाल फौज भी बन गई। इन लोगों के कधों पर लाल निशान थे। इस फौज के अफसरों मे चर्नीशेव और कुली खा थे। इस फौज का कमाण्डर कुली खां का मित्र कलूई खां था। कलूई खा देव का देव, भयानक रूप रग का आदमी था। उसकी आँखे भी बड़ी-बड़ी थी। एक ही शहर में दो फौजें, एक ही बाजार के एक सिरे पर लाल दाढ़ी-मूछ से घिरे लाल चेहरे वाला काजिल खा कमर में टेढ़ी तलवार लटकाये ऐंठता फिरता और दूसरी ओर कलूई खां कमर में माउजर पिस्तौल और छोटी किर्च अड़ाये घूमता दिखाई देता।

भोले किसान इन लोगों की ओर सहमी हुई आँखों से देखते और सोचते रह जाते—"जाने दुनिया में क्या होने जा रहा है?"

१०

एक खूब बडे कमरे मे, लम्बे चौड़े कालीन पर अजीज खा अपने सलाहकार साथियों के साथ बैठा दिल बहला रहा था।

रोएदार खाल की बनी अपनी लम्बी-लम्बी टोपिया उतार कर उन लोगों ने एक ओर रख दी थी। खिड़की से आती दोपहर की धूप उन लोगों के उस्तरे से मुडी खोपडियो पर पड रही थी। बीच मे एक दस्तर-खान पर चाय के प्याले, चायदानिया और मिस्री रखी हुई थी। आते जाडे की सुहाती-सुहाती घाम मे इन बर्तनों पर मक्खिया अपने राग गुन-गुना रही थीं। प्यालों मे भरी गहरी चाय से महक लिये भाप उठ रही थी। कमरा बड़ा और ऊचा होने पर भी हुक्के से निकला हुआ धुआँ छत के नीचे मडरा रहा था।

अजीज के साथ ही अन्ना कुर्बान यारसुश काजी बैठा हुआ था। काजी की काली दाढी बड़े थैले की तरह उसकी ठोडी से लटकी हुई थी। जाघों पर टिके उसके हाथ भी काले रोमों से ढँके रीछ के पजों जैसे जान पड रहे थे। उसकी बड़ी-बड़ी साफ आँखों से मूर्खता झलक रही थी। वह एक दरबारी राजनीतिज्ञ नहीं बल्कि बेपरवाह देहाती ग का छ मालूम देता था।

अन्ना कुर्बान के साथ ही भारी भरकम कारीमुल्ला बैठा था। कारीमुल्ला का माथा और दाढी शेष चेहरे से बहुत आगे बढे हुये थे। ऐसा जान पडता था कि सिर पर चक्की का पाट रख देने से चेहरा पिचक कर ऊपर नीचे के भाग आगे बढकर बीच का भाग भीतर धस गया हो। उसकी धसी हुई आँखों मे छोटी-छोटी पुतलिया चमक कर आतुरता कर प्रकट रही थीं। मुल्ला अनपढ़ था परन्तु उसके बाप दादा मुल्ला थे। इसलिये मुल्ला का नाम खान्दानी तौर पर चला आ रहा था। उसके आगे आल्ती सोफी एक ममूली

सा कुरता पहने बैठा था। कुरता गले पर मैला था। उसके ऊचे पायजामे के पहुचे से उसकी बिवाई से फटी एडिया दिखाई दे रही थीं और सूखी सूखी पिंडलिया भी झलक रही थीं। उसका भूरे रंग का लबादा कधे से अटका हुआ था। अपनी आदत के अनुसार वह इस समय भी दाहिने हाथ से माला जपता जा रहा था और मन मे शायद कोई तिकड़म सोच रहा था। उसकी आखो और चेहरे से निर्दयता टपक रही थी। जैसे उसका चेहरा निर्दय था वैसे ही उसकी जुबान भी कड़वी थी। ईमानदारी और इन्साफ के झगडों मे वह कभी न पडता था। पिछली बगावत में भाग लेने के कारण वह भी अरतैक के साथ अश्काबाद के जेलखाने में रह आया था। उस बगावत में सोपी ने जनता पर अन्याय के विरोध के लिये नही बल्कि खानों और मुल्लाओं का राज कायम करने की आशा से भाग लिया था।

इस चक्कर के अन्त मे अलनजर बे के साथ धुंधरे से चेहरे का आदमी मदीर ईशान बैठा हुआ था। इशान की आखे फौलादी रंग की थीं और चौड़े जबडे फैले हुये थे। उसकी आयु होगी, लग भग पैंतीस बरस की। पिछले पन्द्रह बरस से वह रूसी अफसरों के साथ रह कर तुर्कमान लोगो की बात रूसी में समझाने का काम करता रहता था। इसलिये लोग बाग में उसका काफी रोब था। उसकी जबान कैंची की तरह चलती थी इसलिये लोग उसे मदीर (जल्दी बोलने वाला) पुकारने लगे थे। बुजुर्गों और मुल्लाओ से बातचीत करते समय वह शरीयत (धार्मिक पुस्तकों) की ही ज़बान में बात करता था इसलिये लोग उसे ईशान (आलिम) भी पुकारने लगे।

यह था अजीज़ खा का दरबार जहाँ उसकी नीति तय होती थी। अरतैक भी कमरे में एक ओर बैठा था। इन लोगों की बातचीत सुनने के लिये वह किसी न किसी बहाने वहाँ बना रहा।

बातचीत राजकाज के प्रबंध के बारे में हो रही थी। अजीज ने अपना तरीका बहुत दिन पहले, अफगानिस्तान में रहते समय ही मन में निश्चय कर लिया था परन्तु इन लोगों का मन रखने के लिये वह इन लोगों की सलाहें बहुत महत्व देकर सुन रहा था।

आल्नीगोपी सभी लोगों की ओर निगाह दौड़ा कर सबसे पहले बोला—"अजीज़ खां, खुद नये कानून बनाने का खयाल करना ही गलत

है। सही क़ानून हजरत पैगम्बर ने एक हजार बरस पहले ही कायम कर दिये थे। हम उन क़ानूनों से बाहर नहीं जा सकते। असली क़ानून शरियत का क़ानून है। मगर शरियत को समझने मे कहीं शक होता है तो आलिमों की राय ली जानी चाहिये। एक आलिम को काजी बनाया जाना चाहिये। शरियत के क़ानून मे कोई चूंचे चुनाचे नहीं होना चाहिये। शरियत के हुक्म पर पूरा अमल होना चाहिये। अगर शरियत का हुक्म है कि गुनाहगार का हाथ काटो, हाथ काट दो। अगर शरियत का हुक्म है गुनाहगार का सिर काटो, तो सिर काटो। अगर शरियत का हुक्म है कि गुनाहगार को फासी पर लटकादो, तो फासी पर लटकाओ।"

अलनजर बे ने सिर हिलाकर मुल्ला सोपी का समर्थन किया—"ठीक है ठीक है—"मन ही मन वह सोच रहा था—यह है तरीका अरतैक का इन्तजाम करने का।

दूर से बाद में बोला यारमुश काजी, भर्राई हुई आवाज मे जैसे कि गले मे फास अटकी हुई हो।—"वैसे तो मुल्ला की बात सोलह आना सही है लेकिन शरियत के कानून के साथ ही अपना रीति-रिवाज भी तो है। कहावत है, आदमियों की परवाह चाहे न करो पर रिवाज पर कायम रहो! शरियत तो शरियत है पर अगर हम रिवाज पर कायम हैं तो भी ठीक है।"

कारीमुल्ला न तो शरियत की और न रिवाज की ही बात कर सकता था। बहुत देर तक कोशिश मे नाक और दाढी हिला हिला कर वह आखिर बोला—"हॉ भाई, हम तो यह कहते है कि 'मिसाल कहते हैं न कि चाहे ऐसे ठीक समझ लो, चाहे वैसे कर लो। मतलब यह कि बात ठीक होना चाहिये। और अपना इस्लामी रिवाज ठीक होना चाहिये, बस यही ठीक है।" यह बात कहने के वक्त मे कारीमुल्ला का पूरा शरीर थर्रा उठा, उसकी मुण्डी हुई खोपडी की खाल तक सिकुड गई और शरीर पसीना पसीना हो गया। वह ऐसे हाफ रहा था जैसे मजिल पूरी करने के बाद घोडा हाफता है। कापते हुये हाथों से अपना चाय का प्याला उठा वह प्यास बुझाने के लिये घूंट भरने लगा।

अलनजर गम्भीर स्वर मे शान्ति से बोला—"यह ठीक है कि शरियत और रिवाज दोनों ही मानने से हम लोग गलती से बच सकते हैं। अब जमाना बदला है तो जमाने के साथ नये कानून की भी जरूरत होगी। जहॉ तक मै समझता हू कुरान मे और हजरत मुहम्मद की रवायात मे

रिवाज की बात नही है। रिवाज तो जमाने की हालत से लोगो की ज़रूरत के मुताबिक बन जाता है। मुल्ला लोग खुद मानते हैं कि कुरान में दूसरी आयतें पहली आयतों के खिलाफ पड़ती हैं। आज कल का ज़माना हज़रत पैगम्बर के जमाने से बदल गया है। आज अगर लोगों की तरफ से चुने हुये लोग मिलकर हालत के मुताबिक कानून बनाते हैं तो यह शरीअत और रिवाज के खिलाफ नही है।"

बातचीत का कोई भी शब्द लिखा नही गया। फौज के लिये कितना खर्च किया जायगा, कैसे किया जायगा और वह रकम कहा से आयेगी इस विषय में अजीज ने अपने दरबारियों से कोई राय नहीं ली। उसने सब नहरो के इलाकों पर अपनी इच्छा से ,कर लगा दिया। जब लोगों ने पूछा- -यह रकम कहा से आयेगी ? तो अजीज ने उत्तर दिया—"जिन लोगों के पास रकम है उन्ही के यहा से रकम आयेगी।" अजीज की इस मनमानी बरजानी से और वे लोगों की दौलत पर उसके हाथ फैलाने से अलनजर घबराया। अलनजर ने इस विषय में बात उठाने के लिये अजीज की ओर प्रश्नात्मक ढङ्ग से कुछ कहने के लिये मुह खोला परन्तु अजीज खां ने उस ओर से आखे फिरा कर दूसरी बाते आरम्भ कर दी- -"बुजुर्गो इस साल रियाया की हालत बहुत खराब है। यह बात आप मुझसे ज्यादा जानते हैं। लोग भूख से तडातड मर रहे हैं। इस अकाल मौत से लोगों को बचाने के लिये क्या इन्तजाम किया जा सकता है ?"

अलनज़र और अधिक कर बढ़ाये जाने की आशका से तुरन्त बोला—"सरकार से मदद लेनी चाहिये।"

"सरकार कौन है, हम सरकार हैं।"—अजीज़ बोला।

चाय का प्याला पीने से बाम्मुरा क़ाज़ी को और अधिक पसीना आ गया। वह अपने छींट के कुर्ते का दामन हिलाकर हवा करता हुआ बोला—"सुना है, सहयोग सभा बनी है। सुना है, शहर के तंग सुथन्ने वाले (पतलून पहनने वाले) अफसर सब सरकारी राशन आपस में बांट लेते हैं। हम लोग भी सरकारी राशन क्यों न लें। ज़ार तो मर गया फिर भी इन तंग सुथन्ने वालों का ही राज चलता रहेगा। अजीज़ खां, इन लोगों के सुथन्नों में छेद करना होगा !"

अजीज़ की जगह उसके अरकान साला नदीर ख़ान ने उत्तर दिया—"कुर्बान जाना, सहयोग सभायें क्या देती हैं ! हम सरकार आदमी के

मुंह मे पानी की बूंद टपका दी जाये। इतना राशन लेकर बाँटने लगो तो किसी के हाथ कुछ न आये, जैसे मुट्ठी भर अनाज लेकर दस बीघा जमीन पर बो दिया। वहा से अगर कुछ मिलेगा तो ले लेंगे लेकिन रियाया की मदद के लिये इससे कुछ नही बनेगा। उसके लिये तो कुछ और ही करना होगा।"

"जो कूकर मारेगा वही कूकर करेढ़ेगा"—आल्ती सोपी बोला—"किसानो को जिसने लूट कर भूखा मारा है वही आकर उन्हे मरने से बचायें, खाने को दे।"

'तुम सीधी बोली में बात करो तो समझ मे आये।"—अजीज खां ने कहा !

"अजीज खा, अनाज धरती की ओर ही जाता है। फसल काटो तो अनाज की बाल धरती पर झुकती है। मडाई करो तो अनाज धरती पर गिरता है। खेत में बोओ तो अनाज धरती मे घुस जाता है। बोरी में भरो तो अनाज का मुह धरती की ओर रहता है। कटाई में जितना अनाज खेतों में बिखर जाता है, वही गरीबों और पछियों के भाग आता है। जो अनाज व्योपारी की खत्ती में चला गया वह किसी का नही ? न तुम्हारा न हमारा !"

'सोपी की बात सोपी ही समझे !"

"किसान की कमाई का क्या है ? रुपये में से चार आना जागीरदार के कारिन्दे के हिस्से गया, चार आने साहूकार के हाथ, चार आने जागीरदार सरकार के हाथ, चार आना उसके पेट के लिये रहा।"

'तो फिर ?

"साहूकारो, जागीरदारो की खत्तियों में गया किसानों का अनाज कहां गया ? वह खत्तियों में धरा है। इस अनाज को धरती से निकालो। इतना अनाज अगर धरती से निकल कर किसान को मिल जाय तो अगली फसल तक किसान बच जायगा !'

"मतलब है जागीरदारों और वे लोगों से अनाज मागा जाय ?'

"मागें से दे दे तो भला, नहीं तो लेना तो होगा ही। अभी कहा न अलनजर वे ने। बदले जमाने में हालात के मुताबिक कानून बनाना होगा !"

"आखिर काम की बात कही—"सोपी ने करवट ले अजीज का

समर्थन किया।

सोपी के अपने यहां अनाज था नहीं इसलिये दूसरे साहूकारों और जागीरदारों का अनाज छीना जाने में उसे कोई आपत्ति न थी। एक से छीन कर दूसरे को दे देने में उसे एतराज़ न था। इस समय सोपी के मन में असली बात यह थी कि वेक नहर के इलाके का प्रतिनिधि होने के नाते जागीरदारों से अनाज लेकर अपने इलाके में वही खुद अनाज बांटेगा। किसानों में उसकी मानता बढ़ेगी सो बढ़ेगी, इसके अलावा उसके अपने घर अनाज की कमी न रहेगी। सोपी या कोई दूसरा आदमी थोड़ा बहुत माल समेट ले, इसमें अजीज को कुछ एतराज न था। वह चाहता था लोग बाग और किसानों को उस पर विश्वास हो जाय।

यारमुरा काजी को सोपी की बात पसन्द न थी परन्तु वह बहुत यत्न करने पर भी इतना ही कह सका—"मतलब···इसका मतलब तो है···।"

कारी मुल्ला को भी यह प्रस्ताव नापसन्द था। मन ही मन उसे इस बात पर क्रोध भी आ रहा था परन्तु अजीज के भय से वह चुप रह गया। अज़ीज से अलनजर वे को भी भय था परन्तु उसे अपने नुकसान का भी भय सबसे अधिक था। वह साहस कर बोला—"बात सोपी की ठीक है लेकिन हमारे यहां ईरान और रूस जैसे साहूकार हैं कहां जिनके यहां बड़ी बड़ी खत्तियां भरी हों? यह तो गरीब लोगों की बस्ती है। फसल कटी और बनियों के हाथ से निकल दूर रूस की मण्डियों में जा पहुंची। यहां किसी के यहां आठ दस बोरी अनाज होगा भी तो क्या? कुनबे के लोग हैं, बिरादरी और जान पहचान के लोग हैं। तुम कहते हो, वे लोगों के यहां अनाज है भैया, मैं भी वैसा ही हूं परन्तु मैं ही जानता हूं कि इस बरस खुदा ही हाफिज है! ·····कैसे निबाह होगा? अगर इसी तरीके पर चले तो गरीबों का पेट तो क्या भरेगा उनकी हालत और बुरी हो जायगी और वे लोग भी बिगड़ उठेंगे। दुश्मन का मुकाबिला करना है तो आपस में बदगुमानी और झगड़े न उठें तभी अच्छा।"

अब तक अरनैक एक ओर चुपचाप बैठा था परन्तु अब रह न सका—"मालूम होता है जैसे दुनिया में सतह पर बगावत हो रही है वैसे ज़मीन के भीतर भी हलचल है। तो अलनजर की मण्डियों में भरी सैकड़ों बोरियों की जगह आठ दस ही रह गई। मालूम होता है, बेचारे का अनाज धरती निगल गई!"

यह बात सुन अलनजर बे ने अजीज खां की ओर देखकर पूछा—"क्या यह आदमी भी तुम्हारा सलाहकार है ?"

अजीज खां ने बे की नाराजगी की परवाह न कर उत्तर दिया—"यह आदमी हमारी फौज का एक कमाण्डर है।" बे को चुप रह जाना पडा। इसी समय एक अफसर ने आकर अजीज को सम्बोधन किया—एक परदेसी मेहमान आप से अकेले मे मिलना चाहता है।"

यह सुन अजीज ने अपना दरबार स्थगित कर दिया। दरबारी लोग उठकर चले गये। परदेसी भीतर आया और आकर उसने कमरे क दरवाजा सावधानी से बन्द कर लिया। मेहमान की आयु तीस बरस को लगभग होगी। कद मझोला, घनी भवें, रग कुछ ढका हुआ, मूछे और दाढी खूब काली, दात कुछ बड़े बड़े लेकिन खूब साफ चमक रहे थे। वह रेशमी कमीज, खाकी पतलून और घुटनो तक ऊचे बादामी बूट पहने था।। उसके कधो पर चोगा था। पोशाक उसकी तुर्कमानी थी परन्तु वह तुर्कमान जान न पड़ता था।

उसने अपना परिचय दिया—"मैं अफगान हू ।

अफगानिस्तान मे अजीज खां ने अपनी मुसीबत के दिन बिताये थे। अफगानिस्तान का नाम सुनते ही अजीज ने विश्वास से मेहमान की ओर देखा परन्तु मेहमान के व्यवहार और तौर तरीके मे कुछ ऐसी नफासत थी कि अजीज के मन मे सन्देह हो गया। कुछ सोच कर उसने मेहमान से प्रश्न किया—"तुम अफगान हो या बलूची हो ?"

मेहमान ने इस्लामी ढग से सीने पर हाथ रखकर उत्तर दिया—"शुक्र खुदा का मैं मुसलमान हू, शुक्र खुदा का उसने मुझे अफगान पैदा किया है।"

"नाम पूछ सकता हू।"

"अब्दुलकरीम खा"

"कारोबार; शगल ?"

"जो काम सौप दिया जाय उसे पूरा करना।"

"कहां से तशरीफ आ रही है, किस तरफ का इरादा है ?"

दरवाजे और खिडकी की तरफ देख अब्दुल करीम धीमे स्वर में बोला—"मैं कुछ खास बात करना चाहता हूँ।"

"यहां कोई खतरा नहीं है, महफूज जगह है। जो चाहो कह सकते हो।"

अब्दुलकरीम खां ने एक बार चारों ओर देखा। उसके इस ढंग से अज़ीज का सन्देह और बढ़ा—यह आदमी कोई चोर है या भगोड़ा, या कोई जासूस है? उसने एक बार फिर मेहमान को विश्वास दिलाया कि यहां से कोई ग़ैर आदमी बात नहीं सुन सकता। बेखतरे कहो! अफगानिस्तान मेरा दूसरा वतन है। अफगानिस्तान के लोग मेरे लिये तुर्कमानिया के लोगों की तरह ही अपने सगे हैं। तुम अगर अफगान हो तो बेखौफ हो चाहे कहो! अगर खून कर के भी आये हो तो यहां तक नहीं पहुंच है, तुम्हें कोई छू नहीं सकता।

अब्दुलकरीम खां ने भरोसे से कहा—"मैं भगोड़ा खूनी नहीं हूं। मैं एक राजदूत हूं।"

"राजदूत?"

"मैं अफगानिस्तान के अमीर हबीबुल्ला खां का राजदूत हूं।"—अब्दुलकरीम खां गर्दन उठा कर बोला।

अज़ीज की नजरें बदल गईं। उत्सुकता से उसने पूछा—"तुम्हें मेरे पास अमीर ने भेजा है?"

"खुदा मुझसे गलत बात न कहलाये—" अब्दुलकरीम ने कुछ ठिठक कर उत्तर दिया—"जिस समय मैं अफगानिस्तान से चला था आप के खान बन जाने की खबर वहां नहीं पहुंच पाई थी। अमीर ने मुझे खुरासान के कुर्बान मुहम्मद खां जुनैद के यहां भेजा था। लेकिन मुझे हुक्म है कि अगर हो सके तो मैं आप से भी मिलूं।"

"तो तुम खुरासान ताशोंद जा रहे हो?"

"मैं ताशोंद से लौट रहा हूं। कुर्बान मुहम्मद खां ने आपको सलाम कहा है।"

"शुक्रिया, तुम पर अल्लाह की इनायत इस सन्देश के लिये। खान आगा मजे में हैं?"

"शुक्र अलहम्दुलिल्ला। खान आगा खैरियत से हैं। खान आगा आपको अपना भाई सलाम कहते हैं। उनका कहना है कि आपको किसी किस्म का

मदद की जरूरत हो तो खत या आदमी भेज कर खबरदे ।"

"हम लोग अफगानिस्तान मे ही एक दूसरे के भाई बने थे ।"

"ठीक है । मुझे मालूम है ।"

"अब्दुलकरीम खा, यहाँ से कहाँ जाने का इरादा है ?"

"यहाँ मैं आप के ही पास आया हू । जा कर मुझे अमीर हबीबुल्ला खा को आप से मुलाकात की खबर देनी होगी ।"

अजीज ने अब्दुल करीम खां से अफगानिस्तान के बारे मे बहुत सी बाते पूछी, पश्तो मे बातचीत कर अपना संतोष कर लिया कि वह अफगानिस्तान से ही आया है । अफगानिस्तान के कई खानों का ज़िक्र उसने अब्दुलकरीम से किया । अब्दुलकरीम ने इन लोगो का ठीक ठीक परिचय दिया इस पर भी अजीज खा ने उससे पूछा—"तुम्हारे पास अमीर का कोई पत्र है ?"

'देख ही रहे हो कि मै भेस बदल कर आया हू—"अब्दुलकरीम ने उत्तर दिया—"इसीलिये मै तुर्कमानो पोशाक भी पहने हू । ऐसी हालत मे अपनी सरकार का पासपोर्ट (राहदारी) या कोई पत्र मैं साथ कैसे रख सकता हूँ ? किसी दूसरे आदमी को तो मैं यह भी नहीं बता सकता कि मैं अफगान हू ।"

अजीज का सन्देह दूर हो गया तो उसने अब्दुलकरीम से उसकी यात्रा का प्रयोजन पूछा ।

"खान आगा—"अब्दुलकरीम ने उत्तर दिया—"मुसीबत के दिनों मे आप ने और जुनेद आगा ने अफगानिस्तान में ही जगह पाई थी । मेरा खयाल है हम लोगों का सलूक बुरा नहीं रहा होगा ?"

"नहीं शुक्रिया, मै बहुत आराम मे रहा और मशकूर हूँ ।"

"जुनेद आगा अब खुरासान के पूरे इलाके का मालिक है । और अब आप की हैसियत भी, अलअहम्दलिल्ला, बहुत ऊची है । इस वक्त दुनिया मे कैसी गड़बड़ी मच रही है और राजनीतिज्ञ लोग कैसी चालें चल रहे है, यह मुझसे ज्यादा आप ही खुद जानते हैं । जार ने आपके साथ जो जुल्म किया सभी जानते हैं और यह जो नई सरकार बन रही है, तरबूज को तराशे बिना कौन जानता है कैसा निकलेगा ? कौन जाने यह जार से भी ज्यादा जालिम निकले ! आपका क्या खयाल है,

आप रूस पर ही भरोसा करेंगे या किसी दूसरी सल्तनत के साये में प्यादा बेहतर समझेंगे ?"

"किस सल्तनत के साये में ?"

"हूँ......समझ लीजिये, बर्तानिया !"

"बोझा ही ढोना है तो ईंट ढोई कि पत्थर ! क्या फरक पड़ता है ! रूस के ज़ार ने जो किया बर्तानिया का बादशाह उससे कम क्या होगा ! मैं तो किसी के भी जुये में गर्दन फसाना नहीं चाहता ।"

करीम खां के माथे पर बल पड़ गये परन्तु अजीज का ध्यान उस ओर न था । करीम सम्भल कर बोला—"मेरा मतलब तो है कि आप किसे साथ करना चाहते हैं !"

"मैं इस झंझट में नहीं फसना चाहता !"

"अपने पड़ोसी अफगानिस्तान के बारे में तुम्हारी क्या राय है ?"

"दूरी की आम से हाथ की आधी भली......दूर के बड़े यार से अपना पड़ोसी अफगानिस्तान बहुत अच्छा !"

अजीज के समीप सरक कर अब्दुलकरीम बोला—"बस इसी मतलब से मुझे अमीर हबीबुल्ला खां ने जुनेद आग़ा और आप की खिदमत में भेजा है । अब तक यह रहा कि मुसलमानों को एक तरफ रूस, दूसरी तरफ बर्तानिया और तीसरी तरफ फ्रांस बांटे रहे । लेकिन अब इस जंग से यह मौका है कि दुनिया के मुसलमान मुल्कों में एका हो जाय ! इस के लिये सभी को कोशिश करनी होगी । एक जान एक दिल हो कर ! लेकिन हम लोगों को एक बड़ी ताक़त के सहारे की भी जरूरत है, मिसाल के तौर पर बर्तानिया ही हो ! अमीर की राय है कि इस वक्त रूस में फैली गदर का फायदा उठा कर मुस्लिम मुल्कों तुर्की, तुर्कमानिया और अफगानिस्तान का एका बन सकता है । इस बारे में आपकी राय क्या है ?"

अज़ीज़ सर सिर झुकाये सोचता रह गया । अब्दुलकरीम खां की बात बहुत सीधी सादी न थी कि जैसे चाहा देहात पर घर लगा दिया । इस सवाल का जवाब देने से पहले खूब सोच लेना जरूरी था । अज़ीज़ ने अफगानिस्तान से जा मिले तो रूस क्या थोड़ी देखता रह जायगा ! और फिर अफगानिस्तान का अमीर क्या ज़ार से भला होगा ! अफगानिस्तान उसे पठानी सुल्तान मानेगा या उसे अपनी सल्तनत का एक मामूली सरदार ही बना देगा ?"

तलवार लटक रही थी और हाथ मे एक मेगजीन-राईफल थमी थी। सब से अधिक विस्मय हो रहा था अशीर को अरतैक के कधो पर हरे रंग के हिलाल और तारे के निशान देखकर। उसी ओर देखते हुये अशीर ने पूछा—"तुम किस फौज मे भरती हुये हो?"

अशीर की बात से अरतैक को अचम्भा हुआ। अशीर ने पहले न मित्र की बाबत, न अपने और उसके घरबार की बाबत, न गाव की बाबत और न ढोर डंगर का ही कुछ पूछा। अरतैक के जग से लौटने और ऐना के बारे में भी कोई बात नहीं। सीधे यही प्रश्न, किस फौज मे भरती हुये हो? उसने उत्तर दिया—"मैं अजीज की फौज में हू!"

"अजीज खा की फौज?"—लम्बी यात्रा से थकी आँखें झपक कर अशीर बोला—"अजीज खा किस फौज में है?"

"अजीज खा की अपनी फौज है!"

"किन लोगों के साथ है वह किस वर्ग (जमात) के साथ?"

इस प्रश्न से अरतैक को और भी हैरानी हुई। अशीर का ढंग भी मित्रा जैसा नहीं, कुछ संदेह भरा और अफसराना था। उस बात को उपेक्षा कर अरतैक ने साफ साफ जवाब दिया—"वर्ग से तुम्हारा क्या मतलब? वर्ग मैं नहीं जानता। अजीज तुर्कमानी जनता के साथ है।"

"तुर्कमानी जनता के साथ या तुर्कमानी जागीरदारों के साथ?"

"मेरा तो खयाल है कि जनता के साथ!"

"तो तुमने यह कधे पर निशान कैसे लगा रखे हैं?"

"क्यों क्या निशान लगाना मना है?"

"नहीं, यहाँ दूसरे निशान होने चाहिये थे।"

"लाल फौज के?"

"हाँ"

"जब तक लाल फौज का कमाण्डर कुली खा रहेगा, लाल फौज का निशान मैं नही लगा सकता।"

"अफसोस है मुझे।"

"क्यो?"

"हम तुम एक माँ बाप के बेटे न सही पर एक ही जमात की औलाद थे।"

"तुम क्या समझते हो, तुमने अपनी पोशाक बदलदी है तो [illegible] भी बदल गई है ?"

"सवाल पोशाक का नहीं दिल का है।"

"तो क्या यह निशान ही मेरा दिल है।"

"अस्तैक, १९१६ में हम लोगों ने ज़ार की सरकार के खिलाफ बग़ावत क्यों की थी ? तुमने जेल किस लिये काटी ?"

"जुल्म का विरोध करने के लिये !"

"तो फिर लाल निशान छोड़ कर हरे निशान क्यों लगाये हो ?"

"मैं तो कह चुका, कुली खां के निशान मैं नहीं लगाऊंगा।"

"लाल निशान कुली खां के नहीं हैं वह जनता के निशान हैं।"

"तेजेन में तो ये कुली खां के ही निशान हैं।"

"खैर मैं नहीं जानता अजीज खां अब क्या कर रहा है। पहले तो वह जनता के ही साथ था। लेकिन मुझे तो लाल निशान छोड़ दूसरा कोई निशान सुहाता नहीं ?"

"अशीर, लाल हरे रंग के निशानों का झगड़ा बाद में होता रहेगा। चर्नीशोव से इस बारे में मेरी बात हो चुकी है। आओ तुम चाय तो पीलो। ज़रा सुस्ता लो पहले।"

दोनों मित्र अजीज़ खां के डेरे पर अन्ना की 'काफिला सराय' में पहुंचे। वहाँ तोंद बढ़ाये, चिकने चिकने चेहरे के लोगों को धामी और भद्दी [illegible] ने सहन में आते जाते देख अशीर को भला न मालूम हुआ। अजीज़ खां भी दिखाई दिया। अशीर की पोशाक देख अजीज़ के माथे पर त्योरी [illegible] गई। अशीर के बैठते ही वह अस्तैक की ओर देख बोला—"यह कौन आदमी है ?"

"मेरा एक दोस्त, अशीर साहब !"

"क्या करता है ?"

"जबरन मजदूरी से छूट कर अभी लौटा है।"

"हूँ"

"तुम भूल गये, पिछले साल की मजलिस में यह [illegible] साथ ही [illegible] आया था।"

"अगर तुमने लाल निशान, पहनाया [illegible]!"— अजीज़ ने [illegible]

करीम भी जानता था कि सवाल अजीज के लिये आसान नहीं है। खूब सोच लेने का अवसर देने के लिये करीम चुप बैठा उसकी झुकी हुई पलकों की ओर देखता रहा।

अज़ीज काफी देर तक सोचता रहा और फिर अपने हुक्के के तम्बाकू में एक दियासलाई दिखाकर हुक्का गुडगुडाने लगा। सूने कमरे में हुक्के की गड-गडाहट बहुत जोर से सुनाई दे रही थी और तम्बाकू का नीला नाला बोझल धुँआ कमरे भर मे फैल गया। हुक्के की सटक मुँह मे लगाये अजीज ने पूछा—"जुनेद आगा की क्या राय है ?"

"जुनेद आगा सब मुसलमानों का एका चाहता है। वह अमीर से सहमत है।"

"आगा ने अमीर के लिये कोई खत दिया है ?"

"खतों के बारे में तो मैं अरज़ कर चुका हूँ कि अगर मैं पकडा जाऊ और ऐसा कोई खत पत्र मेरे पास निकल आये तो मेरी तो जान जायगी ही, लेकिन मेरी जान की इतनी फ़िक्र नहीं। ऐसी हालत मे जिस काम के लिये मैं जोखिम झेल कर आया हूँ उसकी भी राह रूक जायगी। खत पत्र मैं अपने साथ कैसे रख सकता हूँ ?"

"ठीक कहते हो।"

"फिर क्या राय है आपकी ?"—कुछ प्रतीक्षा के बाद करीम ने पूछा।

"मैं जुनेद आगा के साथ हूँ। आगा जो कहते हैं, ठीक है।"

दो दिन तक अजीज़ खा और अब्दुल करीम खा तुर्कमानिया और अफगानिस्तान की सधि के बारे मे बातचीत करते रहे। इस बीच करीम ने तेजेन में अज़ीज की स्थिति का पूरा पता लगा लिया। अजीज़ के सलाह-कारों, उसके फौजी अफसरों और सोवियत सरकार की स्थिति भी वह जान गया। अवसर निकाल कर उसने काज़िल खा और कलूई खा और उनकी फौजों को भी देख लिया। करीम हर बात के ब्यारे में गहराई तक जाता था। उसकी चतुरता और सावधानी से अज़ीज़ को विस्मय होता था। अजीज ने ऐसे चतुर और समझदार आदमी अफगानिस्तान में कभी न देखे ।ने दरबारियों को उसने अब्दुल करीम खा का भेद न बताया।

दो दिन बाद अब्दुल करीम खा सेराख की ओर चला गया।

११

अनतैक के गाँव का और उसका लंगोटिया अशीर भी दूसरे साथियों के साथ ज़बरन भरती में पकड़ा गया था। वह दूसरे तुर्कमानी साथियों से अधिक दूर, मजदूरी पर रूस के भीतरी भाग में भेज दिया गया था। ज़ार की सरकार टूटने पर जब दूसरे लोग लौटे, अशीर उनके साथ ही न लौट सका। वह कई महीने बाद, कई रेलों का चक्कर लगाता हुआ तेजन स्टेशन पर पहुँचा।

अशीर स्टेशन से शहर की ओर आ रहा था और आने जाने लोगों के चेहरे पहचानने का यत्न कर रहा था। पहला परिचित आदमी उसे अनतैक ही मिला। दोनों मित्र यों अचानक एक दूसरे को पा गद्गद हो गले मिले।

अनतैक अशीर की ओर विस्मय से देखता रह गया। अशीर [illegible] मज़दूरों के ढंग का गन्दे भूरे रंग का सूट पहने था। कपड़े उसके मशीनों के तेल से चीकट हो रहे थे और पाँव में भारी भारी फौजी बूट थे। अनतैक को अशीर का पहनावा देखकर नहीं, चेहरा देखकर विस्मय हो रहा था। उसका चेहरा बिलकुल बदल गया था। उसके चेहरे पर [illegible] [illegible] था और माथे पर अनुभव की रेखाएँ पड़ गई थीं। उसकी आँखें [illegible] आवाज़ भी भारी और गम्भीर हो गई थी। हँसी में [illegible], खिलखिलाने [illegible] की धारा बदल कर गहरा गम्भीर भाव बन गई थी। अनतैक सोचता रह गया कि अशीर को हो क्या गया?

अशीर को भी अनतैक का चेहरा बदला हुआ जान पड़ा। अनतैक के चेहरे पर पहले का सा [illegible] न था। उसके चेहरे पर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] था। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

कारण उन्हे खूराक की कमी न थी। काफिला मीलों सफर कर चुका था परन्तु एक भी घुड़सवार राह मे न मिला। आखिर अशीर को सड़क पर खूब दूर धूल का बादल सा दिखाई दिया। फिर सुमो की आहट सुनाई दी और दो घुड़सवार सरपट घोड़े दौड़ते हुये काफिले के पास से निकल गये। एक सवार दोहरा लाल चोगा पहने ऊंचे घोड़े पर सवार था। दूसरा सवार भी भारी शरीर का मोटा सा आदमी था और एक चितकबरी घोड़ी पर सवार था।

घुड़सवारों के बगल से निकल जाने पर अरतेक ने उन्हे पहचान लिया। वह तुरन्त घूम गया और अपनी राइफल उठा उसने घुड़सवारों पर निशाना साधा। वह राइफल का घोड़ा दबाने को ही था कि अशीर ने हाथ बढ़ा राइफल खींचली और पूछा—"यह कौन लोग हैं इतनी शान से ?"

"तुम क्या समझते हो ?" बड़े यत्न से अपना गुस्सा रोक अरतेक ने उत्तर दिया—"इस बरस देहात के कौए ही नहीं मुटा रहे शहरों में जिन्दा गरीबों को नोच कर खाने वाले गिद्ध भी मुटा रहे हैं। यह थे तुम्हारे लाल निशान के सरदार !"

"लाल फौज के सरदार ?"

"हां कुलाखा और केलुइखा !"

इसके बाद दानो मित्रों मे कोई बात न हुई। दोनों सिर झुकाये थके मांदे कदम कदम चलते गये। गांव पहुँच कर अरतेक मौराद की छोलदारी में और अशीर अपने परिवार की छोलदारी मे चला गया।

अशीर की मा दूर से बेटे को पहचान न सकी—"हैं, यह कौन रूसी हमारे यहा घुसा चला आ रहा है ?" अशीर की मा सोच रही थी। उसी समय अशीर पुकार उठा—"मा !"

बुढ़िया का शिथिल शरीर कांप उठा और उसकी धुन्दली हो गई आंखों में आंसू छलक आये।

"मेरा बच्चा ! अशीरजान !—वह बार बार चिल्लाने लगी और बेटे को बांहों मे ले सीने से चिपटा लिया। मन का पहला आवेग बस मे आ जाने पर मा आंखों से आंसू बहाती अपनी दुख की कहानी, अपनी बहू की मौत की बात सुनाती रही। मा ने रो रो कर सुनाया—"जब तुम्हे पकड़े लिये

जा रहे थे मैं दौड़कर अलनजर वे के यहा गई और उसके पाव छू छू क
मैंने दुहाई दी, मेरा एक ही बेटा है, मालिक रहम कर। मेरा बेटा मुझे
बक्श दे।" वे ने एक न सुनी। आज मा की आखों में दुख के आसुओं
की जगह आनन्द के आसू बह रहे थे।

"बेटा, अल्ला ने तुझे मेरी गोद मे लौटा दिया। अब दुनिया मे मे
कोई साध बाकी नहीं ।"

दिया—"कमबख्त जार की नौकरी ने हजारों नौजवानों को बरबाद कर दिया। कपडे तो देखो इसके, क्या पहने है? चेहरा कैसा पीला हो रहा है? मालूम होता है जैसे परेशानी काट कर लौटा है। तसल्ली रखो भैया, यही गनीमत है कि जिंदगी बच गई, हाथ पाव सलामत हैं। सब ठीक हो जायगा।"

"अरतैक अशीर को अपने ब्याह और ऐना की बाते सुनाता रहा। अतैरी-बहरी की बातें सुन सुन वह खूब कहकहा लगा कर हसा। बहुत देर तक तो अरतैक अशोर के घरबार की खबर टालता रहा लेकिन बाद मे उसे बताना ही पडा कि उसकी पत्नी की मृत्यु हो चुकी थी। इस खबर से अशीर को बहुत दुख हुआ। वह साल भर से अपनी पत्नी से मिलने की आस लगाये बैठा था। जबरन भरती के समय अपने घर के लोगों से मिलने का भी समय उसे न मिला था। अशीर बहुत देर तक सिर झुकाये उदास बैठा रहा। अरतैक उसे सान्त्वना देने का यत्न करता रहा।

अशीर अरतैक को सुनाने लगा कि उसे इवानोव भेजा गया था। उसे एक मामूली मजदूर की तरह कडी मेहनत करनी पडती थी। वहा कुछ साथी मिले जिनसे बातचीत होने पर उसे देश और दुनिया की हालत का पता लगा—"अरतैक इससे पहले मैं कुछ समझता न था। हम लोगो ने यहा वे लोगों के खिलाफ बगावत की। हुआ क्या? सौ-पचास लड मरे, पचासों चुपचाप बैठे रहे, कुछ वे लोगों का पैसा खाकर उनकी ओर हो गये, कुछ हमी लोगों से लड मरे। रूस मे ऐसी बात नही है। वहा किसान मजदूर खूब सगठित हैं।"

"कैसे? क्या मतलब तुम्हारा?"

"उन लोगों मे सगठन और दृढता है।"

"साल भर मे तुम नई बाते और नई जुबान सीख आये हो। मैं तुम्हारी बात समझ नहीं पाया।"

"मैं साल भर और रहता तो रूसी बोलना भी सीख जाता। अब मेरे दिल मे जबरन भरती मे भेजे जाने का कोई कलख नहीं और न वहा कडी मेहनत करने का। घरबार का खयाल न होता तो अभी साल दो साल और वहीं रह जाता। हम लोग अनपढ हैं बोली भी नहीं जानते। इसीलिये तो मुतरज्जिम (अनुवादक) हमारा खून पीते रहे।"

"तुम मुझे कुलीखा से मित्रता न करने के लिये कोस रहे थे, क्या कुलीखा मुतलिम्मो से भला आदमी है ?"

'वह बात ही दूसरी है।"

"अशीर अभी यहा सैकड़ों ऐसे आदमी हैं जिन्हे ठिकाने लगाना होगा। कुलीखा है, अलनजर बे है। मैं अजीजखा से कुछ दिन की छुट्टी लिये लेता हूँ। एक साथ गाव चलेगे। वहा अपने पुराने मित्रों से मिलेंगे और अलनजर बे को भी अपना सलाम कह लेगे।"

"बहुत ठीक रहेगा अरतैक, मैं उसे जरूर सलाम कर लेना चाहता हू।"

अरतैक अजीजखा से छुट्टी मागने गया तो खान ने उसे चेतावनी देकर कहा—"देखो, देहात मे कुछ गडबडी न हो! अभी सब्र करो।" अरतैक बात टाल गया। अपने मन की बात उसने न कही।

दोनों मित्र एक काफिले के साथ गाव की ओर चल दिये। राह उजाड़, सपाट मैदानो मे से होकर जाती थी। ऊटो के चौडे चौडे पाव के दुरमट पड-पड कर सडक समतल हो गई थी और हवा उसे बुहार कर साफ किये दे रही थी।

अशीर इस सड़क पर चलता दूर दूर तक नजर दौडाता हुआ सोचता जा रहा था, ऐसी सडक पर बाइसिकल कितने मजे में चल सकती है और सफर कितनी आसानी से और जल्दी ते हो जाता। एक बात की ओर उसका ध्यान बार-बार जा रहा था कि रेल के स्टेशन से सडक के किनारे-किनारे तुर्कमान लोगों की छोलदारिया लगातार फैली हुई थीं। इनमे कज्जाक लोगो की छोलदारिया भी काफी थीं। यह लोग नये-नये आकर बसे जान पडते थे। जैसे रात भर जोर की बदल-बरसात के बाद अचानक मैदान में झुण्ड के झुण्ड धरती के फूल (कुकर मुत्ते) उग आये हों। राह में भूख से सूखे शरीर, थके मादे किसानो के झुण्ड के झुण्ड शहर की ओर आते मिलते थे। आखो की दौड मे, दूर तक कहीं भी घास या हरी झाड़ी दिखाई न देती थी। रेतीले मैदानों में पनपने वाली काटेदार झाड़ियां भी कुम्हला कर धरती पर बिछकर सूख गई थीं। जुते हुये खेतो में धूल की आंधिया चल रही थी और मोटे मोटे पहाडी कौए इन खेतो मे से अनाज के बीज अपनी फौलादी चोच और पंजों से खोद-खोद कर चुग रहे थे। मनुष्य और पशु भूख से सूख रहे थे परन्तु कौवे मुटा रहे थे। जगह जगह लोगों रहने के

१२

अरतैक तड़के ही कुछ खाकर घर से निकल पड़ा। आकाश में करा-कोरम के रेगिस्तान से उठने वाली रेत की घटाओं जैसे उजले उजले बादल रूई के बड़े बड़े लोंदों की तरह सूर्य की किरणों में चमकते हुये उड़ रहे थे। हवा के झोंके मुख पर लगते तो कुछ ठंडी ठंडी सीलनसी अनुभव होती। हवा सड़ती हुई लाशों की दुर्गंध से बोझल हो रही थी। अरतैक खादिम बाबा की छोलदारी की ओर चल पड़ा।

खादिम ऊखली में बिनौलों की खली कूट रहा था और सिर झुकाये सोचता भी जा रहा था। खली में से उड़ती पीली पीली भूसी खादिम की पलकों और दाढ़ी पर जम गई थी। उसका चेहरा भी बिनौले की खली जैसा ही जान पड़ रहा था। जान पड़ता था जैसे कब्र से उखाड़ कर निकाला हुआ चेहरा हो। जब वह पलकें उठा सामने देखता तो उसकी आंखें पीड़ा और घृणा से पथराई हुई सी जान पड़ती। अरतैक को देखकर भी वह उत्साहित और प्रसन्न न जान पड़ा। उसकी घरवाली 'बीबी' की आयु रही होगी तीस बरस परन्तु वह भी बुढ़िया जान पड़ती थी। बीबी के चेहरे पर भी घोर निराशा और उपेक्षा जमी हुई थी। उनकी सात आठ बरस की लड़की केवल बांस की कमचियों का ढांचा भर दिखाई देती थी। उसका भी रंग सूखे कुम्हड़े की तरह पीला हो रहा था। इस परिवार की अवस्था देख अरतैक का कलेजा मुंह को आने लगा।

अरतैक मन ही मन सोच रहा था—"इन लोगों के लिये क्या किया जाय? क्या मदद इनकी की जा सकती है?"

उसी समय पड़ोस से अलनजर बे की अकड़ भरी आवाज और उसके घोड़े मातकौश की हिनहिनाहट सुनाई दे गई। अरतैक के कलेजे में घृणा और हिंसा की आग भड़क उठी—अभी जाकर इस कमबख्त से कहूँ, अगर तुझे जान प्यारी है तो एक ऊंट बोझ गेहूँ फौरन खादिम बाबा के घर

पहुँचा ! उसी समय ख्याल आया—अगर मैं न जाकर कहूँ और वे खादिम बाबा के यहा एक ऊंट गेहूँ पहुचा ही दे तो क्या होगा ? दूसरों का क्या होगा ? एक खादिम बाबा का ही तो सवाल नहीं है ?

"खादिम बाबा"—उदास स्वर मे अरतैक बोला—"कहो क्या हाल है ?"

शायद खादिम अरतैक की सहानुभूति का भाव समझ न पाया। दुखी आदमी चिडचिड़ा हो ही जाता है —"हमारा क्या हाल है ? खादिम ने चिड कर उत्तर दिया—"हाल है उनका जो समूर की टोपिया, लाल चोगे और काले चमकदार बूट पहन कर अकड़ते फिरते हैं। यो तो दुनिया के फिक्र हमे छोड़ जायगे या हम दुनिया को छोड जायगे।"—पल भर अरतैक की ओर देख वह फिर बोल उठा—"ऐसे भी आदमी हैं जो कन्धो पर निशान लगाये, कमर मे तलवार लटकाये अकड़ते फिरते हैं"—वह कहकहा लगा कर हस उठा बदहवास पागल की तरह !

खादिम की पागलपन की बाते और हसी अरतैक के दिल मे बर्छी की तरह धस गई। पीडा से उसका कलेजा जोर से धडकने लगा। अपना लाल चोगा उसे ऐसा जान पड़ा जैसे उसके शरीर से आग की लपटे उठ रही हों। उसका शरीर झुलसा जा रहा हो। वह खादिम की छोलदारी से झपटकर निकल गया परन्तु खादिम का पागलपन का कह-कहा उसका पीछा कर रहा था। वह कह-कहा हिचकियो और रोने की चिल्लाहट मे बदल गया। अरतैक का हृदय असह्य पीडा से उसके हाथों से निकला जा रहा था।

अरतैक छोलदारियों की कतार के सामने से चला जा रहा था। छोलदारियों के सामने के चूल्हे और अंगीठिया सूनी पडी थीं। इस बरस इन चूल्हों और अगीठियो में आच नहीं जलाई जा रही थी। चूल्हे और अगीठियाँ उखडी और चिटकी हुई थीं। कही कहीं इन चूल्हों में चींटियों और दीमकों ने भिटे बना लिये थे। अरतैक इस उजडी, सोग मनाती बस्ती को देखता जा रहा था ! उसके कानो मे खादिम के कहकहे और आँसू भरी हिचकिया गूज रही थीं। वह समझ नहीं पारहा था—कहा जाये, क्या करे ? सामने कच्ची दीवारों पर बनी एक झोपडी पर उसकी आँख पड़ी। कुछ लोग इस दीवार की टेक लिये घाम ले रहे थे।

दीवार के सहारे घाम मे बैठे लोगों ने अरतैक को पहचान कर सलाम किया। इन लोगों के स्वर में कोई शिकायत या शत्रुता का भाव न था परन्तु अरतैक को उनकी उदास और निराश आखे कहती हुई जान पड़ीं—' दोस्त

पिछले साल तुम भी हमारे साथ इस झोपड़ी में पड़े थे। तुम्हीं ने तो आजादी, इन्साफ और जुल्म का मुकाबिला करने की बातें करके हमारे दिलों को बेचैन कर दिया था। अब तुम भी अफसर बन बैठे, कन्धों पर निशान लगा कर ! शायद तुम हम पर रोब जमाने आये हो।"

"क्यों मैंने यह चीथड़े लाद लिये हैं। यह पोशाक पहन कर यहां गाँव में क्यों आया। अशीर ने ठीक ही किया, उसे मैंने कपड़े बदलने के लिए दिये तो उसने नहीं बदले। मैंने क्या मूर्खता की !" वह अपने कीमती कपड़ों की परवाह न कर उन लोगों के बीच धरती पर जा बैठा।

चरखेज ने अपना लबादा उतार अरतैक के लिये बिछाते हुये कहा—"यह लो, तुम इस पर बैठो। धूल में तुम्हारे कपड़े खराब हो जायगे।"

अरतैक को चरखेज की बात में घृणा और अपमान मालूम हुआ। खिन्न होकर वह बोला—"चरखेज आगा, मेरे कपड़ों पर मत जाओ ! मैं वही पुराना अरतैक हूँ। मेरा दिल तो नहीं बदल गया।"

उसी समय अशीर भी आ पहुंचा। लोग उसे देख खुश होकर उठ खड़े हुये। अशीर के कपड़े उन लोगों को और भी विचित्र जान पड़े। वे उससे मजाक करने लगे—"अशीर तुम तो पूरे पूरे रूसी बन गये।"

"हमने समझा था कि चर्नोशोव ही आ रहा है।"

"हमने तो समझा कि रेल का गार्ड आ रहा है।"

"कारखाने का मजदूर लगता है।"

"मैं रूसी बन गया तो कौन बड़ी बात है !"—हँस कर अशीर बोला—"तुम अरतैक को देखो, वह तो खान बन गया है।"

अरतैक पहले ही चिढ़ा बैठा था। बिगड़ कर बोला—"अब यह बक-वास बन्द करो।"

"देखलो, अभी से रोब जमा रहा है।"—अशीर और भी हंस दिया।

अरतैक गम्भीर हो गया—"तुम्हारा मतलब क्या है ? साफ साफ क्यों नहीं कहते ? तुम लोगों की मुसीबत की बात कह रहे हो ? संगठित होने को कहते हो ? तो आओ, चलो हम तुम्हारे पीछे हैं। तुम से नहीं हो सकता तो मेरे पीछे आओ।"

"तुम्हारी बात मैं समझा नहीं"—अशीर उसकी ओर देख कर बोला—

"मैं सदा तुम्हारे पीछे साया की तरह चला हूँ, अब भी तैयार हूँ। यह सब लोग भी तैयार हैं। और अब तो तुम अफसर हो ही ! हुक्म करो! सब लोग तैयार है !"

अरतैक क्रोध में काँप उठा। वह चाहता था अशीर को और कड़ी बात कहे। उसके होंठ और हाथ फड़क उठे। आस पास बैठे लोग पहले मज़ाक से खुश हो रहे थे परन्तु बात बिगड़ती देख गम्भीर हो गये। बीच में बोल कर चरखेज ने बात बदली—"अशीर, तुम रहे कहाँ बरस भर ? क्या क्या देखा सुना ?" फिर अकाल की बात चलने लगी कि इस मुसीबत के समय किसानो कि सहायता कैसे हो सकती है ?"

"अगर तुम लोग तैयार हो तो राह मैं बताता हूँ"—अरतैक बोला।

"हम लोग सदा तुम्हारे पीछे रहे हैं और अब तो तुम जो कहो..." कई आदमी एक साथ बोल उठे।

"गल्ले के लिये दूर जाने की जरूरत क्या है। गल्ला तो साल भर के लिये यहीं मिल सकता है।"

लम्बी लम्बी भौं वाला बूढा तैयारी से उठ कर बोला—"यही हो जाय तो हम लोगों की जान बच जाय ! बताओ कहा है गल्ला ?"

"गल्ला और कहाँ होगा ? अलनजर की खत्तियों मे खूब भरा है।"

"अलनजर ने क्या गल्ला हम से उधार लिया था कि अब लौटा देगा ?'—चरखेज ने पूछा।

"अलनजर ने हमारे गल्ले की डकैती की थी, हम उससे माँगने नहीं जा रहे हैं।"

"अलनजर अज़ीज़खाँ के वज़ीरों मे है।"

"वजीर नहीं वह जार हो जाय ! हम चोरी से छिपाया गल्ला निकाल कर भूखों को देंगे।"

"अज़ीजखाँ की सोच लो !"

"अजीज अपनी खुद सोचता रहेगा।"

अशीर उठ कर खड़ा हो गया—"ठीक है दोस्तो, अरतैक हमारा पुराना मुखिया है।"--उसने अरतैक की पीठ थपथपा दी।

पहले कभी कोई वे लूटा न गया हो ऐसी बात तो न थी फिर भी बात

मामूली भी न थी। यह बात मजहब, और शरिअत के खिलाफ थी। इस्लामी रिवाज के भी खिलाफ थी। अलनजर क्या चुपचाप लूटा जाने के लिये तैयार हो जायगा ? दो चार दस की जान जरूर जायगी ! पर किसानो की जाने तो यों भी जा रही थी। अलनजर को शायद भूखे मरते गरीबों पर तरस ही आ जाय, या वह भीड देख कर ही डर जाय। आदमी अपने घर वालों को भूखा मरने दे तो भी गुनाह है। भूखा मरे, दोजख भी जाय। इससे तो आदमी लूटने का ही गुनाह सिर ले ले। भूखे किसान यही सब बातें सोच रहे थे। कुछ बडे बूढ़े घबराये भी परन्तु बाकी सब लोग बे के यहा चल कर गल्ला निकलवाने के लिये तैयार हो गये। बात तुरन्त ही गॉव भर मे फैल गई और भीड की भीड लोग बे के खेमो की ओर चल दिए।

भीड के चढे आने की खबर बे के यहा पहुंच गई थी। उसने अरतैक के कन्धों पर लगे हरे निशानो की ओर देखा और अशीर के रूसी मजदूर के कपडों की ओर भी नजर दौडाई। भय और घबराहट से उसकी भौं और होंट थिरक रहे थे। यह क्या होने जा रहा है ? वह बार बार मन में सोच रहा था।

अरतैक आगे बढ कर बोला—"बे आगा, हालत तुम जानते ही हो। किसान एक एक एक करके भूख मे मरते जा रहे हैं रोज रोज इतने आदमी मर रहे हैं कि कब्रें खोदना भी मुश्किल हो गया है। जो आज चलते फिरते दिखाई भी दे रहे हैं, समझलो कल वह भी कब्र मे लेट जायगे। सभी लोग जानते हैं तुम बडे दयालू हो इसी लिये सब लोग तुम से मदद मागने आये हैं। अगले साल फसल पर हम तुम्हारा गल्ला दाना दाना चुका देंगे। देखो तो इन लोगो की तरफ ! क्या हालत हो रही है सब की ?"

जमाना बदल चुका था। एक साल पहले लोग ऐसा साहस करते तो बे भीड को गाली दे दुत्कार देता, भाग जाओ यहाँ से यह गल्ला तुम्हारे बाप का है ? और गोली चला कर इन्हे भून डालता परन्तु इस समय उसे दूसरे ही ढंग से बात करनी पडी—"भैया, मैं क्या नहीं देख रहा हू। पर कहीं धरती में से गल्ला निकल सकता है ? इतना ही मेरे बस में होता तो मैं भला लोगों को दुखी होने देता ? बॉटता और असीसे लेता। मेरे पास है ही क्या ? मेरे पास तो जो कुछ था, कभी का बॉट चुका अब तो सब मिला कर एक बोरी गेहू भी न निकलेगा। इतना अगर बॉटने भी लगू तो चार चार दाने भी हिस्से न पडेंगे। अब सब भाई आये हैं तो क्या करू ! जो है पाव आध सेर

सभी को बराबर बाँट देता हू । न होगा थोड़ा खली में ही मिला कर ता आजायेगा ।

अग्तैक अभी तक मुस्कर हट बनाए था परन्तु बे की बात सुनकर उसर माथे पर बल पड गए । बे की ओर घूर कर उसने कडी आवाज में कहा—"यह लोग भिखमगे नहीं हैं । पाव आध सेर की भीख मागने नहीं आए है। यह लोग अपना गल्ला वापिस लेने आये हैं जो तुमने पिछले साल मर लिया था ! तुम साधे साधे देते हो तो ठीक ही है । अगर अडियल टट्टू की तरह अडोगे तो हम उसी तरह इन्तजाम करेगे ।"

"भैया मैं तो कह चुका कि मेरे पास होता तो मांगने की जरूरत ही न पडती । कसम न खिलाओ, मेरी बात मानो ! मेरे यहाँ गल्ला है नहीं ।"

"बे आगा, बात बहुत होली, चलो खत्ती का दरवाजा दिखाओ ! हम लोग खुद ही देख लेंगे ।"

बातों से काम न देख अलनजर ने तोर बदले । धमका कर बोला—"जबान सम्भाल कर बोलो ! कौन हो तुम मेरा गल्ला लेने वाले ? मेरे भी दो हाथ हैं । मैं भी अलनजर हूँ कुछ और न समझ लेना । कन्धो पर दो फीते क्या लगा लिए हैं तुर्रमखाँ बन बैठे हो । बहुत ज़बान चलाओगे तो यह निशान निशान फडवा कर रख दूगा ।"

अशीर भीड मे से आगे बढ आया और अलनजर की ओर घूर कर बोला—"ओहो बहुत फाडना जानते हो ? पहले मेरे ही कपडे फाड़ लो ।"

अशीर ने अपना तेल मे चीकट कोट उतार कर बे के मुह पर दे मारा । कोट में भरे गर्द और तेल की बू से बे को जोर की छींक और खासी आ गई । इस अपमान से क्रुद्ध हो वह अशीर पर झपटा परन्तु अशीर ने उससे पहले ही एक घूमा उसके मुह पर जोर से दिया । अलनरज़ ने खेमे के कोने से लाठी उठाई परन्तु अग्तैक ने लाठी उसके हाथ से छीनली । अशोर फिर उसकी ओर झपटा परन्तु इस बार नरम्बेज ने उसे थाम लिया । बे सहायता के लिये जोर से पुकार उठा—"सावेद हो ! चले हो, दौड़ो !"

बे की चीख पुकार मुहम्मदअली खोजा ने अपने खेमे में सुनी । वह कपड़े उतार कर लेटा हुआ आराम कर रहा था । पुकार सुन एक तहमत लपेटे ही दौडा आया । आ कर उसने देखा भीड बे को घेरे खड़ी है और उसके हाथ पाव बाधे जा रहे हैं । यह देख खोजा चुपचाप उलटे पांव जंगल

की ओर भाग गया ।

हल्ला सुन बे के घर की स्त्रियां दौड़ी आई । मेहली ने यह सब दृश्य देखा तो घबरा कर चीखने को ही थी । उसी समय समझ आया कि लोग स्त्रियों को कुछ नहीं कह रहे हैं तो यह तमाशा देख उसके ओठों पर मुस्कराहट आ गई । अतेमी-बहरी को लोगों की इस हरकत पर गुस्सा आ गया । वह झपट कर अरतैक का मुह नोच लेने को ही थी कि उसका भी विचार बदल गया ।—"अच्छा है, जरा इसका मिजाज दुरुस्त हो जाय, बहुत चीखा करता है ।" उसने सोचा ।

बेगम शादाब रोती हुई अरतैक से बोली—"क्या कर रहे हो बेटा, शरम नही आती तुम्हे ! तुम्हारे बाप की उम्र का है ! तुम उसकी दाढी नोच रहे हो ? बेचारे पर रहम करो ! तुम्हारा अपना घर है भीतर आ कर बैठो, तुम्हारे खाने पीने के लिये लाती हू ।"

मावेद भी शोर सुन खेमे की आखिरी छोलदारी मे भागा हुआ आया और बोला—"हटो पीछे, खबरदार कौन है ? खबरदार अगर मेरे बाप को हाथ लगाया !"

मावेद अरतैक की ओर दौडा परन्तु अशीर ने उसे बीच ही में रोक उसकी गर्दन दोनों हाथा मे लेली । चरखेज ने भी उसे थाम लिया । दोनों मावेद को खींचते हुये एक ओर ले गये । अशीर ने मावेद की आँखों मे आँखे डाल धमका कर पूछा—'अबे बेवकूफ, यह लोग तेरे फायदे के लिये लड रहे है और तू इन्ही पर चोट कर रहा है । सिर घूम गया है तेरा ।'

चार बरस गुलामी करके भी तुझे होश नही आई ?"

"तुम समझते हो मैं यहाँ शौक से पडा हूँ ?"

"तो यहाँ पडा क्यों है ?"

"मावेद चुप रह गया । अशीर भी उसका भेद समझ न पाया और मावेद की ओर देखता रहा और बोला—"अगर तुम हम लोगो के साथ हो तो बताओ अनाज की खत्ती कहाँ है ?"

मावेद ने चारों ओर नजर दौडाई । उसके मन से बे का आतंक अब भी दूर न हुआ था और मन मे बे से बदला लेने की इच्छा भी जाग उठी ।

अशीर ने उसका अभिप्राय समझ कर कहा—"कोई नहीं देख रहा है । भरोसा रखो मुझ पर ।"

"मेरा हिस्सा मिलेगा ?"

"जरूर !"

' मैं खत्ती बताये देता हूँ परन्तु तुम खत्ती खोलोगे तो मैं शोर करूँगा और मार पीट करूगा। ताके बे को शक न हो !" मावेद ने ओस के माल भौरा के रखने की जगह की ओर इशारा कर दिया।

अर्शीर समझ गया। उसने पूछा—' और कहाँ है ?"

मैं यहाँ एक जगह जानता हूँ। यहाँ भी कम नहीं निकलेगा।

अलनजर के हाथ पाव बाध कर ईंधन के ढेर पर बैठा दिया गया था। वह किसी भी सवाल का जवाब न दे रहा था। वह सोच रहा था किसी तरह भाग कर अज़ीज के यहाँ पहुँच जाय। लेकिन गल्ले का तो दाना भी नहीं बचेगा। अजीज़ अगर इन सब को कत्ल भी करदे तो भी क्या ? मैं भिखमगा हो गया। और अजीज का भी क्या पता ? एक जमाना था जब जार के कर्नल और दारोगा मेरी बात पर दौडे आते थे। यह गांव मेरे इशारे पर नाचता था ! आज सब बरबाद हो गया ·····।

अरतैक ने किसानों को लेकर सारे खेमे की छोलदारिया छान डालीं परन्तु अलनजर की ही बात ठीक हो रही थी। तीन बोरी से अधिक गेहू न मिला। अतैरी ने अपने खेमे मे किसी को घुसने न दिया। वह दरवाजे पर पाव जमाकर खडी हो गई और बोली—"यहाँ जो आयगा सिर काट लूंगी।"

अरतैक अतैरी को पहचानता न था—"यह औरत कौन है ? यह तो बे के घर की औरत नहीं जान पडती। इसे पहले कभी देखा नहीं—" उसने पूछा।

"यह बल्ले की बहू है, अतैरी ! अगेतो की लडकी !"

अरतैक एक औरत से क्या लड़ता, क्या बहस करता ? उसे अतैरी पर गुस्सा भी आता था।

"वाह यह त मेरी मौसी होती है"—अतैरी को सुनाकर अरतैक बोला—"ब्याह हुआ तो मैं था नहीं। नहीं तो यह सम्बध कभी न होने देता। वह निकम्मा आदमी ऐसी औरत के लायक है ?'

"अतैरी का चेहरा बदल गया। दरवाजा छोड़ एक ओर हो वह बोली—"अरे भाई भाजे ने तो सात गुलामों को भी जगह देनी होगी है।

आओ,-आओ, बैठो।" स्वय ही उसने छोलदारी के दरवाजे का परदा उठा दिया।"

अरतैक भीतर गया और एक नजर में चारों तरफ देख बोला—"अच्छा मौसी, जरा बाहर के लोगों से निबटलू फिर बैठ कर बातचीत होगी!"

किसान छोलदारियों के आसपास, गढों मे और ऊटों के बधने की जगह लाठियों से ठोक-ठोक कर छिपी हुई खत्ती खोज रहे थे। अशीर घूमता हुआ मालकौश के थान पर पहुचा और जगह-जगह जमीन ठोक कर टोहने लगा। एक जगह पोल सुनाई दी। खोदने पर यहाँ खूब बडी खत्ती निकल आई।

किसानों ने जगह घेरली और फावडे बेलचे लेकर खत्ती खोदी जाने लगी। यह देख बे आपे से बाहिर हो गया। एक झटके से उसने अपने हाथों की रस्सी तुडाली और एक तलवार उठा भीड पर झपट पडा। गल्ले का नुकसान उसे अपने खून का नुकसान जान पड रहा था। बे की तलवार अरतैक के सिर पर पडती परन्तु अशीर ने पहले ही एक हाथ बे की कमर मे डाल कर उसे उठा धरती पर पटक दिया।

मावेद बे की मदद के लिये दौडा। परन्तु लोगों ने उसे भी पकड कर बांध कर एक ओर रख दिया। घर की औरतें रोती हुई आई और बे को लाश की तरह उठा कर भीतर ले गईं। अतैरी अशीर पर झपटी और उसका मुंह नोंचने लगी। अशीर ने उसे कमरबन्द से उठा नीचे पटक दिया। चोट खा वह ऐसे चिल्लाने लगी जैसे उसके गले पर छुरी रखी जा रही हो!

चरखेज ने बीच-बचाव किया—"अरे क्या कर रहा है? उसका पेट गिर जायगा। क्यों गुनाह सिर लेता है। छोड़दे इसे!"

पूरी भरी गल्ले की खत्ती देख किसानों की आँखें ऐसे चमक उठीं जैसे बच्चे मिठाई को देख कर किलक उठते हैं। उनकी महीनों की दबी भूख भडक उठी और आते कुलबुलाने लगीं। स्त्रियां और बच्चे बोरिया ले लेकर दौड पडे। खादिम बाबा की घरवाली और लडकी दो बोरियां और दो चदरें लेकर आईं।

खादिम अरतैक की ओर उंगली उठा कर बोला—"भैया अरतैक, भूलना नहीं। साझे हिस्से के साथ बे के यहां से मेरा और भी निकलता है।"

"खूब याद है, बाबा"—अरतैक ने उसे विश्वास दिलाया—"तुम्हारा दोहरा हिस्सा रहा।"

खत्ती के चारों ओर मेला सा लग गया। अरतैक ने भीड़ को दूर रहने और बारी-बारी से आकर अपना हिस्सा लेने के लिये कहा। वह स्वयं खड़ा हो हिस्सा बाट कराने लगा।

अलनजार अपनी छोलदारी में लेटा अनाज पाने वालों की प्रसन्नता भरी किलकारिया सुन रहा था। उसके कलेजे पर छुरिया चल रही थीं। इस खत्ती पर उसने बड़ी आस बाधी थी। सोचा था एक-एक बोरी गेहूं की कीमत एक-एक ऊट लेगा। और दो पसेरी पर एक कालीन! किसी को सेर भर भी देगा तो चाँदी का गहना रखवा लेगा। उसका इरादा था कि शहर में एक बडी दूकान खोल कर एक आटे की चक्की लगायेगा। रुई बेलने का एक कारखाना भी वह खोलना चाहता था। लेकिन खत्ती लुटी जा रही थी ····।

उससे रहा न गया तो फिर उठा। एक पेंसिल और कागज का टुकड़ा ले वह खत्ती के पास जा खड़ा हुआ। गल्ला पाने वाले सभी लोगों को वह चेहरे से पहचानता था। वह कागज पर सब का हिसाब लिखता जा रहा था—मौका आयगा तो पूरा-पूरा वसूल करूगा।

गल्ला घर-घर के आदमियों के हिसाब से बँट रहा था। अरतैक ने अपना हिस्सा नहीं लिया। उसने कहा—"मैं अपने चाचा के यहाँ खाता पीता हूँ, मुझे अलग हिस्से की क्या जरूरत?" अशीर को उसने जबरन मज़दूरी की भरती के इनाम में और नये जोडे कपडे खरीदने के लिये दूना हिस्सा दिया। इस पर किसी को अपत्ति थी तो केवल अलनजर को।

खत्ती में से साठ ऊंट के बोझ का गल्ला निकला। गाव के किसानों की अलफ टल गई। सबको हिस्सा मिल जाने पर अरतैक ने मावेद के लिये भी एक हिस्सा बचा लिया था। इस पर भी अलनजर बे ने आपत्ति की—"यह किसका हिस्सा है?"

अरतैक ने मुस्करा कर उत्तर दिया—"बे आगा यह खुदा के नाम का है।"

१३

अरतैक की उजडी सी छोलदारी ऐना के आजाने से आबाद, गुलजार हो गई। लम्बी काली छोलदारी बाहर से देखने में बहुत बडे लम्बे से काले तरबूज की तरह दिखाई देती थी पर भीतर से तरबूज के गूदे की तरह रंगीन था। छोलदारी का फर्श, दीवारें और छत सब बढ़िया कालीनों से मढ़े थे। बीचों बीच एक बहुत कीमती कालीन था और अगीठी के समीप बैठने की जगह पर भी रेशमी गद्दियां सजी हुई थीं। जहाँ तहाँ रखी हुई बोरियों और थैलों पर भी कढाई का बढिया काम था। ऐसा जान पड़ता था बाग और चमन अपने फूल लेकर यहाँ होली खेल गये हों। छोलदारी की इस शोभा की जान थी, रेशमी पोशाक पहने ऐना। उसके सिर पर भी रेशमी रूमाल बंधा रहता। माथे पर सुनहरी पटिया थी। पटिया से छोटे छोटे लटके लटकन उसके माथे पर झूमते रहते। अरतैक के लिये सब से बडा सतोष यह था कि छोलदारी की सब सजावट, कालीन और कसीदा ऐना के ही हाथों का बना हुआ था।

ऐना सुन्दर तो यों भी थी परन्तु नवेली बहू की पोशाक ने उसे और दमका दिया। अरतैक उसकी अदाओं को देखता रह जाता। उसकी चाल ढाल में एक अद्भुत कोमलता और लोच थी। चाय के लिये उसका समावार सजाना, चायदानी से प्यालों मे चाय उडेलना ऐसे हल्केपन और सफाई से होता कि देखते ही बनता। उसके चलने की आहट भी सुनाई न देती और कभी कोई चीज उसके हाथ से गिरकर या धक्के से भी अपने स्थान से हिल न पाती। उसकी सफाई भी प्रशंसा के लायक थी। छोलदारी में कभी गदगी या गड़बड़ न दिखाई देती।

ऐना का प्रभाव अरतैक की मां नूरजहाँ पर भी पडा। आराम, सफाई और सुघडपन से वह भी पहले से जवान जान पडने लगी। बेटे और बहू के सुख और सतोष से उसके भी ओठो पर मुस्कराहट बनी रहती। उसके

निराश और अंधेरा जीवन मे फिर से सुख संतोष की किरणें चमचमा उठी। शाकिरा पर भी ऐना का असर कम न था। अपनी नई रेशमी पोशाक में वह भी खूब फबती थी। वह अब पहले से कुछ गम्भीर हो गई। जवानी का आभास उस पर झलकने लगा था। ऐना उसे कसीदा सिखा रही थी। शाकिरा छोलदारी के एक कोने मे बैठी घंटों कसीदा काढने में मन लगाये रहती। पड़ोसियो पर ऐना के प्रभाव का नूरजहाँ को अभिमान था। पड़ोस की स्त्रिया और लड़किया उससे बात-बात मे सलाह लेती और ऐना के बनाये कालीन और कसीदे नमूने के तौर पर गाँव भर में फिरते रहते। स्त्रिया आ आ कर उससे कालीनों के रगों के मेल और फूल डालने के बारे में राय ले जातीं।

ऐना अरतैक के लिये चाय बना कर लाती तो उसके पास ही बैठ जाती। अरतैक उसके गालों मे पड़ते खोयों को देखता रह जाता।

"तुम तो बाहर ही बाहर रहते हो"—लजाते हुये ऐना बोली।

चाय समाप्त कर प्याला एक ओर रखते हुये अरतैक ने उत्तर दिया—"जानता हूँ तुम्हे बुरा लगता है। मुझे भी यह अच्छा नहीं लगता पर क्या करूँ ?"

"बात क्या है"

"क्या बताऊँ ! आज कल बड़े विकट समय हैं, रोज उलझनें पेश हो रही है। सब बाते इस समय शहर मे हो रही हैं। वहीं उलझा हुआ हूँ।"

"अरतैक जान, क्या शहर मे घर से अच्छा लगता है ?"।—ऐना ने पूछा

ऐना का कोमल हाथ अपने हाथों मे ले अरतैक ने उत्तर दिया—"अच्छा तो क्या लगता है। मैं चाहे जो करूँ, जहाँ रहूँ दिल मेरा यहीं तुम्हारे पास ही रहता है।"

"यह तो है, परन्तु तुम यहाँ ही रहते तो अधिक अच्छा होता !"

"ऐना, अगर मैं जनता के काम छोड़ कर यहाँ आ बैठूँ तो बिलकुल बेमतलब, घर घुस्सू आदमी बन जाऊंगा।"

"हाय, यह तो मैं नहीं चाहती। मैं तो चाहती हूँ तुम्हारा नाम हो, तुम बड़े बड़े काम करो ! यह देख कर मेरा सिर ऊंचा हो जाता है। गांव भर के

लोग तुम्हारी इज्जत करते हैं। पर दिल तो चाहता ही है तुम अपने पास रहो।"

ऐना के विचार अपने ही जैसे देख अरतैक को और भी संतोष होता। वह हर बात मे ऐना से राय ले सकता था। घर पर रहने की बडी इच्छा थी परन्तु घर पर बैठा रहता तो जिन्दगी क्या होती और ऐना की ही इच्छा कैसे पूरी होती।

चाय पीते पीते अरतैक ने मां और ऐना को अलनजर बे का गल्ला छीन कर किसानों में बाट देने की बात सुनाई। नूरजहॉ घबरा गई— "हाय बेटा यह तूने क्या किया शरीयत मे तो बे लोगों और मालिकों के माल को हाथ लगना हराम कहा है।"

"अम्मा, अगर किसी की जान बचाने के लिये चोरी भी की जाय तो शरीयत में ऐसी चोरी भी हलाल हो जाती है। और फिर हम लोगों ने चोरी कब की ? यह तो किसानो का ही गल्ला था सो हमने वापिस ले लिया।"

"वाह, गल्ला अगर किसानों का ही था तो उस पर इतना झगडा, मार-पीट, रोना धोना क्यो हुआ ?"

"अलनजर ने हम लोगों से गल्ला छीन लिया था तो हम लोगों ने क्या गाना बजाना किया था ?"

"बे ने रुपया तो उधार दिया था लोगो को !"

"तुम्हे कितना मिला था ?"

"मैंने, मैने तो एक पाई भी नहीं ली !"

"तो फिर तुम्हारे खेतों का गल्ला कहां गया ? मैं तो बरस भर मेहनत करके गया था ? क्या कुछ भी पैदा नही हुआ ?"

नूरजहॉ क्या उत्तर देती ? अरतैक को बरस भर खेतों में मेहनत करते उसने देखा ही था। यह भी वह जानती थी कि उस साल उसने भूखे पेट ही रह कर बिताया था परन्तु यह वह न समझ सकती थी कि किसानों की कमाई बे ने क्यो कर हथियाली ? वह सीधी बात समझती थी, पराई चीज चाहे किसी की भी हो, छीन कर लेना हराम है। नूरजहॉ को इस बात से सतोष था कि खादिम जैसे गरीब आदमी अब अगली फसल तक किसी तरह मौत से बच जायगे। यह भ ; उसे याद आने लगा कि बोरियों पर

बोरिया वे की खत्तियों मे भरी गई थीं। बीच ही मे उसका बुढापे का तेज जाग उठा—

"अरतैक, हमें कितना गल्ला मिला ?"

अरतैक मुस्करा दिया—"अभी तो मा हलाल हराम की बात कर रही थी और अब इसे अपने हिस्से की चिन्ता हो रही है।"

"मा तुम और ऐना जिन्दा रहो, मेरे हाथ पाव सलामत पारहे, हिस्से की फिक्र न करो। तुम लोग भूखी नहीं रहोगी।"

"हमें इतना मिल गया बेटा ?"

"तुम्हे जरूरत थी ?"

"ज़रूरत ? ज़रूरी चीजों की जरूरत का क्या कहना ? जितनी मिल जाय ?"

"शरीयत का ख्याल नहीं मा ?"

शरीयत की बात याद आजाने से नूरजहाँ ने दोनों हाथ ऊपर कर तोबा की और बोली—"नहीं भाई हम किसी दूसरे की चीज नहीं लेंगे। सोचा था, सब को मिला है तो तुम्हे भी हिस्सा मिला होगा इसीलिये पूछ रही थी।"

"क्यों अपना हिस्सा लेने में बुरा क्या था ? मैंने इसीलिये नहीं लिया कि जो लोग ज्यादा मुसीबत में है उन्हे कुछ और मिल जाय। हमारा तो काम चल रहा है।"

"नहीं बेटा, नहीं लिया तो भला ही किया। तुम्हारे पीछे मुझे फिक्र ही लगी रहती कि जाने इस बात का क्या अन्जाम ? तुम यह बन्दूक तलवार और कधों के निशान विशान भी हटादो बेटा, वापिस कर दो वह सब अपने मालिक को। और भले किसानों की तरह चुपचाप घर मे रहो। अरे हल्ला मचाने से ही अगर कुछ होता हो तो दुनिया में तुम्हारे बिना भी हल्ला मचाने वालों की कमी नहीं है बेटा।"

"मैं ऐसा निकम्मा आदमी थोड़े ही हूँ कि चदरा तान कर पड़ा रहूँ और ज़िन्दगी बिता दू। मा, ज़िन्दगी तो कुछ करने धरने मे ही है।"

"बेटा अपने घरका सा सुख सबर मारे मारे फिरने मे कहाँ ?"

"मां बैठे बैल को कौन खिलाता है। बैठे रहने से सुख सबर कहाँ से

आ जायगा ? मैं घर ही बैठा रहता तो यह बहू तुम्हे कैसे मिलती ? क्यो ऐना ?"

ऐना आख झपक कर मुस्करा दी। मुँह से कुछ बोली नहीं। मा ने उसे पुकार कर कहा—"तू ही क्यों नहीं समझाती इसे ? मारा मारा फिरेगा तो तेरी क्या जिन्दगी होगी ?"

"ऐना तो कहती है, यहाँ बैठे रहोगे तो तुम्हे कोई पूछेगा ही नही। पूछ लो न इससे क्या कहती है।"

"ऐना जान, सच तुम ऐसी बाते कहती हो ?"

"अम्माँ, बन्दूक की गोली भी बहादुर को पहचानती है, उससे बच कर निकल जाती है।"

"ओह बेटी, तो तू ही उसे बिगाड़ रही है। भाई, तुम लोग अब सियाने हो, भला बुरा समझते हो। पर बुढापे मे मेरा दिल बहुत घबराता है। कही मुसीबत मे न फस जाना ! मेरा तो दम निकल जायगा ..

१४

तेजेन लौट कर अरतेक ने देहात मे अलनजर बे के यहाँ से गल्ला लेकर भूखे किसानों को बांट देने की बात अजीज को साफ साफ कह सुनाई

अजीज की आँखे क्रोध में लाल हो गई और माथे पर बल पड़ गये—"मैंने तो तुम्हें खबरदार रहने को कहा था"—वह कड़े स्वर में बोला।

शान्त स्वर में, बेपरवाही से अरतेक ने उत्तर दिया—"मैंने तुम्हें कोई वचन नहीं दिया था।"

अजीज का गुस्सा भड़क उठा—"मैंने तुम्हें किस बात से खबरदारी के लिये कहा था बोलो ?"

अरतेक के चेहरे पर भी सुर्खी आ गई। उसका भी मन चाह रहा था कि डट कर जवाब दे—"मैंने जो चाहा किया, तुम से जो बन पड़ता है, तुम करलो! परंतु उसने क्रोध दबा कर, कुछ कांपते हुये स्वर में उत्तर दिया "अजीजखां मैं तुम्हारा साथ दे रहा हूं इसका यह मतलब नहीं कि मैं कुछ देख सुन नही सकता। मेरे भी दिमाग है। मैं मुर्दा नहीं हूं, मेरे अपने भी ख्याल हैं! अच्छा बुरा भी समझता हूँ।"

"मैं मानता हूँ तुम्हारी बात.... लेकिन तुम तो मेरे ही पांव पर कुल्हाडी चला रहे हो!"—अजीज ने कुछ ठंडे होकर कहा।

"अजीजखां यह बात नहीं है।"

"कैसे नहीं है यह बात!"

"अगर मैं तुम्हें नुकसान पहुँचाना चाहता तो मैं कलीग्रां के यहाँ नौकरी कर सकता था। पिछले साल बगावत मे मैंने तुम्हारा साथ दिया और अब मैं तुम्हारी ही फौज मे आया हूँ। तुम्हारे लिये मैं जान की जोखिम

उठा रहा हूँ। लेकिन एक बात साफ है कि मैं तुम्हारा गुलाम नहीं हूँ। यह बात साफ रहे कि मैं गरीब जनता के खिलाफ नही जा जाऊगा। अगर तुम्हे इस बात में एतराज है तो यह है तुम्हारी नौकरी!"—अरतैक ने अपनी बन्दूक और अफसरी की पेटी अजीजखाँ के सामने पटक दी

अजीज ने सुर्ख आँखों से एक बार अरतैक की तरफ ताका और फिर सिर झुका लिया और सोचने लगा। उसके भरोसे के आदमी ने ही उसका हुक्म नहीं माना। इस मामले का तुरन्त ही पूरा पूरा फैसला होना चाहिए। वर्ना यह आदमी जाने क्या कर बैठे? इस आदमी का क्या भरोसा! इससे क्या फायदा? क्रोध के कारण अजीज के मुख मे बात न निकल पा रही थी। उसी समय यह भी खयाल आया—अगर इसे मैं आज निकाल दू और कल किजिलखाँ भी मुझे छोड कर चलता बने तो क्या होगा? और यदि यह लोग मुझे छोड़ दुश्मन के साथ जा मिले! यह खयाल आते ही उसका गुस्सा दबने लगा। उसने यह भी सोचा—अरतैक को आस पास देहात के लोग चाहते हैं, उसकी इज्जत करते हैं। ऐसा आदमी मेरा साथ छोड़ जायगा तो इससे मेरी बदनामी ही होगी। इस समय मुझे जनता की सहानुभूति की जरूरत है। इस विचार मे डूबा वह बहुत देर तक चुप बैठा रहा।

अजीजखाँ सोच रहा था—अरतैक और अलनजर दोनों मे से वह किसी को भी छोड नहीं सकता और दोनों को सम्भले रहना सम्भव नहीं। वह किसको सम्भाले और किसे जाने दे? उसे जान पडा अरतैक ही अधिक काम आ सकता है। अपना गुस्सा छिपा कर वह बोला—"अरतैक, जब हमारे असल खयाल एक हैं तो झगडे की बात नहीं होनी चाहिये। तुम्हे यह करना था तो मुझे कह जाते एक अलनजर क्या मैं सौ अलनजर तुम पर निछावर करदू। अब तुम्हे कोई ऐसा कदम उठाना हो तो पहले मुझ से जरूर बात कर लेना ताकि मै सब इन्तजाम रख सकू और मुझे तुम्हे टोकना न पड़े। वरना लोग क्या कहेगे? कि अजीजखाँ तो जार से भी बढ़ कर जुल्म कर रहा है। अपने साथियों को लूट ले रहा है।"

"चार पाँच लोग ऐसा कहे तो कहे, जनता तो तुम्हारा एहसान मानेगी।"

"शायद तुम्हरा ही खयाल ठीक हो! तुम, लोग बाग की बात अधिक समझते हो। फिर भी होशियार तो रहना ही चाहिए।"

उसी समय अजीज को खयाल आया—"अगर अरतैक को ही अपनाना है तो यही हो। इस जिद्दी की बात ठीक भी है! एक अकेले जागीरदार को

नाराज होने दे कर हजारों किसानों को अपनी ओर खींच लेना नहीं बेहतर! वे मुझे छोड़कर जा भी कहाँ सकता है? बोलशेविकों के यहाँ उनका गु[illegible] कहाँ? वे का तो गुजारा फिर भी हो ही जायगा। जरूरत तो है प्रजा को अपनी ओर समेटने की। इस मामले में मुझे दुश्मनों से पहले कदम उठाना होगा।"

अजीज गर्दन ऊँची कर गम्भीरता से बोला—"कुछ सिपाही साथ ले लो और मेरे साथ शहर चलो। हम लोग गरीब रियाया की हालत अपनी आँखों देखेंगे। आज शहर में एलान करवा दो कि जो लोग मुनाफाखोरी करके गरीब रियाया को भूखा मार रहे हैं, उन्हें अजीजखाँ सख्त सजा देंगे।"

अरतैक को विस्मय भी हुआ और सतोष भी। वह हुक्म पूरा करने के लिये तुरन्त उठ खड़ा हुआ।

सिपाहियों की एक टुकड़ी से घिरे हुए अजीजखाँ और अरतैक तेजेन के बाजारों में घूम रहे थे। एक बाजार के सिरे पर भीड़ का जमाव हो रहा था। भीड़ की ओर इशारा कर के अरतैक बोला—"यह देखो, भिखमंगों का मेला!"

आकाश में बादल छाये हुये थे। कभी कभी बादलों की ओट से धूप की किरणें चीथड़ों में लिपटे, भूख से सूखे लोगों के चेहरों पर पड़ जातीं और उनकी भयानकता को और बढ़ा देतीं। भीड़ टुकड़ों की तलाश में देहातों से घिर आये भूखे किसानों की थी। कुछ लोग चिल्ला चिल्ला कर अल्लाह की दुहाई देकर भूखे पेट के लिये कुछ माँग रहे थे। स्त्रियाँ और बच्चे निराश और व्याकुल होकर चिल्ला चिल्ला कर रो रहे थे। घुड़सवारों को देखकर भीड़ हाथ फैला चिल्लाती हुई इन लोगों की ओर दौड़ी—"हम भूख से मर रहे हैं हमारे बच्चे मर रहे हैं। अजीज खाँ हम मर गये। हमारे पेट का ख्याल करो!"

अजीज यह दृश्य देख चुप रह गया। कुछ देर मौन रह अरतैक को समीप आने का इशारा कर वह बोला—"मैंने खुद आँखों देख लिया तुम ठीक कहते थे। इन कमबख्त जागीरदारों, रईसों और मुनाफाखोरों का कुछ लूट कर गरीबों को बाँट देना ही काफी नहीं। इन बदमाशों को [illegible] मार कर सजा देना भी जरूरी है।"

अजीज ने अरतैक को हुक्म दिया—"अभी शाम से पहले [illegible] के बाजारों में और गल्ले वालों का गल्ला दुकानों का सब माल जब्त कर लो।"

उसी समय कई दुकानों का गल्ला उसने अपने सामने भूखी भीड़ में बटवा दिया। कुछ गोदाम के ताले तुड़वा कर उसने अपने मोहरबन्द ताले लगवा दिये। यही इंतजाम उसने बड़ी बड़ी दुकानों का भी किया।

गोनूर तेजेन का बड़ा भारी सौदागर था। जब उसका गोदाम जब्त किया गया, वह हाथ फैलाकर दुहाई देता हुआ अजीज के सामने आया—"मालिक, मैंने तो तुम्हारी बहुत मदद की है। मेरा लाखों रुपया 'जीजाक' और 'फर्गना' में फसा हुआ है। मेरा दिवाला निकल जायगा तो तुम्हारा ही नुकसान होगा। मेरा तो जो कुछ है, तुम्हारा ही है। विलायत में मेरा लाखों रुपया मारा जा रहा है!"

अजीज ने चारों ओर खड़े लोगों को सुना कर उसे धमका दिया—"चुप रहो! तुमने गरीब रिआया का बहुत खून पिया है। लाखों की जान जा रही है, तुम्हें हुंडियों और दिवाले की फिक्र हो रही है।"

"मालिक तो मेरे माल की कीमत बाजार भाव से ही मिल जाय!"

"तुम्हारे माल की लागत की कीमत दे दी जायगी, लेकिन जब हमारे पास फालतू रकम होगी!"

गोनूर दुहाई देता हुआ अजीज का चोगा पकड़े खड़ा रहा। अजीज ने अपना घोड़ा बढ़ाया तो वह साथ साथ दौड़ने लगा। अजीज ने पीछे घूमकर एक सिपाही को हुक्म दिया—"अगर यह बदमाश अपनी दुकान की तरफ जाय तो इसे गोली मार दो"—और घोड़े को एड़ी लगा वह चल दिया।

गोनूर चिल्लाता रह गया—"अजीज खां, अपने गुलाम पर रहम कर!"

तेजेन के सबसे बड़े आटा गोदाम और रोटी के कारखाने पर भी अजीज ने कब्जा करके इस कारखाने का नाम 'अजीज का तन्दूर' रख दिया। शहर भर में उसने डोंडी पिटवा दी—"देहात के भूखे किसान, और शहर के बेकार लोग जिन्हें रोटी की तंगी हो, 'अजीज के तन्दूर' से आध सेर रोटी बिना दाम ले सकते हैं।"

अजीज "काफिला सराय" में लौटा तो बहुत उत्साहित था। मूछों पर बल देकर वह अरतैक से बोला—"एक अलनजर की रुत्ती ले लेने से क्या हो सकता था? गरीब भूखी जनता का पेट भरने का तरीका यह है!"

"मेरी सामर्थ्य और तुम्हारी सामर्थ्य में बहुत अन्तर है अजीज खां! मैं

उस पेड की जड खोद रहा था तुमने उसे उखाड़ फेंका।" अरतैक ने उत्तर दिया। अजीज की मुस्कराहट और झूठा अभिमान उसे भला न मालूम हुआ। वह दूसरे कमरे मे जाकर सोचने लगा—अगर कुलीसा चर्नीशेव को न रोके होता तो जो कुछ अजीज ने आज भूखों की भीड देखकर किया, चर्नीशेव ने कभी का कर दिया होता। अजीज़ तो जो चाहे कर सकता है परन्तु चर्नीशेव हर बात के लिये कमेटी और पचायत का मोहताज है।

अरतैक खिडकी से सराय के फाटक की ओर देख रहा था। उसे अलनज़र क्रोध से काले चेहरे से, पाव पटकता आता दिखाई दिया। अरतैक ने देखा वे सीधा अजीज के दीवान खास की ओर जा रहा है। वह जरूर उससे मेरी शिकायत करेगा। मन मे उसने सोचा—कह लेने दो जो कहना है। देखें इसकी बात सुनने के बाद अजीज क्या कहता है। अरतैक उठकर अपने सिपाहियों की तरफ चला गया।

अलनज़र ने रो रो कर अपने ऊपर बीती कहानी अजीज़ को सुनाई और अत में आँसू पोंछता हुआ बोला—"अजीज़ खा, अरतैक ने मुझे लूट लिया, बात यहीं तक नहीं है। तुम यह सोचो, तुम्हारे नौकर ऐसे काम करेंगे तो तुम्हारी कितनी बदनामी होगी!"

मुस्कराहट छिपाकर अजीज़ बोला—"लेकिन वे आगा, तुम तो कहते थे कि तुम्हारे यहाँ इतना गल्ला था ही नहीं।"

"अरे कितना गल्ला था? कुछ भी नहीं! यह तो घर के लोगों का पेट काट काट कर मैंने जमा किया था कि कौन जाने आगे कैसे दिन आते हैं।"

"लेकिन हम लोगों ने तो यही तय किया था कि जितना भी फालतू गल्ला मिले इकट्ठा कर भूखे गरीबों मे बांट दिया जाय!"

"तुम्हारा जो भी हुक्म हो, हम मानेंगे लेकिन यह तो नहीं कि कोई अचानक लौटा चाहे आकर हम लोगों की बेइज्जती कर जाय! उतना गल्ला मैं, खुद ही गरीबों को बांट देता।"

"खुद तुमने कितना गल्ला गरीबों में बांटा था?"

"मैं तो देख रहा था कि जब तुम्हारा हुक्म हो……।"

"अरतैक ने यह मेरा ही हुक्म था कि गिनाना न निगरानी करने से पहले ही बे का गल्ला ले लो!"

"मुझे ही हुक्म दिया होता।"

"अब यह बात खत्म करो।"

अलनजार क्रोध मे भरा बेबस दातो से होंठ काटता रह गया। वह फिर बोला—"खान, तुम कुत्ते को पुचकार पास भी बुलाते हो और फिर लाठी भी मारते हो।"

अजीज ने गम्भीर स्वर में उत्तर दिया—"देखो वे आगा, अब इस बात को खत्म करो। हम लोग बहुत लम्बे सफर पर चल रहे हैं। छोटी मोटी चीजो के हाथ से गिरने और खो जाने के लिये क्या रोना धोना? कोशिश करो कि मजिल पर सलामती से पहुच जाये। आज आटे का बडा गोदाम और रोटी का कारखाना मैंने ले लिया है। कल हम अर्जीमान की गल्ले की खत्तिया और आटे का कारखाना भी लेलेगे। यह सब मिलाकर बहुत बड़ा कारोबार बन जायगा। यह काम मैं तुम्हारे ही हाथ मे दे दूंगा। रुपये में से दस आना तुम्हे गरीबों मे बाटना होगा बाकी से तुम्हारा नुकसान पूरा हो जयगा। रईसों का जो माल हम ले रहे हे, सब पाई पाई चुका दिया जायगा। लेकिन अभी भूखे मरते गरीबों की तसल्ली के लिये रईसो को अपना माल देना ही होगा। तुमने दीवान मे कहा था कि रियाया और रईसों मे झगडा न होने देना चाहिये। यह झगडा बचाने के लिये तुम्हे गरीबो का खयाल करना होगा। मुझे खबर मिली है कि सोवियत पचायत में चर्नीशोव ने वे लोगों की दौलत जब्त करके गरीबों मे बाट देने की बात रखी थी परन्तु कुनीखा ने यह बात होने नहीं दी। उन लोगों को झगडो में पडा रहने दो। उनके दाव हमे खेल लेने चाहिये। तुम समझते हो न? फिर इस जरा सी बात के लिये रोना धोना क्या?•   ।"

जब अलनजर वे "काफिला सराय" से लौटा तो वह बहुत प्रसन्न था। इसके बाद अरतैक से मुलाकात होने पर भी उसने बीती बातों और बुरे व्यवहार की कोई शिकायत न की। वह अरतैक से ऐसे मिला कि शिकायत की कोई बात हुई ही न हो।

१५

अक्टूबर, १९१७ की क्रान्ति से रूस में किसानों-मजदूरों की सोवियत (पंचायती) सरकार तो कायम हो गई परन्तु उसके शत्रुओं की कमी न थी। सोवियत के यह शत्रु समाज के सभी भागों से इकट्ठे हो कर नई सरकार के कदम न जम सकने देने की कोशिश कर रहे थे। विदेशी साम्राज्यवादी शक्तियाँ इन्हें धन और हथियारों से मदद देने के लिये आ पहुँची थीं, जनता को सरकार के विरुद्ध भड़काने के लिये सभी सम्भव प्रयत्न किये गये। धर्मान्ध लोगों को धर्म की दुहाई देकर भड़काया गया। अनाज और जिन्दगी के लिये बहुत जरूरी चीजों को जला कर बरबाद करके जनता को भूखा मार कर यह समझाने की कोशिश की गई कि सोवियत सरकार उन्हें जरूरी चीजें पहुंचाने के अयोग्य है। सोवियत का समर्थन करने पर गांवों और बस्तियों को जला कर लोगों को धमकाया गया और समझाया गया कि यह सरकार तुम्हारी रक्षा करने में असमर्थ है। इन सोवियत विरोधी शक्तियों के मुख्य गढ़ रूस की सीमाओं पर फैले हुये थे।

दिसम्बर के महीने में मध्य एशिया के मुस्लिम देशों में खास बेचैनी फैल रही थी। इन देशों की मुस्लिम जनता के प्रतिनिधियों की एक कान्फ्रेंस कोकन्द में की गई। कहने को तो यह कान्फ्रेंस मुस्लिम जनता के प्रतिनिधियों की थी। शिक्षित मुसलमान, उनके मौलवी और उलमा उसमें भाग ले रहे थे परन्तु वास्तव में इस कान्फ्रेंस का आयोजन विदेशी सरकारों की मदद से मध्य एशिया के बे लोगों (जागीरदारों), कारखानेदारों, बड़े बड़े [illegible] और ब्रिटेन से [illegible] करने वालों का [illegible] ने ही किया था। रूस के पुराने रूसी अफसरों ने भी [illegible] इस कान्फ्रेंस में भाग लिया। लेकिन [illegible] जनता [illegible] [illegible]। इस [illegible] [illegible] [illegible]

नयी स्थापित सोवियत सरकार को असफल करने के कौन उपाय सम्भव हो सकते हैं ?'

इस कान्फ्रेंस में भाग लेने के लिये तुर्कमानिया के रईस लोग अश्काबाद में जमा हुये और एक स्पेशल ट्रेन से कोकन्द पहुचे। यह स्पेशल ट्रेन तुर्की कालीनों से मढ कर सजाई गई थी। इन प्रतिनिधियों का प्रधान, जार के समय का एक बड़ा फौजी, तुर्कमान अफसर निमाज बेग था। निमाज बेग जरा छोटे कद का दुबला पतला आदमी था। वह लाल मखमली चोगा और सफेद भेड़ी की कीमती टोपी पहने था। उसकी कमर मे रेशमी पट्टे पर चमडे की पेटी से चाँदी की म्यान मे टेढी तलवार लटक रही थी। खूब ऊंचे ऊंचे कद्दावर सिपाहियों का दल उसका शरीर रक्षक था। लोग उसे 'बयार' (सर्दार) कह कर पुकारते थे और झुक झुक कर सलामे करते थे।

यह स्पेशल ट्रेन तेजेन स्टेशन पर भी खड़ी हुई। अजीज खा गाडी की प्रतीक्षा कर रहा था। निमाज बेग अपनी गाडी से उतर कर प्लेटफार्म पर आया और अजीज को अपने साथ गाड़ी मे ले गया। वे दोनों मित्र थे परन्तु मुलाकात पहली बार ही हुई।

दोनों की खूब घुटने लगी। निमाज बेग अजीज के आदर सत्कार मे शराब पेश करना चाहता था। परन्तु झिझक गया—इस्लाम मे शराब हराम ठहरी—उसने उसकी खातिर शिकजवीन और सोडे से ही की। अजीज ने इससे पहले कभी शाही गाडी देखी नहीं थी। वह घूर घूर कर गाडी के सामान को देख रहा था और मन में सोचता जा रहा था—यह है जिन्दगी! जिन्दगी के मजे लेना तो यह सरदार लोग ही जानते हैं।

बातचीत मे अजीज ने कहा—"मैं सोच रहा हू कि कुलों खा की कमान मे सोवियत की जो फौज तेजेन मे है, उसे जल्दी ही खत्म करदूं!" निमाज बेग ने कुछ दिन सबर करने की सलाह दी और बोला—"अजीज खा, हम तुर्कमान लोगों की डेरावासी कौम दो दिन में बनने-बिगड़ने की चीज नहीं है। अभी सबर करो। कोकन्द से लौट कर मैं तुम्हारे साथ तेजेन में ठहरूगा। तभी इन बातों को तय करेंगे।"

दोनों ही एक दूसरे का मन लेने के लिये चतुरता से बात कर रहे थे और अपनी अपनी राय बनाते जा रहे थे। निमाज बेग ने सोचा—अगर अजीज

न्वा को हाथ में किये रहे तो तुर्कमानिया ही नहीं बल्कि तुर्किस्तान में भी अपनी सल्तनत बढा सकेंगे।

और अज़ीज ने सोचा—यह निमाज बेग, पतलून पहनने वाला नये ढंग का आदमी है। यह फिर से जार के ढंग की सल्तनत कायम करने की कोशिश करने वालों में से है। लेकिन यह आदमी काम का है। इस पर भरोसा किया जा सकता है। एक बार मेरे पांव जम जांय तो यह मेरी खुशामद करता फिरेगा।

दोनों अपनी अपनी चतुरता में अपने स्वार्थ पूरे करने की कल्पना कर रहे थे :—निमाज बेग जारशाही को फिर से जमाने की और अज़ीज अपनी स्वतन्त्र सल्तनत बना लेने की।

धार्मिक प्रतिनिधियों के दल में अजीज ने अपनी ओर से मदीर ईशान का नाम लिखवा दिया। तुर्कमान राष्ट्रीयता के दो महान नेताओं की मुलाकात समाप्त हो गई।

कोकन्द की कान्फ्रेंस में वही हुआ जो कि उसका प्रयोजन था—सोवियत सरकार को समाप्त करने के लिये, सोवियत से सभी सम्भव उपायों से लोहा लेने का निश्चय किया गया। तुर्कमानिस्तान में स्वतन्त्र राष्ट्रीय पूंजीवादी सरकार की घोषणा कर दी गई। एक गुप्त कान्फ्रेंस में तुर्कमानिया की नयी स्थापित सरकार के प्रधान ने यह भी सूचना दी कि एक बहुत बड़ी साम्राज्यवादी शक्ति हमारी नयी स्वतन्त्र सरकार को आवश्यक आर्थिक सहायता, और जरूरत पड़ने पर सैनिक सहायता भी देने के लिये तैयार है। तुर्कमानिया के जागीरदारों, कारखानादारों, व्यापारियों और जार के समय के अफसरों ने तुरत इस सरकार के प्रति राजभक्ति की शपथ भी लेली। एक सशस्त्र सेना बनाने का फैसला किया गया। इब्राहिम बेग के नेतृत्व में स्थानीय डाकुओं और लुटेरों की एक सेना तुरंत तैयार भी हो गई।

घोषणा कर दी गई कि १६ दिसम्बर को पैगम्बर का जन्म दिन मनाया जायगा। देश भर में छुट्टी रहेगी और उस दिन सब नगरों में [illegible] सेना का प्रदर्शन किया जायगा।

लेनिन में भी प्रदर्शन करना तय हुआ। [illegible] को [illegible] का भेद मिल गया। [illegible] ने भी तुरंत [illegible] की बैठक की और [illegible] के [illegible] तथा प्रदर्शन के सम्बन्ध में विचार किया गया।

चर्नीशोव ने कहा— 'मुझे विश्वास है इस मौके पर अजीज सोवियत से कोई झगडा नही करेगा। वह अपना धार्मिक दिन मनाना चाहता है। इसलिये सोवियत सेनाओं को शहर में सामने लाकर उसे भड़काना ठीक नही। परन्तु हमे अपनी सेना को अवसर के लिये तैयार जरूर रखना चाहिये।"

एक दूसरे मेम्बर ने कहा—"धार्मिक दिन का जलसा केवल बहाना है। अजीज इस मौके पर सोवियत पर अवश्य हमला करेगा। वह अपना आतंक बैठाना चहता है। हमे उसका जवाब हथियारो से ही देना होगा।

कुली खा ने जोर दिया—"नहीं, हमे उससे पहली रात ही अजीज के डेरे पर हमला करके झगड़े की जड़ काट देनी चाहिये।"

चर्नीशोव ने फिर भी जोर दिया कि—"अपने पर आक्रमण हो तो हमे उसका पूरा जवाब देना चाहिये परन्तु स्वय लड़ाई नहीं छेड़नी चाहिये। क्योंकि उसके विचार मे उस समय तेजेन मे लाल फोज का स्थिति ऐसी नही थी कि वह अजीज की सेना को समाप्त कर सकती।

कुली खा अपनी बात पर अडा रहा—"लाल फौज का कमिस्सार मै हू"—वह बोला—"सोवियत माने या न माने। मैं दिन चढ़ने से पहले अजीज के डेरे पर हमला करूगा और उनके पैगम्बर के जलसे को गमी बनाकर रखदूगा"

केलुई खा ने अपनी मोछ ऐंठ कर कहा—"कुली खा तुम लाल फौज के कामस्सार हो और मैं कमाण्डर हू। मुझे तुम्हारी राय जच रही है। लेकिन सुबह तक प्रतीक्षा करना फिजूल है। हमें फौरन ही, अभी रात मे ही अजीज़ खा का कूड़ा समेट लेना चाहिये।"

चर्नीशोव ने उठ कर उन दोनो का विरोध किया—"कुली खा, तुम्हारा इस तरह जिद्द करना बहुत बुरी बात है।"—चर्नीशोव ने डाटा—'पिछली बार जब सोवियत जागीरदारों का अनाज जब्त करके गरीब किसानो नो में बांट ने की तजवीज कर रही थी, तुमने उसका विरोध किया। परिनाम यह हुआ कि अजीज खा ने हमारे दाव का फायदा उठा लिया और उसने थोडा बहुत अनाज जब्त करके, किसानो में बाट कर भोले किसानो की सहानुभूति अपनी ओर करली। यह हमारी भारी भूल थी कि सोवियत ने तुम्हारी बात को महत्व दिया। अब तुम फिर वही मूर्खता कर रहे और

तुम चाहते हो, सोवियत सेना आत्म-हत्या कर ले? चाहे तुम सेना के कमिस्सार हो और केलुई खां कमाण्डर है परन्तु जब तक सोवियत फैसला नहीं करेगी और प्रादेशिक सोवियत का समर्थन नहीं होगा, हमारी सेना एक कदम नहीं हिला सकती।"

"तुम चाहे जो कहो,"—कुली खां ने मुट्ठी बंधा हाथ उठा कर कहा—"सेना और हथियार तो मेरे हाथ में हैं।"

"बको मत"—चर्नीशोव आपे से बाहर हो गया—"अगर जुबान चलाओगे तो अभी गिरफ्तार कर लिये जाओगे।"

अता दयाली केलुई खां के नीचे, लाल फौज का छोटा कमाण्डर था। उसने विस्मय से कुली खां और केलुई खां की ओर देखा और खिन्न स्वर में बोला—"क्या हो रहा है यह? क्या तुम लोग पागल हो गये हो? कुली खां, क्या लड़ने का बहुत चाव बढ़ रहा है? आओ देखलूं तुम कितने बहादुर हो? चर्नीशोव जरा इसका मिजाज ठण्डा होना चाहिये!"—आखिर हो क्या गया इन लोगों को·····?"

अता दयाली बहुत चतुर आदमी नहीं समझा जाता था परन्तु अवसर पर सीधे आदमी भी बहुत ढंग की बात कह जाते हैं। अता दयाली की बात से कुली खां वास्तव में ठण्डा पड़ गया और गर्दन झुका चुप रह गया। वह मन में सोचने लगा—चर्नीशोव और सोवियत से बिगाड़ कर उसके लिये पनाह कहां है? अजीज तो उसे जिन्दा जमीन में गाड़ देगा। मन ही मन वह अपनी भूल पर पछता जरूर रहा था परन्तु सब के सामने अपनी गलती मान लेने के लिये भी वह तैयार न था। वह चुप बैठा रहा।

अब चर्नीशोव धीमे स्वर में अपनी बात समझाने लगा—"अव्वल तो हमारी सेना इतनी नहीं कि हम अजीज की सेना को सम्भाल सकें। दूसरे इस समय शहर में किसान भरे हुये हैं। होगा क्या? बैल बैल लड़ेंगे और घास का सत्यानास होगा। दोनों तरफ से गोली चलेगी और किसान मरेंगे। इस समय तो अजीज छेड़े तो भी हमें तरह दे जानी होगी। हाँ, अगर वह हम पर हमला ही कर बैठे तो सामना करना ही होगा!"

मौका देख कुली खां ने चुटकी ली—"तो हम लोग जा कर अजीज के सामने घुटने टेक कर उसी का हुक्म क्यों न मानने लगें।"

"नहीं इसका यह मतलब हरगिज नहीं"—चर्नीशोव बोला—'हमें

समय देख कर चलना होगा। अजीज को जनता की शक्ति के सामने झुकना पड़ेगा परन्तु ढग से। और अगर आप लोग इसके लिये जल्दी चाहते हैं तो मैं अश्काबाद जा कर इसका प्रबध करता हूं।" सोवियत ने चर्नीशोव की ही बात मानी। कुली खा की बात नहीं मानी गई।

आकाश से बूंद गिरे बरस भर से अधिक हो गया था परन्तु उस रात खूब खुल कर बरसा। सध्या से ही आकाश पर बादल घिर आये थे और हवा में भी नमी थी। आधी रात से खूब बरफ गिरने लगी। घाम से झुलसी धरती पर बरफ की मोटी रजाई बिछ गई। सुबह जब मुर्गी ने तीसरी बार बांग दी, पौफटने के समय सहसा बादल छँट कर नीला आकाश उघड आया। सुबह आते जाते लोगो के पांव नीचे बरफ खसखसा रही थी और आदमियो के मुह से भाफ के बादल उड रहे थे।

एक पहर दिन चढते चढते शहर के मुस्लिम जगत में हल चल मच गई। अज़ीज के समर्थ का बुजुर्ग और मौलवी गलियों-बाजारों मे दिखाई देने लगे। अजीज भी दल बल सहित बाजार में आ गया। उसके दल के आगे-आगे सदीर इशान हाथ में हरा झण्डा लिये चल रहा था।

छोटे से तेजेन शहर का चौक बाजार भीड़ से खचा खच भर गया। जुलूस गिरजा के चौक से कराखाली मसजिद की ओर बढ रहा था। सदीर ईशान की आँखों से आँसू बह रहे थे और वह ऊचे स्वर से चिल्ला रहा था—"ओ वल्लाह ·· ! ओ अल्लाह ····ओ मुहम्मद !"

अजीज के दूसरे बडे दरबारी आल्ती सोपी ने नारे लगाये—"इस्लाम जिन्दाबाद ! अजीज खा जिन्दाबाद !"

बरफ को कुचल कर चलती हुई भीड़ सर्दी से कांप रही थी और लोग सदीर ईशान और आल्ती सोपी के पीछे कुरान पाक की आयतें दोहराते हुये कराखाली मसजिद की ओर बढ़े जा रहे थे। मसजिद के पास पहुंच कर सदीर ईशान ऊचे चबूतरे पर चढ गया। अपने हाथ का झण्डा उसने पारसुश काजी और अलनजर बे को थमा दिया। आल्ती सोपी मीनार पर चढ कर तीखी और ऊची आवाज मे अज़ान की बांग देने लगा—"अल्ला हो अकबर ·· · !"

अचरभे मे खडी भीड समझ नहीं पा रही थी कि हो क्या रहा है? अजीज को नमाज और अजां से क्या मतलब ? · क्या इस्ल मी सल्तनत

कायम हो रही है ? ···जरूर यही बात है । नहीं तो इस जमाने में दुनिया भर को आध-आध सेर रोटी की खैरात कौन बांट सकता था ? अल्ला का रहम हो ! दरया तेजेन पूरा रहे! अल्ला अजीज को सलामत रखे !

अजीज की आज्ञा से आल्ती सोपी ने कोक़न्द के फैसले के मुताबिक तेजेन मे स्वतन्त्र इस्लामी राज कायम होने की घोषणा की और इस्लामी राज का मतलब समझाया । सोपी बहुत जोश मे नाक भौं चला कर बोल रहा था । कभी वह खूब गला फाड कर चिल्लाता और कभी बिलकुल खामोश हो जाता । रूमाल लेकर वह बार बार आसू पोंछता जा रहा था ।

यारमुश काजी और अलनजर वे झण्डे के बोझ से परेशान हो रहे थे। अगर कभी पहले ऐसा धार्मिक दृश्य दिखाई देता तो बे का हृदय भक्ति से गद गद हो गया होता परन्तु इस समय उसके मन मे अपना अनाज लुटा जाने का गुस्सा भरा हुआ था । उसे अजीज पर कोई भरोसा न था। उसकी शक्ति बढती देख वह मन ही मन घबरा रहा था । तिस पर बांहे झण्डे के बोझ से टूट रही थीं । वह सोच रहा था । कब यह बवाल खत्म होगा ।

अजीज भीड़ के बीचोबीच बढ आया । उसने गुरूर भरी निगाह चारों ओर डाल कर देखा और फिर अधिकारपूर्ण गम्भीर स्वर मे बोला—"उलेमा, बजुर्गो और लोगों ! आज का दिन मुतबर्रिक (पवित्र) है क्योंकि आज हजरत पैगम्बर का जन्म दिन है लेकिन यह और भी बडी बात है कि आज हम लोगों ने अपनी खोई हुई आजादी हासिल की है । आज से इस मुल्क मे शरीयत का कानून कायम होगा । उलेमा, बजुर्गों और सब लोगो, इस काम में मुझे आप सब लोगों की मदद की जरूरत है । आज तक इस मुल्क मे दो तरह की हुकूमत चल रही थी और दो तरह के उसूल कायम थे । आप लोग यकीन रखिये कि चन्द ही दिन मे जार की हुकूमत और उसके गिरोह का जो कुछ असर बाकी है, मै खत्म कर दूंगा । मुझे आप लोगों से कहना है कि आप सच्चे और सही रास्तो पर चले ! सही और सच्चा रास्ता सिर्फ इस्लाम का है । इस्लाम जिन्दाबाद !"

इसका समर्थन सबसे पहले किया मदीर ईशान ने । वह जोर से चिल्ला उठा—"हुर्रा हुर्रा—वल्लाह"

और फिर सब भीड चिल्ला उठी और यह शोर आकाश तक जा पहुँच

१६

एक दिन पौ फटते फटते, कोश गाव के लोग शोर सुन कर अपनी छोलदारियों से बाहर निकल आये। बात भी मामूली नहीं थी! खबर थी कि अलनजर बे की घर वाली रात मे घर छोड भाग गई है। बिजली की लपट की तरह खबर गाव में फैल गई। सब के होठों पर एक ही बात थीः—"बे की औरत भाग गई!"

'मेहली भाग गई!"

"मेहली मावेद के साथ भाग गई!"

जवान लड़कियां पहले भी कई बार जवान लडकों के साथ गांव से भाग चुकी थीं। उस पर भी बात चलती ही थी। लेकिन वैसा हो जाना कोई अनहोनी बात न थी। लेकिन ब्याहता औरत के भाग जाने से सभी लोग अचम्भे मे आ गये। और तो और, ऐना की सौतेली माँ "मामा"—जिसे निजी बातो को छोड़ किसी से कुछ मतलब न था—भी बोली—"अच्छा ही हुआ इस कमबख्त के साथ! मेरी लड़की चली गई थी तो इस आदमी ने मेरे नाक में दम कर दिया था। अब कोई इससे पूछे—अब क्या कहते हो? अरे वो तो अनब्याही लड़की थी! तेरी तो औरत भाग गई, नाक के नीचे से! अब बोलो! जिसकी औरत ही भाग गई उसे तो दोजख में भी जगह नहीं मिल सकेगी! खूब हुआ! इसके साथ यही होना चाहिये था!"

गाव की गलियों मे बड़े बूढे कहने लगते—"अरे, ब्याहता औरत भाग गई! जाने अब इस धरती और आसमान का क्या होने को है? अब क़यामत का वक्त आ गया है!"

औरतें यह खबर सुनती तो ऐसे लम्बी सास खींचतीं कि नीचे की सास नीचे और ऊपर की ऊपर रह गई हो! और फिर पडोसिन को खबर देने के

लिये लपक जाती। आपस में उनकी बात ही समाप्त होने में न आती।

"अच्छा ही हुआ"—एक बोली—"ग़रीब की जान तो बची।"

"तो और करती क्या ?"—दूसरी ने कहा।

कईयों ने मेहली को बेहया बेसवा कह कर गाली दी।

उम्सागुल के लिये यह मौका दिल की जलन बुझाने का आया। लहगा कमर में खोंस वह गाव में घर घर खबर सुनाती फिरी और फिर पड़ोस के गाव की ओर दौड़ी गई। बात शुरू करती तो मुह पर हाथ रख मेहली की करतूत पर विस्मय प्रकट करती हुई धीमे स्वर मे। फिर उसका सुर ऊचा हो जाता—"लौंडियो, भाग नहीं जाती तो करती क्या ? अलन जर उसके लिये क्या मर्द था ? खाने के लिये ही उसे क्या देते थे ? ऐसा कोई कुत्ते को भी नही देगा। अच्छा बदला लिया उसने ! लौंडियो, सुना है कि वह शहर मे बोलशेविको के यहाँ शिकायत करने गई है। सुना है बोलशेविक बे को जेल में कैद कर देंगे। बहनो, इस बे के तो करम ऐसे हैं कि इसके साथ जो कुछ हो, वही थोड़ा !"

वह बरस ही अलनजर बे के लिये बदकिस्मती का था। बहू अतैरी की वजह से योंही उसकी जान सूली पर लटकी रहती। एक तो जार का तख्त पलटने से उसका दबदबा और इज्जतयों खत्म हो गई थी तिसपर अतैरी बात बात मे बे इज्जती कराती रहती। अरतैक ने जो उसे पीट-पाट कर अनाज लूट लिया तो लोगो की नजर मे वह बिलकुल मिट्टी हो गया। तिस पर साठ ऊँट बोझ अनाज का नुकसान कम नही होता ! अन्त में उसकी घर की औरत ही भाग गई। कोई भी इसान और क्या सह सकता था।

मुसीबतें इसानो पर पड़ती हैं। दुनिया बुरा सलूक भी करती है। इसान उसे सह जाता है कि किस्मत और दूसरे लोगों पर किसी का क्या बस ? लेकिन खुद अपने घर में ‌'अपनी घर की औरत लानत दे जाय ? और फिर औरत भी क्या ! और मेहली ? जिसका न कोई सगा सम्बन्धी था न घर बारी, एक बोरी जौ देकर तो बे ने उसे खरीदा था। और यह लड़का मावेद ? बे दोष दे तो किस को ? दिल का दुख कहे तो किस से ? वह उन दोनो की बोटी बोटी दात से काट डालता पर उनका सुराग कौन लगावे ? बरस नहीं बीता दुनिया उसकी तावेदार थी, उसके इशारे पर नाचती थी। कहाँ गये अब खाजा मुराद, दारोगा बाबा खा और कुली खा ? जा कर अर्जानि के सामने अपना दुख रोये ! जा कर कहे मेरी औरत भाग गई ? एक बे

जा कर कहे कि उसके घर की औरत भाग गई ? क्या मुंह वह दुनिया को दिखायेगा ? क्या उसका नाम रह गया, क्या उसकी इज्जत रह गई ? लोग उसे हिजड़ा कहेंगे और मुह पर थूकेंगे। अगर यह दिन देखने से पहले ही उसकी मौत हो गई होती तो लोग उसे बुजदिल हिजड़ा तो न कहते। अब किस तरह उसके मुह पर लगा यह कलंक धुले।

वह दोपहर तक बैठा सोचता रहा। उसने अपना नया लिया हुआ रिवाल्वर निकाला। हथियार को गौर से देखा गोला है या नहीं। गोली थी। उसने रिवाल्वर का घोड़ा चढ़ा लिया। उसके हाथ कांप उठे, आंखे भय से फैल गईं और होंठ लटक गये। एक मिनिट में सम्भल कर उसने रिवाल्वर की नाली अपने सीने पर टिका ली। संसार का सब मोह छोड़, संसार से नाता तोड़ लेने के लिये उसने आखे मूंद लीं।

परन्तु उसका दिल जोर से धड़कने लगा। उसने आँखे खोल जगमगाती दुनिया को फिर एक आँख देखा। छोलदारी की छत से धुआँ निकलने के लिये बने सूराख से धूप की किरणें आकर कीमती रंग बिरंगे कालीनों पर फैल रही थीं। कालीनों पर बने भड़कीले फूल मानो बे को पुकार कर कह रहे थे—"तुम भी क्या पागल हो। अरे इस दुनिया के, कुदरत के, असलियत के मजे छोड़ कर तुम कहाँ जाना चाहते हो ? अंधेरी कबर में जा लेटोगे तो तुम्हारा क्या भला हो जायगा ? जिन्दा रहोगे तो दुनिया में मौके और जगह की इन्तहा नहीं। सोचो हज़ार मौके आ सकते हैं।"

अलनजर अपने सांस के आने जाने का शब्द सुनने लगा और सोचा—सांस का आता रहना कितना बड़ा सुख है ? यह सांस ही बंद हो गया तो क्या रह जायगा ? ओफ कितनी तकलीफ होगी सांस न आने से ? सौ मन मिट्टी के नीचे कबर में दब जाना ? जाकर खुद ही मौत के फरिश्ते इजराइल के हाथों पड़ जाऊँ ? धीमे-धीमे रिवाल्वर उसके हाथ से समीप पड़ी गद्दी पर जा टिका। छोलदारी के बाहर से मालकौश के हिनहिनाने की आवाज आ रही थी और उसकी लड़की की खिलखिलाहट भी सुनाई दी। उसे जान पड़ा वह कबर से लौट आया और जिन्दगी कितनी मजेदार चीज थी ?

बे ने अपनी प्रतारणा की—मैं दर असल ही बेवकूफ हूं। निराश हो कर जान दे देने से फायदा ? किसके लिये जान दे दूं ? मेहली के लिये ? न मैंने उसे कभी अपनी बीबी—बेगम समझा, न मुझे उससे कोई मुहब्बत थी ?

एक बादी थी, बस ! समझ लो, माबेद अपनी पांच बरस की नौकरी की मजूरी ले गया। ...पर लोकबाग क्या कहेंगे ? अरे कुछ दिन बकेंगे और फिर भूल जायगे ! दस पाँच दिन बात रहेगी, दब जायगी । इतने दिन गम खा जाओ !

वे अपनी छोलदारी से निकला । किस्मत की बात, पहले उसे अतैरी ही दिखाई दी । उसे देखते ही वे झुंझला उठा—जिस दिन से यह कलमुँही इस घर में आई है, एक के बाद दूसरी मुसीबत सदा ही सिर पर पड़ती रही । यह जरूर किसी डायन की औलाद है । यह आई और किस्मत ने मुँह फेर लिया । किसी तरह इससे पीछा छूटे तो मैं आधी जायदाद खैरात कर दूं । उसने अतैरी की ओर से मुँह फेर लिया ।

अतैरी वे की आखों में घृणा भाप गई । उसे भी याद आ गया कि एक दिन यह बल्ले खा को फटकार रहा था—"तू कैसा मर्द है रे, जो एक औरत को बस नहीं कर सकता ?"

अतैरी ने उसे वैसी ही निगाह से जवाब दिया और बोली—"कहो, क्या तुम्हारी मर्दानगी मैंने ही छीन ली ? औरत को तो तू क्या बस करेगा तू तो बादी को हो नहीं निबाह पाया ? अब अपनी मर्दानगी मे दाढी समेट ले। हिम्मत है तो जा, पकड कर ला उन लोगों को !"—अतैरी ने शहर की ओर हाथ बढा सकेत किया ।

वे दांत पीसकर चुप रह गया ।

जब वे के यहाँ यह बीत रही थी माबेद और मेहली शहर की ओर भागे चले जा रहे थे ।

अशीर कई दिन पहले ही लाल फौज में भरती हो चुका था । उसे फौज के निशान, नम्बर और बदूक मिल गई थीं । माबेद के आ जाने पर अशीर ने उसे भी अपनी ही कम्पनी मे भरती करवा लिया । चनीशोव की सिफारिश से माबेद को शहर मे एक कोठड़ी मिल गई । वे के यहाँ से मिला उसके हिस्से का अनाज सम्भाल कर रखा हुआ था । कुछ दूसरे सामान के साथ वह सब उसे दे दिया गया । वह अपने नये घर में आ बसा और मेहली अपने घर की रानी बन गई । अब उस पर हाथ उठाने वाला और उसे आख दिखाकर गाली देने वाला कोई न था । न उसे अब बांदियों की तरह नाम लेकर पुकारा जा सकता था । अब वह माबेद की घरवाली थी

जाती थी। आराम और अधिकार का नशा उसकी आखों में चमकने लगा। कभी कभी वह सोचती इस सब के लिये किसका शुक्रिया करूँ ?

वह सोचती यह अतैरो की मेहरबानी है ? नहीं ! सोचती जार का तख्त पलटने से मेरे दिन फिरे ? नही ! अशीर की मेहरबानी है—नहीं ! मावेद की मुहब्बत ? —नहो ! यह मेरे अपने हौसले की बात है ! नहीं तो कोई क्या कर सकता था।

मेहली मावेद से भी यह सवाल पूछ कर जवाब मांगती। मावेद कहता—"मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता था ? मुझे ना तुमने खुद अपने आपको दिया और मेरी जिन्दगी बनादी ?"

मावेद के शहर में आकर बस जाने की खबर अरतैक को मिली तो वह भी उन्हे मुसीबतों और गुलामी से छूट कर सुखी जीवन पाने के लिये बधाई देने गया। रास्ते में उसे चरखेज मिल गया। चरखेज बहुत उदास जान पड़ता था। अरतैक ने उसकी उदासी का कारण पूछा—

"क्या बताऊं ? दुनिया के तौर मेरी समझ में नही आ रहे हैं। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ लोग कर क्या रहे हैं ?"

"क्या मतलब ?"—अरतैक ने पूछा—"लोग सदा ही अपनी अपनी समझ से चलते हैं। शहर में दो तीन राजनैतिक दल हैं। तुम्हें क्या कोई भी पसन्द नही ?"

"नहीं"

"आखिर तो तुम मुसलमान हो ?"

"अजीज के इस्लाम को मैं नहीं मानता।"

"तो तुम पतलून वालों की पार्टी (बोलशेविकों) के साथ हो जाओ।"

"कुली खा की पार्टी में ? कुली खा सदा दगाबाजी करता रहा है। मुझे उस पर अब भी एतबार नहीं।"

'तुम चाहते क्या हो ?'

"मैं चाहता हूँ इन्साफ हो ! लोग कहते थे इन्कलाब के बाद इन्साफ होगा।"

"इन्साफ क्या कोई गठड़ी में बांध कर तुम्हारी बगल में दे जायगा ?... क्या पागल पन की बातें करते हो चरखेज ? तुम मेरे साथ आजाओ।"

"तुम्हारे साथ ?"

"क्यों, क्या मुझ पर विश्वास नहीं ?"

"तुम पर तो विश्वास है, अजीज पर बिलकुल नहीं।"

"क्यों· अभी तक वह बुरा क्या कर रहा है ?"

"यह उसकी चालबाजी है। आगे देखना क्या करता है। मुझे उस पर भरोसा नहीं होता।"

अरतैक के बहुत कुछ समझाने पर भी चरखेज को सतोष न हुआ—"देखा जायगा !"—उसने अरतैक की बात टाल दी। अरतैक भी निराश हो मावेद के घर पहुँचा। उसने मावेद और मेहली को उनके नए जीवन पर बधाई दी। मन मे उसके यह खयाल अवश्य था कि इनका ब्याह असल ठीक ढग का ब्याह तो नही है फिर भी उन लोगों के पिछले जीवन का खयाल कर वह बोला—"जो हो भाई तुम दोनों ने हिम्मत की ठीक ही किया !"

अरतैक ने मावेद को समझाया—"यह तुम्हारी गलती है कि तुम मुझे छोड कुली खां और अशीर की फौज मे जा मिले। अपने आखिर अपने हैं। गैर, गैर !" फौके से उसी समय अशीर भी नये जोडे को बधाई देने आ पहुचा। उसकी और अरतैक की बातचीत तानेबाजी से शुरु हुई और फिर गरमा गरमी हो गई।

अशीर ने अरतैक का अजीज खा की फौज मे जाना और अरतैक ने अशीर का कुली खा की फौज मे जाना मूर्खता बताया। दोनों अपनी अपनी सफाई देकर दूसरे की बेवकूफी सुझा रहे थे। उनका झगडा ऐसे चल रहा था जैसे दो अंधे एक दूसरे पर पत्थर चला रहे हों।

अरतैक गुस्से मे उठ कर जाने लगा। परन्तु अशीर उसकी राह रोक कर खड़ा हो गया। दोनों ही क्रोध मे हाफ रहे थे। अरतैक झु झला कर बोला—"तुम मुझे जाने क्यों नहीं देते ?"

"जब बात का फैसला हो जायगा तभी तुम जाओगे।"—अशीर ने उसकी आखों मे घूर कर जवाब दिया।

"तो क्या फैसला तब होगा कि तुम मुझे गोली मार दो या मैं . . ?" अरतैक बोला।

"यहाँ यह बात कमीनापन होगी। यह देखा जायगा लडाई के मैदान में .."—अशीर ने जवाब दिया।

"हमारी दोस्ती खत्म है।"

"हाँ, अब हम लोग दुश्मन हैं।"

पुराने गहरे मित्र एक दूसरे की ओर ऐसे घूर घूर कर देख रहे थे कि एक दूसरे को फाड खायगे। अरतैक बिना कोई जवाब दिये कमरे से निकल चला गया।

१७

अजीज खा ने तेजेन में पैगम्बर मुहम्मद के जन्म दिन का जो जलसा करवाया उसमें उसका प्रयोजन अपनी सेना और शक्ति का प्रदर्शन कर देना भी था। इससे जनता पर प्रभाव बढाने की आशा थी। तुर्कमानी प्रतिनिधि मडल के नेता नियाजा बेग से जो उसकी बातचीत कार्यक्रम के सम्बध मे हुई थी, उसका भी उसे ध्यान था। कोकद से लौट कर उसके दूत मदीर ईशान ने स्वतत्र इस्लामी राज कायम होने के जो समाचार उसे दिये थे, वह बात भी उसके ध्यान में थी।

अजीज को यह विश्वास हो गया कि देहात के किसानों और शहर की जनता की सहानुभूति उसके साथ है और वे लोग उसका आदर करते हैं। यह भी उसने देखा कि कुछ तुर्कमानी लोगों ने उसके जलसे में भाग नहीं लिया, वे लोग अभी स्थिति को परख लेना चाहते हैं। यह भी वह जानता था कि कुली खा जैसे आदमियों के प्रति लोगों मे घृणा होने पर भी जनता मे सोवियत का प्रभाव भी बढता ही जा रहा था। वह अनुभव कर रहा था कि चर्नीशोव के प्रयत्नों से लोग किसान-मजदूर राज की आशा में दृढ विश्वास से मरने मारने के लिये सोवियत की ओर खिचते चले जा रहे हैं। अशीर जैसे वे घरबार के लोग, जिन्होंने जार के राज में जुल्म सहे थे मावेद और मेहली जैसे लोग, जो अब तक गुलामी में जकडे हुये थे अब शहरों में जमा हो रहे हैं। ऐसे लोग सोवियत के कट्टर सहायक बनते जा रहे हैं। इन लोगों को समझाने बुझाने का भी कुछ असर न था। यह लोग समझते थे इनका जीवन केवल सोवियत के राज में ही सम्भव है। इन्हें चर्नीशोव के सिवा किसी दूसरे पर विश्वास ही न था। तेजेन की लाल फौज की संख्या अधिक नहीं परन्तु इसकी उपेक्षा न की जा सकती थी। लाल फौज से सामना होने पर वह किससे सहायता की आशा कर सकता था ? किसानों

का भरोसा करना व्यर्थ था। इसलिये वह अवसर की प्रतीक्षा मे था।

चर्नीशोव भी आशंकित था। समाजवादी क्रान्ति-विरोधी शक्तियों को इकट्ठा होते देख उसे आशंका हो रही थी। रूस की क्रान्तिकारी शक्ति मध्य एशिया से बहुत दूर थीं और फिर दुतोव की जार की समर्थक और क्रान्ति विरोधी सेनाये मध्य ऐशिया को शेष क्रान्तिवादी रूस से अलग किये हुये थीं। क्रान्ति विरोधी शक्तिया इस अवसर से लाभ उठा कर मध्य एशिया में अपने कदम जमा लेना चाहती थी। कोकंद मे आजाद इस्लामी सल्तनत कायम करने वाले तुर्कमानिया के जागीरदार और पूंजीपति, कास्पियन समुद्र के पड़ोस के क्रान्तिकारी सोशलिस्ट नाम से सोवियत विरोधी पार्टी बनाने वाले, ईरान से लौटी हुई कज्जाक फौजें, जुनेद खा जैसे छोटे छोटे खान जिनका काम लूट-पाट से ही चलता आया था और डाकुओं क टोलियों का सबसे बड़ा मुखिया इग्राश बे, अलीयार खा, अजीज खा और उस जैसे कई दूसरे, यह सब लोग अपनी अपनी जगह सोवियत का विरोध कर अपने स्वतंत्र राज कायम कर लेने की तिकड़मे जमा रहे थे। इन सब को सिखा पढ़ा कर सहायता देने वाले थे बृटिश साम्राज्यशाही शक्ति के एजेंट जो लोग कई जगह भेस बदल कर और कई जगह स्थानीय खानों के विश्वासपात्र बन कर बैठे हुये थे। यह लोग बरसों से इस विद्या को सीख कर एशिया के छोटे छोटे राष्ट्रो को आपस में लड़ा कर, उन्हे फोड़ कर अपनी साम्राज्यशाही सत्ता की नींवे डालते आये थे। चर्नीशोव को अभी इन गुप्त जालसाजों का कोई भेद मालूम न था। परन्तु इन लोगों की करतूतों के परिणाम वह अवश्य देख रहा था। तेजेन की स्थिति बहुत डावाडोल थीं। बाहर की सोवियतों से उसका सम्बध टूट चुका था। सोवियत के मुट्ठी भर विश्वासपात्र आदमी थे। वे जो कुछ करते अपने साहस और जिम्मेवारी पर ही कर सकते थे। ताशकंद की क्रान्तिकारी कमेटी अपने इलाके मे चल रही सोवियत विरोधी बगावत का सामना करने में उलझी हुई थी। चर्नीशोव अश्काबाद की सोवियत से कुछ आशा कर न सकता था क्योंकि वहाँ के चुनाव में जार के सब पुराने अफसर और क्रान्तिकारी सोशलिस्ट लोग सोवियत मे आ घुसे थे। सोवियत पर उन्ही लोगों का कब्जा था।

तेजेन की अवस्था दिन दिन संकटमय हो रही थी। सोवियत के सामने प्रश्न था कि अजीज खा की बढती फौज को जल्दी से जल्दी समाप्त किया जाय। लेकिन शहर मे दंगा फिसाद की नौबत भी न आने पाये। इसके लिये आवश्यक सिपाहियों की संख्या तेजेन की सोवियत के पास थी नहीं।

कुली खा पर भी चर्नीशोव का सन्देह बढता ही जा रहा था। विशेष आशा न होते हुये भी अश्काबाद जा कर यत्न करने के सिवा और कोई उपाय न था।

अजीज़ भी ऐसी ही डावाडोल स्थिति में था। वह भी अश्काबाद से सहायता पाये बिना कुछ न कर सकता था। परन्तु नियाज बेग से सहायता मांगना भी अजीज के आत्म सम्मान के विरूद्ध था। उसने मदीर ईशान से एक पत्र नियाज़ बेग के नाम लिखवाया और अरतैक को पत्र देकर अश्काबाद भेजा।

अरतैक और चर्नीशोव एक ही गाडी से अश्काबाद जा रहे थे। चर्नीशोव को गाडी में देख अरतैक की बड़ी इच्छा हुई कि पुराने मित्र से मिल जुल कर बातचीत करे परन्तु उचित न जान पड़ा। अश्काबाद वह जा रहा था चर्नीशोव के विरूद्ध अजीज के लिये सहायता का प्रबंध करने। फिर मित्रता का झूठा आडम्बर क्या करता। उस समय उसे ध्यान भी आया कि वह सोवियत विरोधी मार्ग पर कहां से कहां आ पहुंचा है। चर्नीशोव की निगाह अरतैक पर न पड़ पाई थी। बाकी सफर में अरतैक जान बूझ कर चर्नीशोव की निगाह से बचा रहा।

अरतैक जिस समय अजीज़ का पत्र लेकर अश्काबाद की इस्लामी कमेटी में पहुंचा कमेटी की कान्फ्रेंस हो रही थी। कमरा खूब बड़ा था। इंतजाम और सजावट योरूपियन ढंग की थी। भीड़ भी काफी थी। अरतैक कमरे भर में आँखें दौड़ा कर देख रहा था कि कोई जान पहचान का चेहरा दिखाई दे। परन्तु नियाज बेग को छोड़ उसे कोई परिचित नहीं दिखाई दिया। नियाज बेग को भी उसने तेजेन के स्टेशन पर, गाड़ी में कोकन्द जाते हुये ही देखा था। अरतैक को यह कमेटी का जमाव कुछ विचित्र सा ही लगा। एक ओर एक गंजा, दाढ़ी मुडा सरदार बैठा था उसके साथ ही एक तांबियल, बड़ा रोगी था जिसके चेहरे पर फैली चर्बी भरे गालों में आँखें भी दबी जा रही थीं। उसके आगे एक वे बैठा था जिसका सिर मुंडा हुआ था परन्तु ठोडी से लम्बी दाढी लटक रही थी। एक ओर एक आदमी खड़ा था बिर्चिस पहने। उसके रिवाल्वर की चमड़े की डोरी नीचे दूर तक लटक रही थी। यह आदमी चुप खड़ा अपनी मूंछे ऐंठ रहा था। कमेटी की कारवाई इस आदमी को पसन्द नहीं आ रही थी। कभी वह एक किनारे चहलकदमी करने लगता और कभी खीझ से दूसरे लोगों की ओर देखने लगता।

कमेटी का प्रधान था ओराज सरदार। ओराज का चेहरा निस्तेज भुस-भुसा सा था। चेहरा मोटी मोटी भौं और दाढी मूछ से ढका हुआ और तोंद भी खूब बढ़ी हुई थी। ओराज सरदार के कंधों पर जार के जमाने की फ़र्नैली के निशान लगे हुये थे। इन लोगों को देख कर अरतैक ने निराशा से मन में कहा—यदि इन्ही लोगों के हाथ हमारी नैया की पतवार है तो डूबेगे नहीं तो क्या?

इस इस्लामी कमेटी ने प्रादेशिक सोवियत से माग की थी कि सोवियत इस इस्लामी कमेटी को तुर्कमानिया की पूरी जनता की प्रतिनिधि स्वीकार करले, इस कमेटी के प्रतिनिधियों को सोवियत का मेम्बर बनाले और इलाके में लडाई के जितने हथियार और गोली गट्टा है, वह सब, सोवियत और इस कमेटी मे बराबर बाट दिया जाय। कान्फ्रेंस में विचार यह हो रहा था कि सोवियत इन मागो को दो दिन के भीतर स्वीकार कर लेगी या नहीं।

"यह लोग तो अभी स्वय ही बेपेंदी के लोटे की तरह लुढक रहे हैं"—मन में अरतैक ने सोचा—और हम इनकी सहायता का भरोसा कर रहे हैं!

कान्फ्रेंस मे सब अपनी अपनी कहे जा रहे थे। परेशान हो कर गंजे सिर वाला मोटा सरदार बोला—"हमे तो आप लोगो की बाते कुछ समझ नहीं आ रही। जब हमने सोवियत के सामने अपनी मागें रख दी हैं तो यह मागें पूरी होनी चाहिये। सोवियत को हमें जवाब देना होगा। अगर सोवियत तसल्लीबख्श जवाब नही देती है, शहर को जला डालो! सोवियत है क्या चीज? यह मुल्क हमारा है, यहाँ ताकत हम लोगों को है। अगर कमेटी को यों बेसिर पैर की बातों में ही उलझे रहना है तो हम लोग यहाँ बैठकर क्या कर रहे हैं? इस तमाशे का फायदा ही क्या है! हमे यह तमाशा बिलकुल नापसन्द है। हम यहा से चले जायगे!" सरदार क्रोध में कह रहा था और उसके मुंह से थूक के फुहारे उड़ रहे थे। उसका चेहरा बिलकुल सुर्ख हो गया। उसने कमेटी के लोगो की ओर इस आशा से देखा कि वे उसकी बात से डर गये होंगे।

अरतैक ने देखा कि नियाज बेग सरदार की बात पर मुस्करा रहा था और उससे नियाज बेग को कहते सुना--"भाड मे जाय यह कमबख्त चला ही जाय तो जान छूटे। यह तो यहाँ लूट के मौके की तलाश में आया है।"

अजीज का खत कान्फ्रेंस में पढा गया। उस पर भी बहस छिड़ गई। किसी ने कहा—"सौ सिपाही भेज दो। दो दिन में कुली खा को खत्म कर

लौट आयेंगे।" दूसरा बोला—"अज़ीज़ से तो कुलो खां ही भला। कल अज़ीज के पांव जम जायगे तो वह हमी को आँखें दिखायेगा।" कुछ लोगों की राय थी कि ओराज़ सरदार और नियाज़ बेग तेजेन जा कर सोरयत और अज़ीज़ खां में समझौता करवायें। कुछ की राय था—इस झगड़े से हमें क्या मतलब ? कुछ ऊंघ रहे थे।

अज़ीज़ के पत्र के बारे में कुछ फैसला हो नहीं पाया और दूसरी ही बहस छिड़ गई। कोई बोल उठा—"जर्मनी को अगर टर्की में जगह मिल जाय तो वह बर्तानिया के परखचे उड़ा देगा।" मोटे तादियल बे फिर बोल उठे—"यह बात सही है। अंग्रेज तुर्की की फौज का भला क्या मुकाबिला करेंगे ? इस बारे में एक तुर्की अफसर ने मुझे सब कुछ बता दिया है।"

ओराज़ सरदार बोल उठा—"ईरान में रुकी हुई ज़ार की कज्ज़ाक फौज बर्तानिया की कमान में चली गई है। बर्तानिया ही उसका पूरा खर्चा दे रहा है। कज्ज़ाक फौज के बीस बड़े अफसर कोमथूज, खोजानेप, खीवा और बुखारा में बर्तानिया के हुक्म से गये हैं। बर्तानिया की फौजें ईरान में ही नहीं बल्कि कास्पियन समुदर के इस तरफ और तुर्कमानिया में भी आ गई हैं। रूसी फौज के पीछे हट जाने के कारण बर्तानिया इधर आ कर जर्मनी और तुर्किस्तान से खुद लड़ेगा। उम्मीद है इस मुल्क में जल्दी ही जर्मनी और बर्तानिवी फौजों की जोर से टक्कर होगी।"

ओराज़ सरदार की इस महत्व पूर्ण खबर पर भी दूसरे लोगों ने खास ध्यान नहीं दिया। जो जिसके मन में आता बोलता चला जा रहा था। मुल्क पर आये खतरे को न तो कोई समझ ही रहा था और न किसी को उसकी चिन्ता थी। प्रायः लोग आपस में ही गप-शप कर रहे थे। कोई उठ कर जरा घूमने और चाय पीने चले जाते और फिर लौट कर आ बैठते। अरतैक यही समझा कि यह लोग यहाँ दिल बहलाने के लिये आये हैं या इस खयाल में हैं कि पैसा बनाने का कोई अवसर हो तो उसकी खबर रहें। अरतैक ने सोचा—फिजूल में तेजेन से यहां तक आया। इन लोगों को जनता की क्या परवाह है ? इनमें और ज़ार के अफसरों में फरक ही क्या है ? यह उनसे ज़्यादा मूर्ख जरूर हैं।

कान्फ्रेंस में सुनी बातों से एक बात जरूर उसे समझ में आई कि सब लोग समझते हैं कि अज़ीज केवल अपना राज जमाने के लिये ही तड़पता

चाहता है। चर्नीशोव ने भी यही कहा था कि अजीज को जनता से कोई मतलब नहीं, वह खुद खान बनने का स्वप्न देख रहा है। तो अजीज को जनता का हितैशी और रक्षक सिवा उसके और कौन समझता है ? कौन उसका विश्वास करता है ? खुद अरतैक भी क्या अजीज का विश्वास कर सकता है ?

अरतैक का माथा घूम गया। वह कान्फ्रेंस से उठ कर चल दिया। तेजेन के मामले मे कान्फ्रेंस क्या करेगी ? इस विषय मे वह कुछ जान नहीं पाया। कान्फ्रेंस मे स्वयं कुछ कहने का भी उसे कुछ फायदा न जान पड़ा। उसने सोचा—इन स्वार्थी लोगों के सामने जनता के नाम पर, देश पर आते खतरे के नाम पर दुहाई देना व्यर्थ है। और फिर उसके मनमे यह भी विश्वास न था कि अजीज को सहायता मिलने मे जनता का भला हो जायगा। वह किसी भी भरोसे के नेता के पीछे चल कर जान लड़ा देने के लिये तैयार था परन्तु किसी खान की खुदगर्जी पूरी करने के लिये बेवकूफ बनना उसे मजूर न था।

जिस समय अरतैक कान्फ्रेंस में खिन्न हो कर स्टेशन की ओर लौट रहा था दूसरी ओर चर्नीशोव प्रादेशिक सोवियत के सामने अपनी बात कह रहा था। चर्नीशोव बड़ी कठिनाई मे था। वह अच्छी तरह जानता था कि अश्काबाद की सोवियत में तिकड़म से चुने गये अधिकांश लोग जनता विरोधी थे और उस पर सन्देह करते थे। मेंशेविक और सोशलिस्ट लोगों के नेता फुन्तीकोव और दोखोव का अश्काबाद की सोवियत मे खूब जोर जमा हुआ था। चर्नीशोव की बात लोग ध्यान से सुन अवश्य रहे थे परन्तु उनके चेहरों पर सन्देह और विरोध का भाव भी स्पष्ट था। सोवियत की उस बैठक में अश्काबाद के बोल्शेविक नेमया, झितनीकोव, मोली बाजकोव और बेतमानोव मे से कोई भी मौजूद न था, इसलिये चर्नीशोव और भी घबराहट अनुभव कर रहा था। यह उसे बाद मे मालूम हुआ कि सोवियत के बोल्शेविक मेम्बरों को सभा का समय गलत बताया गया था ताकि वे लोग सभा में आ ही न सके।

"दिन बदिन अजीज की शक्ति बढ़ती जा रही है और उसका दुस्साहस भी बढ़ रहा है—"चर्नीशोव ने कहा—"उसका उद्देश्य क्या है ? यह किसी से छिपा नहीं है। जिस तरह वह चल रहा है, उससे सन्देह का भी कोई कारण नहीं है। जनता के लिये अन्न भोजन के सम्बंध मे उसने जरूर

कुछ काम ऐसे किये हैं जो वास्तव में हमारी सोवियत को करने चाहिये थे। इसका परिणाम यह हुआ है कि कुछ समय के लिये भूखे किसानों की सहानुभूति उसकी ओर हो गई है। उसने आजाद इस्लामी सल्तनत का नारा भी लगाया है। इससे मुस्लिम जनता को उसके प्रति विश्वास होने लगा है। परन्तु अजीज की यह आजाद इस्लामी सल्तनत मुस्लिम जनता की स्वतन्त्रता के लिये नहीं है। यह आजाद इस्लामी सल्तनत कुछ जागीरदारों और तुर्कमान पूँजीपतियों की ही हुकूमत होगी। यदि हम समय पर अजीज का उचित उपाय नहीं करेंगे तो परिणाम वही होगा जैसा ताशकंद में इस्लाम की स्वतन्त्र हुकूमत कायम करने के नाम पर जनता के खून की नदियां बहने के रूप में हुआ। इस हालत में अजीज खां की फौज को निशस्त्र कर देना बहुत ही आवश्यक है। और जहाँ तक सम्भव हो यह काम बिना खून खराबा किये, लड़ाई बिना किये होना चाहिये। इसके लिये आवश्यक है कि हमारे पास उसकी सेना से कहीं बड़ी सेना हो! यह बात तेजेन की मौजूदा लाल फौज के बस की नहीं। इसलिये मैं अश्काबाद की प्रादेशिक सोवियत से सैनिक सहायता चाहता हूं।'

चर्नीशोव ने अनुभव किया कि सोवियत के लोग तेजेन की गम्भीर स्थिति की उपेक्षा कर उसका विरोध करने के लिये उतारू हैं। वह एक बार फिर बोला—"अन्त में मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं। यह समस्या केवल तेजेन की ही समस्या नहीं है। यदि तेजेन में अजीज के उठाये हुये संकट का उपाय उचित समय पर न कर दिया जायगा तो एक नहीं, सैकड़ों अजीज पैदा हो जायंगे और केवल तेजेन में नहीं, यह लोग पूरे तुर्कमानिया पर छा जायंगे।"

"और यह लोग फिर से जार को गद्दी पर ला बैठायेंगे।" फुन्तिकोव ने अपनी लम्बी गर्दन उठा कर मजाक किया।

"नहीं—" चर्नीशोव ने उत्तर दिया—"यह लोग पुराने जार को ढूंढने नहीं जायंगे। एक जार की जगह एक सौ जार जगह जगह पैदा हो जायंगे।"

दुखोव बहुत शान्ति और उपेक्षा से बोला—"अजीज के प्रश्न को लेकर हमें भटक नहीं जाना चाहिये। इस प्रश्न पर हमें राजनैतिक दृष्टि से दूरदर्शिता से विचार करना चाहिये। हमें यह समझ लेना चाहिये कि अजीज है क्या? फर्ज कर लीजिये कि उसकी शक्ति एक मामूली नम्बर के बराबर ही है। एक नम्बर की ताकत क्या है? वह केवल कुछ समय के

लिये परेशान कर सकता है। परन्तु एक ततैये को छेड़ने का परिणाम होता है कि पूरा छत्ता आ पड़ता है। सोच लीजिये कि एक तुर्कमान को छेड़ कर कहीं हम पूरे तुर्कमानिया को तो नहीं भड़का देंगे ? आखिर वह देश तो उन्हीं लोगों का है। इससे यह कहीं बेहतर होगा कि अजीज से स्वयं झगड़ा मोल न ले कर किसी प्रभावशाली तुर्कमान को ही अजीज का सामना करने के लिये खड़ा कर दिया जाय।"

"अजीज की फौज से हथियार रखा लेने का मतलब तुर्कमान लोगों में झगड़ा शुरू करदेना हरगिज नहीं है—" चर्नीशोव ने समझाना चाहा—"इसका मतलब है तुर्कमान जनता को अजीज के जुल्म से बचाना। इसका मतलब है तेजेन के किसानों को जमीन और सिंचाई का पानी देना और उन्हें पंचायत के रूप में संगठित करना। इसके विरुद्ध आपके सुझाव का अर्थ होता है कि हम जनता के एक अंग को दूसरे अंग से लड़ा दें। अगर हम ऐसा करते हैं तो यह जार की फूट की कूटनीति की नकल करना होगा।"

"तुम्हारे पक्ष में कुली खां जैसे प्रभावशाली तुर्कमान हैं। जनता पर इन लोगों के प्रभाव का उपयोग होना चाहिये।"

"कुली खां पर हम लोग बिलकुल भी भरोसा नहीं कर सकते। कुली खां प्रत्येक बात में सोवियत की नीति का विरोध कर रहा है।"

"तुम तेजेन की सोवियत के प्रधान हो। यदि तुम कुली खां जैसे आदमियों को भी अनुशासन में नहीं रख सकते तो तुम वहाँ कर क्या रहे हो—" दुखोव ने पूछा।

"आप लोगों को याद होगा कि मैंने अपनी रिपोर्ट में यह कभी नहीं कहा कि हमारी सोवियत में बोल्शेविकों का बहुमत है। हमारी सोवियत में जनता विरोधी लोग काफी संख्या में घुसे हुये हैं और यह बात मैं आपकी सोवियत में भी देख रहा हूं।"

फुन्तीकोव ने चर्नीशोव की ओर कनखियों से देखा और उसके माथे पर त्योरियां पड़ गईं—"जो बात तुम कह रहे हो उसका जिम्मेवारी समझते हो ?—" उसने चर्नीशोव की ओर घूर कर प्रश्न किया।

"यदि आपकी सोवियत में जन हित के समर्थकों का बहुमत है। यदि आपको अपनी शक्ति पर पूरा विश्वास है तो तेजेन की स्थिति सम्भालने में आपको हिचकिचाहट किस बात की है—और आप लोग कुली खां जैसे

आदमी का पक्ष क्यों ले रहे हैं ?"—चर्नीशोव ने प्रश्न किया—"हमारी सोवियत में कुली खा जैसे आदमियों के रहने के कारण ही अजीज खा को बढ़ने का मौका मिल रहा है। मुझे तो आश्चर्य है कि आपका कुली खां पर इतना भरोसा और विश्वास है।"

सोवियत की बैठक में मौजूद लोगों का व्यवहार देख चर्नीशोव ने साफ और कड़ी बातें कह देना आवश्यक समझा। कई उदाहरण पेश कर उसने बताया कि अश्काबाद से परस्पर विरोधी आज्ञायें मिलती रही हैं जिनके कारण तेजेन में उलझनें पैदा हुईं और जब हमने इन सवालों पर रोशनी डालने के लिये आपको लिखा, आपके यहाँ से जवाब ही नहीं आया। चर्नीशोव की इन बातों से फुन्तीकोव बहुत बिगड़ उठा। वह बार बार उठ कर चर्नीशोव का विरोध करने लगा कि चर्नीशोव अपनी बात कह ही न पाये परन्तु इसी समय किजाइल अर्वात के मजदूरों के बहुत से प्रतिनिधि और लाल फौज के लोग भी सभा में आगये। चर्नीशोव ने फिर से अपनी बात दोहरा कर कही। अब फुन्तीकोव ने रंग बदल लिया—

"यह तो अजब तमाशा है", फुन्तीकोव बोला—"यह आदमी हम लोगों पर बोहमत और इलजाम लगा रहा है, हम लोगों को क्रान्ति-विरोधी कहता है और फिर हमसे सहायता मांगता है। अपने ऐसे ही व्यवहार के कारण इस आदमी ने तेजेन की सोवियत के सब लोगों को अपना विरोधी बना लिया है। हम तेजेन के मामले की उपेक्षा नहीं कर सकते। दोस्त, चर्नीशोव हम लोग जल्दी ही आकर तेजेन की स्थिति को स्वयं देखेंगे। तुम वहाँ झंझट और उलझनें पैदा करते जाओ और झंझटों को दूर करने हम वहाँ जाया करें तो काम कैसे चलेगा ? यदि हम चर्नीशोव की बातें ठीक मान लें और मानलें कि तेजेन में इस समय स्थिति खराब है, तो हम अपने आदमियों को वहाँ किसकी जिम्मेवारी पर भेज सकते हैं ?"

फुन्तीकोव ने अपने इस प्रबल तर्क से सबको चुप करा देने की आशा में सब लोगों की ओर घूम घूम कर देखा—"ऐसी स्थिति में कौन तेजेन जाने के लिये तैयार होगा ?"—सब ओर चुप्पी देख फुन्तीकोव की आंखें चमक उठीं।

सहसा पीछे की ओर से आवाज आई—"हम जायगे तेजेन !"

फुन्तीकोव का चेहरा फक हो गया—"कौन जायगा ?" उसने फिर प्रश्न किया।

लाल फौज का एक मामूली अफसर लोगों को हटाता हुआ आगे बढ आया। चर्नीशोव ने ध्यान से देखा—यह वही अलर्स्की तिशेको था जो तजेन की चुनाव सभा में अरतैक का पूछता हुआ आया था। उसके बाद और कई आदमी तेजेन जाने के लिये खडे हो गये। तिशेको की लाल फौज की कम्पनी के साथ ही किजाइल अखातिन मजदूरों का एक स्वयं सेवक दल भी तेजेन जाने के लिये तैयार था। फुन्तीकोव के लिये चुप रह जाने के सिवा उपाय न रहा। सभा समाप्त होने के दो घंटे के भीतर चर्नीशोव दो सौ लाल सिपाहियों के साथ तेजेन की ओर चल पडा।

लाल फौज की एक और कम्पनी तेजेन में पहुंच जाने का समाचार अजीज को जल्दी ही मिल गया। उसने तुरंत अपने सलाहकार दरबारियों को बुलवाया। आल्ती सोपी और अलनजार वे खबर पाकर तेजेन आये परन्तु अजीज खां तेजेन में था नहीं। उन्हें कहा गया कि अजीज खां किसी आवश्यक काम से बाहर गया है—शीघ्र ही लौट आयेगा।

सूरज छिपने को था। पश्चिम की ओर छितराये बादल सुर्ख हो रहे थे। हवा बोझल और गरम हो रही थी। चिडिया भी सुस्ती अनुभव कर जहाँ तहाँ पेडों पर शाखाओं में जा छिपी थीं। उनकी चह-चाहट में भी उदासी जान पडती थी।

अलनजार का मन भी उदास था। वह उठ कर सराय के आंगन में चहल कदमी करने लगा। सध्या की लाली लिये धुंधलके में वह आंगन उसे कैदखाना सा लग रहा था। अजीज शाम तक भी न लौटा तो उसे विस्मय होने लगा। वह सराय की एक दीवार से दूसरी दीवार तक टहलता अपने दुर्भाग्य की बात सोचता जा रहा था। मेहली के भाग जाने के बाद से उसने लोगों से मिलना जुलना बहुत कम कर दिया था। तब से वह शहर भी नहीं आया था। यहाँ वह बात भी करता तो किससे? आल्ती सोपी शहर में अपने किसी मिलने वाले के यहाँ चला गया था। सराय में कोई बात करने लायक आदमी था भी तो नहीं।

"शहर में जाकर किसी से मिल न आऊँ?—अलनजार सोच रहा था"। उसका मित्र अरतैन खजैन तेजेन से चला गया था। इन्कलाब होते ही खाजैन अपनी जायदाद समेट कर काकेशस चला गया था। उसे कोतूर की याद आई परन्तु साथ ही ख्याल आ गया—मेहली की बात उसने भी सुनी होगी और वह कमबख्त खूब खुश हुआ होगा! उसका मन और भी भारी

होगया—क्या फायदा कहीं जाने का ?.. इससे तो अच्छा है लेट कर आराम ही किया जाय।

लेट जाने पर नींद भी नहीं आई। चुपचाप लेटने से दुश्चिन्ताओं से मन और भी व्याकुल हो रहा था—उस पर क्या नहीं बीती ? बदनामी, माल का नुकसान ? क्या नहीं हुआ ! अब जानवरों के लिये चारा भी नहीं मिल रहा है—उसकी सैकड़ों भेड़ें और बीसियों ऊँट मर चुके थे। उसके डेरे के चारों ओर जानवरों की हड्डियां बिखरी पड़ी थीं।..आखिर अल्ला मुझसे नाराज क्यों है ! किसकी बद दुआयें मुझे लगी हैं !...क्या यह किस्मत का चक्कर है ? या अल्ला, मेरे गुनाह बक्श !..मुझे पनाह दे। या अल्ला, कहीं खादिम की तरह मेरे लिये भीख मांगने की नौबत न आ जाय। मेरे खुदा रहम कर मुझ पर ! बहुत देर तक इसी तरह के ख्यालों के बाद उसकी आंख लगी।

गोलियां दगने की आवाज से उसकी नींद उचट गई। वह पलंग पर से उछल पड़ा। वह एक लबादा पहने था। उस हालत में आंगन की ओर दौड़ पड़ा। चारों ओर से गोलियां दगने की आवाजें, नींद में घबराहट से डर गये अज़ीज़ के सिपाहियों की चीखें सुनाई दे रही थीं और बन्दूकों की नालियों से अंधेरे में उठते भभूके दिखाई दे रहे थे।

अलनजर ने घबराकर पुकारा—"अज़ीज खां, अरतैक !"

एक गोली उसके सीने में लगी। वह लड़खड़ा गया। उसका सिर चकरा कर आंखों के आगे धुन्ध छा गया। उस समय भी उसके मुंह से निकला- "बेटा, अता—दयाला...मैं . दुश्मन नहीं . . मुआफ "—वह कटे पेड़ की तरह फर्श पर गिर पड़ा।

अज़ीज़ खां की सेना से हथियार छीनने के लिये छापा मारने का काम बहुत चुस्ती और होशियारी से किया गया था। कुली खां को इस आयोजना की खबर भी नहीं दी गई। रेजेन की लाल फौज और अश्काबाद से आई मजदूरों और सिपाहियों की कम्पनी को मिला कर पूरी कमान तिशेंको को सौंप दी गई और चर्नीशोव छापा मारने के समय स्वयं भी उनके साथ बना रहा। काफिला सराय में अज़ीज़ के डेरे की देख भाल एक दिन पहले ही करली गई थी। सोवियत सेना को दो टुकड़ियों में बांट कर पूरब की ओर से और रेलवे स्टेशन की ओर से भी घेर लिया गया। अज़ीज़ के सन्तरियों को घेरे का पता ही उस समय लगा जब उनके लिये कुछ कर

सकने का अवसर न रह गया था। अज़ीज़ के सिपाही नींद से मदहोश और हमले से घबरा जिधर बन्दूक की नाली उठी, गोली चलाने लगे। इनकी गोलियों के जवाब मे रेलवे लाइन की ओर से एक बौछार गोलियों की आई। असल मे तो इसी एक बौछार से लडाई का फैसला होगया। अजीज के सिपाही अपनी बन्दूके फेंक नगे उघाडे सराय की नीची दीवारें फांद फांद कर भाग निकले। अजीज़ के घोडे, हथियार और अलनजार वे की लाश सराय में पडी रह गई। सोवियत सेना ने सराय पर कब्ज़ा कर लिया।

सोवियत के सिपाहियों ने अज़ीज के भागते हुये सिपाहियों का पीछा किया। कोई कोई भागते हुये सिपाही पीछा करने वालों पर गोली चलाते जा रहे थे। अरतैक भी इन्ही मे था। बेखबरी मे घिर कर नीद से उठने पर भी अरतैक ने अपने सिपाहियो को रोक कर दुश्मन का सामना करने की कोशिश ज़रूर की परन्तु सिपाहियो को जमता न देख कर वह भी दीवार फांद भाग निकला।

भागता हुआ अरतैक अपने बचाव के लिये पीछे की ओर गोली चलाता जा रहा था। मतलब था, कि पीछा करने वाले नजदीक न आने पावे। लेकिन पीछा करने वाले लाल सिपाही गोलिया आने पर भी रूके नहीं। अरतैक के सिर के ऊपर से गोलिया सन्नाती हुई निकल रही थीं। अरतैक ने समझा कि पीछा करने वालों की नजर उस पर पड गई है और वे उसी पर गोली चला रहे हैं। वह एक छोटी सी दीवार की आड मे झुक गया और पीछा करने वालों को देख उसने गोली चलाई। पीछा करने वाला लाल सिपाही भी एक दीवार के कोने की ओर हो गया। दोनों के ही पास कारतूस थे- ज्योंही वे दूसरे को आड बाहर सिर निकालते देखते, एक दूसरे पर गोली चला देते।

अंधेरे के कारण दोनो का ही निशाना खता जा रहा था। अरतैक अपने ऊपर झु झलाया—घबराहट मे कारतूस बरबाद करने से फायदा? उसने अपना चित्त स्थिर करके निशाना लेने का यत्न किया फिर भी निशाना न बैठा। उसके कारतूस ख़त्म हो गये। अब उसके पास रिवाल्वर ही रह गया था। वह सोच रहा था कि जगह बदल ले। परन्तु उसने देखा कि उसके विरोधी की बन्दूक भी चुप है। उस समय अरतैक को विरोधी की ओर से बन्दूक का घोडा चटाने की आहट तो आई परन्तु उसकी गोली नहीं दगी। अरतैक समझ गया कि दुश्मन की बन्दूक जाम हो गई है। अरतैक उसका

और आंखे गड़ाये अपनी जगह से उठने लगा। उसका विरोधी लाल सिपाही भी खड़ा हो गया। तारों की छाव में वह सामने स्पष्ट दिखाई दे रहा था। अरतेक अभी सोच नहीं पाया था कि क्या करे, सहसा लाल सिपाही का बगल से गोली चलने का धड़ाका हुआ, उसके हाथ से बन्दूक गिर गई और वह धरती पर गिड़ पड़ा। गिरते गिरते उसने पुकारा—"तिशेंको . अल्मोशा, आओ!"

यह पुकार अरतेक के कलेजे में धस गई। वह स्वर उसे पहचाना हुआ लगा। अरतेक दौड़ कर ज़ख्मी सिपाही के पास पहुँचा। लाल सिपाही धरती पर धीमे धीमे छटपटा रहा था। अरतेक उस पर झुक गया और कुछ सन्देह से पुकारा "अशीर '. .क्या तुम हो अशीर?"

जख्मी सिपाही ने आंखे खोल उत्तर दिया—"अरतेक?"

"हा मैं अरतेक हूँ।"

"क्या तुम? . नहीं यह नहीं हो सकता।"

"मैंने तुम्हें जख्मी नहीं किया अशीर"—अरतेक का गला रुँध रहा था।

"मैं जानता हूँ।" ..बहुत धीमे से अशीर का आवाज निकला—"मैं तुम पर गोली चला रहा था परन्तु मेरे हाथ हिल जाते। तुम भी मुझ पर गोली चला रहे थे। मैं जानता हूँ मुझे तुमने गोली नहीं मारी . ।"

अशीर का सिर एक ओर लुढक गया। अरतेक ने उसे बाहों में उठा लिया और सोचने लगा उसे कहाँ ले जाय। काफिला सराय में या लाल सेना की बारिक में? जहां भी वह जाता, अजीज की सेना का कप्तान होने के नाते गिरफ्तार कर लिया जाता परन्तु यह बात उसने नहीं सोचा। उसे चिन्ता थी, जैसी भी हो अशीर की मरहम पट्टी की जाय और उसे तकलीफ से बचाये।

अंधेरे में समीप ही कदमों की आहट सुनाई दी। अरतेक ने उसी ओर पुकारा—"कौन है? . यहां आओ? मदद करो!"

राइफल सम्भाले एक आदमी आगे बढ़ आया और सन्देह भरे स्वर में उसने प्रश्न किया—"क्यों, क्या बात है?"

"तिशेंको!"—अरतेक पुकार उठा—"अलेक्सी, मदद करो। इस ज़ख्मी आदमी को ले चलो!" "यह तुम्हारा सिपाही है, अशीर महान!"

"अशीर ? जख्मी हो गया ? मै तो इसी को खोज रहा था !"

तिशेको और कुछ नहीं बोला। अरतैक को पहचान लेने का भी कोई सकेत उसने नहीं किया। अपनी राइफल कधों से लटका उसने तुरत अरतैक की कलाइयों मे अपनी कलाइया डाल कर कुर्सी बना ली और अशीर को उस पर टिका कर बोला—"चनींशोव के यहा चलो! ....उसका घर नजदीक है।"

बेहोश अशीर को उठाए वे दोनों धीमे धीमे चर्नीशोव के मकान पर पहुँचे। चर्नीशोव मकान पर नहीं था। उसकी पत्नी अन्ना गोलिया चलने के धडाके से उठ बैठी थी और फिर लेटी नहीं। दरवाजे पर कदमों की आहट और जख्मी की कराहट सुन वह घबरा उठी—"हाय, क्या, चनीं को क्या हो गया ?"

"घबराओ नहीं अन्ना !—"तिशेको ने गम्भीरता से कहा—"यह चर्नी नहीं है। दूसरा सिपाही है। इसकी मरहम पट्टी करो।"

अन्ना ने तुरन्त अशीर को एक बिस्तर पर लिटा दिया और उसके जख्म को धोकर मरहम पट्टी करने लगी। कुछ देर बाद अशीर ने आखें खोलीं। तिशेको को सामने देख उसने कहा—"अलेक्सी, मुझे अरतैक ने गोली नहीं मारी।"

अशीर की बात सुन तिशेको ने अरतैक की ओर ध्यान से देख उसे पहचाना परन्तु बोला कुछ नहीं।

"यह बात ठीक है"—अरतैक ने अशीर की बात का समर्थन किया—"परन्तु मैंने गोली इस पर जरूर चलाई थी।"

तिशेको ने उत्तर न दे मुह फेर फिर अशीर की ओर देख —"घबराओ मत तुम ! यह बाद मे देखा जायगा कौन सोवियत और जनता का मित्र है और कौन उनका शत्रु ?"

तिशेको ने अरतैक को पहचान कर न सलाम दुआ की, न कुछ बात-चीत, न इतने दिनों बाद मिलने पर प्रसन्नता ही प्रकट की। जैसे उसे जेल-खाने में भाई बनने की बात उसे याद ही न हो।

"अलेक्सी"—अशीर फिर तिशेको की ओर देख बोला—"कुछ नहीं कहा जा सकता भाई, जब किसी को समझ आ जाए।"

अरतैक का चेहरा सुर्ख हो गया परन्तु वह कुछ बोला नहीं। उसे याद

आ गया, चर्नीशोव ने कहा था—तुम अजीज की तरफ जा रहे हो। एक दिन खुद ही तुम अनुभव करोगे कि जनता के शत्रुओं का साथ देकर तुम स्वयं ही जनता के शत्रु बन जाओगे!······जनता अपने शत्रुओं को कभी माफ नहीं करेगी!"

अरतैक के लिये वहाँ और खड़े रहना सम्भव न रहा। उसने अन्ना को सलाम किया और, चल दिया। न किसी ने उसे रोकने का यत्न किया और ना ही किसी ने उससे पूछा कि वह कहा जा रहा है।

तारों की छाव में कठिनता से राह पहचानता वह रेल की लाइन के साथ शहर से बाहर चल दिया। उसके मन में बार बार यह बात उठ रही थी—"मैंने सोवियत सरकार और जनता के विरुद्ध हथियार उठाये हैं······ जो जनता के लिये लड रहे है वे मुझे अपना शत्रु समझेंगे ही······ चर्नीशोव ने ठीक ही कहा था।"

१८

अंधेरी रात में अरतैक अपने गाव की राह चला जा रहा था। सुबह के पहर धुन्द कम होने लगा परन्तु चमचमाते तारों पर हल्की बदली का पर्दा छा गया। अरतैक सोचता जा रहा था—"आज दुनिया में जो कुछ हो रहा है, वह समझ लेना सम्भव नहीं। दुनिया की हालत तो इस अंधेरी रात से भी ज्यादा बुरी हो रही है। राह को सीधी और साफ समझ कर चलो। दो कदम जाते ही कांटेदार झाडियां आ जाती हैं। दाहिने घूमो तो दलदल है और बायें घूमो तो नाला। लौटना चाहो तो राह भटक जांय।... पर यह तो साफ है कि मैं चर्नीशोव, तिशेंको और अशीर का दुश्मन बन गया हूँ। अपने हार्दिक मित्र को मैंने मार ही डाला था......? बचपन में हम लोगों का कितना मेल और प्यार था?......भाइयों से बढ कर! आज हम एक दूसरे की जान ले रहे थे। हमें कौन जायदाद बाटनी है? हमारी लडाई किस बात पर? मैं अज़ीज़ खा के लिए इन लोगों से लड रहा हूँ! अजीज कौन मेरा अपना है? .....तो फिर लडाई किस बात की?...... यह दुनिया ही धोखा है!..... यह तो पागलपन है।......यह उसूलों की लड़ाई है।......मेरा बाप उम्र भर धरती जोत खेती करता रहा, क्या बना लिया उन्हों ने? मैं ही बीस बरस एक तम्बू मे पड़ा खेती करता रहा, क्या फ़ायदा हो गया उससे? भूखा रहा नगा रहा! दुनिया मजाक नहीं। कुछ करना है तो लडना पडेगा! अगर ज़िन्दा रहना है तो लड़ना पड़ेगा। अपने लिए और अपने जैसे लोगों की ज़िन्दगी के लिए लड़ना पड़ेगा। बाबा खा और उसके दोस्तों से, जिन्होंने मेरे जैसे लोगों का खून पिया है, मुझे लडना पडेगा। लेकिन तिशेंको, चर्नीशोव और अशीर भी तो यही कर रहे हैं!... वे लोग भी तो जनता के लिए लड रहे हैं। मेरा और उनका झगड़ा क्या? सहसा उसे खयाल आया—इन दोस्तों से मैं क्यों लड रहा हूँ? यह मेरे कधों पर लगे अज़ीज़ के निशान ही मुझे इन लोगों से लड़ा रहे हैं।"

अपने कंधे से हरे निशान उतार अरतैक ने फेंक दिए। इतने दिन तक

यह निशान लगाए रहने के लिये मन में ग्लानि भी अनुभव हुई।

भूरे भूरे बादल अब बरसने लगे थे। बूंदे महीन थीं परन्तु हवा गा तेजी से चेहरे पर चुभती सी जान पडती थीं। अरतैक अपने मन की उलझन में इतना खोया हुआ था कि बारिश और भीगने की ओर उसका ध्यान ही न गया। सूखा पडने के बाद से सन् १६१८ के बरस में तक तीसरी बारिश थी।

सूरज निकलने के समय तक बारिश थम गई। बारिश से धूल बैठ गई थी। इस लिए बादलो को उडाने वाली हवा चली तो उसमें धूल का नाम न था। भीगी धरती से बहार (बसंत) की गंध उमड़ रही थी। सब ओर जीवन फूटने के चिन्ह दिखाई पड रहे थे। अभी तक अंधेरे से दृष्टि बंधी रहने के कारण अरतैक को जान पड़ रहा था धरती और संसार सिमिट कर अंधेरा कुआ बन गए हैं। अब प्रकाश फैलने से दुनिया उसकी आंखों के सामने फैल गई। खेतों में गेहूँ के अंकुर फूट रहे थे। बरस भर से दबा बीज धरती में रस पा कर फूट उठा।

चारो ओर फैली सजीवता मे अरतैक के मन का दुख और शरीर की थकावट भी उड गई। उसका मन गुदगुदाने लगा, वह गुनगुनाने लगा और ऊंचे स्वर में गाने लगा। उसे पता भी न लगा कि राह कैसे कट गई और वह घर पहुँच गया।

ऐना उसे आया देख उसके सीने पर सिर रख ऐसे चिपट गई कि मानों वह उसके लौटने की आस खो बैठी हो। अरतैक को खूब प्रसन्न, और उसके कधों पर से हरे निशान फटे देख ऐना का दिल बाग बाग हो गया।

"ऐना को देख पाता हूँ तो मेरा दुख और चिन्ता भूल जाती है"—अरतैक ने सोचा क्यों मैं व्यर्थ भटकता फिरता हूँ? जो सुख और विश्राम घर में है उसे भी छोड़े बैठा हू। अब चाहे जो हो, जैसा अमल चले, पहले जैसा जोर जुल्म तो हो नहीं सकता। मैं राजनीति समझता नहीं हूँ। नाहक भटक रहा हूं। बेहतर है घर पर ही चैन करू! ऐना भी तो यही चाहती है ......।"

अरतैक को अपने गांव मे जीवन, स्वप्न के सुख संतोष भरे संसार जैसा जान पड़ रहा था। ऐना आंखों के सामने दिखाई पड़ती रहने से जीवन में पूर्णता और संतोष जान पड़ता था! ऐना की बोली कितनी मीठी जान पड़ती! उसका चलना-फिरना, उठना-बैठना उसका सब व्यवहार उसे

सौन्दर्य की सब से बड़ी कल्पना जान पड़ती। ऐना भी सभी तरह उसे अधिक से अधिक सतोष देने का यत्न करती। ऐना यह सब कुछ पत्नी की दीनता से नहीं बल्कि अत्यन्त स्वाभाविक ढग से, परस्पर के प्यार को पूर्ण करने और सतोष पाने के लिए करती। उनका यह प्रेम निस्सीम जान पडता। ऐसा जान पडता एक ही हृदय अलग अलग शरीरों मे काम कर रहा था। एक के होठों पर आई मुस्कान दूसरे के मन को गदगद कर देती। दो पना मिट कर दोनों बिलकुल एक जान हो गये थे।

अरतैक का चाचा लडके और बहू का यह व्यवहार देख विस्मित था—आज कल के लडके लड़कियो के ढग निराले हैं। इन बेवकूफियों मे क्या रक्खा है? आखिर औरत क्या है?—वह सोचता—अपनी बीवी के लिए पागल और परेशान होने का क्या मतलब? नए घड़े का पानी तो ठडा मालूम होता ही है। चाहे इसे मुहब्बत कहलो या कुछ और!… देर तक प्यासा रहने के बाद जो भी पानी मिल जाय उसका स्वाद और गध अच्छा ही होता है।"

अरतैक इस घरेलू जिन्दगी मे ऐसे बैठता चला गया कि उसे दूसरी तरह का जीवन केवल मूर्खता और अहकार ही जान पड़ने लगा। वह सोचने लगा—बाप दादा से चला आया तरीका—देहात में रह कर खेती करना ही सब से बड़ा सतोष है। वह सोचता—अब कौन अलनजर आकर उसे लूट ले जायगा। वह यह भी भूल गया कि अलनजर बेचारा तो मर ही चुका था और शायद अपने साथ ही वह अपनी निर्दयता, धूर्तता, क्रूरता और शोषण भी ले गया था। बात कही जाती है कि मकान गिर भी जाता है तो उसकी नीवे रह जाती हैं वैसे ही अरतैक के मन मे अलनजार की छाया अभी बनी ही थी। गाँव मे यह अफवाह फैल गई थी कि अरतैक ने ही अलनजर बे को मार डाला है। हालाँ की अलनजर को मार डालने में अरतैक को कोई आपत्ति नहीं थी और न वह इस तरह की लोक निन्दा की ही चिन्ता करता परन्तु इस नए जीवन की शान्ति का यह प्रभाव था कि अरतैक को इस अफवाह से मन ही मन अच्छा न लगता। वह मन ही मन कहता—"अरे कहते हैं तो कहने दो! अलनजर का काम अगर मैंने तमाम नहीं किया तो अभी बाबा ला तो बना ही है!"

अरतैक ने खेत के हल और दूसरे औजार ठीक कर डाले। बैलों के जुए सम्भाले! दीमक लग कर यह सब बरबाद हो रहे थे। उसने फावडे

रहे हैं और कहां जाकर रुकेंगे। लोगों ने यही समझा कि यह डाकुओं का दल है और पीछा करने वालों से जान बचाने के लिये भाग रहा है।

तेजेन की ओर जाते हुये भी कई काफिले उन्हें मिले। रेगिस्तान की लम्बी मंजिलों में भी व्यापारी काफिलों के ऊंट अपनी लहराती गर्दनें आकाश की ओर उठाये, दायें बायें देखते हुये, धीमी मस्तानी चाल से चला करते हैं। परन्तु इन काफिलों के ऊंटों के कोहान छिलकर खून बहते रहने से लकीरें जमी हुई थीं। कुछ ऊंट बोझ उठाने लायक ही न रहे थे और खाली ही जैसे तैसे चल रहे थे। कुछ गधों पर बोझ लाद दिया गया था और वे ऊंटों के लायक बोझ से टांगें फैलाये, काले काले पसीने से लथपथ दम तोड़ते चल रहे थे। यह काफिले तेजेन में भूखों मरते अपने लोगों के लिये अनाज ढोकर ला रहे थे। इनके हृदय भय खा रहे थे कि अनाज घर पहुंचाने से पहले ही कहीं उनके परिवार भूख से दम न तोड़ बैठें।

राह चलते काफिलों को अज़ीज ध्यान से परखता जा रहा था और उनसे आगे गये चारी चमन के विषय में पूछ लेता कि वह कितनी दूर पहुंचा होगा। पहले तो काफिले वाले कुछ समझ न पाते परन्तु काले ठिंगने, चंचल से आदमी का हुलिया सुनकर बताते कि उसे तो हमने तीन दिन पहले देखा था, वह तो बहुत दूर निकल गया होगा।

अजीज़ अपनी साडनियों को और तेज कर देता। वह बिना रुके पड़ाव पर पड़ाव पीछे छोड़ता जा रहा था। उसने सांडनियों के पलान से पांव नीचे न रखा। कारांकुम के रेगिस्तान में से पन्द्रह दिन की इस राह के दोनों ओर युगों से इस राह पर मरते चले आये ऊंटों के पंजर धूप से सफेद होकर चमकते रहते हैं। कहीं झाड़ियों के आसपास भूखहारे तड़-पते ऊंट भी दिखाई दे जाते जिन्हें उनके मालिक कभी साथ चलने में असमर्थ जानकर मर जाने के लिये राह पर छोड़ गये थे। परन्तु वह जानवर मरे नहीं बल्कि विश्राम पाकर चलने फिरने लायक हो गये। कहीं भेड़ों के गोल दिखाई दे जाते। रात के समय गड़रियों की वंशी की तानें भी सूने रेगिस्तान में गूंज उठतीं। १९१७ के सूखे ने इस दृश्य को और भी भयंकर बना दिया था। इस मंजिल पर जहां तहां बने कुएं और सोते सूख कर पड़ोस में बसी छोटी मोटी बस्तियां भी उजड़ गई थीं। कहीं ही कोई बच्चा जरा मेमना सा दिखाई दे जाता। काफिलों में पहुंचे तो उस ही म

पाये थे। भूखे ऊंट झाड़ियां की टहनियां ही चबा गये थे। इस साल भरे जानवरों की लाशें पिछले दस बरस के पंजरों से कहीं अधिक थीं। भेड़ियों और लोमड़ियों की आवाजें अब पहले से कहीं अधिक सबल हो गई थीं और यह जानवर भी खूब मुटा रहे थे। इन्हें अब शिकार की तलाश में भटकना न पड़ता था। जगह जगह काफिलों से गिर पड़े ऊंटों की लाशें इनके खाये खतम न हो पातीं। यह जानवर रात में डेरों के पास निधड़क आ घिरते। इनके मन से इन्सानों का डर जाता रहा था। आदमियों को देख वे विस्मय से ऐसे कनौतियां खड़ी कर लेते मानो सोच रहे हों कि क्या अभी भी जिन्दा इन्सान और जानवर दुनिया में बाकी हैं?

ओर्ताकैक पहुंच कर अजीज ने काफिलों के डेरे में फिर चारी चमन की बाबत पूछा। उसे उत्तर मिला कि काफिले को उन लोगों ने दो दिन पहले देखा था। वे लोग भी बहुत तेजी में थे। अब तक तो वे लोग काराकुम का रेगिस्तान पार कर चुके होंगे।

अजीज और तेजी से चल पड़ा। अजीज को भरोसा था कि खुरासान पहुंच कर वह चारी चमन को पकड़ तो लेगा परन्तु भय यह था कि अजीज के पहुंचने से पहले ही चारी चमन हथियार को बेच न डाले। चारी चमन भाव तोल तो क्या करेगा? वह तो मिट्टी के मोल ही सब कुछ फेंक कर पैसा बटारने की करेगा। अजीज ने सांडनियों को निर्दयता से और हांका! पन्द्रह दिन की राह वे लोग तीन ही दिन में पूरी किये डाल रहे थे।

'नख्त' पहुंच कर उसने फिर एक काफिले से चारी चमन के विषय में पूछा। इन लोगों ने बताया चारी चमन उन्हें कल ही मिला था। बहुत जल्दी में था और हथियार बेच कर साठ ऊंट और साठ ऊंट के बोझ का चावल खरीद कर तेजेन लौटने की बात कर रहा था। इन लोगों से भी कह गया था, जिसे पुलाव खाना हो, थाली लेकर तेजेन पहुंच जाये।

अजीज ने पूछा—"क्या ख्याल है, वह नौरोज कब तक पहुंच जायगा?"

सुबह ही पहुंच जायगा। बहुत देर करेगा, दोपहर तक जा पहुंचेगा।"

अजीज पछता रहा था—"अगर वह कुछ और पहले चल सका होता।"

अगले दिन दोपहर के बाद अजीज का दल काराकुम की सीमा पर पहुंच गया। सपाट रेत के मैदान के आगे तख्त के बाग दिखाई देने लगे थे। दिखाई दे जाने पर भी तख्त अभी दूर था। तेजेन से पन्द्रह दिन की मंजिल तीन दिन में पूरी करने में जितनी कठिनाई उन्हें हुई उससे अधिक दूभर हो गया रेगिस्तान की सीमा से तख्त तक पहुंचना।

अजीज जब तौरोज और खुरासान के खान जुनैद खाँ के आँगन में पहुंचा तो सूर्यास्त हो चुका था। जुनैद के आदमियों ने अजीज के लिये ठहरने की जगह का इन्तजाम कर दिया परन्तु अजीज ने अपने आने की खबर जुनैद खाँ को तुरन्त दी जाने का आग्रह किया।

खबर पाकर जुनैद खाँ आया। जुनैद का शरीर भारी भरकम परन्तु गठीला था। उसके लाल चेहरे पर सफेद गोल दाढ़ी खूब फब रही थी। आँखें उसकी बाज की तरह पैनी थीं। जुनैद ने अजीज को आलिंगन में ले सलाम किया। कुशल मंगल पूछा और अजीज उसका हाथ अपने हाथ में थामे बोला—"मेरे भाई शुक्रिया है। तुमने अपने बड़े भाई का इतना ख्याल किया और यहाँ आने की तकलीफ की। और तुम्हें अचानक आ पहुंचा देख कर तो मुझे और भी खुशी हुई।

जुनैद अज़ीज़ को अपने खास मेहमानखाने में लिवा ले गया। अज़ीज़ आँगन में आते जाते घुड़सवारों की संख्या से हैरान था। घोड़े भी बढ़िया और सजे धजे थे। भूरी दाढ़ी वाले सभी सिपाही खान्दानी सर्दारों जैसे जंच रहे थे। कुछ घोड़ों के पीछे, हाथ बंधे, गलों में फंदे पड़े आदमी घसीटते चले आ रहे थे। अजीज और उसके साथ के लोगों के ऊँटों को पहले आँगन में खड़े नौकरों ने थाम लिया। यहां बीसियों घोड़े, जीन साज से लैस खूंटों से बंधे थे। दूसरे आँगन में माल असबाब की गांठों और देगों के ढेर लगे हुये थे। जुनैद का मकान तीसरे आँगन में था। मकान बाहर से मामूली सा दिखाई देता था। परन्तु भीतर फर्श से छत तक सजावट से पटा हुआ था। सभी ओर भड़कीले रंगों में बने फलों फूलों से सजावट की हुई थी। एक कोने में आग की लपटें उगलते रमादार और पहाड़ों से चार उछलते नायदानी का चित्र बना हुआ था। कालीनों से मढ़े फर्श पर जगह जगह मखमली गावे तकिये लगे हुए थे। रेशमी गद्दियों और रजाइयों के ढेर लगे थे। एक कोने में आदमकद आइना लगा हुआ था।

एक नौकर हुक्का लेकर हाजिर हुआ चिलम मे तौशेज का सफेद तम्बाकू जमा हुआ था। तम्बाकू पर दहकता हुआ अगारा रख खादिम ने हुक्का मेहमान के सामने पेश किया। अजीज ने एक कश खीचा तम्बाकू की महक चारों ओर फैल गई परन्तु उसके साथ ही अजीज का सिर भी चकरा गया।

एक मिनिट भर सिर साफ होने के लिये प्रतीक्षा कर अजीज बोला— "कुर्बान मुहम्मद खॉ, भाई मुझे मुआफ करना। मैं आपको एक तकलीफ देने के लिये हाजिर हुआ हू ... ।"

तैशेज के खान का नाम कुर्बान मुहम्मद खॉ था। जुनैद उसके कबीले का नाम था। इतने बडे खान को नाम लेकर पुकारना और फिर घरदार के बिना पूछे ही, स्वय मतलब की बात शुरू कर देना तुर्कमानी रिवाज से उचित बात नही थी। जुनैद खॉ विस्मय से अपने मेहमान के मुख की ओर देखता रह गया और बोला—"अजीज खॉ, कैसे अचानक तुम आ पहुंचे, और बात भी कुछ अजीब ढंग से कर रहे हो, खैरियत तो है ?"

"मालिक खान ! इस समय मे खान की स्थिति मे नहीं हू। बल्कि अपने सर्वस्व लेकर भागते डाकुओं के पीछे तुम्हारी सहायता मॉगने आया हूँ। यह डाकू आज सुबह या दोपहर आपके इलाके में आये हैं। मैं सबसे पहले इन डाकुओं को खोजने की प्रार्थना करना चाहता हूँ।"

"तुम्हारा क्या नुकसान हुआ ? निजी नुकसान या तुम्हारे इलाके का ?"

"मेरा निजी नुकसान भी और मेरे इलाके का भी !"

"खैर, अगर वह डाकू मेरे इलाके की सीमा मे हैं तो कल सुबह तुम्हारे बिस्तर से उठते ही तुम्हारा माल तुम्हारी नजरों के सामने मिलेगा।"

"हजार शुक्र है मालिक !" —अज़ीज ने चारी चमन की हुलिया और अपनी बन्दूकों की सख्या जुनैद को बता दी। जुनैद ने तुरन्त अपने आद-मियों को हुक्म दिया कि सभी गॉवों मे पड़ताल की जाय और चारीचमन, और उसके सथियों, और इन लोगो को शरण देने वाले लोगों को मुश्कें बॉध कर फौरन पेश किया जाय।

जुनैद ने मन ही मन सोचा, क्या अज़ीज़ खा इतनी सी बात के लिये अकेला उसके पास दौडा आया है। जरूर मुसीबत में फॅसा है। अज़ीज़ को पहले विश्राम करने का अवसर देने के तक़ल्लुफ की परवाह न कर उसने

मेहमान को सम्बोधन किया—"अजीज खॉ, हम तुम दूर दूर रहते हैं तो क्या मन तो हमारा मिला हुआ है। जब कभी कोई यात्री उस ओर से आता है, मैं सदा तुम्हारा कुशल क्षेम पूछ लेता हू। तुम्हारे बढते इकबाल की बात सुन मुझे सदा बहुत प्रसन्नता होती है। आज क्या बात है? क्या बहुत थके हुए हो? तुम सुस्त और मुर्झाये से जान पडते हो? मैं यह नहीं पूछ रहा कि तुम्हारी यात्रा का प्रयोजन क्या है ? यही सोच रहा हू कि मैंने सदा तुम्हारी बढती की बाते सुनी थीं परन्तु तुम उदास दिखाई दे रहे हो।"

अजीज जानता था कि जुनैद बहुत चतुर आदमी है। उसके स्थिति भॉप लेने से अजीज का कुछ आश्चर्य नहीं हुआ। जुनैद से कुछ छिपाने का यत्न करना भी मूर्खता थी। अजीज चाय पीते-पीते धीमे धीमे कहने लगा—"मालिक खान, मुझे तुम्हारी नसीहत याद है—"अगर दुश्मन के इरादा जान पाये तो उस पर पहले ही वार करे।"—इसीलिये मैंने तेजेन मे सोवियत के मौका पाने से पहले ही अमीरों का गल्ला लेकर गरीब लोगों में बॉट दिया। लेकिन सबसे बडे मामले मे ही मैं इस नियम से चूक गया और इसीलिये मार भी खा गया।"—अज़ीज ने तेजेन में लाल फौज के छापे और उनके हथियार खो बैठने की घटना सुना दी।

अजीज की बात खतम होते ही जुनैद पूछ बैठा—'अजीज खॉ, तुम नही जानते मैं सीमा मे क्यों नहीं रहता। वहा इसफन्दियार खां का आलीशान महल मेरे पास है? क्यों मैंने अपना घर यहा तख्त जैसी मामूली जगह मे, तौशेज के वीरान इलाके मे बनाया है?" अजीज कुछ न समझ सका, जुनैद कहीं रहे, उसकी बला से? वह उससे यह प्रश्न क्यों पूछ रहा है?—"मालिक खान, मैं कुछ जवाब नहीं दे सकता। शायद यह बात है कि आप जुनैद के खान हैं।"

जुनैद मुस्करा दिया और बोला—"ठीक है। तुम नहीं समझ सकते। सुनो, अगर मैं खीवा जाकर इसफन्दियार खॉ के महल में रहूं तो लोग मुझे खान के बजाय शाह समझने लगेंगे। लेकिन असलियत क्या होगी? मैं बुलबुल की तरह पिंजरे में कैद हो जाऊँगा। खीवा किले की चारदिवारी से घिरा है। और राह है केवल नदी के पुल पर से। किले के चारों ओर इसफन्दियार खॉ के पुराने सहायक जमे हुए हैं वे लोग मुझसे जलते हैं। अभी तो उनकी हिम्मत मेरा विरोध करने की नहीं परन्तु अगर मुझे कमजोर पाये तो झट चढ बैठे। यहॉ कोई आस पास मुझे ऑख दिखाने की

हिम्मत करने वाला नहीं। यहाँ मुझे अगर खुरासान या खीवा मे बगावत की खबर मिले तो सूरज डूबने से पहले मैं उन लोगों का नामोनिशान मिटा दे सकता हू। तुम वहाँ तेजेन शहर मे घिरे बैठे हो, वहाँ तुम किस पर हुकूमत करोगे? जार के अफसरों पर? एक तो वह रेलवे लाइन तुम्हारी छाती पर वार साधे बैठी रहती है। तुम उन लोगों के खिलाफ उंगली भी उठा दो तो वे सब ओर से घिर कर तुम्हारा सिर कुचल दे। मान लो मैं तुम्हे पाँच हजार घुड सवार दे दूँ। तुम जाकर तेजेन को फूंक डालो! कल क्या होगा? रेल के रास्ते तेजेन मे दोनों तरफ से दुश्मन की फौजे आ घिरेंगी। तुम तुर्कमान सिपाही हो। रेतीले मैदान मे जन्मे, पले। शहर के घमासान मे तुम्हारा क्या काम? तुम अगर तेजेन के अफसरों को खत्म करना चाहो—तेजेन को लूटना चाहो तो एक रात मे यह काम कर फिर अपनी जगह लौट कर चैन करो। ऐसी हालत में तुम्हारे दुश्मन सदा परेशान रहेगे और तुम्हारा कुछ बिगाड नहीं सकेंगे। तुम तेजेन पर कब्जा भी करलो तो क्या? इससे पूरा तुर्कमानिस्तान थोडे ही एक हो जायगा! अलबत्ता अगर तुम दुश्मन की पहुच से दूर रहो, उनसे मार न खा सकोगे तो लोग तुम पर भरोसा कर सकेंगे। मैं हर तरह से तुम्हारी सहायता के लिये तैयार रहूगा। तुम भरोसा करते हो अश्काबाद के उन धूर्त शहरियों, नियाज बेग और ओराज सरदार का! यहाँ भी उनके दूत रोज ही चले रहते हैं। मै उनकी बातें सुनकर चुप रह जाता हू। मुझे उन पर कोई भरोसा नहीं। यह लोग हम पर सवारी गाँठ कर अपना काम बनाना चाहते हैं। होशियारी यह है कि हम लोग इन पर सवारी गाँठे। उनकी सुने जाओ! अपनी कहो मत......!"

अब तक अजीज अपने आप को बहुत होशियार समझता था और उसका ख्याल था कि वह अपनी सल्तनत जमा लेने के योग्य हो गया है। जुनैद की बाते सुन उसकी आँखे खुलीं और वह समझा कि उस चतुर आदमी के सामने वह केवल तुतलाता बच्चा ही है।

उन दोनों की बातचीत बहुत देर तक चलती रही। इसी बीच में एक खूब लहीम शहीम आदमी, दोनों कन्धो से कमर तक पेटियाँ कसे भीतर आया। उसकी कमर से एक पिस्तौल और कंधे से राइफल लटक रही थी। अजीज ने समझा यह आदमी ज़रूर किसी बडे कबीले का सरदार और जुनैद की फौज का कोई कप्तान है। इस आदमी ने भीतर आ दोनों खानों

को सलाम किया और जुनैद को सम्बोधन कर बोला—"मालिक, डाकू लोग एक गाँव में ठहरे हुए हैं और गाँव का चौधरी मालिक की हुक्म उदीली कर रहा है। वह डाकुओं को पकड़ने नहीं देता। हमारे सिपाहियों के हथियार उसने छीन लिये हैं और उन्हे धमका कर लौटा दिया है—"जाओ जुनैद खाँ से कह दो! हम उसके गुलाम नहीं है। अपने गाँव के हम खुद मालिक है।"—मालिक की इजाजत हो तो इन लोगों के होश ठीक कर दिये जायँ।

यह समाचार सुन कर जुनैद के चेहरे पर कुछ परिवर्तन न आया। उसका एक रोम भी न फरका। केवल उसकी चमकीली पैनी आँखें जरा और सिकुड गईं—"दो सौ सवार ले जाओ"—जुनैद ने धीमे से कहा—"गाँव के सब मर्दों के सिर उतार दो! उनके खेमे जला दो और औरतों को कैद करके ले आओ। यह काम करके सुबह की नमाज के वक्त मुझे खबर देना।"

"मालिक का हुक्म पूरा किया जायगा।"—कप्तान ने सलाम किया और कमरे से बाहर चला गया। जुनैद फिर बेपरवाही से बातचीत करने लगा, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

क्या जुल्म है!—अजीज मन ही मन सोच रहा था। सैकड़ों आदमियों का कत्ल, सैकडो खेमे लूट कर फूक देना, सैकडों औरतों को कैद कर लेना, सिर्फ एक मामूली गुस्ताखी के लिए! लेकिन यही सही तरीका है? एक गाँव के साथ यह बरताव होगा हजारों दूसरे गाँव अपने आप सीधे बने रहेगे। सल्तनत ऐसे ही चल सकती है।

उन दिनों खुरासान के इलाके के सरदार कलामअली और गौस मुहम्मद जुनैद के खिलाफ बगावत करने के लिये सिपाही और हथियार बटोर रहे थे और कहते फिरते थे—"जुनैद के माथे पर कौन चाँद सितारे लगे हैं। जैसा वो वैसे हम! वो हम लोगों को कुछ समझता ही नहीं। कभी हमारी बात नही पूछता। जैसे हम लोग ढोर डगर हों कि हाँक दिया लाठी से। हमारे ही बूते पर तो सल्तनत चला रहा है। हम खुद ही क्यों न अपने सुल्तान बनें?"

जुनैद का वह जालिम हुक्म इन्हीं लोगों को ठीक करने के लिये था। इसके बाद जुनैद अजीज़ से आर आन्तरिकता से बातचीत करने लगा।

अब्दुल करीम खॉ का चर्चा चला। अजीज ने पूछा—"मालिक खान, आपकी राय मे अब्दुल करीम खॉ असल मे कौन है ?"

जुनैद ने बताया कि वह उसके यहॉ भी आया था। और अपने आप को अफगानिस्तान के अमीर का ही दूत बनाता था। परन्तु बातचीत मे उसकी चतुरता और उसकी राजनैतिक जानकारी मे जुनैद को सन्देह था कि वह आदमी अफगानिस्तान से बहुत बडी किसी सल्तनत का आदमी है और उसका मतलब भी उसकी बातों से कुछ और अधिक बडा और व्यापक था।

"मेरा ख्याल है उसने अपना नाम बदला हुआ है और वह मुसलमान नहीं है। अगर कल वह ब्रिटिश अफसर की वर्दी पहन कर यहॉ आ खडा हो तो मुझे कोई आश्चर्य न होगा। अब्दुल करीम हमारी बला से कोई भी हो। अपने मतलब की बात यह है कि वह अपने मालिक के हुक्म से मुल्क-मुल्क घूम रहा है। हम लोगों की बीसियों बोलियॉ जानता है। पूरब के रग ढग समझता है। वह हमारे दुश्मन, रूसी बोलशेविकों के खिलाफ सब मुसलमानो को इकट्ठा कर रहा है, यह हमारे लिये अच्छा मौका होगा, अपना कदम जमा लेने का।"

"मालिक खान आपका क्या ख्याल है ? अब्दुल करीम की चाल चल जाय और उसके मालिको का कदम यहॉ आ जाय तो हम लोगों का फायदा रहेगा ? हमारा क्या बनेगा ?"

"मेरा ख्याल है कि हिन्दुस्तान में अग्रेज लोगों ने खानो की गद्दी नहीं छीनी। अंग्रेज चाहता है रियाया को काबू मे रखना। वह हमारी मदद करेगा। लेकिन अपना खिराज (राजकर) लेगा। वो अपनी चाल चल रहे हैं, हमें अपनी चलना है। हम अपनी गर्दन उनके हाथ में थोडे ही दे देंगे"

दोनों खान बहुत देर तक बैठे आपस मे रियाया को दबा कर अपना आतंक कायम रखने के दांव घात की बात करते रहे। दोनों ही जानते थे कि एक के गिरने से दूसरा भी कमजोर पड जायगा। इसलिये वे परस्पर ईमानदारी से एक दूसरे की सहायता करना चाहते थे। बातचीत करते समय जुनैद रेशम के छोटे छोटे चिन्दियों जैसे छः उंगली लम्बे-चार उंगली चौडे रूमालों से खेलता जा रहा था। अजीज इन टुकडों को ध्यान

से देख रहा था। टुकड़ों पर १०-१०० और ५०० के अंक पड़े हुए थे। अजीज निरक्षर था परन्तु जार की सरकार के नोटों पर यह अंक देख देख कर इन्हें पहचान गया था।

"मालिक खान, यह क्या हैं?"—आखिर वह पूछ बैठा।

"रूमाल"—जुनैद मुस्करा दिया।

अजीज ने टुकड़ों को उठाकर देखा वह खूब मजबूत रेशम से बने हुए थे। नहीं मालिक, निरे रूमाल तो यह नहीं जान पड़ते।'

"तो फिर क्या हैं?"

"मैं समझा नहीं परन्तु इन पर मोहरें लगी हैं यह तो नोटों जैसे जान पड़ते है।"

"नोट जान पड़ते हैं?"

"जान तो पड़ते हैं।"

जुनैद ने अपने यहाँ के देसी रेशमी कपड़े के नोट चला दिए थे। यह नोट मजबूत भी थे और सुन्दर भी। उसे अपने इन नोटों पर अभिमान था। इन नोटों से जुनैद को अभिमान से खेलते देख अजीज मन ही मन सोच रहा था—इसने रेशम के नोट चलाये हैं, बड़ा खुश है। मैं कालीनों के नोट चलाऊँगा।"

मुर्गी का पुलाव आया और फिर तोशेज के सर्दे आये। खा पीकर अजीज की आँखे झपकने लगीं। वह ३ दिन से बिलकुल सोया न था। वह हुक्के के हल्के हल्के कश खींचता हुआ जम्हाइयाँ लेने लगा। ज्यों ही जुनैद सलाम कर जाने के लिए उठा अजीज नरम गद्दे पर पसर गया। एक बार उसे चारी चमन और अपनी खोई हुई राइफलों की याद आई और वह खुर्राटे भरने लगा।

चारी चमन दोपहर के समय ओकूज गाँव में पहुँच गया था। वहाँ उसने अपने ऊँटों का बोझ उतार दिया। ओकूज तुर्कमानों में बहुत पुराना और मशहूर कबीला था। साँझ होने पर गाँव के ओकूज और ममूद लोग चारी चमन के चारों ओर घिर आये और राइफलों को जाँच कर उनकी कीमतें पूछने लगे।

चारी चमन ने उत्तर दिया,—"अरे भाई, मैं भी तो ममूद ही हूं। मैं यहाँ सौदागरी करके मुनाफा कमाने थोड़े ही आया हूं अपने यहाँ के

बुजुर्गों का हुक्म है कि जार की गद्दी गिरने का फायदा हो ' अपने लोगो के हाथ में हथियार आयें। कीमत का क्या सवाल है ? मुझे तो लागत भर दे दो।"

चारी चमन जिस घर में ठहरा था आते ही वहाँ उसने मालिक को एक राइफल भेंट कर, राइफल का दाम जान लिया। घरका मालिक भी उसकी सहायता के लिए तैयार हो गया। राइफलों का सौदा खूब सरगर्मी से हो रहा था। उसी समय सवारों के उस ओर आने की टाप सुनाई दी। ओकूज और ममूद लोग कुछ समझ न सके परन्तु चारी चमन आशका से कांपने लगा। उसने दूसरे लोगों से पूछा—"यह कौन लोग आ रहे हैं भाइयो ?"

घर का मालिक अपने मेहमान की घबराहट भाप गया। वह खुद भी घबराया कि यह असमय कौन लोग इस तरह सरपट घोड़े दौडाये चले आ रहे हैं ? परन्तु अपना भय छिपा कर उसने चारी चमन को ढाढस बधाया—

"तुम मेरे मेहमान हो, तुम्हे क्या फिक्र ? जुनैद खा का इकबाल कायम रहे। यहा तुम्हे कोई आख उठा कर देख भी नही सकता। जब खान को मालूम होगा कि तुम इतनी राइफलें और कारतूस लेकर आये हो, वह तुम्हे अपने दस्तरखान पर बैठायेगा और तोहफे देकर विदाई देगा।"

इतने मे घुड सवारो का दल आ पहुंचा। इन लोगों को घेर कर दल के कप्तान ने पूछा—"चारी चमन कौन है ?"

घर के मालिक की बात से चारी चमन ने सोचा—"यह जुनैद के आदमी है। खबर पाकर मुझे लिवा ले जाने के लिये आये हैं। वह आगे बढ कर बोला—"मेरा नाम है चारी चमन !"

सवारों ने कुछ जवाब न दे चारी चमन की मुश्कें जकडना शुरु कर दिया। सब लोग हैरान थे। घर का मालिक घबरा कर बोला—"अरे ममूदो, ओकूजो ! खडे क्या देख रहे ! मेरा दम रहते मेरे मेहमान को कौन छू सकता है !"

उसकी बात पूरी न हो पाई थी कि सवारों ने उन्हें भी पकड़ उनकी भी मुश्कें बाध दी गईं और सवारों के सरदार ने दूसरे लोगों को चेतावनी

दी—"खबरदार, अगर कोई अपनी जगह से बाल भर भी हिला तो मैं पूरे गाव को आग लगा दूगा।"

चाद चढ आया था। उसी प्रकाश मे' सवारों ने सब राइफलें और कारतूस ऊटों पर लाद लिये। मालिक को भेंट में दी गई राइफल भी लेली गई। मुश्के बधे चारी चमन और घर के मालिक को भी साथ ले लिया गया। इसके बाद सवार लोग गाव के लोगों को कत्ल करने और गाव को लूटने के काम में लग गये।

सुबह की नमाज के समय जुनैद ने अपने हाथ पसार कर खुदा का शुक्र किया कि तेरे करम से मेरा हुक्म पूरा हुआ। अजीज ने भी अपना माल मिल जाने के सतोष मे भक्ति और श्रद्धा मे अपनी दाढी पर हाथ फेर खुदा की मेहरबानी और इसाफ के लिये शुक्रिया किया।

चारी चमन अजीज के सामने खडा काप रहा था जैसे चूहा विवशता में बिल्ली के सामने खड़ा हो।

"तुम कितनी राइफलें लाये थे ?"

'मालिक, दो सौ अठारह"

"कारतूस कितने थे ?"

"बा ·····बारह हज़ार !"

"तुम्हे राइफलें और कारतूस किसने दिये थे ?"

"कुलीखा ने !"

"तुमने कितनी बेची हैं अभी तक ?"

"एक भी नहीं !"

अपना माल वापिस मिल जाने से अजीज खां बहुत सतुष्ट था। उसने जुनैद से सिफारिश की कि चारी चमन के सिवा दूसरे लोगों को रिहाकर दिया जाये।

अजीज जुनैद खा के साथ आगन मे आया तो वहां का दृश्य देखकर सिहिर उठा। सैकडों बच्चे और स्त्रिया नंगे उघाडे बैठे रो रहे थे। इस भीड मे एक भी मर्द न था। दस बरस से अधिक उम्र का कोई लडका भी नहीं। इससे भी भयानक चीज थी पेड़ों पर लटके हुये गांव के बडे बूढों के सिर। इन सिरो की दाढियां हवा मे लहरा रही थीं और यह पथराई हुई आखो से सामने के दृश्य को देख रहे थे। हवा के झोंकों से यह सिर

डोल जाते तो जान पडता कि अपने ऊपर हुये अत्याचार के लिये जुनैद खा के राज को कोस रहे हैं।

अजीज् काप उठा परन्तु साथ ही अपने मन को उसने समझाया—'यही मेरी भूल थी। मुझे कुली खा और दूसरे लोगों के परिवार का ऐसा ही प्रबध करना चाहिये था।"

अजीज खा चार पाच दिन जुनैद का मेहमान रहा। उसकी मार्फत उसने कुछ राइफलें बेच डालीं और फिर तेजेन की ओर लौट चला। तेजेन से दस मील उत्तर पश्चिम की ओर हट कर 'अगलान मे' उसने अपना डेरा जमाया और सिपाही जुटाने लगा।

सोवियत से भयभीत जागीरदार लोग आल्ती सोपी, अन्ना कुर्बान, यारमुश काजी और करीमुल्ला वगैरा फिर उसके आसपास आ घिरे। ईशान और अखून लोग उसके यहा आने जाने लगे। अलनजर बे की मृत्यु के बाद मुहम्मदवली निस्सहाय हो गया था वह भी अजीज के यहा आ गया।

अजीज् अब अधिक दुस्साहस से काम ले रहा था। उसने अपने सिपाहियों को घोडे इकट्ठे करने का हुक्म दिया। 'जहा भी अच्छा जानवर दीखे पकड लो या जब्त करलो।"—उसका हुक्म था। गरीब अमीर का भेदभाव न रख वह जो आवश्यक समझता, सबसे छीन लेता। अगलान की उसकी छावनी मे घोडों की सख्या दिन-दिन बढती जा रही थी।

अगलान एक छोटी सी पहाडी पर बसा था। नीचे दूर-दूर तक खेत चले गये थे। दो बडे मकानो के समीप दो खेमे लगाकर अजीज ने अपने लिये जगह बनाली थी। यहा उसका बडा भाई भी साथ रहता था। तीसरा खेमा उसने अपने पिता, चपेक सरदार के लिये लगवा दिया। इन मकानों और खेमों के चारों ओर उसके सिपाहियों के खेमे लगे थे जिनके सामने सैकडों रानी घोडे हिनहिना कर धरती खोदते रहते। उसने जुनैद खा की सफलता और आतक के उदाहरण से अपना मार्ग निश्चय किया। लूटमार और खास कर ज़ार के पुराने अफसरों को लूटना जिन्होंने किसी समय उसका विरोध किया था, या जिनसे किसी समय विरोध की आशका की जा सकती थी। खून और डकैती उसके दैनिक काम हो गये। आस पास की जनता उसके नाम से थर्राने लगी।

२०

तेजेन मे अजीज की प्रभुता मिट चुकी थी। सब शक्ति सोवियत के हाथ मे आ गई। अजीज का तन्दूर (रोटियो का सबसे बड़ा कारखाना) और कई दूसरे कारखाने और खत्तिया जिन्हे अजीज ने हथिया लिया था, सोवियत के हाथ मे आ गये। सोवियत ने दूसरे कारखाने और किराये के सब मकानो को भी अपने कब्जे में ले लिया। आस पास के गावों से आ आकर किसान तेजेन में घिरने लगे। पड़ोस के दो तीन गावों में सोवियतों (पचायतो) के चुनाव भी हो गये। ऐसे अवसरों पर कुलीखा खूब प्रचार करता कि सोवियत की सब सफलताओं का सेहरा उसी के सिर है। इस तरह वह अपने कदम मजबूत करता जा रहा था।

चर्नीशोव यह सब देखकर भी चुप था। कुलीखा के मामले को लेकर झगड़ा करना वह अभी उचित न समझता था। वह प्रतीक्षा में था कि 'कुलीखां को रगे हाथो पकड पाये। परन्तु अशीर का खयाल दूसरा था। घाव से बहुत खून बह जाने के कारण वह निर्बल तो बहुत हो गया था परन्तु कोई अग भग न हुआ था। वह शीघ्र ही स्वस्थ होकर सेना मे लौट आया। यहा आकर उसे कुलीखा की बहुत सी करतूतों का पता चला। चर्नीशोव के अनेक झझटो में फसा रहने के कारण यह बाते उस तक पहुच ही न पाती थीं। मावेद ने अशीर को बताया कि अजीज की फौज मे छीने गये सब हथियार कुलीखा ने चारी चमन नाम के एक आदमी के हाथ तोशेज भेज दिये हैं। मैंने कुलीखां से पूछा कि हमारे हथियार कहा भेजे जा रहे हैं? तो उसने झुँझला कर उत्तर दिया—"और कहा जायगे? अश्काबाद भेज रहा हू।" लेकिन मैंने अपनी आखों देखा कि चारी चमन का काफिला माल स्टेशन पर न उतार रेल की लाइन पारकर तेजी से तेशेज की ओर बढ गया। कुलीखा मनमानी कर रहा है, कोई बोले तो

कैसे ? कुलीखा कुचल कर रख देगा !'

अशीर ने चुपचाप तौशेज की राह के गावों में पूछताछ की और सेना के खलासियों और दूसरे लोगों से भी भेद ले लिया। मामला चर्नीशोव के सामने पेश करने से पहले वह कुलीखा से मिला और अजीज की सेना से छीने हथियारों के विषय मे पूछा।

"तुम्हे इन बातों से क्या मतलब?" कुलीखा ने उत्तर मे भौं चढाकर अशीर को डाट दिया।

"मुझे इस बात से बहुत मतलब है।—" अशीर ने उसकी ओर घूर कर जवाब दिया। कुलीखा को आशा न थी कि कोई व्यक्ति उससे ऐसा प्रश्न पूछने का साहस कर सकता है। अशीर को वह समझता ही क्या था! बल्कि वह उससे चिडता भी था। परन्तु अशीर का व्यवहार देख उसने अपना क्रोध वशकर मुस्कराकर बात बनाई—"अश्काबाद से जो सिपाही छापे मे सहायता देने के लिये आये थे, वे लोग उन हथियारों को साथ ही ले गये।"

"ठीक बात कहो! मुझे उड़ाओ नहीं।" अशीर बोला।

अपनी स्थिति के विचार से अशीर की बात सहजाना कुली खा को अपना असह्य अपमान जान पडा।—"जबान सम्भालकर बोलो—" उसने अशीर को धमकाया—"कम्पनी के कमाण्डर से इस तरह बात की जाती है? तुम्हें मुझसे जबाब तलब करने का क्या हक़ है?"

"तुम यह बताओ चारी चमन को किसने भेजा है?"

"किसने कहा भेजा है?"

"भूल गये?—तौशेज!"

"मैने क्यों भेजा है?"

"राइफलें बेचने के लिये!"

पल भर के लिये कुलीखा चकरा गया और फिर सम्भलकर बोला—"मैने तो इस बारे में कोई खबर नहीं सुनी!"

"तुमने नहीं सुनी, परन्तु मुझे पूरी खबर मिल गई है"

"हूं, तो फिर फौज का कमाण्डर तुम्हीं को होना चाहिये।"

"वह बात बाद में देखी जायगी। तुम मुझे पहले हमारी मज़दूर किसान सरकार के हथियारों का हिसाब दो।"

"मैंने तुमसे कहा है कि अपनी स्थिति और अधिकार के अनुसार ही बात करो।"

कुलीखां फिर झुंझलाया।

"तुम मुझे हथियारों का हिसाब दो।"

"तुम्हे हिसाब की जरूरत क्या है ? क्या अरतैक की दोस्ती में अजीज को भेद देना चाहते हो ? मैं जानता हू, तुम अजीज की तरफ से हमारे यहा जासूसी कर रहे हो।"

"पहले तुम तो हिसाब दो ! मेरी जसूसी की पड़ताल फिर करना।"

कुलीखाँ आगबगोला हो गया और चिल्ला उठा—"कोई है ? इस आदमी को गिरफ्तार कर लो !"

अशीर ने अपनी राइफल सम्भाली। उसी समय अतादयाली भीतर आ गया और मजाक में बोला—"अरे भाई क्या हो रहा है। हमतो समझे थे अब तेजेन मे शान्ति हो गई है यहाँ तो घर में ही जग हो रहा है। अशीर क्या कर रहे हो ? अभी बिस्तर से उठे हो, फिर बीमार पडना चाहते हो ! चेहरे पर जरा खून तो आ लेने दो ! कुलीखाँ को तभी समझेंगे। चलो आओ ? एक प्याली चाय पिलायें तुम्हें। तुम तो गुस्से में काँप रहे हो—!"

अशीर कमजोरी के कारण सचमुच गुस्से में काँप रहा था। अतादयाली उसे बाँह से थाम कर ले गया। अतादयाली हसी मजाक की बातें कर रहा था परन्तु अशोर के दिमाग में कुली खाँ की बेईमानी की ही बातें घुट रही थीं। उसका मन बहलने के बजाय क्रोध बढता जा रहा था। वह अपने आपको रोक न सका और उठ कर चर्नीशोव की खोज में चला।

अशीर कुछ दूर तक बाजार मे जा एक गली में घूमा ही था कि उसे सामने से कुलीखाँ, जेल का अफसर और दो सिपाही आते हुए दिखाई दिये। कुली खाँ ने आँख से अशीर की ओर इशारा किया और अफसर के इशारे से सिपाहियों ने अशीर के दोनों हाथ पकड लिये। अशीर हैरान था। अफसर ने उसे कहा—"तुम गिरफ्तार हो !"

अशीर ने अपने हाथ छुड़ाकर कंधे से लटकी बन्दूक लेनी चाही।

उसके हाथों मे हथकडी डाल दी गई। तुरन्त ही उसे जेल मे पहुचाया गया और एक छोटी अंधेरी कोठरी मे मूंद दिया गया। कुर्लाखाँ ने जेल के अफसर को चेतावनी दी— "इस आदमी की गिरफ्तारी और इसके यहा होने की खबर किसी को न हो।"

चर्नीशोव अपने दफ्तर मे बैठा ताशकन्द की सोवियत के नाम एक पत्र लिख रहा था। अश्काबाद के अनुभव मे वह बहुत हतोत्साह और चिन्तित था। वह जानता था, उस समय भी यदि तिशेको बीच में न पडता तो उसे कुछ भी सहायता न मिलती! अश्काबाद पूरे तुर्कमानिया के इलाके का केन्द्र था और वहाँ की सोवियत मे अधिकांश बेईमान बूर्जुआ लोग भरे हुए थे। वह डर रहा था कि यदि फुन्तीकोव और दोखाव जैसे दगाबाजों के हाथ मे व्यवस्था की बागडोर रही तो क्रान्ति का परिणाम क्या होगा? चर्नीशोव पत्र मे अपनी इन सब आशकाओं को स्पष्ट कर लिख रहा था कि तुरन्त ही किसी योग्य और विश्वासपात्र व्यक्ति को अश्काबाद भेज कर स्थिति जाननी चाहिए।

जब चर्नीशोव इस जरूरी पत्र मे उलझा हुआ था, कोई आदमी बार बार उसके कमरे का बन्द दरवाज़ा खटखटा रहा था। आखिर चर्नीशोव चिढ कर उठा और दरवाजा खोल दिया। बाहर मावेद को खडे देख चर्नी-शोव का चेहरा खिल उठा। चर्नीशोव कई दिन से मावेद की खोज मे था। वह जानता था कि अजीज के हथियार रखा लेने की घटना का प्रभाव जनता पर क्या पडा है। इस बात के लिए साधारण लोगों से मिल जुल कर रहने वाले मावेद से अधिक उपयुक्त आदमी कौन हो सकता था। सोवियत की बदौलत ही मावेद अलनजर वे के पालतू पशु की स्थिति से निकल कर आत्मनिर्भर मनुष्य बन गया था। मावेद और अर्शीर जैसे तुर्कमानी नौजवान ही इस प्रदेश मे सोवियत व्यवस्था के प्रमुख राष्ट्रीय सैनिक थे।

"आओ, भीतर आओ मावेद।"—चर्नीशोव ने उसे बुला लिया। मावेद चुपचाप हतोत्साह सा एक कुर्सी पर बैठ गया। चर्नीशोव ने उसके चेहरे पर चिन्ता और उदासी की झलक देखकर पूछा—"क्यों मावेद क्या बात है? तबीयत तो ठीक है?"

"तबियत क्या ठीक होगी..."

"क्यों बात क्या है ?"

"बात क्या होगी, अब हमारा तो कोई साथी रहा नही।"

"मैं समझा नहीं।"

"तेजेन में हमारे गाँव का एक आदमी था अरतैक वह दुश्मन के साथ चला गया। दूसरा अशीर था, वह भी गया।"

"अशीर कहाँ गया ?"

"कहाँ जायगा ? जहाँ तुमने भेज दिया।"

"मैंने भेज दिया, कहाँ ?"

"जेल में और कहाँ ? तुमने नहीं तो किसने भेजा ?"

"क्या कह रहे हो ? अशीर जेल में ?"

"और नहीं तो क्या ? जेल में तो पडा है बेचारा।"

"किसने कहा तुमसे ? कहाँ से खबर मिली ?"

"लोग तो कहते हैं"—मावेद झिझकते हुए बोला—"तुम्हारे ही हुक्म से अशीर जेल भेजा गया है। तुम पूछते हो खबर कहाँ से मिली ? उसे काल कोठरी में बन्द रखा गया है। जेल वालों को कुलीखाँ ने हुक्म दिया है कि अशीर साहब की कोई खबर अगर किसी को मिली तो उनकी खैर नहीं। खुद जेल के ही सिपाहियों से मैंने सुना है।"

चर्नीशोव सिर लटका कर चुपचाप सोचने लगा—कुली खाँ क्या कर रहा है ? पुराने बदले ले रहा है या जिन आदमियों से उसे भय है उन्हें चुन चुन कर समाप्त कर रहा है ?" मावेद की आँखों में आँखें डाल उसने पूछा—"मावेद मुझे तुम पूरी बात बताओ। मामला क्या है ? तुम बात छिपा रहा हो ! तुम्हें क्या मुझ पर भरोसा नहीं ? क्या सोवियत के सिपाही आपस में विश्वास नहीं कर सकते।"

"नहीं, और मुझे कुछ मालूम नहीं"—मावेद ने आँखें झुका लीं।

चर्नीशोव मावेद का हाथ अपने हाथों में ले बोला—"मावेद, अगर तुम लोग मेरा विश्वास नहीं करोगे, बातें छिपाओगे तो मैं क्या कर सकता हूँ ! यह मेरा नुकसान नहीं सोवियट का नुकसान होगा तुम्हारा अपना नुकसान होगा।

मावेद ने झिझकते-झिझकते दरवाजे की ओर बार-बार देख धीमे स्वर में

अजीज के यहा से ली गई राइफलों के चारी चमन के हाथ तोशेज भेजे जाने, उसकी और अशीर की बात, अशीर और कुलीखा का झगड़ा और अतादयाली के जाकर बीच बचाव करने की कहानी चर्नीशोव को सुना दी। उसने बताया—"सभी लोग कुलीखा से बहुत डरते हैं। उसके विरुद्ध बात कहने की हिम्मत किसी मे नहीं। मुझसे भी वह जला हुआ है। यदि उसे सन्देह हो गया कि मैंने तुम्हे यह बाते बतायी हैं तो किसी न किसी बहाने वह मुझे भी खत्म कर डालेगा।"

"तुम डरो नहीं"—चर्नीशोव ने मावेद को आश्वासन दिया—"मुझे इस बात का कुछ पता ही न था। अशीर को मैं अभी छुड़वाता हूं। कुलीखा से मैं खुद ही समझूंगा।"

साहस पाकर मावेद ने उत्तर दिया—"भैया, लड़कर मरने से मैं नहीं डरता। अशीर और तुम साथ हो तो मैं पूरी फौज का मुकाबला कर सकता हू। परन्तु कुलीखा तो चुपके से क़त्ल करवा देता है। इसका कोई क्या उपाय करे?"

चर्नीशोव हाथ की मुट्ठी मेज पर मारकर बोला—"तुम डरो मत, यहा इन दग़ाबाजों को लाल सेना से चुन चुनकर निकालना होगा। तुम लोगों की सहायता से मैं सब कुछ करूंगा। तुम अभी दो लाल सिपाही लेकर जेल जाओ और अफसर को मेरा हुक्म देकर अशीर को छुडा लाओ।"

उसी दिन सॉझ को चर्नीशोव ने सोवियत की एक बैठक ज़रूरी काम के लिए बुलवाई। कमरा तम्बाकू के धुयें के बादलों से भर रहा था। पहले चर्नीशोव ने तेजेन और तुर्कमानिया की राजनैतिक स्थिति पर संक्षिप्त विवरण सुनाया—मध्य एशिया मे कहॉ कहा सोवियत को विजय और सफलता मिल रही है और जनता की सोवियत सरकार के सामने क्या-क्या कठिनाइयॉ आ रही हैं, जार के पुराने अफसर, क्रान्तिकारी समाजवादी नाम धरने वाले लोग, मेंशेविक और दूसरे क्रान्ति विरोधी कैसे कैसे अड़ंगे जनता की सरकार की राह में लगा रहे हैं, और कैसे वे लोग मध्य एशिया और तुर्कमानिया को शेष समाजवादी रूस से पृथक कर देना चाहते हैं। उसने सोवनारकोम—प्रजातंत्र सोवियत की लेनिन के नाम और ताशकन्द-सोवियत की तार स्टैलिन के नाम पढ़कर सुनाई। यह पहली तार थी :—

"तुर्किस्तानी प्रजातन्त्र अकाल से तड़प रहा है। कमिशन और मार्-

वेरिया के मार्ग शत्रु ने रोक लिए हैं। समारा की राह तुरन्त अन्न और सैनिक सहायता भेजी जाय। विलम्ब का परिणाम भयानक होगा।"

दूसरी तार में भी अकाल, महामारी, बेकारी में सहायता के लिए स्टैलिन से तुरन्त अन्न और एक करोड़ रूबल भेज कर सहायता के लिए अनुरोध किया गया था।

चर्नीशोव का अभिप्राय स्थिति बता कर जनता को भयभीत करना नहीं था—"यदि पूँजीपति और जार के पिट्ठू आशा कर करते हों कि ऐसी कठिनाइनाइयाँ हमारे मार्ग में डाल कर वे हमे पराजित कर देंगे तो यह उनकी भूल है"—चर्नीशोव ने समझाया—"यह लोग हमारी क्रान्तिवादी व्यवस्था का सम्बन्ध मास्को और पेट्रोग्राड से काट कर हमे निर्बल बना देना चाहते हैं परन्तु इन्हे सफलता नहीं मिल सकती। हम लोग अकेले नहीं हैं। समाजवादी सोवियत रूस हमारे साथ है। हमारी क्रान्ति के नेताओं ने हमे भुला नहीं दिया है। जो तारें मैंने पढ कर सुनाई हैं, लेनिन और स्टैलिन के विशेष निर्देशों से, इन तारों मे किए गए अनुरोध पूरे किये जा चुके हैं। हमारे क्रान्तिकारी नेता सम्पूर्ण मजदूर-किसान समाज के समान हितों और अधिकारो मे विश्वास रखते हैं। मध्य एशिया की जनता को वे लोग ज़ार सरकार की तरह अपने आधीन तुच्छ जातियाँ समझ कर हमारी उपेक्षा नहीं करते। हम भी जानते हैं कि हमारा राष्ट्रीय अस्तित्व समाजवादी रूस के सहयोग से ही बच सकता है। इसलिए तुर्कमानिया की जनता पूँजीवादी और जारशाही के क्रान्ति विरोधी प्रयत्नों का मुकाबिला जी जान से करेगी और उन पर विजय पाकर ही विश्राम लेगी।"

इसके बाद चर्नाशोव ने तेजेन की स्थिति की चर्चा की—"तेजेन और उसके पडोस के गाँवों के लिए सहायता रूस से भेजी जा चुकी है और शीघ्र ही वह पहुंच भी जायगी। परन्तु रूस की सहायता पर ही निर्भर करना मूर्खता होगी। अपनी कठिनाइयों को दूर करने के उपाय हमें स्वयं सोचने होंगे और आवश्यक साधनों को भी जहाँ तक सम्भव हो स्वयं ही जुटाना होगा।" इसी प्रसग में उसने तेजेन की लाल फौज का चर्चा किया—"साथियो, हमारी लाल फौज ने बहुत आडे समय में हमारी सहायता की है और भविष्य में भी हमें इसी का भरोसा है परन्तु हम लोगों ने अपनी लाल फौज की भीतरी व्यवस्था पर काफी ध्यान नहीं दिया है।

हमें अपनी सेना में दगा और वेईमानी की गुंजाइश नहीं रहने देनी चाहिए यह खेद की बात है कि हमारी इस सेना में कुछ ऐसे आदमी भी हैं जो इस सेना के लिए कलंक हैं और जो जनता में हमारे प्रति घृणा पैदा कर हमें निर्बल बना रहे हैं। लाल सेना के कमाण्डर केलूईखाँ की बात आपको याद है। उसने 'मनेचियाख' गाँव में डकैती की थी। उस पर मुक़दमा चला कर हमने सेना से बरखास्त कर दिया है। हमें आशा थी कि केलूई खाँ का उदाहरण देख इस तरह के दूसरे लोग स्वयं सुधर जायँगे। परन्तु लोग इससे भी अधिक घृणित कामों में लगे हुए हैं"—चर्नोशोव पल भर के लिए चुप रह कर फिर बोला। उसका स्वर पहले से ऊँचा और कठोर था—"मैं आप लोगों के सामने सोवियत के एक बड़े मेम्बर, हमारी सेना के कमाण्डर कुलीखाँ से जवाब चाहता हूं।"

कुलीखाँ सहसा उठ खड़ा हुआ और मूछों पर हाथ फेर कर बोला—"मुझसे तुम क्या जवाब चाहते हो ?"

चर्नोशोव ने कुलीखाँ की ओर घूर कर प्रश्न किया—"तुम जवाब दो कि अशीर सहात कहाँ है ?"

कुलीखाँ ने भरोसे का साँस लिया। उसे भय था कि चर्नोशोव राइफलों की चोरी की ही बात कहेगा। परन्तु केवल अशीर के बारे में प्रश्न सुनकर उसे संतोष हुआ कि वह बात इसे मालूम नहीं हुई। कुलीखाँ ने निधड़क उत्तर दिया—"अशीर सहात अजीज़ का गुप्तचर है। वह हमारी सेना में बगावत फैला रहा है। मैंने उसे गिरफ्तार करवा दिया है। उसके मामले की जाँच की जानी चाहिए।"

"हूं"—चर्नोशोव ने पूछा—"जो आदमी तुम्हारी करतूतों का भण्डा फोड़ करे वह दुश्मन का गुप्तचर है। तुम अब भी ज़ार की केन्द्रीय पुलिस के हथकण्डे खेल रहे हो ?"

यह बात सुन कुलीखाँ घबराया परन्तु अपना भय छिपा कर बोला—"मैं तुम्हारी बात नहीं समझा। तुम साफ साफ बात कहो ! कौन है ?"

कुलीखाँ सन्न रह गया। चर्नोशोव ने अपना प्रश्न और कड़े स्वर में दोहराया—"मैं पूछता हूं, चारी चमन कौन है ?"

"क्या जानूं चारीचमन कौन है ?"—कुछ भयभीत स्वर में कुलीखाँ

ने उत्तर दिया—"क्या दुनिया भरके लोगों को जानता हू ? क्या उड़ा रहे हो तुम ?"

"मैं उडा रहा हू या तुम उड रहे हो ?"—मेज पर हाथ पटक चर्नीशोव गरज उठा—"सोवियत तुमसे जवाब मागती है कि अजीज़ के यहा से ली गई दो सौ अठारह राइफलें और बारह हजार कारतूस कहा हैं ?"

कुलीखा का चेहरा फक हो गया परन्तु उसने बात बनाकर उत्तर दिया—"चर्नीशोव, तुम अशीर जैसे गद्दारों की बातों में आकर मुझ पर कलंक लगा रहे हो ! अगर अजीज और उसकी फौज अपने हथियार साथ ले गई तो इसमें मेरा क्या दोष ? थोडे बहुत जो हथियार मिले थे वे अशीर ने चुरा लिये हैं ……।

"सब लोग जानते हैं कि हमारी सेना ने अजीज की राइफलें छीन ली थीं। तुम्हें उनका हिसाब देना होगा ? जुनैद खां को तुमने राइफलें कहा से लेकर भेजी हैं ?"

सब लोग विस्मय से कुलीखा की ओर देख रहे थे कि वह क्या जवाब देता है। सोवियत में सभी तरह के लोग घुस आये थे। सोवियत की बैठक अचानक बुलाई जाने से कुलीखा को सन्देह हो गया था और वह अपनी सहायता के लिये अपने साथी खोजा मुराद और दारोगा बाबाखां आदि कई आदमियों को लिवा लाया था। अपने साथियों की ओर देख कुलीखा ने साहस किया और बोला—

"यदि सोवियत चाहती है कि क्रान्ति विरोधी लोगों को हथियारों की चोरी का मौका न मिले तो मुझे हक होना चाहिये कि मैं जरूरत के मुताबिक अपने विश्वासी सिपाही भरती कर सकूं ताकि पडोस के गावों पर कड़ी नजर रखी जा सके ……"

"तुम हमारे सवालो का जवाब दो, बाते न बनाओ।"—चर्नीशोव ने टोका।

"तुम्हारा यह क्या तरीका है ?"—उत्तेजित स्वर में कुलीखां ने उत्तर दिया।

"तुम जार के अफसरों और कर्नल वेलनोविच की तरह हम तुर्कमान लोगों पर आतंक बैठाना चाहते हो ?"

"बको मत"—चर्नीशोव क्रोध में उछल पड़ा—"जार की नीति पर हम चल रहे हैं या तुम ! उल्टे चोर कोतवाल को डांटे !"

"तुम कौन होते हो मुझे चुप कराने वाले ? तुम मेरी जबान नहीं पकड़ सकते !"

सभा में शोर मच गया । कई लोग एक साथ बोलने लगे । चर्नीशोव हैरान था कि कुलीखा की इन करतूतों के बावजूद लोग उसका समर्थन कर रहे थे । खोजा मुराद उठ कर बोला—

"भाइयो, यह क्या जुल्म हो रहा है ? कुलीखा जैसे भले और इज्जतदार आदमी पर तोहमत लगाई जा रही है कि वह हथियारों की चोरी करता है ! अगर शरीफ लोगों की इज्जत पर ऐसे हाथ डाला जायगा तो हम लोग कैसे जिन्दा रह सकेंगे ।"

इन बातों पर कोई एतबार कर सकता है ? आप लोग तो कहेंगे कि रात में सूरज निकला है और हमें वह भी मान लेना पड़ेगा ! कुलीखा पर चोरी लगाना कितना बड़ा जुल्म है । उसने तो कभी एक कारतूस भी किसी को नहीं दिया । बेचारा सोवियत की सहायता में अपनी जान गलाये दे रहा है । ऐसे आदमी की वफादारी पर कलंक लगाना कितना बड़ा जुल्म है । बात यह है कि रूसी लोग हर बात में हम तुर्कमान लोगों का अपमान करना चाहते हैं ।"

बाबाखा एक ओर खड़ा था । वहीं से हाथ उठा कर बोला—"यह आप लोग क्या जुल्म कर रहे हैं । कुलीखा जैसे ईमानदार और वफादार आदमी की यों बेइज्जती की जा रही है । शहर और गावों में सोवियत की जो कुछ इज्जत है, कुलीखा की बदौलत है । अगर कुलीखा सोवियत में न रहा तो सोवियत को कोई पूछेगा भी नहीं । कुलीखा सोवियत में न रहे तो दारोगा लोग तो सोवियत की परवाह न कर अपनी खनाते बना बैठे !"

सभा में अपना साथ देने वाले लोग न देख चर्नीशोव झिझका परन्तु उसने फिर साहस किया और इस सवाल पर वोट लेने का निश्चय किया । उसने प्रस्ताव रखा:—

"कुलीखा ने अपने अधिकार का दुरुपयोग कर सोवियत सेना के हथियारों की चोरी की है, उसने सोवियत के वफादार सिपाहियों पर अत्या-

चार किया है और वह क्रांति विरोधी तथा सोवियत विरोधी कामों में भाग ले रहा है। इस लिये प्रस्ताव किया जाता है कि कुलीखा को सेनापति के पद से पृथक करके उसके अपराध पर सैनिक न्यायालय में विचार किया जाय।"

चर्नीशोव ने सामने बैठे लोगों की ओर देख उनका मत पूछा—बहुत कम लोगों ने प्रस्ताव के समर्थन मे अपने हाथ खड़े किये। कुछ आदमियों ने हाथ उठाये ही नहीं। अधिकाश ने उसके प्रस्ताव के विरुद्ध हाथ उठाये।

अब चर्नीशोव समझा कि सोवियत की भीतरी स्थिति वास्तव में क्या है! बहुत से तुर्कमानी लोग जिन्हे चर्नीशोव सोवियत का विरोधी नहीं समझता था, इस समय बाबाखां की—रूसियों के तुर्कमान लोगों का अपमान करने की बात से भड़क कर कुलीखा के ही पक्ष में राय दे रहे थे।

इस परेशानी में चर्नीशोव को याद आया कि अरतैक ने बार-बार चेतावनी दी थी कि कुलीखा कभी विश्वास योग्य नहीं हो सकता। अरतैक की ही बात ठीक थी। आज अरतैक सोवियत में होता तो एसी अवस्था में उस पर भरोसा किया जा सकता था। परन्तु वह तो कुलीखा के कारण ही शत्रु के दल में जा मिला और अपने ही जैसे किसानों पर गोली चलाने लगा। अरतैक की ईमानदारी किस काम की जब कि उसमें समझदारी न हो। उस रात अर्जीज की सेना और लाल सेना से लड़ाई के बाद तो अरतैक को अपनी भूल समझ आ गई होगी! परन्तु अब अपनी भूल मान कर सोवियत के पक्ष मे उसे सकोच अनुभव हो रहा होगा।......

चर्नीशोव ने अरतैक की ओर से ध्यान हटाकर वर्तमान समस्या को सुलझाने का यत्न किया। जब लोग कुलीखा के जाल में फँस उसकी दगाबाजी का समर्थन करने के लिये तैयार हैं तो वह क्या करे?

चर्नीशोव ने सोवियत की बैठक समाप्त कर दी और तुरत तार घर जा कर अश्काबाद से तार का सम्बद्ध कराया। उसने अश्काबाद के प्रतिनिधि से अनुरोध किया कि तेजेन में सोवियत का चुनाव नये सिरे से कराने और क्रांति के न्यायालय में कुलीखा के अपराध पर विचार करने की आज्ञा दी जाय। उसने कहा कि इसके बिना तेजेन की स्थिति वश में न आ सकेगी। और यदि अश्काबाद की सोवियत उसके अनुरोध को अस्वीकार करेगी तो

वह अपनी प्रार्थना, ताशकन्द मे तुर्कमानी प्रदेश की केन्द्रीय सोवियत के सामने रखेगा। उसे उत्तर मिला कि कुलीखा को तुरत अश्काबाद बुला कर मामले की पडताल की जायगी।

अगले दिन सुबह ही कुलीखा सोवियत के दफ्तर में आकर चर्नीशोव से मिला और बोला—"मुझे अश्काबाद मे सैनिक विभाग के व्यवस्थापक (Commissar) ने बुलाया है। मै आज ही वहा जा रहा हू। जान पडता है मेरे प्रति तुम्हारे मन मे सन्देह जम गया है। ऐसी अवस्था मे मैं सोवियत का काम कैसे चला सकूंगा। यदि तुम्हारा सन्देह मेरे प्रति दूर नही हो सकता तो तुम मेरी जगह किसी दूसरे व्यक्ति को कमाण्डर नियत कर लो।"

चर्नीशोव को अश्काबाद की प्रान्तीय सोवियत पर बहुत भरोसा नहीं था। उसे खूब याद था कि अजीज की सेना के हथियार रखवाने के लिये जब वह सहायता मागने अश्काबाद गया था तो उस पर क्या बीती थी। जब तक अश्काबाद की सोवियत मे फुर्न्तीकोव और दोखोव जैसे आदमी मौजूद हैं वहा से किसी प्रकार की सहायता की आशा करना व्यर्थ है। अश्काबाद सोवियत से विशेष आशा न होने पर भी चर्नीशोव ने नियमानुकूल कार्रवाई करना उचित जान जाब्ते के तौर पर पर वहा फोन कर दिया था। इसके अतिरिक्त उसने कुलीखां के विरुद्ध अपराधों का पूरा विवरण, अज़ीज के यहा से राइफलें और कारतूस मिलने के प्रमाणों और अशीर और मावेद के दस्तखती बयान अश्काबाद भेज दिये। यह सब कर लेने पर भी उसे कोई भरोसा न था। इसलिये वह अपने विरुद्ध निर्णय होजाने की सम्भावना के लिये भी तैयार हो गया।

चर्नीशोव की आशंका ठीक ही प्रमाणित हुई। कुछ ही दिन बाद कुलीखा अश्काबाद से निर्दोष साबित हो तेजेन की लाल सेना के कमाण्डर के पद पर स्थायी रूप से नियत होकर लौट आया। कुलीखा के चेहरे पर विजय और प्रसन्नता की चमक छा रही थी। चर्नीशोव के प्रति उसने निरादर और धृष्टता न दिखाई। इसका कारण चाहे तो अश्काबाद में अपने सहायकों और समर्थकों का परामर्श रहा हो, चाहे, यह कि इतने दिनो में चर्नीशोव की दृढता और लगन को वह खूब भाप चुका था।

२१

ज़ार के पिट्ठुओं और पूंजीपतियों को सहायता देकर विदेशी साम्राज्य वादी शक्तियों ने कोकन्द में एक स्वतत्र शासन कायम कर दिया था। कोकन्द की यह क्रान्ति विरोधी और नाम को स्वतत्र शासन समाजवादी सोवियत पर निरतर आक्रमण कर रहा था। सन् १६१८ के फरवरी मास में सोवियत सेना ने इस स्वतत्र शासन की सेना को हरा कर पीछे भगा दिया। सोवियत के शत्रु हार कर भी चुप न हुये। वे स्थान-स्थान पर सोवियत शासन के विरुद्ध विद्रोह कर रहे थे। १७ जून को इन लोगों ने अश्काबाद में भी विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह को मजदूरों की स्वय सेवक सेना ने दबा दिया ११ जुलाई को क्रान्तिकारी समाजवादियों मेंशेविकों और राष्ट्रीयता का नारा लगाने वाले तुर्कमानी जागीरदारों और पूजीपतियों ने एक बार सोवियत शासन को तोड गिराने के लिये सम्मिलित प्रयत्न किया। १२ जुलाई के दिन इन लोगों ने अश्काबाद और किजाइल-अखात में अपनी अपनी सरकार की घोषणा कर दी। इस प्रदेश में सोवियत की ओर से नियत प्रतिनिधि फ्रोलोव को मार डाला गया और मजदूरों की स्वय सेवक बोल्शेविक सेना को भी कत्ल कर दिया गया। अवति की सोवियत के मेम्बरों गुबकिन, बाबकिन, बुदनिकोव और कास्को को गोली से उडा दिया गया। तीन चार दिन बाद की सोवियत के बोलशेविक मेम्बरों बात्मानोव, फ्रिलिकोव और लाल सेना के कमाण्डरों को भी बिना किसी प्रकार के अपराध आरोपण या जांच पडताल के अनाऊ स्यारस स्टेशनों के पास गोली मार दी गई। अश्काबाद और उसके आसपास के सब प्रदेश क्रान्ति विरोधी ज़ारशाही सेनाओं के हाथ जो कि अब ब्रिटिश साम्राज्यशाही सत्ता के हुक्म पर सोवियत शक्ति से लड रही थीं, के हाथ पड़ गये। ज़ार की सेना के इस सैनिक शासन का प्रधान क्रान्तिकारी-समाजवादी दल के नेता फ़ुन्तिकोव को बनाया गया परन्तु वास्तव में वह ब्रिटिश मेजर जनरल मैलिन्सन के इशारों पर चल रहा था। मैलिन्सन मध्य एशिया में सोवियत के विरुद्ध

बगावत कराकर ब्रिटिश सत्ता जमाने की आयोजना के प्रधान अफसर की स्थिति में काम कर रहा था।

जुलाई के अन्त तक कुछ फौजों को आगे कर और वास्तव में अपनी सेनाओं के बल पर ब्रिटिश सेनाओं ने पूरे रूसी तुर्किस्तान को घेर लिया। काशगर में जमे हुये ब्रिटिश काउन्सल सर मैक-कर्टने ने फर्गना के अमीर को हथियार और हिन्दुस्तानी सिपाहियों की सेना सहायता के लिये दक्षिण पूर्व के शहरों, खानों और तेलके कुओं पर अपना कब्जा जमा लिया। मैक-कर्टने ने सेमिरेचेस्क की कौसाक ग्रामीण आबादी को भी हथियारों की सहायता दे आल्मा-आता में सोवियत विरोधी सरकार स्थापित कर लेने के लिये भड़काया। पूर्व में अतायान दुतोव विद्रोह कर बैठा और उसने मास्को-ताशकन्द रेलवे लाइन उखाड़ डाली। बुखारा खीवा के डकैत खान जुनैदखा ने और कास्पियन समुद्र में मौजूद ब्रिटिश जहाजी बेड़े ने उत्तर पच्छिम से ताशकन्द की सीमा को घेर लिया। तुर्कमानिया के प्रजातन्त्र में सभी जगह ब्रिटिश गुप्तचरों के जाल फैले हुये थे। अपने कार नामों का वर्णन करते हुये मेजर जनरल मैलिन्सन ने उस समय एक पत्र में लिखा था कि इस समय एक हजार हमारे गुप्तचर फैले हुये हैं। बोल्शे विक सरकार के अनेक महत्वपूर्ण पद हमारे गुप्तचरों के हाथ में हैं और सभी खास जगहों पर हमारी सेना कि टुकड़िया भी मौजूद हैं। मध्य एशिया भर में ऐसी कोई रेलगाडी नहीं चलती जिस पर हमारे गुप्तचर मौजूद न रहते हों और कोई रेलवे स्टेशन ऐसा नहीं। जहा हमारे दो तीन आदमी समय पर काम आने के लिये, मौजूद न रहते है।

मेजर जनरल मैलिन्सन जुलाई के आरम्भ में ही मशद में पहुन्च गया था। रूस और ईरान की सीमा पर ब्रिटिश सेनाये जमा हो चुकी थीं। १२ अगस्त के दिन ब्रिटिश फौजे रूसी सीमा में अश्काबाद की ओर लगभग सत्तर मील भीतर धस गई। ताशकन्द से जार की सेना भी अश्काबाद की ओर बढती चली आ रही थी।

तेजेन की सोवियत को समाचार मिला कि जार की समर्थक क्रान्ति विरोधी सेना मारी और चार्दजोल पर आक्रमण करने के लिये बढ रही है और एक दो दिन में तेजेन पहुन्च जायगी। मारी और चार्दजोल से तेजेन में सहायता पहुन्च सकने की कोई सम्भावना न थी। तेजेन की लाल सेना की

छोटी सी टुकड़ी अजीज का सामना तो सफलता से कर सकती थी परन्तु इस बड़ी जारशाही सेना का सामना इस टुकड़ी से करना केवल मखौल ही था। यह भी निश्चित था कि अवसर देख कर उसी रात या अगले दिन सुबह तेजेन पर छापा मारने वाला था।

इस परिस्थिति में चर्नीशोव ने तेजेन की सोवियत सरकार को ताशकन्द की ओर, पीछे मारी में हटा लेना उचित समझा। उसने अपना प्रस्ताव तेजेन की सोवियत के सन्मुख रखा। कुलीखाँ ने इस प्रस्ताव का जोरों से विरोध किया और चर्नीशोव के विरुद्ध गद्दारी के अनेक आरोप भी लगाये। कुलीखाँ ने कहा—

"हम तो जानते ही थे कि तुम यहाँ केवल मेहमान बन कर मौज मारने के लिये आये हुए हो। जब तक कोई भय न था तुम बड़े तीसमार खाँ बने रहे और मुझ पर लाँछन लगाते रहे। मुसीबत आई है तो तुम बिस्तर लपेट कर जान बचाने की फिक्र में भागने की तैयारी कर रहे हो कि मुसीबत का सामना हम करें? काँटे तुम बो जाओ और उन्हें समेटने का काम हमारे सिर रहे। हम तेजेन को नहीं छोड़ेंगे। हमारे शरीर में जब तक खून की एक भी बूंद रहेगी हम जार की फौज को अपनी तलवारों पर रोकेंगे। हम तुम्हें तेजेन के साथ हरगिज गद्दारी न करने देंगे।"

कुलीखाँ की इस चालबाजी का मतलब चर्नीशोव खूब समझता था। वह समझ गया कि कुलीखाँ जब अश्काबाद गया था तभी अश्काबाद बाद के क्रान्ति विरोधी दल के साथ यह षडयन्त्र रच आया था। फुन्तिकोव और दोखोव ने कुलीखाँ को इसी अवसर के लिए अश्काबाद में बैठाया हुआ था। वह समझ गया कि कुलीखाँ हमें सगठित रूप में पीछे हट कर लड़ने से रोकना चाहता है और जार की सेना के तेजेन में आते ही वह उनसे जा मिलेगा ....चर्नीशोव ने अनुभव किया कि अब सोवियत के भविष्य के भाग्य निर्णय का समय आ गया है। और इस समय उसे दृढ़ता से काम लेना होगा। वह शान्त बना रहा और बोला—

"कुलीखाँ, तुम सदा से सोवियत के साथ दगा करते आये हो। आज भी तुम वही बात कर रहे हो! यह बात नहीं कि तुम भोले हो और स्थिति को समझ नहीं सकते। तुम सब कुछ समझते हो और चाहते हो सोवियत को जाल में फंसा कर समाप्त कर देना। मैं तेजेन में मेहमान बनकर मौज

मारने नहीं आया हू। तेजेन की भूमि के प्रत्येक ढेले के लिए मैं जान दे दूँगा। समाजवादी प्रजातन्त्र सोवियत की सम्पूर्ण भूमि का प्रत्येक भाग हमारा अपना घर है। मैं इस भूमि के प्रत्येक व्यक्ति की जान को मूल्यवान समझता हू। मैं झुँझला कर इस देश के लोगों को मौत की भट्ठी में झोंक देने के लिए तैयार नहीं हू। हम शत्रु से हार मान कर पीछे नहीं हट रहे हैं। हम शत्रु पर अधिक बल से हमला करने के लिए उचित जगह मोर्चा बना रहे हैं। मैं यह समझता हू कि किसान मजदूर सरकार को सफल बनाने के लिये और सोवियत प्रजातन्त्र के शत्रुओं को समाप्त करने के लिए तेजेन की सोवियत के सदस्यों के जीवित रहने की आवश्यकता है। हम लोग तुम्हारे षड्यन्त्र को खूब समझते हैं। हम समझते हैं जार की सेना के तेजेन में कदम रखते ही तुम उनसे जा मिलोगे और सोवियत के वफादार लोगों चर्नीशोव, अशीर मावेद वगैरा को जार की सेना के हाथ में देकर तुम उनसे ईनाम माँगोगे।"

कुलीखाँ ने बीच में टोकने का यत्न किया परन्तु चर्नीशोव अपनी आवाज और ऊँची कर बोलता गया—"कुलीखाँ याद रखो, सोवियत सरकार जनता की सरकार है और रूसी जनता के साथ इन सब देशों की जनता की सरकार है जो अपनी मुक्ति के लिये जनवादी क्रान्ति के मार्ग पर चल रही है। जनता की सोवियत सरकार को न तो बरबाद हो चुके जार की सेना और न मूर्खों को अपने स्वार्थ का साधन बनाने वाली साम्राज्यशाही परास्त कर सकती है। किसानों और मजदूरों की हमारी सरकार आज कठिनाई में अवश्य है परन्तु हम लोग निरुत्साह और भयभीत नहीं हैं। हमें पूरा विश्वास है कि हमारी इस भूमि पर सोवियत का झण्डा-ईमानदारी से मेहनत कर पैदावार करने वालों का झण्डा लहरायेगा, हमारी विजय होगी। इस समय की परिस्थियों में विजय को निश्चित बनाने के लिये यदि आज हमें कुछ पीछे हट कर शत्रु पर वार करना पड़ता है तो यह न तो हमारे लिए अपमान का कारण है और न यह हमारी हार है। आज हम चार कदम पीछे हटते हैं तो कल सोलह कदम आगे बढ़ेंगे। इस समय यह हमारी जिम्मेवारी है कि हम यहां सोवियत की शक्ति को नष्ट न होने देकर आगामी आक्रमण के लिये उसकी रक्षा करें। इस समय हमारे सामने एक ही रास्ता है कि हम अपनी सोवियत को मारी ले जाकर वहां संयुक्त मोर्चा बनायें। मैं तेजेन की सोवियत का प्रधान और तेजेन की लाल सेना का प्रधान सेनापति मैं हू

ौर मेरा फैसला है कि हमें तुरत यह काम करना होगा। इस समय संकट उपस्थित है और रक्षा के काम को समुचित रूप से चलाने के लिये मैं सब अधिकार अपने हाथ में ले रहा हू। मेरी पहली आज्ञा है कि तेजेन की सम्पूर्ण लालसेना मारी जाने के लिये तुरत रेल पर सवार हो जाय। दूसरा आज्ञा है कि सोवियत की रक्षा करने वाले सभी नागरिक भी इस सेना के साथ जाये और आवश्यकता पड़ने पर इन सब लोगों को सिपाहियों का काम करना होगा।"

कुलीखां चर्नीशोव के व्यवहार से घबरा गया। वह ऐसी स्थिति की आशा नहीं कर रहा था। उसे भरोसा था कि तेजेन की सैनिक शक्ति स्वयं उसके हाथ में है परन्तु चर्नीशोव ने सेना की कमान अपने हाथ में लेली। अब वह क्या करे? कुलीखा ने सोचा इस समय वह क्या कर सकता है? सेना में उसके भरोसे के सिपाहियों की संख्या कम ही थी। उसका साथ देने वाले लोग भी सोवियत की इस बैठक में मौजूद न थे। चर्नीशोव का साथ देने वाले अशीर और मावेद सामने ही बैठे थे। इन लोगों से हाथापाई करना व्यर्थ था। इन लोगों से परे हट रेल से छूट जाने का बहाना करके पीछे रह जाने का भी कोई अवसर न था। और कोई लाभ भी न था। ार की फौज उसकी कद्र तभी करती जब वह अपने साथ सेना लेकर उनके ु में चला जाता। यदि वे उसे अकेले पकड़ पायेंगे तो बिना कुछ पूछताछ ये उसे सोवियत में महत्वपूर्ण पद पर काम करते रहने के अपराध में न गोली से उडा देंगे।

निराशा की एक गहरी सास लेकर वह बोला—"चर्नीशोव, अफसोस कि मेरे विचार से सहमत न होने के कारण ही तुम मुझपर विश्वासघात के ड्यन्त्र का आरोप लगा रहे हो। तुम जानते हो मैं सिपाही आदमी हूं। ना मारना मेरा काम है। दुश्मन के सामने से भागना मुझे अच्छा नहीं ाता। परन्तु यदि तुम सोवियत का हित इसी बात में समझते हो तो मैं हारा हुक्म मानने के लिये तैयार हूँ।'

"तुम्हें यही करना भी चाहिए"—मुस्करा कर चर्नीशोव ने कहा— अब मेरी आज्ञा है कि तुम अपने हथियार इन सिपाहियों को सौंप दो। तुम स समय गिरफ्तारी में हो। अशीर और मावेद तुम लोग इस कैदी को जाकर पहरे में रखो। यदि कैदी भागने की कोशिश करे या हाथापाई

करें, उसे गोली मारदो।"

कुलीखा का चेहरा कागज की तरह सफेद पड़ गया। उसने कुछ कहने के लिये मुँह खोला परन्तु चर्नीशोव ने हाथ उठा कर उसे रोक दिया—"बस!"

अशीर और मावेद ने कुलीखा के हथियार उतार लिये। कुली खा ने चुपचाप सिर झुका लिया और वैसे ही उन लोगों के साथ इशारा पाक चलता गया।

जब अशीर कुली खा को कोठडी में बन्द कर लौटा चर्नीशोव उसे अपने दफ्तर मे ले गया और दरवाजा बन्द कर बोला—"अशीर, मैं तुम्हे एक काम सौंप रहा हूँ। हम लोग मारी जा रहे हैं। मुझे विश्वास है मारी की सोवियत सेना के साथ मिल कर हम दुश्मन को जल्दी ही पीट देंगे और प्रायः एक सप्ताह के भीतर तेजेन लौट आयेंगे। यहाँ आकर हमें अश्काबाद पर भी हमला करना होगा। तुम्हे यहाँ पीछे रहना होगा। तुम आसपास के गांवों मे जाकर किसानों को समझाओ कि वास्तविक स्थिति क्या है? जारशाही की सेना का साथ देने से उनका नाश होगा। तुम किसानों को संगठित करके सोवियत सेना की सहायता के लिये तैयारी करो—।"

"लेकिन अजीज़ यह सब करने देगा?"

"अजीज हो या और कोई हो! यह काम तो करना ही होगा। मेरा ख्याल है अजीज जार की सेना के साथ मिलकर हम लोगों का पीछा करने भागेगा। लेकिन तुम्हें अपना काम करना है। यह काम सबसे जरूरी है और इसमें सबसे अधिक खतरा भी है। दुश्मन के सामने डट कर, बन्दूक ले उसका सामना करना कहीं अधिक आसान है। यह याद रखो कि किसी भी हालत में तुम्हें दुश्मन के हाथ नहीं पड़ना है। अगर तुम्हें सहायता की आवश्यकता है तो तुम मावेद का भी साथ रख सकते हो।"

"नहीं, मावेद को तुम अपने साथ रखो। तुम्हें एक भरोसे के आदमी की आवश्यकता होगी। मैं किसी और को ढूंढ लूंगा।"

"अगर कहीं अरतेक से मुलाकात हो तो उसे समझाने की कोशिश करना। मेरा मन कहता है कि वह अब भी सोवियत का मित्र है। उसमें न्याय बुद्धि है।"

२२

अरतैक का मन अपने घर में रम गया था। ऐसा ही उसका तमन्ना थी। उससे परे की वह बात ही न सोचता था। उस वर्ष खूब वर्षा हुई। जहाँ तक नज़र जाती भूमि पर लहराती हरी घास का कालीन बिछा दिखाई देता था। तेजेन्का नदी भी जल की गर्वीली धारा से गरज रही थी। तेजेन की भूमि पर उसका पुराना जोबन उमड़ आया और अरतैक की नसों में उसके किसान पूर्वजों का रक्त उमगने लगा। उसने मुराद से बीज के लिये आवश्यक अनाज उधार लिया और अपने चाचा के साथ मिलकर सोवियत व्यवस्था से नयी मिली जमीन जोत कर बीज डाल दिया। मुख्य नहर से एक नाली खोद कर वह अपने खेतों की सिंचाई करने लगा।

एक दिन अरतैक खेतों से थका तीसरे पहर, घर लौट कर चाय पी रहा था। चाय के गरम घूंट गले से उतर उसकी कल्पना और स्मृति को सजीव करने लगे। उसे अपने बचपन के खेल याद आने लगे। बचपन के साथी अशीर की याद आने लगी। वह सोच रहा था—अशीर जाने कहाँ होगा?

उसी समय एक चमत्कार हुआ—अशीर उसके सामने आ खड़ा हुआ। अरतैक पुरानी मित्रता के आवेग में अशीर को गले लगा लेने के लिये झपटा परन्तु अशीर से झगड़े और अपने अपमान की बात याद आ जाने से उसका मन बुझ सा गया। दोनों मित्रों ने सलाम दुआ की और बातचीत भी कर रहे थे परन्तु जैसे कुछ कतरा कर।

अरतैक की मा नूरजहाँ को इन दोनों मित्रों के झगड़े की कोई खबर न थी परन्तु उनका परस्पर खिंचाव उसने भी अनुभव किया और मन ही मन चिन्ता कर रही थी—हाय, इन दोनों के बीच में यह बेगानापन कहाँ से आ गया! क्या बात है। छोटी बहिन शाकिरा भी हैरान थी कि क्या सचमुच यह अशीर है? अशीर होता तो दोनों ऐसे बेगानेपन से मिलते? ऐसा नहीं

चतुर थी परन्तु इस स्थिति का कारण वह भी न भाप पाई । अरतैक ऐना से कोई बात छिपाता न था परन्तु अशीर से झगडे की चर्चा उसने ऐना से न की थी। सोचा, बेचारी का मन दुखाने से क्या लाभ ? और फिर इस झगडे मे वह भूल भी अपनी ही समझता था ।

अशीर का घाव ठीक हो जाने और अशीर के उसके घर मिलने आने के कारण अरतैक को बहुत संतोष हुआ तिस पर भी अहंकार के कारण वह अपनी भूल मान लेने के लिये तैयार न हो सका ।

उस झगडे की बात अशीर भी न भूला था। यह झगडा योंही मामूली छीन झपट की बात तो थी नहीं, अपने अपने विश्वास और सिद्धान्त की बात थी। इसी झगडे के परिणाम स्वरूप वे एक दूसरे पर गोली चलाकर आपस मे खून बहाने के लिये तैयार थे। इस सब झगड़े के बावजूद अशीर यह भी न भूल सकता था कि उसके घायल हो कर गिर जाने पर अरतैक ने ही उसके प्राण बचाये थे। इस कृतज्ञता को वह कैसे भुला देता ?

एक दूसरे के कुशल क्षेम की बात हो चुकने के बाद अशीर ने तेजेन की अवस्था, जार की सेना के आक्रमण, लाल सेना का मारी की ओर हट जाने और अरतैक से मिलने के लिये चर्नीशोव के आग्रह की बात भी कह सुनाई और पूछा।—"इस स्थिति में तुम्हारा क्या विचार है, क्या करना चाहते हो ?"

अरतैक ने भी अश्काबाद में सोवियत के विरुद्ध विद्रोह का समाचार सुना था परन्तु वास्तविक स्थिति उसे मालूम न थी। उसे कुछ उत्तर न दे लगातार सिर झुकाये सोचते देख अशीर ने फिर सम्बोधन किया—।"क्या सोच रहे हो ? क्या विचार है तुम्हारा ? चर्नीशोव को मैं क्या उत्तर दूं ?"

"चर्नीशोव से कहना मैं अपनी भूल मानता हूँ"—अरतैक ने सहसा सिर उठा कर उत्तर दिया—"मेरे कसूर की मुआफी नहीं है"—यह शब्द कहते समय अरतैक का कलेजा कट कर रह गया। अरतैक अभिमानी आदमी था अपना अपराध स्वीकार करने की अपेक्षा दुश्मन की गोली खाने पर सह लेना उसके लिये अधिक आसान था। परन्तु जब मित्र के सामने उसने दिल खोल दिया तो कुछ भी न छिपाया।

"अशीर मुझ से गल्ती हो गई" वह बोला—"इतना कह देना ही काफी नहीं। जब तक हम यह न समझें कि गल्ती क्या थी, कैसे हुई, तब

तक गल्ती से बचा नहीं जा सकता। १९१९ में मैंने अजीज के साथ हथियार उठाये। उसमें मेरा कुछ स्वार्थ न था। मैंने क्रांति में जार के विरुद्ध हथियार उठाये। उसमें भी मैंने कोई फायदा उठाने की बात नहीं सोची। मैं जागीरदारों और जार के अफसरों के विरुद्ध अपने किसान भाइयों की मुक्ति के लिये लड़ रहा था। चर्नीशोव मुझसे नाराज है। मैं चर्नीशोव को अपना बड़ा भाई मानता हूँ। मैं मानता हूँ कि वह निस्वार्थी नहीं, वह जनता की भलाई के लिये जान दे रहा है। परन्तु उसने जार के पुराने बेईमान आदमियों का कुलीखा जैसे बदमाशों का भरोसा किया। मैं कुलीखा जैसे आदमियों का, विश्वास कभी नहीं कर सकता? तुम्हीं बताओ कुलीखा और बाबाखा हम लोगों का पेट काट कर जागीरदारों और जार के अफसरों का पेट भरते रहे हैं कि नहीं? अजीज चाहे जैसा रहा हो कम से कम उसने लोगों की भलाई की बातों का एलान किया, जागीरदारों की जायदादें ले गरीबों को रोटी तो दी। मैंने उसका साथ दिया तो क्या बुरा किया? . . ."

"अरतैक, जब मैं रूस से लौटा था तो मैंने तुम से कहा नहीं था......?"—अशीर ने टोका

"मुझे कह लेने दो! टोको मत! उस समय तुम्हीं क्या जानते थे? जो कुछ मैं जानता था वही तुम भी जानते थे!"

"नहीं, यह बात नहीं है अरतैक, मैं रूस के संगठित मजदूरों में रह कर आया था। मुझे वहाँ काफी देखने सुनने का मौका मिला था।"

"मान लिया तुम माँ के पेट से ही इन्कलाबी पैदा हुये थे परन्तु मेरी भी बात सुनलो। मैंने अशनजर बे के दांत तोड़े, बाबाखा को धूल चटाई। गांव के किसानों को सिर ऊंचा करके चलने का मौका दिया। मैं अजीज की नौकरी में था परन्तु मैंने किया क्या? लेकिन अजीज ने रंग बदल लिया। वह खुद ही सुल्तान बन बैठा। उसने किसानों के गले से जागीरदारों का जुआ तो हटाया परन्तु उनके कंधे पर स्वयं सवारी गांठली। मैं तो उसकी बातों में विश्वास कर उसका साथ दे रहा था। वह धोखा दे गया तो मैं क्या करूँ? बताओ मेरी भूल क्या थी?"

"यह तो ठीक है!"

"नहीं, अभी तुम नहीं समझे! सुनो मैंने जो कुछ देखा उस पर ...

विश्वास कर लिया। यह नहीं सोचा कि कि भीतरी बात क्या है ? मैं कुलीखा की दागाबाजी से डरता रहा। यह नहीं सोचा कि जनता को साथ लेकर ही ऐसे दुष्टों को कुचला जा सकता है। मेरी दूसरी भूल थी कि मैंने यह नहीं सोचा कि अजीज का स्वार्थ तो जनता के हित के विरुद्ध है। जो जनता पर शासन करना चाहता है वह जनता को आजादी कैसे दे सकेगा ? उसका साथ दे मैंने सोवियत के शत्रु की शक्ति बढाई। सोवियत की राह में रोडे अटकाये। अब मैं समझ रहा हूँ, परन्तु क्या फायदा ? अब तो बात हाथ से निकल गई।"

"हाथ से कुछ नहीं निकल गया। चर्नीशोव अब भी तुम्हे बुला रहा है ! उसे तुम्हारी ईमानदारी पर भरोसा है।"

"इतनी ही बात नहीं"—खिन्न स्वर में अरतेक बोला—"चर्नीशोव ने मुझे तभी समझाया था कि अजीज का साथ देकर मैं सोवियत का विरोधी बन जाऊंगा। उसका कहना ठीक था। उस समय मैंने उसकी बात नहीं माना, परिणाम क्या हुआ ? जब अजीज की सेना से हथियार छीनने के लिये छापा मारा गया, मैंने सोवियत सिपाहियों पर गोली चलाई। मान लिया कि मैं आत्म-रक्षा के लिये ही गोली चला रहा था परन्तु मेरी गोली से तुम, मावेद या तिशेको, कोई भी मर सकता था। मुझे चाहिये था कि ऐसी अवस्था में राइफल नीचे डाल खडा हो जाता। हो सकता था, मैं गोली खाकर मर जाता परन्तु जो लोग जनता के लिये, सही काम के लिये लड़ रहे हैं उन्हे मारने से तो स्वयं मर जाना भला था। तुम कहते हो चर्नीशोव मुझे अब भी बुला रहा है, मुझे मुआफ कर देने के लिये तैयार है परन्तु मैं अपने अपराध को स्वयं जानता हूँ, मैं जनता के सम्मुख अपराधी हूँ। उस समय मेरे दिमाग में कुलीखा के लिये घृणा और भय घुसा हुआ था। चर्नी ने कहा था राज जनता का है, कुलीखा का नहीं। परन्तु मुझे भरोसा न हुआ। अब उसकी ही बात ठीक निकली। यह भी मेरी ग़लती थी। तुम लोग मुझे मुआफ करने के लिये तैयार हो परन्तु मैं अपने अपराध का बदला चुकाऊंगा। मैं पहले अजीज से साफ हो जाऊंगा। मेरी तरह भूल करने वाले और कितने ही लोग वहाँ हैं। मैं उन सबको समेट कर तुम्हारे यहाँ आऊंगा या अपने अपराध के दण्ड में जान दे दूंगा।"

अरतैक दिल भर आने से चुप हो गया। अशीर भी चुप रहा। वह जानता था, अरतैक को समझाने का कुछ लाभ नहीं। वह जिद्दी आदमी है। उसके मन में जो समा गया, वही करेगा। अरतैक यदि अपने अपराध का बदला चुकाना चाहता है तो वह उसे क्यों रोके ? उसे अपना मन हलका करने का मौका देना ही ठीक है।

अशीर उठ खड़ा हुआ और विदाई के लिये अपना हाथ अरतैक की ओर बढ़ा दिया। अरतैक की आखे अशीर से मिलीं। इन आखों की सफाई ने अरतैक के मन का सकोच और मैल धो दिया। दोनों मित्रों ने बहुत दिन बाद मन के पूरे उच्छ्वास से हाथ मिलाया। अशीर का हाथ थामे हुये अरतैक ने कहा—चर्नी से कहना मैं आऊगा, अपने अपराध का बदला चुका कर आऊ गा। मुझे भूल न जाना।"

उन दिनों किसी भी आदमी के किये राजनैतिक सघर्ष मे निश्पक्ष बने रहना सम्भव न रहा था, या तो क्रान्ति के पक्ष में होते या क्रान्ति के विरोध में। उसी साफ, कई घुड़सवारों से घिरा किजिलखा अरतैक की छोलदारी के सामने आ पहुंचा। जीन से उतरे बिना, अरतैक के सलाम कर किजिलखा बोलाः—

"अरतैक, अजीजखा ने तुम्हे सलाम कहा है। वह मुद्दत से तुम्हारा इन्तजार कर रहा है। आये नही। भाई अगर निमत्रण की जरूरत थी तो मैं निमत्रण लेकर आ गया हू। अब उठो, जल्दी आजाओ।"

अजीजखा के साथियो मे किजिलखा बहादुर और ईमानदार आदमी था। अरतैक उसका भरोसा और आदर करता था—"यहा कैसे आये किजिलखां ?"

अरतैक ने प्रश्न किया—"क्या दिहात में गड़रियों को बटोरने आये हो ?"

"क्या अजीजखा गड़रियों को खोजता फिरता है।"

"तुम समझते हो मैं यहा दाता लोगों की प्रतीक्षा में बैठा हू !"

"क्या बात करते हो अरतैक, क्यों बिगड रहे हो ?"

अजीजखा के यहां पुलाव सही पर यहा क्या तुम्हारे लिये सूखी रोटी

का टुकड़ा भी नहीं है ?

"अरतैक तुम भी कहा से कहा बात उछाले जाते हो !"—किजिलखा ने घूमकर अपने सवारो की ओर देख हुक्म दिया—"घोडे एक तरफ बाध दो !"

अरतैक ने चाय से सिपाहियो की खातिर की और बोला"—किजिल-खा भाई, मैं चलने के लिये तो तैयार हू परन्तु मेरे पास घोडा नहीं। अल नजर के तवेले मे अजीजखा का फौज के लायक एक बढिया घोडा बधा है। वही घोडा मँगवा लो। अलनजर की रुह जन्नत मे दुआ देगी।"

अलनजार के यहा से मालकौश आ गया। आधे घटे के बाद अरतैक चलने के लिये तैयार हुआ तो ऐना की आखों मे आसू आ गये। अरतैक ने कहा—"वाह यह क्या ? तुम्हारे जैसी समझदार औरत की यह हरकत ?"

ऐना मुस्करा दी उसकी आखों में छलकी बूदे ऐसे चमक उठी जैसे पखड़ियों पर खडी ओस की बूदे बाल सूर्य की किरणों मे झलमला उठती हैं।

२३

अगलान पहुच कर अरतैक ने देखा—अजीज ने तीन सौ से अधिक घुड़सवार जुटा लिये थे। अजीज अपने विचार में अपने मन्न विरोधियों को समाप्त कर चुका था। उसकी खून की प्यासी आखे और भी खूनी होगई थीं। उसके सिपाही भी लूट मार के अवसर के लिये उतावले हो रहे थे। वे लोग खूब खा पीकर मुटा रहे थे और बेकार बैठे बात-बात पर आपस में झगड़ बैठते और एक दूसरे का गला काटने के लिये झपटते रहते।

अजीज ने अरतैक का स्वागत आत्मीयता से किया। बातचीत विशेष न हो पाई। अजीज अपनी तैयारियो में बहुत व्यस्त था। मदीरईशान ने उसे अश्काबाद में सोवियत के विरुद्ध बगावत हो जाने और 'तुर्कमान राष्ट्रीय कमेटी' के. ज़ार की सेना के साथ मिलजाने के फैसले की सूचना भेज दी थी। अजीज इस अवसर से लाभ उठाने का निश्चय कर चुका था। सिपाही आपस मे तेजेन और काहका रेल स्टेशन पर छापा मार कर कब्जा कर लेते की बाते कर रहे थे लेकिन अजीज़ जाने किस ख्याल से समय टाले जा रहा था। अरतैक अजीज के यहाँ नित्य ही अगरेज अफसरों को आते जाते देख विस्मित था।

अज़ीज के यहाँ आने से पहले अरतैक ने बहुत धीरज से काम लेने का निश्चय किया था। उसने यहां आते ही अनुभव किया कि उसे धीरज की बहुत कठिन परीक्षा देनी होगी। अजीज के खेमे में रहना ही उसे असह्य जान पड़ रहा था। जिस पर नित्य ही ऐसी घटनायें होती कि विरोध में उसका खून खौल उठता। इसके अतिरिक्त उसे अपनी कमान के सिपाहियों का ख्याल भी था। यह सिपाही उसे बहुत मानते थे उस पर भरोसा कर जीने मरने के लिये तैयार थे। अरतैक ने अबकी बार यहा आकर अज़ीज के पुराने सहायक केलखा से भी घनिष्टता जमानी थी। केलखा भी अजीज के अत्याचारों और नादिरशाही से उकता चुका था। उन लोगों ने आपस में

निश्चय कर लिया था कि यदि दोनों मे से किसी पर सकट आया तो परस्पर सहायता करेंगे !

उनकी इस आपसी निश्चय की परीक्षा का दिन भी जल्दी ही आगया। एक जागीरदार ने अजीज के यहाँ आकर शिकायत की कि रात में आकर किसी ने उसके खेतो मे से आधी फसल काट ली है। जागीरदार को अपने गाव के एक नौजवान पर सन्देह था। अजीज ने घुडसवार भेजकर नौजवान को पकड मंगवाया।

नौजवान ने गिड़गिड़ाकर दुहाई दी कि उसने यह काम नहीं किया। उसे इस घटना के बारे में कुछ पता भी न था।

"हम अभी तुम्हे सब बताये देते हैं"— अजीज ने नौजवान को उत्तर दिया। अजीज के इशारे पर दो सिपाही आगे बढ आये। उन लोगों ने फुर्ती से नौजवान के सब कपडे उतार डाले। उसे धरती पर पट लिटा कर एक सिपाही उसकी पिंडलियो पर और दूसरा कंधों पर बैठ गया। धूप में दुबले पतले नौजवान की एक एक पसली दिखाई पड रही थी। अजीज ने फिर इशारा किया। दो और सिपाही चमडे की बटी हुई रस्सियों के कोडे लेकर आये और नौजवान के दोनों ओर खडे होकर उसकी पीठपर कोड़े बरसाने लगे। कुछ ही पल मे नौजवान की पीठ लाल होकर नीली पड गई। वह अपनी पूरी ताकत से चीख रहा था—"हाय मैं मर गया। मैंने चोरी नहीं की।"

अपनी छोलदारी मे बैठे अरतैक ने यह दर्दनाक चीखे सुना। उससे रहा न गया। वह इस दृश्य के चारो ओर घिरी भीड़ की ओर चला आया। भीड़ मे फस कर उसने सिपाहियों के हाथ से कोड़े छीन लिये। नौजवान को दबा कर बैठे सिपाहियों को परे धकेल दिया। नौजावन की पीठ से मांस के लोथडे उठ आये थे और खून बह रहा था। उसकी बाह थाम अरतैक ने उसे पांव पर खड़ा किया।

अजीज की ओर देख वह बोला—"ऐसा अन्याय क्यो करा रहे हो?"— अजीज की आखों मे खून उतर आया। झुंझला कर उसने कहा—"तुम कौन हो मेरे हुक्म में दखल देने वाले।" सिपाहियों को उसने हुक्म दिया—"इसे पकड़ कर गुस्ताखी के लिये अभी कोडे लगाओ।"

सिपाही अरतैक की ओर बढ़े तो उसने रिवाल्वर निकाल लिया—"जो आगे आयेगा, उसका सिर उड़ा दूगा।"

इतने मे केलखा और अजीज की कम्पनी के सिपाही आगे बढ आये। अजीज क्रोध में आपे से बाहर हो स्वय ही अरतैक की ओर झपटा। अरतैक ने रिवाल्वर उसकी ओर साधा। यह देख अजीज़ ठिठक गया और उसने पुकारा—" केलखा !"

"हुक्म मालिक !"—केलखा ने जवाब दिया।

"मेरा हुक्म है, अरतैक को गोली मारदो।"

"मालिक कितने आदमियों को तुम गोली मार चुके हो ? अब हम लोगों को गोली मारने की बारी आ गई !"—केलखा ने प्रश्न किया।

"हूँ, तुम भी उसका साथ दे रहे हो !"

"मालिक मैं इन्साफ का साथ दे रहा हूँ। मेरे खयाल में अरतैक भी इन्साफ की बात कर रहा है।"—केलखा ने उत्तर दिया।

अजीजखा इधर उधर देख किजिलखा को ढूढ रहा था। उसे याद आया कि किजिलखा को उसने किसी काम से छावनी से दूर भेजा हुआ है। बेबस हो कर उसका हाथ अपनी कमर में बधे रिवाल्वर की ओर गया। उसी समय भीड मे शोर मच गया।

अरतैक की टुकडी के सिपाही चिल्ला रहे थे—"अरतैक, हुक्म दो हम अभी इन लोगों को गोली मारदें !"

"जालिम तबाह हो !"

"अरतैक हमारा खान है।"

यारमुश काजी अजीज़ को आस्तीन से थाम एक ओर ले गया और समझाया—"क्या बेवकूफ लोगों को मुंह लगा रहे हो ? तुम इन लोगों को रहने दो। होश आयेगी तो अपने आप तुम से मुआफी मांगेगे। अजीज़ अभी शान्त भी न हो पाया था कि एक अर्दली ने आकर खबर दी:—"अश्काबाद से सरकारी आदमी आये हैं।"

अजीज ने इन मेहमानों को ले जाकर बैठाने के लिये हुक्म दिया और अपना मन शान्त करने के लिये एकान्त में जा लेटा। वह सोच रहा

था—"जिन लोगों को अपने हाथों बनाया वही लोग आज मुझे मुह चिढा रहे हैं। यह सब क्या हो रहा है? अरतैक की यह हिम्मत की मेरे हुक्म का विरोध करे? खैर, अरतैक वे समझ है तो इस केलखा को मुझसे क्या शिकायत है? यह आदमी टुकडों के लिये भटक रहा था। दूसरे लोगों का बोझ ढो रहा था। मैंने इसे आदमी बना दिया। सौ घुड़सवारो का सरदार बना दिया। आज यह मुझे आखें दिखा रहा है। यह मेरी बेवकूफी है कि मैंने इन लोगों को इतना मुह लगा लिया। अरतैक को तो मैं आज ही रात खत्म करवा दू परन्तु उसके साथ के सौ घुडसवार उसी से मिल गये हैं। यह लोग बिगड खडे होंगे। यह लोग मेरे घोडे और हथियार लेकर मेरे ही दुश्मन बन जायगे। क्या है मेरी किस्मत? केलखा का भी क्या विश्वास? वह भी अगर छोडकर चलदे तो मैं निहत्था रह जाऊगा। जुनैदखा में क्या बात है? वह कैसे अपने दुश्मनो को पल भर मे कुचल डालता है? • नहीं, अभी अरतैक से झगडा करने का वक्त नहीं है। उसे चुपके चुपके खत्म करना होगा। अभी उसे बुलाकर समझा बुझा कर शान्त किया जाय• • ।"

यह निश्चय कर वह अश्काबाद से आये राजदूतों से मिलने के लिये गया। इन लोगो ने अजीजखा को नियाजबेग और ओराज सरदार की ओर से उसकी वीरता और सफलता के लिये बधाई देकर एक पत्र नियाजबेग की ओर से और दूसरा जारशाही सेना के कमाण्डर की ओर से, दिया। इन पत्रों मे सोवियत के विरुद्ध विद्रोह मे अजीज के सहयोग पर प्रसन्नता प्रकट करके उससे अपना सहायक बन जाने का अनुरोध किया गया था। उसे विश्वास दिलाया गया था कि आवश्यकता पडने पर हथियार, धन और योग्य अफसर भेज कर उसके सिपाहियो को युद्ध शिक्षा देने में सहायता दी जायगी और उसे तेजेन का स्वतन्त्र खान स्वीकार कर लिया जायगा। उसके प्रबध मे किसी प्रकार का दखल न दिया जायगा।

पत्र लाने वाले राजदूतों ने अजीज की खूब प्रशसा कर उसे फुसलाया। इस पत्र से अजीज की बरसों की महत्वाकाक्षा पूर्ण हो रही थी। उसने तुरत ही एक सधि पत्र पर अपनी शर्तें देकर दस्तखत कर दिये। उसकी मागे थी.—उसे आवश्यकतानुसार हथियार और धन सहायता के लिये दिये जायगे और उसके राज प्रबध मे किसी प्रकार का हस्ताक्षेप न किया जायगा।

अजीज इस संधि पत्र पर हस्ताक्षर कर ही चुका था कि उसे बुखारा के अमीर के राजदूत तोगसा बे के आने का समाचार मिला। तोगसा बे अपने साथ अजीज के लिये अमीर की भेजी हुई भेंट लेकर आया था— पचास मन हरी चाय, बहुत कीमती पोशाकें और सूर्य के रूप में बना एक सोने का बड़ा पदक उसने पेश किये। तोगसा बे को बोलशेविकों के डर से मारी का चक्कर काट कर आना पड़ा था। बुखारा का राजदूत स्वयं भी सुनहरी जरी के चोगे पर रूपहली जरी की पेटी लगा सिर पर खूब बड़ी पगड़ी बांध कर अज़ीज़ के सामने पेश हुआ। बे का चेहरा अनार के फूल की तरह लाल हो रहा था। अपनी भारी तोंद को जैसे तैसे सम्भाल अज़ीज़ के सामने कमर तक झुक सलाम कर उसने कहा—

"ऐ वालिये दीनो दुनिया, अमीरुलअमीर, अफजलुलअकरम, आलिमुल आलमीन, खानेखाना नूरुलइस्लाम ! शहनशाहे बुखारा जहांपनाह की खिदमत में अपने दोस्ताना सलाम अरसाल फर्माते हैं।"

"अमीर पर खुदा की बरकत हो!"—अजीजखां ने तोगसा बे के लम्बे सम्भाषण के उत्तर में संक्षिप्त सा उत्तर दिया।

"पाक बुखारा के बारा मुफ्ती, और शेख उल इस्लाम खानेखाना की सेहत के लिये दुआ देते हैं और खुदावन्द से इल्तजा करते हैं कि जहांपनाह का इकबाल दोबाला हो। खुदा का हजार शुक्र है मुझे अमीरेतेजेन की मुनव्वर हस्ती का नियाज पाने में कामयाबी हुई।... ..."

अज़ीजखां तोगसा बे के मुंह से झड़ते दुर्बोध शब्दों को आखें झपकता हुआ सुन रहा था। बे ने फिर एक बार झुक कर सलाम किया, और अजीज ने फिर यत्न से उचित शब्द याद कर अपना जवाब दोहराया— "शाहनशाहे बुखारा पर खुदावन्द का करम हो!"

तोगसा बे ने अमीर बुखारा के भेजे हुये उपहार अजीज के सामने पेश कर सोने का दमकता हुआ सूरज अपने हाथों से अजीज के सीने पर टांक दिया। अजीज का चेहरा खुशी से चमक उठा।

"अमीर बुखारा ने जो इज्जत मुझे बख्शी है उसके लिये मैं उनका शुक्रिया कैसे अदा करूं! खुदा उनका इकबाल दोबाला करे"—अजीज ने फिर कहा।

इस कठिन काम को सफलता पूर्वक कर पाने के सतोष से तोगसा बे का सीना फूल उठा। वह फिर बोला—"जहांपनाह, खानेखाना, अमीरे तेजेन ने इस्लाम की जो खिदमत की है उसके लिये शहनशाह बुखारा-हुजूर की खिदमत अपना शुक्रिया और एहतराम फर्मा कर पैग़ाम देते हैं कि अगर हुजूर को कभी किसी किस्म की मदद की जरूरत हो तो ऐसी खिदमत का मौका शहनशाह बुखारा अपने लिये खुशकिस्मती खयाल करेंगे। शहर तेजेन बुखारा से अगरचे दूर है लेकिन अमीरे-बुखारा का दिल खानेखाना की याद से हमेशा पुर रहता है। शहनशाह बुखारा को उम्मीद है कि जमीन पर अमन कायम हो पर हुजूर के बुखारा तशरीफ लाने का मौका आयगा और अमीर-बुखारा को खानेखाना के इस्तकबाल का खुशवार मौका हासिल होगा।"

"बशर्ते जिन्दगी मैं अमीरे-बुखारा की खिदमत मे हाजिर होने की कोशिश करूगा।"—अजीज ने उत्तर दिया।

तोगसा बे को इस बात की चिन्ता न थी कि अजीजखा उसकी बात समझ रहा है या नहीं। वह उसे अपनी विद्वत्ता से प्रभावित कर देना चाहता था। उसने अरबी, फारसी के दुर्बोध शब्दों की बौछार में बताया कि बुखारा के अमीर वर्तमान राजनैतिक स्थिति का लाभ उठा कर, इस्लाम की रक्षा के लिये अपने राज्य का विस्तार दूर तक कर लेना चाहते हैं और अजीज़खा को तुर्कमानिया मे अपना सूबेदार (वायसराय) नियत कर देना चाहते हैं।

उस राजनैतिक गड़बडी मे अजीजखा अपने आप को सहसा ईरान के शाह की बराबरी का बादशाह समझने लगा था। दो बरस पहले उसे कोई पहचानता नही था और अब कई राज्यों के राजदूत उसे अपना सहायक बनाने के लिये उसके यहा पहुंच उसकी खुशामद कर सभी प्रकार की सहायता देने के वायदे कर रहे थे। अजीज सोच रहा था—"मेशेविका और क्रान्तिकारी समाजवादी पार्टी से मैं नये ढग की बन्दूकें और तोपें लेलू और फिर बुखारा जाऊ। बुखारा मे पहले अमीर के सामने सिर झुका कर सलाम करने से मेरा क्या बिगड जायगा? तोगसा बे समझेगा मुझे फसा लिया। कौन फसता है, यह बाद में पता लगेगा। बाद मे मैं फौजें बढ़ाकर अश्काबाद के मेशेविकों को, उनके ही हथियारों से कुचल डालूंगा। सारे

तुर्कमानिया की रियाया मेरे सामने सिर झुकायेगी ......।"

अश्काबाद और बुखारा के राजदूतों से बात खतम कर अजीज़ ने अपने सलाहकारों से सलाह ली और फिर तेजेन की प्रजा के नाम फर्मान लिखवायाः –

'हमारे मौलवियों का फतवा है कि इस्लाम से मुनकिर हो जाने वाले काफिरों के खिलाफ जिहाद करना सब मुसलमानों का फर्ज है। शरीयत के हुक्म से हम जिहाद के लिये कमर बस्ता हैं। तेजेन की रियाया के नाम हमारा फर्मान हैः—इलाके के तमाम दारोगा और मुंशियों को हुक्म है कि बीस जुलाई के दिन सुबह के वक्त सब गावों से, हर पाच घरों के पीछे एक आदमी तेजेन शहर में पहुंच जाये। जो हाकिम इस हुक्म की पाबन्दी में कोताही करेगा, सख्त सजा का मुस्तहिक होगा। जो रियाया इस हुक्म से एतराज करेगी, वह गद्दार करार देकर बोल्शेविक समझी जायगी और मौत की सज़ा की मुस्तहिक होगी।"

फर्मान को मुस्तैदी से पूरा करने के लिये अजीज़ ने गाव गाव अपने सवारों के दस्ते भेजे कि बस्तियों से जरूरी सिपाही पकड़ लिये जाय और बस्तियों के सब घोड़े भी कब्जे में ले लिये जाय।

यह सब कर चुकने के बाद उसने अरतैक को बुलवाया। अरतैक भी मन ही मन पछता रहा था कि उसने जल्दबाजी में अवसर से पहले अजीज़ से झगडा कर लिया। इस भूल से उसका पहले से सोचा हुआ ढंग सरजाम बिगड जायगा। अजीज़ उस पर सन्देह कर चाहे जो कर बैठे। अभी उसे कुछ दिन और सीनेपर पत्थर रख प्रतीक्षा करना चाहिये था। अब सावधानी के लिये उसने जीनसाज कस कर अपने घोड़े मालकौश को तैयार कर लिया। अपनी टुकड़ी के सिपाहियों की आशंका से अपने चारों ओर पहरा दे उनसे स्पष्ट बातचीत कर लेना ही उचित समझा।

'जवानो,"—अपने सिपाहियों को उसने सम्बोधन किया। "बहुत दिन से हम लोगों का साथ है। हम लोगों ने एक साथ खतरे झेले हैं। हम लोग भाई भाई हैं। आप लोगों से विदा होते मुझे बहुत दुख हो रहा है परन्तु मेरे लिये अब यहाँ रहना ठीक नहीं। भाइयो, मेरा कहा सुना मुआफ करना।"

सिपाही सिर झुकाये चुप रह गये। अरतैक का दिल भर आया—"दोस्तो", यह दुनिया आना जानी है। आजकल का समय भी ऐसा है कि आदमी सुबह तख्त पर बैठा है तो शाम को सूली पर चढ जाय। तुम्हे छोड कर जाते नहीं बनता। पर बात ही ऐसी आ पडी है कि मैं अगर यहाँ बना रहू तो मेरी जान पर और तुम्हारी जान पर भी मुसीबत पड़ेगी। मैं चला जाऊँ तो शायद अजीज खा तुम्हे मुआफ कर दे। खैर, जिन्दगी रही तो फिर कही मिलेंगे।"

एक बूढ़े सिपाही ने गर्दन उठा प्रश्न किया—"तुम कहा जाओगे?"

"क्या कह सकता हू कहा जाऊँगा"—अरतैक ने गहरी सास ली—"अपने गाव लौट जांऊ या फिर जैसा मौका हो . ।"

"हमे अजीज खा से क्या लेना है? कहो तो अजीज खा से दो-दो हाथ कर देखें?"—सिपाही ने धीमे से कहा।

"नही, यह बात बनेगी नहीं"—अरतैक ने समझाया—"अजीज की ताकत हम लोगों से बहुत ज्यादा है।"

"तो हम लोगों को भी साथ ही ले चलो।"

अरतैक चुपचाप सोचने लगा, क्या करे? अपने साथ के घुड़सवारो को साथ लेकर लाल सेना मे जा मिलने के उद्देश्य से ही वह अजीज के यहाँ आया था। परन्तु इस काम के लिये अभी अवसर उपयुक्त न था। सोवियत सेना इस समय बहुत दूर थी और केवल एक सौ घुड़ सवार लेकर अजीज और जारशाही सेना का सामना करना केवल अपने सिपाहियों को कटवा डालना होता। सोवियत सेना के समीप आये बिना और उनसे सम्बन्ध स्थापित हुये बिना उनसे जा मिलने का यत्न करना मूर्खता ही थी। अभी प्रतीक्षा करना आवश्यक था। परन्तु उसके सिपाही बेचैन हो रहे थे।

"भाइयों"—उसने साथी सिपाहियों को समझाया—"इस बात के लिये अभी ठीक अवसर नहीं है। मगर मै अकेला जाऊ तो किसी तरह छिप कर भाग भी सकता हूँ परन्तु एक सौ सवारो का छिप कर भाग जाना कैसे सम्भव हो सकता है? अभी हम लोगों का यहा बना रहना ही ठीक है। परन्तु आप लोग वायदा कीजिये कि यदि अजीज ने मुझे यहा रहने न दिया तो मेरा इशारा पाते ही आप सब लोग मेरे साथ चले आयेंगे।" मन मे उसने

निश्चय किया कि अपना अवसर आने तक जैसे तैसे अजीज़ से सुलह बना कर रखनी होगी। इसलिये जब केलखा अजीज का सन्देश लेकर आया, अरतैक चुपचाप उसके साथ चल दिया।

अजीज ने अपने दोनो सेनापतियों से बात करते समय उस दुर्घटना का कोई जिक्र न किया। इस समय वह अपनी ऊंची और जिम्मेवार स्थिति में बात कर रहा था—"किजिल खां तो अभी लौटा नहीं"—वह बोला—हो सकता है, आज साझ तक आजाये। जवानों, अभी तक तो हम लोग तेजेन के इलाके मे अपने कदम जमाने में ही लगे रहे लेकिन अब हमें अपने कदम आगे बढ़ाने होंगे। इस समय हमारे सामने बहुत गम्भीर स्थिति आगई है। कल, नहीं तो परसों हमें बोल्शेविकों पर धावा बोलना होगा। इसलिये तुम लोगों को बहुत ख्याल से पूरी तैयारी करनी होगी। हर बात को खूब ब्योरे मे ध्यान देकर देख लेना चाहिये। एक एक घोड़े के जीन, लगाम और नाल तक जाच लेने चाहिये।"

अरतैक और केलखा दोनो चुप रहे—"तुम लोगों का क्या ख्याल है?"—अजीज ने पूछा। अरतैक से कुछ कहते न बन पड़ा। झूठी बात बनाना और खुशामद करना उसे आता न था। अपने साथी को चुप देख केलखा बोला—"खां, तुम हमारे मालिक हो! हम तुम्हारी ताबेदारी में हैं। लेकिन तुम हमारा कुछ खयाल नहीं करते।"

"ठीक है भैया केलखा"—अजीज ने उत्तर दिया—"कभी परेशानी में आदमी आपे से बाहर हो जाता है, जैसे आज हो गया।"

"खान, तुम अपने दरबारियों से राय लेकर सब बातें तय करते हो! हमें इसमें क्या शिकायत? लेकिन हमें तो यह भी मालूम नहीं होता कि आज हमें क्या काम करना है। अगर हमें पता रहे कि हमें फलां काम के लिये तैयार रहना है तो हमें जो कुछ सुविधा होगी, उसमें तुम्हारा ही फायदा अधिक होगा। खून तो अपना हमीं को बहाना पड़ता है। हम भी तो आखिर आदमी हैं। हमें यही मालूम हो कि अपना खून बहा किस बात के लिये रहे हैं।"

"केलखा, जो बात हो गई, उसके लिये मुझे भी दुख है पर अब उसे याद करने से क्या फायदा? ऐसी बातें बार बार नहीं हुआ करतीं"—

अजीज ने अरतैक को सम्बोधन किया—"अरतैक, तुम जानते हो, मेरा मिजाज जरा गरम है। वह बात आई गई। मैंने तो अभी कहा कि मुझे खुद उस बात का दुख है। पिछली बातें छोड़ कर अब आगे के लिये सोचना चाहिये। ज्यादा से ज्यादा परसों। मान लो, हम लोगों को अपने घोड़े और सिपाही लेकर रेलगाडी पर चढना है। बताओ, उसके लिये क्या क्या तैयारी जरूरी है?"

गहरी सास खीच अरतैक ने उत्तर दिया—"अजीजखा, मेरे लिये यही अच्छा है कि अपनी तलवार तुम्हे लौटा दू।"

"अरतैक, यह तुम्हारी ज्यादती है। उसी बात के पीछे पडे हो। आदमी से और तो क्या, नमाज मे भी गलती हो सकती है। अब काम करो। सवाल सिर्फ तेजेन का ही नही ·　　·।"

"जैसे तुम आदमियो के साथ जुल्म करते रहे हो ऐसे ही तुम पूरे मुल्क के साथ करोगे"—अरतैक बोल उठा।

"जब तक हम लोग पूरे तुर्कमानिया को आजाद नही कर लेते, हम लोग हथियार नहीं डाल सकते"—अजीज बोला जैसे उसने अरतैक की बात समझी ही नही।

"हमे आजाद होना है तो सबसे पहले तुम्हारे ही गले मे फदा डाल कर पेड़ से लटकाना पड़ेगा" मन ही मन अरतैक सोच रहा था। केलखां ने बात सम्भाली—"हम लोगो मे कोई आदमी ऐसा नही जो वक्त पर हथियार डाल कर दगा दे जाय। लेकिन सभी लोगो पर उनके सामर्थ्य भर ही बोझ डालना चाहिये।"

अरतैक और अजीज की आखे पल भर को मिल गई। अजीज का भाव था—"खैर, अभी तो मैं अपमान निगले ले रहा हूँ, वक्त आने पर समझूगा।" अरतैक के मनमे था—"मैं तुम्हारे फदो को खूब जानता हूँ। तुम्हारे जाल मे अब नही फसने का। मैं भी अपने मौके की तलाश में हूँ।"

———

२४

तुर्कमानिया पर भयंकर दुर्दिन छा रहे थे।

अश्काबाद में मेंशेविकों, समाजवादी क्रान्तिकारियों और सफेद (जारशाही) सेना ने मिल कर सोवियत के विरुद्ध बगावत कर शासन अपने हाथ में ले लिया और रेलवे लाइन के साथ साथ, पूर्व-पश्चिम में आतंक फैलाना शुरू किया। जगह जगह तारें देकर हुक्म दिया जाता कि सोवियत व्यवस्था को तुरंत समाप्त कर दिया जाय! जगह जगह रेलवे लाइनें उखाड़ दी गईं, जगह जगह शस्त्रागार लूट लिये गये। शीघ्र ही 'क्रास्नोवोदस्क' पर भी इनका कब्जा हो गया। सोवियत से सहानुभूति रखने वाले लोगों को सामूहिक रूप से गिरफ्तार कर क़त्ल किया जाने लगा। जारशाही सेना के अफसर बोल्शेविकों और उनसे सहानुभूति रखने वाले मजदूरों से बर्बरता पूर्ण बदले ले रहे थे। जेलखाने ठसाठस भर गये। जो लोग इस आतंक से जंगलों और पहाड़ों की ओर भाग रहे थे, उन्हें भी पकड़ कर क़त्ल कर दिया गया।

इन अत्याचारों, लूटपाट और काली करतूतों में भाग लेने के लिये शहरों के गुण्डे, चोर, उचक्के और देहात के डाकू-क्रान्तिकारी समाजवादी दल और जारशाही सेना के साथ आमिले। अंग्रेज कूटनीतिज्ञों की सलाह से जारशाही सेना के अफसरों ने आठ सौ आदमियों की एक स्थानीय स्वयं सेवक सेना बनाई जिसमें जागीरदारों, व्यापारियों के लड़के, उनके निजी नौकर और कुछ भोले भाले किसान भी मिला लिये गये थे। उस स्वयं सेवक सेना में से लगभग तीन सौ आदमियों को मार्ग का मोर्चा भेज दिया गया। २१ जुलाई तक प्रायः सम्पूर्ण तुर्कमानिया जारशाही सेना के हाथों आ गया। केवल 'कुश्क' का किला उनके हाथ न आ पाया। इस किले की रक्षा देशभक्त जनरल 'पोलतोरात्स्किन' की कमान में मजदूरों की एक सेना कर रही थी। इसी सेना की एक टुकड़ी चार्दजोव से आने वाली

रास्तो पर डटी जारशाही सेना को रोके हुये थी।

तुर्किस्तान के बोल्शेविको ने सब अत्याचार और सकट सह कर भी ज़ारशाही और अग्रेजी सेना के सामने सिर नहीं झुकाया। अश्काबाद के शासन की बागडोर जारशाही के हाथ मे जाने की खबर पाते ही तुर्किस्तान की केन्द्रीय सोवियत और जनता की प्रतिनिधि सभा ने श्रम कमिस्सार साथी पोल्तोरातस्की की अध्यक्षता मे एक प्रतिनिधि मण्डल तुर्कमानिया भेज दिया। पोल्तोरातस्की का प्रतिनिधि मण्डल रास्ते के सभी शहरों मे ठहर ठहर कर आगे बढ रहा था। वही सभी स्थानों मे सार्वजनिक सभायें करके राजनैतिक स्थिति सम्भालता और जनता की भावना समझने का यत्न करता। स्थानीय सोवियतो के प्रतिनिधि भी इनके साथ सम्मिलित होते जा रहे थे। कगान मे जारशाही के समर्थको ने उसे सभा नहीं करने दी। मण्डल को गिरफ्तार करने की भी कोशिश की। प्रतिनिधि मडल बड़ी कठिनाई से गिरफ्तारी से बच पाया।

इस पर भी पोल्तोरातस्की डरा नही। वह पुराना और अनुभव क्रान्तिकारी था। स. १९०५ से प्रजातत्रवादी दलका मेम्बर और बाकू के मजदूर आदोलन मे भाग ले चुका था। वह मजदूर परिवार की सतान था। बचपन से प्रेस मे कम्पोजीटरी करके अपना निर्वाह करता आया था। इतनी अवस्था में उसे बुखारा के मजदूरों ने "अखिल रूसी काग्रेस" के लिये अपना प्रतिनिधि चुना था। इसके बाद वह बोल्शेविक पार्टी का मेम्बर बन गया। ताशकन्द मे वह लाल सेना के सिपाही की स्थिति से मोर्चे पर जमकर क्राति विरोधी जारशाही सेना से लड चुका था। वह 'राष्ट्रीय आर्थिक आयोजन समिति' का सदस्य भी था और क्रान्ति के पश्चात तुर्किस्तान के पहले समाजवादी पत्र "सोवियत तुर्किस्तान" का सस्थापक और सम्पादक भी था। सोवियत के प्रतिनिधि मण्डल के प्रधान की स्थिति स वह शत्रु से घिरे नगरों मे निर्भय निधडक चला जाता। पोल्तोरातस्की को पूरा विश्वास था कि वह अमर उद्देश्य और जनता की अजेय शक्ति का प्रतिनिधि है।

चार्दिजोव मे क्रान्तिकारी मजदूरों की बहुत बडी भीड ने पोल्तोरातस्की का स्वागत किया और क्रान्ति की विजय के लिये आमरण युद्ध की प्रतिज्ञा की। मारी की सोवियत के अधिकाश सदस्य विश्वास के योग्य नहीं हैं। उनकी सहानुभूति जारशाही के प्रति है। पोल्तोरातस्की को मिलने आनेवाले

लोगों में चर्नीशोव भी था। मारी पहुच कर चर्नीशोव ने स्थानीय राजनैतिक स्थिति को समझने का यत्न किया। यहा उसे अश्काबाद से आया हुआ तिशको भी सहायता के लिये मिल गया। तिशेको इस इलाके की कठिन स्थिति और शहर की संदिग्ध स्थिति से पहले ही परिचित हो चुका था।

तिशेंको ने चर्नीशोव से करगेज ईशान, का परिचय कराया। करगेज की दाढ़ी घनी और काली थी, आखे तीखी और उज्जवल। करगेज ईशान मारी की सोवियत का सदस्य था। मजदूरों और किसानो को उस पर बहुत विश्वास था। करगेज कठिनाई के समय सोवियत सिपाहियों को लगातार राशन पहुंचा रहा था। चर्नीशोव को भी यह आदमी विश्वासपात्र और बहुत समझदार जान पड़ा। उसने सोचा, यह आदमी स्थानीय जनता से सोवियत का सम्बध बनाये रखने मे सहायक हो सकेगा।

चर्नीशोव ने करगेज ईशान का परिचय पोल्तोरातस्की से करादिया। पोल्तोरातस्की का भी करगेज ईशान भरोसे का आदमी जचा और उसे मा प्रतिनिधि मण्डल में सम्मिलित कर लिया गया।

चर्नीशोव और दूसरे विश्वासपात्र साथियों से बातचीत करने के बाद पोल्तोरातस्की को मालूम हुआ कि मारी की अवस्था अनुमान से कहीं अधिक चिन्ताजनक थी। जनता को बहकाने वाले लोग शहर के चारों ओर घिर आये थे और जगह जगह सोवियत के विरुद्ध खुला प्रचार हो रहा था। चर्नीशोव ने सोवियत सेना के लिये गावों से कुछ घोड़े इकट्ठे किये थे। गाव वालों ने बहकावे में आकर इन घोड़ों को इधर उधर कर छिपा लिया। लाल सेना सफेद सेना के आक्रमण का सामना करने की तैयारी में लगी हुई थी। शहर मे अभी हुई गड़बड़ की ओर ध्यान देने का किसी को अवसर न था। रेलवे में काम करने वाले मज़दूर साथियों ने खबर भेजी कि अश्काबाद से फौजों से भरी गाडिया चली आ रही थीं। चर्नीशोव का अनुमान था। कम से कम छः सौ सफेद सिपाही मारी पर आक्रमण करने के लिये आ रहे हैं।

ताशकन्द से चलते समय पोल्तोरातस्की को आशा थी कि सोवियत विरोधी बगावत रक्तपात के बिना ही वश को जा सकेगी। परन्तु अब उसे दूसरी बात दिखाई दे रही थी। उसने मारी में एक सार्वजनिक सभा कर जनता को समझाने का यत्न किया। इस सभा का प्रभाव भी अच्छा हुआ।

परन्तु जारशाही के छः सौ सिपाहियो से मोर्चा ले सकने की सामर्थ्य सोवियत सेना में न थी। पूरी तैयारी के लिये समय भी न था। सफेद सेना उसी साफ़ पहुचने वाली थी।

पोल्तोरातस्की ने प्रतिनिधि मण्डल के सब लोगों को चर्नीशोव के साथ मारी से छब्बीस मील दूर बैरमअली की मजदूर बस्ती मे भेज दिया। स्वय लाल सेना की एक छोटी टुकड़ी ले उसने चार्दीजोव जाकर जारशाही सना की राह रोके रहने का निश्चय किया। चर्नीशोव उसे अकेला छोड़ कर जाने के लिये तैयार न था। पोल्तारातस्की ने उसे समझाया कि वह ताशकन्द से सोवियत सेना को बुला आया है। यदि उसका निश्चय किया कार्य-क्रम ठोक स निभ गया तो आशका को कोई बात नहीं और यदि हालत खराब होगी तो वह स्वयम ही बैरमअली पहुच जायगा। यह खबर मिल चुकी थी कि ताशकन्द से आने वाला सेना कगान तक पहुच चुकी है।

पोल्तोरातस्की ने तैयारी का अवसर पाने के लिये और जारशाही सेना को राह में अटकाने के लिये अश्काबाद में टेलीफोन कर फुन्तिकोव से समझौते की राह निकालने की बातचीत शुरू की। पोल्तोरातस्की ने पहला प्रश्न फुन्तिकोव से पूछा "—अश्काबाद मे क्या हालत है ?" फुन्तिकोव ने टालने के लिये उत्तर दिया—"तुम अश्काबाद आ जाओ ! यहा की हालत भी मालूम हो जायगी और बात-चीत भी ठीक ढग से हो सकेगी। पोल्तोरातस्की को इस जाल में फसना स्वीकार न था। वह तार-घर से लौट रहा था उस समय दफ्तर की घड़ी रात के तीन बजा रही थी। काले आकाश में उज्वल तारे टिम टिमा रहे थे। दिन की गरमी शातल बयार में बदल गई थी। सूनी रात मे स्टेशन पर शन्टिग करने वाले इजनों की सीटिया और फुफकारों के सिवा और कोई शब्द न सुनाई दे रहा था।

पोल्तोरातस्की तुर्किस्तानी जनता के प्रतिनिधि मण्डल के प्रधान मे टेलीफोन पर बात करने के लिये स्टेशन पर पहुँचा। प्रधान से फोन मिलाने में देर हो रहा थी इसलिये पोल्तोरातस्की तिशेंको के साथ स्टेशन के प्लेटफार्म पर टहल रहा था। सहसा पूर्व की ओर लाल सेना के मोर्चे से गोली चलने का शब्द सुनाई दिया। फाइरिग की आवाज़ बढती जा रहा थी। तिशेंको को चौंकते देख पोल्तोरातस्की ने कहा—यह शहर की गड़बड़ी ही है और कुछ नहीं परन्तु जब गोली चलना बहुत देर तक न रुका तो

उसने तिशेंको से कहा—"साथी, मेरा खयाल है तुम जा कर देखो बात क्या है।"

"मैं तुम्हे अकेले कैसे छोड़ जाऊ?"

"यहाँ एक हुआ या दो, कोई खास फरक नहीं पड़ेगा। यह शोर बन्द होना चाहिये नहीं तो सारा शहर खोखला जायगा।"—पोल्तोरातस्की ने आग्रह किया।

तिशेंको झिझक रहा था, क्या करे? पोल्तोरातस्की ने उसके कंधे पर हाथ रख कर कहा—"साथी, अब झिझकने का समय नहीं। जैसे भी हो इस स्थिति को सम्भालना है। इस काम की जिम्मेवारी पार्टी ने हमें दी है। यहाँ हम दोनो रहे या एक क्या अन्तर पड़ेगा? मुझे तुम अकेले नहीं छोडना चाहते परन्तु वहाँ इतने आदमी खतरे में हैं। वहाँ की स्थिति सम्भाल कर तुम तारवर में आ जाना। मै वहाँ मिलूगा।"

ताशकन्द से टेलीफोन मिलाने में प्राय. एक घंटे का समय लग गया। पोल्तोरातस्की ने जन सभा के प्रधान को सारी की स्थिति समझाई। प्रधान ने आश्वासन दिया कि पहले भेजे गये सिपाहियों के अतिरिक्त वह एक और टुकडी तुरत मार्ग की ओर भेज रहा है।

पोल्तोरातस्की बहुत थक गया था कुछ मिनिट विश्राम कर लेने के लिये वह एक ओर बैठ गया। उसी समय जारशाही के सैनिकों की फौजी गाडी स्टेशन पर आ पहुँची। एक बन्दूक चलने की आवाज से स्टेशन गूँज उठा। पोल्तोरातस्की तुरत उठ स्टेशन के बाहर खड़े अपने घोड़े की ओर चला परन्तु जारशाही सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया और उसके हथियार छीन लिये।

पौ फट रही थी। शहर भर में जगह जगह गोलियाँ चल रही थीं। स्टेशन का प्लेटफार्म जारशाही के सिपाहियों से भर गया था। तिशेंको अभी तक लौटा न था।

तिशेंको ने अपने सिपाहियों के पास पहुँच कर देखा कि जारशाही सेना की हरावल से उनकी मुठभेड़ हो गई है। उसने हथियारों और गोला बारूद का गोदाम और आवश्यक सामान तुरन्त पीछे भेज देने की आज्ञा दी और अपने सिपाहियों को धीरे धीरे पेतनअली की ओर हट जाने के लिये कह दिया। उसे तारवर पहुँचने की जल्दी थी। [illegible] की स्थिति

साथ ले ले फिर खयाल आया, यों भी मुझे कौन पहचानता है। यहाँ आदमियो की जरूरत ज्यादा है।

लौटते समय तिशेको जिधर से भी बचकर निकलना चाहता, जारशाही के सिपाही सामने पड जाते। वह समझ गया, पोल्तोरातस्की के पास पहुच पाना कठिन होगा। वह अर्याक बाग की दिवारों की आड मे होकर आगे बढ रहा था। तारघर के पास पहुच कर देखा कि वहाँ जारशाही सिपाहियो का कब्जा हो चुका था। आड मे ही ठिठक कर वह सोच रहा था क्या करे? उसी समय उसे किसी की आवाज सुनाई दी:—"यह किसका घोड़ा है।"

"एक बोल्शेविक इस पर सवार था। वह ताशकन्द का कमिस्सार निकला"—उत्तर सुनाई दिया।

"कमिस्सार कहाँ है?"

"क्या मालूम? जेल भेज दिया गया कि गोली ही मारदी हो।"

तिशेको के शरीर से पसीना छूट गया।—क्या करे? बैरामअली लौट जाय? परन्तु पोल्तोरातस्की को खोकर वह चर्नीशोव और दूसरे साथियों को क्या मुह दिखायेगा? कुछ तो करना ही होगा? अपनी जान बचा लेना ही कौन बहादुरी है? यों ही लौट जाने मे कौन बोल्शेविकपना है? पर करू क्या? कैसे मालूम हो कि पोल्तोरातस्की है कहाँ?

अचानक याद आया जेल का सुपरिण्टेण्डेण्ट उसका पुराना परिचित है। अश्काबाद मे दोनो साथ साथ जेल मे सिपाही थे। सुपरिण्टेण्डेण्ट पुराने ढग का सीधा आदमी था, राजनीति और किसी पार्टी वार्टी से बेमतलब। तिशेको ने सोचा दाव चलाया जाय! शायद सीधा ही पड़ जाय। दिन भर वह छिपा रहा। रात पडने पर अपनी राइफल एक जगह छिपाकर वह निधडक जेल के दफ्तर मे पहुंचा। सुपरिण्टेण्डेण्ट ने उसे पहचाना तो विस्मित देखता रह गया। उसे खूब मालूम था कि तिशेको लाल सेना का कमिस्सार है। जारशाही सेना का कब्जा हो जाने पर वह कैसे वहाँ आ पहुचा?

तिशेको सुपरिण्टेण्डेण्ट की घबराहट भाप कर स्वयम ही बोला—"मैं तुम पर भरोसा करके आया हूँ। इस समय तुम्ही मुझे बचा सकते हो।"

"क्यों क्या बात है ?......मैं क्या कर सकता हूं ?"

"मैं लाल सेना से भाग कर आया हूँ। अगर सफेद सेना में और चला जाऊ तो वे लोग गोली मार देंगे या मुझे फिर मोर्चे पर भेज देंगे। मैं इस लड़ाई में अपनी जान नहीं देना चाहता पुरानी दोस्ती का ख्याल कर मुझे यहाँ कोई काम दे दो। यहाँ का काम मैं सब समझता हूं।"

सुपरिण्टेण्डेण्ट सन्देह से उसकी ओर देखता रहा। तिशोंको फिर बोला—मैं अपनी राइफल और रिवाल्वर यहाँ पास ही छिपा आया हूँ। तुम्हें जरूरत हो तो लादूँ ? मुझे उनका क्या करना है ? तुम चाहो बेच लेना। हथियार आजकल चौगुनी कीमत पर बिक रहे हैं।"

सुपरिण्टेण्डेण्ट ने कुछ पल आँखें झपक कर उत्तर दिया—अच्छा, सोचूगा। दो चार दिन मे बताऊगा।"

"मैं जाऊ कहाँ ?"—तिशोंको अधीरता से बोला—"तुम सब बात जानते हो। कहाँ जाऊ ? मुझे कोई काम देदो, मेहतर का, भिश्तीका, जान बचे किसी तरह !"

सुपरिण्टेण्डेण्ट कुछ देर सिर खुजाता सोचता रहा और फिर बोला—"भीतर के चक्कर में पहरेदार की जगह दे सकता हू।" उगली उठाकर चेतावनी दी—"देखो, कोई शरारत या धोखा न करना।" स्वर धीमा कर उसने समझाया—"भीतर के चक्कर में कमिस्सार पोल्तोरातस्की बन्द है। अगर कहीं वह निकल-भागा तो मेरा और तुम्हारा, दोनों का सिर काट लिया जायगा।" आधे घंटे बाद तिशोंको जेल के सिपाही की रिवाल्वर लगी पेटी कमर पर कस जेल के भीतर के चक्कर में जा पहुँचा।

पोल्तोरातस्की एक काल कोठरी में चुपचाप अकेला बैठा था। उसे मालूम हो गया था कि उसे गोली मार देने का हुक्म हो चुका है। कुछ घण्टों की ही बात थी। अपने बीते जीवन की बातें याद आ रही थीं— बचपन में धूप में खेलने समय उसके सुनहरी बाल खूब चमका करते थे। गली-मुहल्ले के लोग उसे बहुत प्यार करते थे। पहले पहल उसने प्रेस में कम्पोजीटर की नौकरी की। मजदूरों का प्रतिनिधि बन वह पेट्रोग्राद कांग्रेस में गया। वहाँ लेनिन का व्याख्यान सुना और बोल्शेविक पार्टी में शामिल हो गया। फिर ताशकन्द के निराले दिन ! उसके मन में असंतोष था कि

सोवियत के लिये संकट के समय में, जब एक भी आदमी का खो जाना सोवियत की शक्ति को धक्का पहुँचा रहा है, वह मर रहा है। उसका काम अपूर्ण ही रह गया है। सिर झुकाये बैठा वह इसी विचार में डूबा था। पल पल बीत कर उसकी मौत का समय समीप आता जा रहा था·····।

पीठ पीछे, कोठरी में झाकने के लिये दरवाजे में बने छेद के खुलने और मुँदने की आहट दो तीन बार सुनाई दी। पोल्तोरातस्की ने उस ओर ध्यान देना व्यर्थ समझा। उसे जान पड़ा कोई फुसफुसा कर पुकार रहा है—"कामरेड कमिस्सार!"

पोल्तोरातस्की ने घूम कर देखा। छेद से झाकती हुई आखे उसे परिचित जान पड़ी। वह उठकर दरवाजे पर आ गया। तिशेको ने उसे सिपाही बन कर जेल में पहुच जाने की बात बता कर कहा कि वह अवसर की प्रतीक्षा मे है।

पोल्तोरातस्की क्षण भर सोच कर बोला—"तुमने व्यर्थ मे अपने आप को फसाया। यहा से बच के निकलने की कोई आशा नहीं। हो सके तो मुझे कागज पेंसिल ला दो।"

तिशेंको की जेब मे कागज और पेसिल का टुकड़ा था। वह उसने पोल्तारात्सकी को दे दिया। दरवाजे का छेद मूद कर तिशेको आगे बढा ही था कि उसे जेल दफ्तर में पहुचने का हुक्म मिला।

सुपरिण्टेण्डेण्ट घबराया हुआ था, बोला—"बड़ी आफत आई। तुम्हे पहचान लिया गया है। हुक्म मिला है कि तुम्हे पहरे से हटाकर पहरे मे रखा जाय!"

"मैंने तो पहले ही कह दिया था, अपनी जान तुम्हारे हाथों सौंप रहा हू"—तिशेको ने धैर्य से कहा—"मैं और क्या कह सकता हूँ। तुम जो समझो!"

"मैंने तो उन लोगो को समझाया कि पहचानने में भूल हो रही है। तुम तिशेको नही हो। कमाण्डर ने हुक्म भेजा है कि तुम्हे कोठड़ी में बन्द कर दिया जाय और कल सुबह वह खुद आकर देखेगा। सुनो, तुम अश्काबाद चले जाओ—"

"अश्काबाद?"

"हां, मैं तुम्हें पास दे दूंगा। वहां जाकर तुम अपनी पुरानी जगह काम शुरू कर दो। इससे किसी पर बात न आयेगी।"

तिशोंको चाहता था जेल से जाने से पहले एक बार पोल्तोरातस्की से मिल ले। सुपरिण्टेण्डेण्ट ने तिशोंको को यात्रा का पास और जाकर नौकरी लेने के हुक्म की चिट्ठी देदी। तिशोंको ने कहा—"अश्काबाद के लिये गाड़ी सुबह पौफटते समय छूटती है। तब तक मुझे जेल में रहने दो।" उसी समय फोन की घण्टी बजी। फोन पर सफेद सेना के कमाण्डर का हुक्म आ रहा था कि पोल्तोरातस्की को तैयार रखा जाय। उसे गोली मारने के लिये सिपाहियों की टुकड़ी भेजी जा रही है।

तिशोंको तुरत अवसर पाकर पोल्तोरातस्की की कोठड़ी के दरवाजे पर पहुंचा। पोल्तोरातस्की ने एक पत्र लिख रखा था। वह पत्र तिशोंको को देकर उसने कहा—"मुझे जो कुछ कहना था इसमें लिख दिया है। यह पत्र साथियों तक पहुंचा दो।" तिशोंको के लिये कुछ उत्तर देने का समय न था। बाहर के बराम्दे से सिपाहियों के मिले कदमों के समीप आते जाने की आहट आ रही थी। गोली मारने के लिये सिपाहियों की टुकड़ी आ पहुंची थी। तिशोंको हट कर दूसरी ओर के बराम्दे में चल गया।

पोल्तोरातस्की की कोठड़ी का ताला खोला जाने की आहट तिशोंको ने सुनी और पोल्तोरातस्की की ऊंची निर्भय आवाज सुनी—"तुम लोग अपनी मनुष्यता खो चुके हो। तुम लोगों को शिकारी कुत्तों की तरह काम में लाया जा रहा है। तुम लोग मुझे गोली मार सकते हो परन्तु इससे क्रान्ति की सफलता में बाधा नहीं पड़ सकती। मेरे खून की एक एक बूंद से क्रान्ति के सैकड़ों बहादुर सिपाही पैदा होंगे।"

सिपाहियों के कोठड़ी से लौटने कदमों की आहट सुन तिशोंको से रहा न गया। वह भी लौट कर सिपाहियों की टुकड़ी के पीछे पीछे चलने लगा और एक हाथ से अपनी पेटी से लटके रिवाल्वर को टोलता जा रहा था। परन्तु जेल के आंगन में पहुंच उसने देखा कि पोल्तोरातस्की को बचा सकना सम्भव न था। आंगन सशस्त्र घुड़सवार सिपाहियों से भरा था।—"मैं अपनी जान चाहे दे दूं परन्तु कमिस्सार को बचा सकने की कोई सम्भावना नहीं"—उसने सोचा—"अपनी सेना का एक आदमी और

बटेगा और फिर कमिस्सार का पत्र, इस पत्र मे अवश्य ही बहुत आवश्यक बाते होंगी, यह पत्र भी बीच मे रह जायगा—शत्रु के हाथ पड जायगा।

उसी समय तिशेको के समीप खडा सवार अपने घोडे से उत्तर समीप के नल पर पानी पीने लगा। तिशेको के दिमाग मे बिजली सी कौंध गयी। वह लपक कर घोडे की जीन पर जा बैठा और घोडे को जोर से एड लगा कर जेल के खुले हुये फाटक की ओर घुमा दिया।

दूसरे सिपाही कुछ समझ पायें इससे पहले ही तिशेको फाटक से सौ गज से परे निकल चुका था। उसके पीछे धडाधड़ गोलिया चलाई गई परन्तु घने अधेरे मे उसे कोई देख न पाया। पोल्तोरातस्की भी यह घटना देख रहा था। अपने सिपाही की इस विजय औ' अपना पत्र साथियों के हाथ में पहुच जाने के विश्वास से वह सीना फुला कर दुश्मन की गोली का सामना करने के लिये तैयार हो गया।

बैरमअली बहुत छोटा सा कस्बा था। यहा लाल सेना को बहुत निराशा हुई। यहा लाल सेना की कोई टुकडी पहले से न थी। ताशकन्द से भेजी गई सेना भो अभी तक न आई थी। रात भर मे गावो से किसान बटोर कर उन्हे हथियार चलाना सिखाकर सफेद सेना का सामना कैसे किया जा सकता था। सफेद सेना तेजी से बैरमअली की ओर बढ़ती आ रही थी। चर्नीशाव परेशान था, क्या करे? मारी सफेद सेना ने ले लिया था। वहा से लाल सेना पीछे हटकर बैरमअली मे आ गई थी। इस सेना के लगभग आधे सिपाही बैरमअली में खेत रहे थे। तिशेको और पोल्तो रातस्की का कुछ पता न था। एक बार उसके मन मे आया कि किसी आदमी को, करगेज-ईशान को मारी भेज कर उन दोनो की खोज कराये परन्तु खबर लेने जाने वाला इतनी जल्दी लौट कर न आ सकता था।

चर्नीशोव ने साथियों को बुला कर रायली। तय हुआ कि बैरमअली छोड चार्दीजोव मे मौजूद लाला सेना के साथ मिला जाये। दो ट्रेने तैयार की गई। गाड़िया छोड़ी जाने से पहले चर्नीशोव रेत के एक टीले पर चढ कर अन्तिम बार इस स्थान को देख रहा था। उसने पहले पूरब की ओर और फिर पश्चिम की ओर आखे दौडाई। पूर्व मे सूर्य अभी ही 'सुलतान संजर' के किले के पीछे धरती से ऊपर उठा था। किरणें अभी स्टेशन की छत और रुई के कारखाने की चिमनी को ही छू रही थी। चिमनी से धुआ

नहीं निकल रहा था। कारखाने ने एक सीटी दी परन्तु वह बीच में ही रुक गई। मज़दूर भी आते हुये दिखाई नहीं दिये। बल्कि बहुत से लोग अपने बीबी बच्चों और असबाब के साथ स्टेशन की ओर चले आ रहे थे।

यह रुई का कारखाना सोवियत ने अभी हाल में मज़दूरों के सहयोग से बनाया था—"मज़दूरों के पसीने से यह कारखाना क्या शोषकों के हाथ चला जायगा? जिस मजदूर वर्ग को हमने उत्पीडन से मुक्त कर स्वतंत्र मनुष्य बनाया हैं, क्या वे फिर पूंजीपति शोषकों द्वारा कुचले जायँगे?... नहीं, यह न हो सकेगा।"—चर्नी मन ही मन सोच रहा था। मारी की ओर से तोपों की गरज सुनाई दे रही थी। चर्नीशोव ने अनुमान किया यह सफेद सेना और ताशकन्द सेनाओं की मुठभेड़ हो रही हैं। अब चलने में अधिक विलम्ब करना उचित नहीं। उसने पहली ट्रेन छोड़ी जाने का हुक्म दे दिया। उसी समय उसे दूर से एक घुडसवार मारी की ओर से आता दिखाई दिया। पहले तो उसने समझा कि यह उसके खोजी सिपाहियों में से कोई होगा जिन्हे उसने सफेद सेना की खोज खबर लेने भेजा था। परन्तु सवार के समीप आ जाने पर उसने देखा यह कोई और है, घोडा बहुत थका टूटा पसीने से तर और लडखड़ाता सा मालूम हो रहा था।

सवार समीप आकर घोडे से कूद पडा। यह तिर्शेको था। चर्नीशोव ने पूछा—"पोल्तोरातस्की कहाँ है?"

तिर्शेको कुछ उत्तर न दे सिर झुकाये खडा रह गया। बहुत से मशस्त्र मजदूर सिपाही चारों ओर से घिर आये थे और चिन्ता तथा उत्सुकता से तिर्शेको के चेहरे की ओर देख उत्तर की परीक्षा कर रहे थे। तिर्शेको ने कुछ उत्तर न दे अपनी जेब से पत्र निकाल चर्नीशोव को थमा दिया। पत्र लेते समय उसके हाथ काप रहे थे। पत्र ले चर्नीशोव ने सबको सुनाने के लिये पढना शुरु किया। उसका स्वर भी कॉप रहा था:—

"प्यारे सोवियत मज़दूरों और सिपाही साथियों, सफेद सेना के अफसरों ने मुझे गोली मार देने का हुक्म दिया है। मैं कुछ ही घंटों के लिये और जीवित हूँ। इस थोडे मे, मूल्यवान समय में मैं अपना यह संदेश लिखकर आप को भेज रहा हूं।

"प्यारे साथियो, क्रान्ति विरोधी लोग मेरी जान ले रहे हैं। मुझे विश्वास है कि मेरी मृत्यु से क्रान्ति की सफलता में बाधा नहीं पड़ेगी। मेरा स्थान

मुझसे अधिक योग्यता और दृढता से काम करने वाले साथी ले लेंगे। और मेहनत करने वाली श्रेणी अपने बंधनों से युक्त होकर मनुष्य समाज को विकास और स्वतन्त्रता की ओर ले जायगी।

"साथियो, आज मैं बिदाई ले रहा हूँ। मैं स्वय एक मजदूर हू। मृत्यु के समय मुझे केवल यह चिन्ता है कि मेरी मृत्यु से आप लोग हतोत्साह और निराश न हों। मेहनत करने वाली श्रेणी की मुक्ति के सघर्ष में यदि किसी भी प्रकार की शिथिलता आयेगी तो यह न केवल तुर्किस्तान की मेहनत करने वाली श्रेणी के साथ विश्वासघात होगा बल्कि इससे सम्पूर्ण ससार की मेहनत करने वाली श्रेणी के भविष्य को धक्का लगेगा। आपकी यह शिथिलता और उत्साह की कमी अक्टूबर की समाजवादी क्रान्ति में अपने प्राण निछावर करने वाले वीरो के प्रति विश्वासघात होगी।"

'साथियो, मैं आप को विश्वास दिलाता हूँ कि मौत कोई बहुत बडी बात नहीं, न मुझे उसके लिये दुख है। मुझे दुख है इस बात के लिये कि हमारे अपने कई साथी जारशाही के बचे हुए भूतो के भय और प्रभाव से स्वय क्रान्ति विरोधी मार्ग पर चलकर प्रजातन्त्र और समाजवाद की सफलता की राह मे अडचने डाल रहे हैं, यह लोग स्वय अपनी, अपने परिवारों और अपनी श्रेणी की कब्रे खोद रहे हैं। इनकी यह कायरता और गद्दारी हमारी श्रेणी के उद्धार के लिये आत्म बलिदान करने वाले वीरों की स्मृति के लिए कलक बन रही है।'

"साथियों, आज मेहनत करने वाली श्रेणी को बहुत फूट फरेब और जालसाजी से वश में करने की कोशिश की जा रही है। हमारे शोषक सामन्तशाही और पूँजीपति खुली लड़ाई मे मेहनत करने लाली श्रेणी से परास्त होकर हमें धोखे और फरेब से वश मे कर रहे हैं। आपको समझाया यह जाता है कि क्रान्ति विरोधी शक्तियाँ सोवियत के विरुद्ध बगावत नहीं कर रहीं वह केवल सोवियत के कुछ लोगों के 'अत्याचार' के विरुद्ध लड रही हैं। साथियो, इस धोखे को पहचानो। हमारी श्रेणी का राज व्यक्तियों का राज नहीं! यह श्रेणी का राज है। हमारे शासन को चलाने वाले हमारे प्रतिनिधि हैं। उनके अच्छे बुरे काम की जाँच हम स्वयम करेंगे। यदि शत्रु हमारी श्रेणी के किसी भी व्यक्ति पर हाथ उठाते हैं तो यह सम्पूर्ण श्रेणी पर हमला है। राष्ट्रीयता और आज़ादी के नाम पर इस सोवियत विरोधी बगावत के नेता

अजीज खॉं, बुखारा का अमीर, जार के पुराने अफसर और पूँजीपति लोग तथा इनके विदेशी सहायक हैं जो अपने शोषण के अधिकार को क़ायम रखने का प्रयत्न कर रहे हैं। हमारी शक्ति का सामना वे नहीं कर सकते इसलिये वह हमारी श्रेणी में फूट डालकर हमें निर्बल करने की चाल चल रहे हैं! आप क्या इन लोगों से यह आशा कर सकते हैं कि यह लोग अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मार कर आपका हित करने के लिए ही सब कुछ कर रहे हैं?

'साथियो, जब तक तुम्हारे हाथ में शस्त्र हैं तुम दुर्जेय शक्ति हो! सम्पूर्ण समाज का जीवन तुम्हारे हाथों में है, शहरों और गाँवों की सब पैदावार, यातायात, बिजली, पानी भोजन सब कुछ तुम्हारे हाथ में है, फिर तुम असमर्थ क्यों हो? केवल इसलिए कि तुम अपनी सम्मिलित श्रेणी शक्ति को भूल जाते हो! साथियो, आज तुम अपनी मुक्ति के और अधिकार प्राप्त करने के मार्ग पर बहुत आगे बढ़ चुके हो। इसके लिये हमारी श्रेणी ने बहुत बड़ा मूल्य दिया दिया है। आज कदम पीछे हटाना बड़ी भारी भूल होगी। इस भूल से हमने जो कुछ पाया है, सब कुछ खो बैठेंगे। अब हमारे पीछे हटने से हमारे दुश्मन और भी अधिक बलवान, चौकन्ने और तैयार हो जायेंगे और दुबारा आगे बढ़ने के लिए हमें पहले से चौगुनी कुर्बानी और कीमत अदा करनी पड़ेगी।

"साथियो, मेरा अन्तिम सदेश यही है कि अपनी सेना में से विश्वासघातों और क्रान्ति विरोधियों को चुन-चुन कर निकाल दीजिये। और अपनी मुक्ति के सग्राम में अपनी पूरी शक्ति से आगे बढ़िये। इस क्रान्ति की सफलता में यही आप के जीवन की सम्भावना है?

आपका साथी,
पी० पोल्तोरातस्की"

"प्यारे साथियो यही मेरा सदेश है। मुझे अपनी मृत्यु के लिए कोई खेद या दु:ख नहीं। मुझे विश्वास और सतोष है कि मैं अपने और अपनी श्रेणी के जीवन के उद्देश्य को विश्वस्त और योग्य हाथों में सौंप रहा हूं।

आधी रात—जुलाई २१, १६१८ पी० पोल्तोरातस्की"

इस पत्र को सुनकर सिपाहियों ने दांत भींच लिये। उनकी आंखों में आंसू छलक आये थे, उन्हें छिपाने के लिये वे इधर उधर देखने या बहाना

कर रहे थे।

पत्र समाप्त कर चर्नीशोव चुप रह गया। वह कुछ कह न सका। पोल्तोरातस्की के शब्द पढ़ दिये जाने पश्चात कुछ और कहने की आवश्यकता भी क्या थी? फिर भी दाँतों से ओंठ काट कर वह बोला—

"हम लोग प्रतिज्ञा करते हैं कि साथी पोल्तोरातस्की के संदेश को पूरा करेंगे।"

तुरन्त पोल्तोरातस्की के इस पत्र की सैकड़ों लिपियाँ लिखी गईं और स्टेशन, कारखाने और ट्रेनों में जगह-जगह यह लिपियाँ चिपका दी हैं।

चर्नीशोव ने कग्गेज ईशान को कुछ साथियों के साथ पीछे छोड़ दिया। उसे वही काम सौंपा गया जो तेजेन में अशीर को सौंपा गया था। पोल्तोरातस्की के पत्र की एक कापी कग्गेज को देकर चर्नीशोव ने कहा—"इस पत्र की जितनी अधिक लिपियाँ बन सकें बनवा कर गाँव-गाँव बाँट दी जायें। हमारी सबसे बड़ी शक्ति हमारी श्रेणी-चेतना और अपनी श्रेणी की शक्ति को पहचानना ही है।"

२५

तेजेन पर कब्जा कर लेने के बाद जनता पर अपना आतंक जमाने के लिये अजीजखां ने क्रूरता के नये ढंग और तौर शुरू किये। उसने अनाचार और अपराध को जड़ से खोद डालने की घोषणा करदी। चोरों को चौक बाजार में खड़ा कर कोड़े लगा कर खाल उतार दी जाती। नशाखोरों को इससे भी विकराल दण्ड दिया गया।

हीराज बक्शी की आयु बहुत अधिक हो चुकी थी। हाथ पांव से भी रह गया था। उसकी अफीम की आदत छोड़े न छुटी। अजीजखां ने उसे चौक के एक खम्भे से फाँसी लगवा दिया और बक्शी के सीने पर इश्तहार चिपका दिया गया —"यह अफीम खाने का दण्ड है।"

जनता अजीजखां के नाम से कांपने लगी। अजीज के लिये यही सबसे अधिक संतोष की बात थी।

तेजेन स्टेशन से मारी की ओर सफेद सेना के सिपाहियों से भरी बीसियों ट्रेनें जा चुकी थीं। अब लगातार माल गाड़ियों के खुले ठेलों पर लम्बी लम्बी सूड़ों वाली बड़ी बड़ी तोपें उस ओर जा रही थीं। यह तोपें पल में हजारों आदमियों को भस्म कर देने के लिये क्रोध भरी अपनी सूंड आकाश की ओर उठाये चली जा रही थीं।

अजीज ने अपने पुराने सिपाहियों और नये भरती किये सिपाहियों को पल्टनों और कम्पनियों में बांट कर संगठित कर लिया। प्रत्येक कंपनी में सफेद सेना का एक एक अफसर भी लगा दिया गया। शहर के व्यापारियों और अमीर घरानों के जवानों ने एक स्वयन्सेवक सेना अजीज की सहायता के लिये बनाली। शहर के नंगे भूखे गरीबों को भी अजीज ने भरती कर लिया। जो कुछ जैसा कुछ कपड़ा उन्हें मिला बांट कर बन्दूकें भी देदीं। कोई सिर्फ कोट पहने था तो कोई सिर्फ बनियान कोई सिलवार पहने था तो कोई निकर या पाजामा। इस नई सेना को भी अजीज ने ट्रेन पर सवार

करा कर सफेद सेना के पीछे युद्ध के मोर्चों की ओर भेज दिया।

इस धावे मे अरतैक भी अपनी कम्पनी के साथ भेजा गया। अरतैक निरतर अवसर की प्रतीक्षा मे था कि सोवियत सेना से सम्पर्क हो तो उनसे जा मिले। परन्तु सोवियत सेना की स्थित के विषय में उसे कुछ भी मालूम न था।

सफेद सेना और अजीज की पचमेल सेनाओ की ट्रेनों का यह काफिला मारी के स्टेशन पर बहुत देर तक रुका रहा। अरतैक के लिये यह विलम्ब असह्य हो रहा था। रात के ग्यारह बजे थे। वह अपनी गाडी से उतर अंधेरे मे प्लेटफारम पर टहलने लगा। उस समय भी गाडियो के आपस मे टकराने के शब्द इजन की सीटियों और सिपाहियों के हो हल्ले से उसका मन और भी खिन्न हो रहा था। वह स्टेशन के सूने भाग की ओर निकल गया। टहलने से उसे कुछ भी शान्ति न मिली। अपरिचित कोलाहल और दुर्गंध से उसका सिर दर्द करने लगा। लेट जाने के विचार से वह अपनी गाडी की ओर लौटने को था कि अंधेरे मे एक आदमी एक गाडी के नीचे से दुबक कर निकलता हुआ दिखाई दिया। जान पडता था कि आदमी या तो किसी दूसरे आदमी को खोज रहा है या अपनी गाडी भूल गया है। यह आदमी अरतैक की ओर ही आ रहा था। अंधेरे मे भी उसका गोरा चेहरा गोल दाढी से घिरा जान पड रहा था परन्तु पहचान पाना कठिन था। अरतैक को देख आदमी उसकी ओर बढ आया और सहमते हुये बोला—"भैया, यह क्या अजीजखा की फौज है ?"

"हूँ"—अरतैक ने उत्तर दिया—"तुम्हे अजीज़खा से क्या काम है ?"

"नहीं, मुझे एक दूसरे आदमी से काम है, शायद तुम उसे जानते हो ?"

"इस फौज में ऐसा कौन आदमी है जिसे मैं नहीं जानता ?"

"मैं अरतैक बबाली से मिलना चाहता हूँ"

अरतैक ने उसके चेहरे को घूर कर देखा और प्रश्न किया—"अरतैक बबाली से तुम्हे क्या मतलब है ?"

"उसे एक सन्देश देना है भैया।"

"मैं ही हूँ अरतैक बबाली।'

अब इस व्यक्ति ने अरतैक की ओर सन्देह से देख प्रश्न किया—

"नेजेन के रूसियों में कोई तुम्हारा परिचित था ?"

अरतैक को सबसे पहले चर्नीशोव का ही नाम याद आया उसने उत्तर दिया—"चर्नीशोव को मैं खूब जानता हूँ।"

"चर्नीशोव ने तुम्हें सलाम कहा है……"

अरतैक ने अपना हाथ इस आदमी के कंधे पर रख दिया। आदमी कुछ सहम कर चुप हो गया। अरतैक ने आश्वासन दिया—"घबराओ नहीं, भरोसा रखो, डरने की बात नहीं है ? तुम्हारा नाम क्या है ?"

"करगेज ईशान !"

"चर्नीशोव से कहा मिले ?"

करगेज ने चारों ओर नजर फिरा कर देखा कि आस पास कोई सुनने वाला तो नहीं और अरतैक को 'मागी' और 'बैरमअली' की पूरी कहानी सुना दी। उसने यह भी बताया कि सोवियत के निर्णय से कुलीखां को जनता के हथियारों की चोरी करने के अपराध में गोली मारदी गई है।"" चर्नीशोव तुम्हें बहुत याद करता है। तिर्शेको, और अशीर भी तुम्हें याद करते हैं और कहते हैं कि अब तो तुम खूब समझ गये होगे कि जनता का शत्रु कौन है और मित्र कौन ? यदि तुम्हें जनता के हित का खयाल है तो अब और देर किये बिना तुम्हें सोवियत की सहायता के लिये तुरन्त कदम उठाना चाहिये।

करगेज से बातचीत करते समय अरतैक को सन्देह हो रहा था पिछली गाड़ी से कोई आदमी उन्हें ताक रहा है। वह करगेज को बांह से थाम गहरे अंधेरे में ले गया परन्तु अरतैक के मन में खटका बना ही रहा कि कोई उसका पीछा कर रहा है। इसलिये बहुत धीमे स्वर में उसने करगेज को समझाया—"मैं केवल अवसर की प्रतीक्षा में हूं। यहां पल पल काटना मुझे मुसीबत हो रहा है। अभी दिखाने को मैं अजीजखां की सेना के साथ हूं परन्तु मैं इसकी ओर से लड़ूंगा, नहीं। मौका पाते ही चर्नीशोव की सेना में जा मिलूंगा।" अरतैक ने बात समाप्त कर करगेज से अपनापन जताने के लिये हाथ मिला कर विदा ली। करगेज समीप खड़ी गाड़ी के नीचे दबक कर किसी ओर चला गया और अरतैक अपनी गाड़ी में जा बैठा

करगेज कुछ कदम ही जा पाया था कि सफेद सेना के जासूसों न उसे घेर कर गिरफ्तार कर लिया। करगेज की तलाशी लेने पर उसके पास पोल्तोरातर्स्की के पत्र की कई प्रतिया मिलीं। उसके कम्युनिस्टो का जासूस और प्रचारक होने मे कोई सन्देह न रहा। सफेद सेना के लोगो ने अजीज को स्थानीय शासक मान कर करगेज को उसी के हाथ सौप दिया। करगेज तुर्कमान था तिस पर मौलवी भी। सफद सेना के जारपक्षी अफसरो की चाल थी कि अजीजखा करगेज ईशान को सजा देगा तो तुर्कमान लोगों मे परस्पर झगडे का कारण बन जायगा। यह अफसर तुर्कमान लोगो की एकता फूटी आखों न देख पाते थे।

मारी के वे लोगो ने गवाही दी कि कुछ दिन पहले करगेज ईशान ने मारी के बाजार मे सभा करके प्रजा को बोलशेविकों का साथ देने के लिये उकसाया था। अज़ीज खॉ को और क्या चाहिये था? वह तो सदा मौके की खोज मे रहता था कि कोई ऐसी बात कर पाये जिसका चर्चा दूर तक हो और लोगों पर उसका आतक गहरा हो जाय।

करगेज को अजीज के सामने रात के एक बजे पेश किया गया। उस समय अजीज के साथ उसकी गाड़ी मे यात्रा करने वाले उसके दरबारी और दूसरे सब अफसर सो रहे थे। अरतैक अजीज की गाडी से अगली गाडी मे था। इस गाडी मे भी सभी लोग सो रहे थे। अज़ीज के साथ इस समय केवल मदीर-ईशान था। दो सिपाहियो को अजीज ने और बुलवा लिया।

अजीज ने करगेज से बडी सज्जनता से बातचीत की और बातचीत समाप्त हो जाने पर उसने अपने नौकर पेलाग को हुक्म दिया—"जाओ, ईशान को कुत्तों से बचाकर पहुंचा आओ।"

पकड़ा जाने के बाद से करगेज बहुत भयभीत था। परन्तु अजीज के व्यवहार से उसे बहुत कुछ भरोसा हो गया। कुत्तों से बचाकर पहुँचा आने के हुक्म से उसे फिर सन्देह हुआ। शहर मे कोई खास कुत्ते न थे और गाडियों के आस पास तो कोई कुत्ता दिखाई न दिया था। करगेज ने सोचा, शायद अजीज का संकेत मारी के वे लोगों से है या वह सफेद सेना के अफसरों को ही कुत्ता पुकारता है? या मुझे ही कुत्ता कह रहा है... सहमती हुई धीमी आवाज मे उसने अजीज से निवेदन किया—"मालिक की मेहरबानी है, क्या तकलीफ कीजियेगा। मैं खुद ही चला जाऊंगा।"

अजीज होंठ सिकोड मुस्करा कर बोला—"मौलाना, रात बहुत हो ग है। जमाना खराब है। किसी का क्या भरोसा? यह लोग तुम्हें कुत्तों बचाकर पहुचा देंगे।"

कुत्तों से बचाने की बात करगेज ईशान को फिर खटकी। उसने फि अपनी बात दोहराई—"कोई जरूरत नहीं मालिक, कुत्तों का कोई डर न है आप परेशान न हों।"

"नहीं नही"—अजीज ने आग्रह किया—"कुत्तों का डर सदा है और खास कर लडाई के समय! बेपरवाही ठीक नहीं।" अपने नौकर क ओर देख अजीज़ बोला—"ले जाओ!"

"ले जाओ!" हुकम सुन कर तो करगेज कांप उठा। उसके पां पत्थर हो गये। उसे चलते न देख सिपाही उतावला हो बोल उठा—"च मौलाना, देर न करो।"

सिपाही की इस रूखाई मे करगेज का दिल और भी बैठ गया। फि भी उसने साहस कर, अजीज की ओर कातर दृष्टि से देख विनय की— "मालिक खान,…… …।"

अजीजखा झुंझला उठा। उसने अपने नौकर को धमकाया—"पैलांग।"

प्राय: अठाईस वर्ष की आयु के एक कुरूप जवान ने आगे बढ करगेज ईशान को दोनों कधों से थाम दरवाजे की ओर घुमा दिया। उसने करगेज के कधो को इतने जोर से दबोचा कि कधे प्राय, सुन्न हो गये। इस पर भी करगेज के कदम आगे न बढे। वह फिर पीछे घूम कर अजीज से प्रार्थना करना चाहता था। इतने मे उसकी पीठ पर बन्दूक का एक कुन्दा जोर से पड़ा। उसके पाव उखड़ गये। घसिटता हुआ वह कमरे से बाहर चला गया।

इसके बाद करगेज ईशान का कुछ पता न चला।

अगली संध्या अजीज की सेना का काफिला बरखानी स्टेशन पर पहुंचा। वहाँ से चार्दीजोव एक पड़ाव आगे था! यहाँ सिपाहियों से भरी बड़ी बड़ी बारह ट्रेनें पहले से खड़ी थीं। सिपाहियों और उनके घोड़ों को गाड़ियों से उतारा गया। स्टेशन के समीप फैले रेत के टीलों पर दूर दूर तक सिपाही छा गये।

इतनी बड़ी सफेद सेना को देख अजीज़ मन ही मन सोच रहा था,

यहाँ इतनी बडी सेना इकट्ठी करने का क्या मतलब है ? चार्दीजोव को तो मैं अपनी सेना से ही दिन भर मे जीत सकता था ?"

पौ फटने से पहले ही सफेद सेना ने चार्दीजोव की ओर कूच कर दिया। अजीजखा भी मदीर ईशान और अपने जट अफसर के साथ घोड़ों पर सवार हो सेना के साथ चला। केवल सफेद सेना के पादरी, अजीजखा के साथ के मोलवी और फौजी रसोईये ही पीछे रह गये। एक साथ मिलकर खडी, सिपाहियों से खाली ट्रेनें शहद की मक्खियों के खाली छत्तों जैसी जान पड रही थी।

दोपहर तक सफेद सेना आगे बढती और अपने मार्ग मे आये इलाकों पर कब्जा करती हुई डीपो तक पहुँच गई। इस समय लाल सेना की ओर से उनकी कजान रेजिमेण्ट आगे आई और उन्होंने पीछे हटती लाल सेना की ओर से पलट कर धावा बोल दिया। लाल सेना की सब कम्पनियाँ पीछे हटना छोड उलट कर हमला करने लगीं। सफेद सेना चारों ओर से सिमिट कर पीछे हटने लगी। अज़ीज़खा की घुड सवार सेना ने पीछे न हट कई पैंतरे बदले परन्तु उसकी पैदल सेना को पीछे लौटना पड़ा।

अरतैक अपने सौ सवारों को लिये सफेद सेना के हमले का जोर घटा देने के लिये कई मोर्चे बदल चुका था। वह अपने सवारों को ले दक्खिन की ओर से शहर का चक्कर लगाता हुआ, आमू के रेलवे पुल की ओर बढ गया। उसे आशा थी वहाँ लाल सेना से सम्पर्क हो सकेगा। लेकिन इस ओर भी सफेद सेना जमी हुई थी। अरतैक ने समझा कि शहर सफेद सेना के हाथों आ गया है और वह लौट पडा। अपने सवारों को लिये वह दल दल मे रुका रहा और सूर्यास्त के समय अजीजखा की छावनी मे लौटा। लौट कर उसे अपनी भूल मालूम हुई, सफेद सेना शहर पर कब्जा नही कर सकी थी। बल्कि असफल हो कर आमू के पुल से पीछे हट रही थी। यदि वह उस समय इस सेना पर हमला कर देता तो इस सेना का पीछा करती लाल सेना इन्हे समाप्त कर देती और अरतैक लाल सेना से जा मिलता परन्तु अवसर हाथ से जा चुका था।

२६

चार्दजोव के मोर्चे पर लाल सेना से मार खा कर सफेद सेना तेज़ी से पीछे हटती जा रही थी। अंग्रेज अफसरों ने सफेद सेना की सहायता के लिए बैरमअली में हिन्दुस्तानी फौज की एक मशीनगन कम्पनी भेजी थी। इस कम्पनी ने रात भर के लिये लाल सेना की राह रोक दी परन्तु दिन चढ़ते ही उन्हें भी पीछे हट जाना पड़ा। चार दिन तक कदम कदम पर सफेद सेना को धकेलती लाल सेना लड़ती रही और उन्होंने मारी शहर पर कब्जा कर लिया। सफेद सेना और उसकी सहायक ब्रिटिश सेना बहुत नुकसान उठा कर पीछे हट गई।

सफेद सेना और ब्रिटिश हिन्दुस्तानी सेना के साथ साथ अज़ीज़ भी अपनी सेना को लिये पीछे हट रहा था और मन ही मन पछता रहा था कि इन लोगों के साथ मैं किस झमेले में आ फंसा? उसे जुनैद खां की नसीहत याद आ रही थी कि हमारी शक्ति रेतीले मैदानों में ही है। रेलों के चक्कर में फंसे तो मारे जायेंगे। शहरों पर कब्जा करने के सैनिक ढंग से उसे क्या मतलब था? वह चाहता था कैसे तैसे वह निकले और अगलान के अपने डकैती के किले में जा छिपे जहां से समय पर, राह चलते निस्सहाय काफिलों पर हमला कर अपनी शक्ति बढ़ाता जाय! परन्तु चारों ओर से घिर आई लाल सेना निकल भागने का अवसर ही न दे रही थी।

सफेद सेना तीन दिन तक लगातार पीछे हट कर तेजेन पहुंची तो यहां भी लाल सेना ने पीछा न छोड़ा और उन पर आ पड़ी। अभी वो ठीक से रुक पाई थी कि अंधियारे आकाश को चीर कर सुर्ख दहकती हुई गोलियां चलने लगीं। तुरंत ही गोला बारी भी शुरू हो गई। अज़ीज़ ने अपनी सेना को तुरंत पीछे हट जाने का हुक्म दिया।

अज़ीज़ सोच रहा था कि अपने ही [illegible] तुर्कमान [illegible]

से रेलवे लाइन पार कर, शहर की ओर जा लाल सेना से मिल जाये। उसे भरोसा था कि अपने गाव और घर की इस भूमि मे वह कदम कदम धरती से परिचित है और यहा वह सुविधा से अपने साथियो से जा मिलेगा।

वह अपने सवारो के साथ रेलवे लाइन के पार पहुचा ही था कि एक ट्रेन चली आती दिखाई दी इसमें सफेद सेना का काम करने वाले मजदूरों की कम्पनी थी। इस ट्रेन के पीछे पीछे दूसरी ट्रेन आ रही थी इसमे ब्रिटिश हिन्दुस्तानी फौज का मशीनगन का रिसाला था। अरतैक ने दातो से होंठ काट क मन ही मन सोचा—यह है इन सम्राज्यवादियों की चाल! खतरे मे पहले रुसी सेना को भेजते है और उसके पीछे अपनी सेना को! वह भी हिन्दुस्तानी सेना! एक देश को गुलाम बना, उसे लडा कर दूसरे देशो पर कब्जा करना, यह है सम्राज्यवाद की चाल।

अरतैक प्रतीक्षा के सिवा और क्या करता? सूर्योदय के समय लाल सेना तेजेन शहर मे घुस चुकी थी हालाकि शहर के उत्तर-पश्चिम की ओर झाडियों में अजीज की सेना का रिसाला लाल सेना से अब भी उलझ रहा था। अरतैक और उसके सवारो ने लडाई मे कोई भाग न लिया। वे लोग घनी झड़ियो के जगल को चीरते हुये तेजेन की ओर बढ रहे थे। इन्हे देख और शत्रु समझ लाल सेना इन पर भी गोली बरसाने लगती इसलिए खुले मैदान की राह शहर की ओर आगे बढना सम्भव न था।

अरतैक को शहर की ओर दूरी पर तिशेको दिखाई दिया। अरतैक ने चिल्ला कर उसे नाम से पुकारा। बन्दूकों की गरज मे अरतैक की पुकार तिशेको तक न पहुची। तिशेको ने अपनी ओर बढते शत्रु के रिसाले को देख लिया था। उससे अपनी कम्पनी को झडियो में दबक कर इस ओर बढ़ने और शत्रु के रिसाले पर हमला करने का हुक्म दे दिया। अरतैक यह सब देख रहा था परन्तु वह रुका नहीं। उसने सवारो को हुक्म दिया कि "सरपट शहर की ओर बढ़ो" वह स्वय सबसे आगे हाथ उठाये तिशेको को पुकारता चला जा रहा था।

तिशेकोने अपने नाम की पुकार सुनी और अरतैक की आवाज पहचानी अपने सिपाहियो को 'फायर' रोकने का हुक्म दिया। परन्तु इससे पहले ही चल चुकी एक गोली अरतैक के कधे मे जा धसी। उसके हाथ से राइफल गिरगई और घोड़े की लगाम भी छूट गई। गिरने से बचने के लिये अरतैक

ने दूसरे हाथ से घोड़े के अयाल थाम लिये। अरतैक का घोड़ा, आखिर वे जख्मी हो जाने और गोलियों की बौछार से घबरा कर लौट पड़ा और अरतैक को लिये सरपट भागा जा रहा था। तिर्शको उसके पीछे पीछे अरतैक को पुकारता दौड़ा आ रहा था। अरतैक उसकी पुकार सुन न सका। वह अपने घोड़े को वश न कर सकता था। घोड़े की पीठ पर उसके रहना ही उसके लिये दूभर हो रहा था।

तेजेन में हार कर सफेद और ब्रिटिश सेना काहका स्टेशन की ओर पीछे हट रही थी और लाल सेना उनका पीछा कर रही थी। अश्काबाद की राह में सफेद सेना को कई सुरक्षित मोर्चे मिल गये। ईरान की ओर से नयी ब्रिटिश फौजें भी उनकी सहायता के लिये आ मिलीं। यहां सफेद और ब्रिटिश सेना ने नये सिरे से पक्के मोर्चे जमा लिये। लड़ाई जम कर होने लगी।

अज़ीज़खां तेजेन से ही अपनी सेना को ले अलगान भाग गया था। लाल सेना काहका में सफेद सेना के मुकाबिले में उलझी हुई थी। इस अवसर से लाभ उठा अजीज ने तेजेन और अलगान के बीच अपनी सेना का दृढ़ मोर्चा लगा दिया और अलगान में स्वतंत्र खान बन बैठा।

अजीज ने लाल सेना का मुकाबिला करने के नाम पर सफेद सेना से हथियार तो काफी हथिया लिये थे परन्तु रसद राशन की उसे बहुत कमी थी। इस कठिनाई का भी उसने उपाय तुरंत कर लिया। उसने इलाके के इमामों और मुल्लाओं को इकट्ठा कर उन्हें खिला पिला कर, कुछ डरा-धमका कर फतवा ले लिया कि अज़ीज़खां इलाके का मुसलिम बादशाह है और उसे प्रजा से राजकर लेने का अधिकार है। शरीयत के अनुसार राजा को प्रजा से खेती की पैदावार का दसवां भाग और पशुओं की पैदावार का चालीसवां भाग लेने का अधिकार होता है। शरीयत से यह अधिकार पाकर अज़ीज़खां के अफसरों और गुमाश्तों ने राजकर इकट्ठा करना शुरू किया। जब कर लेने का अधिकार हो गया तो दसवां भाग कितना है, यह निश्चय करना उनके अपने हाथ की बात हो गई। इस प्रकार से अज़ीज़खां, उसके दरबारियों और सेना का पेट मज़े में पलने लगा।

* * *

अरतैक ज़ख्मी हालत में कैसे तैसे अपने गांव पहुंचा। उसे बड़ा आश्

थी ऐसी हालत में अपने घर लौटेगा। भविष्य उसके सामने अस्पष्ट और अंधकारमय था। मानसिक चिन्ता के बावजूद ऐना का स्नेह, माँ की ममता और नये उत्पन्न पुत्र के प्रति उसके आकर्षण ने अरतैक को सजीव करना शुरू किया। अब अरतैक समस्या को अपने परिवार और पुत्र के भविष्य की दृष्टि से सोचने लगाः—क्या यह लोग सदा ही साधनहीन, दूसरों की दया के मोहताज गुलाम बने रहेंगे? क्या इन्हें अपने जीवन की राह बनाने का, उस राह पर कदम उठाने का अधिकार आत्मनिर्णय का अधिकार कभी प्राप्त न होगा, यह कभी मनुष्य न बनेंगे?

"इस झमेले की जरूरत क्या ?"—उसे रूखा उत्तर मिला।

एक सिपाही ने अपनी राइफल उठा उसकी छाती पर निशाना साधा। इतने में केलखा आ पहुंचा। यह दृश्य देख वह चिल्ला उठा—"क्यों बेवकूफो क्या कर रहे हो ?" परन्तु सिपाही ने गोली दाग ही दी।

अरतैक दोपहर के समय तेजेन पहुंचा। सैकड़ों जले हुये मकान अभी सुलग रहे थे। आकाश धुयें से भरा था और चिरांध आ रही थी। बाजारों और गलियों में खून फैला हुआ था। जगह जगह अगल बगल मुर्दे पड़े थे और वृक्षों से लाशें झूल रही थीं। सिपाही छीनी हुई गायों को रस्सियों से थामे दो दो चार-चार शहरी नंगी औरतों के साथ हांके लिये जा रहे थे। अलियारखां के सिपाहियों को शराब का एक गोदाम मिल गया था वे मन मानी पीकर बौखले हो रहे थे। अजजीसा के सिपाही अब भी लूट में लगे हुये थे। जिस घर में जो कुछ मिल जाता, जेवर, कपड़ा, कालीन, रजाई तकिया सब घसीटे ला रहे थे।

अज़ीज का नौकर पेलाग रूसी ढंग का कोट पहने फिर रहा था। अरतैक का ध्यान उस ओर गया। वह कोट उसे पहचाना सा जान पड़ा। "यह तो चर्नीशोव का कोट है ? क्या इन जालिमों ने उसे भी मार डाला ?"—क्रोध से अरतैक का सिर चकरा गया। उसका हाथ अपने रिवाल्वर की मूठ पर जा पहुंचा। वह पेलाग को गोली मार देने को ही था परन्तु उसने अपने आप को सम्भाला। पेलाग के कोट पर हाथ रख उसने पूछा—"बहुत बढ़िया कपड़ा है। कहां से लिया ?"

'पिछली रात की लूट में" पेलाग ने उत्तर दिया। "क्यों [illegible] आदमी हो यार ! कोट वाले को मार डाला ?—ऐसा बढ़िया कोट भी भला क्यों देने लगा ?"

"चलाओ मार डाले। लेकिन यह कोट ऐसे ही मिल गया। कोट वाला घर में था ही नहीं।"

"तो किसी दूसरे ने उसे हथिया लिया होगा ?"

"नहीं घर में बस एक बूढ़ी औरत थी। उस साली ने कोट पकड़ लिया और मुझसे लड़ने लगी। मकान स्टेशन के पास ही था। वहां [illegible] रहे थे। वे लोग खटका सुनते ही भागी [illegible] मैं भी कोट छीन कर भाग आया।"

अरतैक को सतोष हुआ कि चर्नीशोव और उसकी स्त्री अर्मा जीवित हैं लेकिन बाकी शहर तो ध्वंस हो चुका था। उस ओर देख उसका मन भर भर आता। वह पीछे रह जाने के लिये पछताने लगा। समय पर आ जाता तो शायद चर्नीशोव, मावेद या अशीर से से कोई मिल जाता और वह उनके साथ मिल कर शहर को बचाने के लिये कुछ प्रयत्न कर सकता। अब जाने वे लोग कहा होंगे ! लाल सेना मे वह कैसे पहुचे ?

लाल सेना ने दुशाक मे सफेद सेना और ब्रिटिश फौज को हरा कर भगा दिया परन्तु इनका पीछा न कर सकी। इसके कई कारण थे। दूसरे मोर्चों पर अभी तक सफेद सेना का जोर बना हुआ था, दुशाक में लाल सेना के रसद गोदाम और लडाई के समान में आग लग कर बहुत नुकसान हो गया था और यह भी भय था कि सफेद सेना का पीछा करने के लिये आगे बढ जाने पर पिछले मोर्चो से सम्बध न टूट जाये। तेजेन पर अजीज-खा और अलीयारखा के हमले से एक बात स्पष्ट हो गई कि ब्रिटिश सेना सहायता पा कर लाल सेना को परेशान करने वाले बडे बडे डकैत दल, चाहे अपने राज स्थापित करने में सफल न हो सके परन्तु यह लोग जनता को परेशान और निराश कर रहे हैं और लाल सेना को काफी नुकसान भी पहुचा रहे हैं। इसलिये उचित यही था कि एक स्टेशन और पीछे, राविना में लौट कर आगे बढने से पहले पीछे से आने वाले भय का प्रबध कर लिया जाय।

दुशाक मे लाल सेना से मार खाकर ब्रिटिश फौजो ने फिर आगे बढने और लाल सेना से टक्कर लेने का प्रयत्न न किया। सोवियत के हाथ से जो शहर छीने गये थे उन पर प्रकट में सफेद सेना का कब्जा रखा गया। अजीजखा भी इस अव्यवस्थित परिस्थिति मे फायदा उठा रहा था। तेजेन में जो कुछ करतूत उसने की थी वही उसने मारी मे भी की। उसके विचार मे अपनी सत्ता बढ़ाने और जमाने का यही उपाय था।

अजीज़ अपने रिसाले को ले मारी पहुचा। इस नये कस्बे में आते ही वह बस्ती पर अपना आतक बैठाने का नया उपाय सोचने लगा। मारी में तेजेन की लाल सेना का एक अफसर अतादयाली उसके हाथ पड गया था। अजीज को याद था कि अतादयाली ने तेजेन में उसकी सेना पर छापा मार कर उसके हथियार छीनने मे भाग लिया था। अजीजखा ने अतादयाली की मुश्कें बधवा दीं। एक लम्बी रस्सी दयाली के कधों मे

और दूसरी पाव मे बाध कर दो घोड़ों की जीनों से बाँध दिया गया। घोड़ों को चाबुक मार कर बाजारों मे खूब दौड़ाया गया। ख़ाली ... गहतीर की तरह बंधा जमीन पर रगड़ता, उछलता छिन्न भिन्न हो गया। इसके बाद अजीज ने मारी के कस्बे मे ढोंडी पिटवादी:—

"होशियार, खबरदार! फिर न कहना हमने सुना नहीं, जो कोई आदमी किसी भी तरह बोलशेविकों को सहायता देगा, उसे अत्याचारी ... सजा दी जायगी!"

अगले दिन उसने दो और आदमियों को पकड़ मंगवाया। उन्हें भी वही सजा दी गई। मारी की बस्ती अजीज के आतंक से कांपने लगी।

अरतैक अपने सौ सवारों को लिये अजीज की सेना के पीछे पीछे आ रहा था। मारी के काण्ड का समाचार उसे रास्ते में ही मिल गया। क्रोध और घृणा से व्याकुल हो उसने सोचा— 'जनता के इस खूंख्वार जल्लाद के साथ मेरा निबाह कैसे हो सकता है? अब चाहे जो हो, मुझे इसके खिलाफ आवाज उठानी ही पड़ेगी।' इन्हीं विचारों में वह अजीज की छावनी की ओर चला जा रहा था।

अरतैक अभी अलगान की छावनी के भीतर जा नहीं पाया था कि बाहर ही उसकी मुलाकात अजीज़ख़ाँ से हो गई। अजीज, कैसली, सिरदार और मदीरईशान के साथ घोड़े पर सवार था। अरतैक अपने सवारों के साथ उसकी ओर बढ़ता चला गया। दस कदम का अंतर बाकी रह जाने पर उसने अपने सवारों को रुकने का हुक्म दिया और सलाम दुआ किये बिना, रूखे स्वर में अजीज को सम्बोधन किया—

"अजीज ख़ाँ, कभी तुमने सोचा है कि तुम क्या कर रहे हो?"

अजीज ने एक ही नजर में समझ लिया कि अरतैक इस समय क्रोध के कारण बिगड़ा हुआ है। उसने भी रूखा उत्तर दिया—"मुझे तुम्हारी सलाह की जरूरत नहीं।"

"तुम्हारे यह जुल्म मैं नहीं सह सकता। अत्याचारों के कारण ... मेरा मन खिन्न हो गया है।"

"तुम हो कौन मुझसे जवाब तलब करने वाले?"

"मैं कौन हूँ, यह तुम्हें मालूम हो जायगा!"

"अतादयाली क्या तुम्हारा भाई लगता था ? जान पड़ता है तुम बोलशेविकों से रिश्वत खाने लगे हो ?"

"यह भी तुम्हें जल्दी ही मालूम हो जायगा !"

"हूँ"—अजीज़ ने आँखें नीची कर क्रोध में होंठ दबा लिये। उसका चेहरा सुर्ख हो गया। पल भर सोच उसने अरतैक की ओर देख गहरी सांस लेकर कहा—"जब गधा बहुत मुटा जाता है तो मालिक पर ही दुलत्ती झाड़ने लगता है।" उत्तेजना से रकाबों पर तन कर वह जीन से उठ गया। हाथ का हंटर घुमा कर उसने अरतैक को हुक्म दिया—"मैं तुम्हें बर्खास्त करता हूँ। मेरे हथियार लौटा दो !"

"मैं तुम्हारी नौकरी बहुत दिन पहले ही छोड़ चुका हूँ। तुम अंग्रेजों के पालतू डाकू हो और तुर्कमानी लोगों को खाये जा रहे हो !"

"किज़िल खां ! केलखां !"—अजीज ने क्रोध में पुकारा।

केलखां चुप रह गया। किज़िल खां अपना घोड़ा अरतैक की ओर बढ़ा कर बोला—"अरतैक, लाओ भाई हथियार मुझे दे दो।"

अरतैक ने अपना रिवाल्वर किज़िल खां की ओर साध कर उत्तर दिया—"किज़िल खां, तुम बीच में न पड़ो। अगर आगे बढ़ोगे तो मैं गोली मार दूंगा।"

किज़िल खां रुक गया। मर्दारईशान का चेहरा भी फक हो गया था परन्तु बीच बचाव करना अपना कर्तव्य समझ वह समझाने के ढंग से बोला—

"भैया अरतैक, क्या कर रहे हो ! कुछ खयाल करो !"

अजीज खां को कमर में बंधे रिवाल्वर की ओर हाथ बढ़ाते देख अरतैक ने चेतावनी दी—"अजीज खां, जान प्यारी है तो हाथ उधर मत ले जाओ"

अरतैक का एक सवार पीछे से बोल उठा—"अरतैक खां, क्या बात बढ़ा रहे हो ? गोली मारो।"

अजीज खां ने अरतैक के सौ सवारों की ओर नजर डाली। अब तक वह उन्हें भूला ही हुआ था। अपने आपको वश में कर बोला—"अरतैक खां, मैं जानता हूँ तुम बहादुर आदमी हो। तुम ने दुश्मनों को नीचा दिखाया है, यह क्या आपस में झगड़ने का समय है ? इन बातों को जाने दो। हमारे

तुम्हारे सम्बध पुराने है.. .. ।"

अरतैक मन ही मन सोच रहा था—"अजीज और मदीर को अभी गोली मार कर लाल सेना की ओर भाग जाऊं" परन्तु ख्याल आया, मेरे साथ सौ सवार भी तो हैं। इन्हे भी तो साथ ले जाना है। लाल सेना का मोर्चा बहुत दूर है। अगर यहॉ घिर गये तो इन सवारों का क्या होगा ? वह सोचता रहा और फिर उसने अजीज़ खा को उत्तर दिया—"हमारी तुम्हारी नही निभ सकती। अब मैं तुम्हारे यहाँ नहीं रहूँगा। मैं जा रहा हूँ। लेकिन एक बात कहे देता हूँ, अगर तुम मुझे रोकोगे, या पीछा करोगे तो तुम भी बच नही सकोगे।"

वह अपने सवारों की ओर घूम गया—"भाइयो, जो मुझे मानता हो मेरे साथ आ जाये।"

सौ सवारो का पूरा दस्ता अरतैक की ओर बढ आया। अरतैक पीछे लौट पडा और उसके सवार उसे घेर कर उसके साथ मारी की ओर चल दिये।

अजीज ने आपे से बाहर हो अपना रिवाल्वर निकाल लिया। उसका निशाना बहुत पक्का था। वह उडते हुये कौए को गिरा देता था। परन्तु केलखा ने उसे रोका—"क्या करते हो ? देखते नहीं सौ सवार हैं। तुम्हारे जिस्म की धूल भी नहीं मिलेगी।"

अजीज दात पीसता हुआ अपनी छावनी की ओर लौट चला। वह सोच रहा था—मेरी शक्ति क्या धूल बढ रही है ?...यह आदमी मेरे मुँह पर थूक गया। सौ बुड सवार हाथ से गये दूसरों पर ही क्या भरोसा है ? इन से क्या लड़ू ?

* * *

अजीज से विदा हो अरतैक अपने सवारों के साथ 'सकारचग' से पूर्व की ओर चला जा रहा था। 'कुर्बानकला' के पास उसे ब्रिटिश फौज का एक हिन्दूस्तानी रिसाला मिला। इन लोगों ने उसे नियाजबेग का रिसाला समझ कर कुछ नहीं कहा।

आगे बढ 'अनेकोवो' में उसे नियाजबेग का ही रिसाला मिल गया। यह लोग लाल सेना को खोज खबर लगाते फिर रहे थे। अरतैक ने उन्हें बताया कि वह भी अजीज की सेना की ओर से लाल सेना की स्थिति

समझने के लिये इधर चक्कर लगा रहा है। यहा उसे पता चल गया कि सफेद सेना और लाल सेना मे अनेकोवो से राविना तक मोर्चा लगा हुआ है। लाल सेना राविना मे छावनी डाले पडी है। उसने इन लोगों से राविना की राह भी पूछ ली।

अरतैक ने निश्चय किया लाल सेना की ओर रात के समय जाना ठीक न होगा। उसने अपने सवारो को रेलवे लाइन मे काफी दूर रेत के मैदानों में उगी ऊँची घास मे विश्राम के लिये टिका दिया। पौ फटते ही उसने एक सफेद झण्ड ऊँचा किया और सीधा राविना की ओर बढ चला। इससे पहले काहाक मे ब्रिटिश हिन्दुस्तानी फौज सफेद झण्डा दिखाकर लाल सेना को धोखा दे चुकी थी इसलिये उन्होने अरतैक को नज़दीक नहीं आने दिया। लाल सेना की फौलादी ट्रेन से गोली चलने लगी। गोली की बौछार मे अरतैक के रिसाले के घोडे तितर बितर होने लगे।

अरतैक पीछे हट गया। उसने दक्खिन की ओर से राविना की ओर जाने का निश्चय किया और सफेद झण्डा उठाकर उस ओर से बढा परन्तु इस ओर से भी उस पर गोलियों की बौछार पडने लगी। राविना पहुच कर लाल सेना मे मिलने का कोई उपाय न देख वह निराश हो पदीन के रेगिस्तान की ओर चल दिया।

इस समय अलीयार खॉ भी अपना रिसाला लेकर पदोन मे आया हुआ था। बात यह थी कि अजीज और अलीयार खॉ ने तेजेन मे जो अत्याचार किये, उनके कारण अश्काबाद तक का इलाका कॉप उठा। 'मरता क्या न करता' कि मिसाल लोग मरने मारने के लिये उठ खडे हुये। जनता को अपने विरुद्ध भडकता देख ब्रिटिश अफसरो और सफेद सेना को इस मामले में जॉच पडताल करनी पडी। अजीज खॉ और अलीयार खॉ से जवाब तलब किया। अजीज ने सब उत्तरदायित्व अलीयार पर डाल दिया। अलीयार खॉ को जॉच पड़ताल के लिए अश्काबाद की फौजी अदालत मे पेश होने के लिये बुलाया गया। वह इस झफट में न पडना चाहता था। वह तेजेन छोड पदीन के मैदानो में आ गया कि आसानी से लूट मार कर अपना निर्वाह कर लेगा।

इस इलाके में अलीयार खॉ जब चाहता सिरयाक के गडरियों की भेड़े पकडवा लेता उनके दूसरे ढोरों को भी वह अपनी ही सम्पत्ति समझता था।

अलीयार खाँ गाँव-गाँव घूम रहा था। उजड़े और बरबाद गाँवों को देख कर उसका रास्ता मालूम हो जाता था। वह जहाँ से गुजरता कत्ल और बलात्कार के चिन्ह छोड़ जाता। तेजेन से वह अपने लिये एक खूबसूरत औरत पकड़वा लाया था। कुछ दिन बाद उसे सन्देह हुआ कि वह औरत उसके किसी सिपाही से मिल गई है। इस औरत को उसने अपने प्रेमी के साथ गढ़ा खुदवा कर जिन्दा ही गड़वा दिया। अलीयार की इस क्रूरता पर उसके सिपाहियों में सनसनी फैल गई। एक सरदार ने इस पर आपत्ति की। अलीयार ने इस सरदार को रात में कत्ल करवा दिया। इसके बाद किसी को कुछ कहने का साहस न हुआ।

अरतैक खूब समझ चुका था कि सफेद सेना, रूस के मामले में दखल देने आई अंग्रेजी फौज अजीज खाँ और अलीयार खाँ में कोई अन्तर न था। अलीयार खाँ इन सबसे मूर्ख और बेहूदा था। अरतैक ने सोचा पहले अलीयार खाँ से ही समझा जाय। अरतैक का रिसाला आसपास की बस्तियों में लूट मार न करता था इसलिये इलाके गाँवों के लोगों और चरवाहों को उससे सहानुभूति थी, वे उसे रसद पहुंचा देते और आवश्यकता होने पर राह भी बताते।

अरतैक ने अपने एक सिपाही के हाथ अलीयार खाँ के पास सन्देश भेजा—"या तो तुम आकर मुझसे मिलो या इस इलाके से बाहर चले जाओ।"

अलीयार खाँ ने इस सिपाही की मूँछे मुँडवा दीं और उसके घोड़े की दुम कटवा दी और बोला—"चले जाओ वापिस और अरतैक से कह दो यह है मेरा जवाब।"

इस अपमान से अरतैक को बहुत क्रोध आया। दूसरे दिन पौ फटने से पहले ही उसने अपना रिसाला ले अलीयार खाँ का खेमा जा घेरा और नंगी तलवारों से हमला बोल दिया। अचानक हमला हो जाने के कारण अलीयार खाँ के सिपाहियों के सिर और शरीर के दूसरे अंग कट कट कर ठंडी रेत पर गिरने लगे। जिस सरदार को अलीयार खाँ ने कत्ल करवा दिया था, उसके साथी भी समय देख अलीयार खाँ के ही आदमियों पर टूट पड़े। थोड़ी ही देर में लड़ाई समाप्त हो गई। मैदान खून से तर हो कटे हुए अंगों से छितरा गया। बिना सवार के घोड़े इधर उधर भागते

कर रहे थे। अलीयार खॉ लगभग सौ जख्मी सिपाही लेकर भाग गया अरतैक के चार आदमी खेत रहे परन्तु उसे चालीस सवार और मिल गये और बहुत से बढिया घोडे भी मिले। उन्हे उसने अपने सवारों मे बांट दिया।

अरतैक फिर लाल सेना से मिलने का प्रयत्न करना चाहता था परन्तु बीच में दूसरी बाधा आ पडी। अलीयार खॉ के अत्याचारो से पीडित हो इलाके के लोग रोते पीटते ब्रिटिश फौज की छावनी मे फरियाद करने पहुंचे थे। इस इलाके की सहानुभूति अपनी ओर करने के लिये अंग्रेजों ने अपने हिन्दुस्तानी रिसाले के अफसरो की एक कम्पनी अलीयार खा को पकडलाने के लिये भेज दी थी। लेकिन अब अलीयार खॉ की जगह आ बैठा था अरतैक ! इलाके के चरवाहो और गडरियों ने आकर प्रसन्नता से अरतैक को खबर दी की हमारी-तुम्हारी सहायता के लिये और अलीयार खॉ से बदला लेने के लिये अंग्रेजी फौज आ रही है। अरतैक जानता था कि यह लोग उसे कैसी सहायता देगे।

हिन्दुस्तानी रिसाला रेतीले मैदान की राह आने वाला था। अरतैक ने इस राह में अपने कुछ सवारों को एक मील तक रास्ते के दोनों ओर की झाडियो मे छिपा दिया और अपने शेष सवारों को ले एक नीची जगह मे जा दुबका। रिसाला आया तो छिपे हुए सवारो ने उसे चुपचाप आगे निकल जाने दिया। जब रिसाला स्वयं अरतैक के बिलकुल समीप पहुँच गया तो सहसा एक सौ राइफलों की गोलियाँ की बौछार इन पर आ पड़ी और सौ सवारों का दल नगी तलवारें ले इन पर टूट पड़ा। अफसर लोग बोखला गये। सहसा पीछे लौटने में एक दूसरे से टकरा कर घोड़ो से गिर पडे। पीछे लौटे तो अरतैक के छिपे हुए सवार इन पर टूट पडे। आधे से अधिक हिन्दुस्तानी अफसर मारे गये, कुछ पकडे गये। अरतैक को कई और घोडे और बहुत सी, कई कई गोली भरने वाली बढिया राइफले मिल गई !

अरतैक ने लाल सेना से सम्बध जोडने की फिर कोशिश की। इस बार उसने अपने रिसाले को रावेना की ओर कुछ दूर ले जाकर दक्खिन पच्छिम के जगल मे छिपा दिया और दो घुडसवारो को सफेद झडा और अपना सदेश देकर लाल सेना की ओर भेजा। सवार दूर जा कर नजर से ओझल हो गये। दूसरी ओर से गोली चलने की कोई आहट नही आई। अरतैक इन सवारों के हाथ उत्तर आने की प्रतीक्षा उत्सुकता मे कर रहा था। सवारो को गये तीन घटे बीत गये परन्तु कोई उत्तर न आया। उसे

चिन्ता होने लगी—क्या उन लोगों को मेरा विश्वास नहीं? शायद सवारों को गिरफ्तार कर लाल सेना हमारे चारों ओर घेरा डाल रही है। यदि हम घेर कर उन लोगों ने गोली चलाई तो मैं क्या करूगा? क्या गोली का जवाब गोली से दू? ··क्या करूँ? जवाब न मिले तो, मैं क्या करू? ··· यहाँ कब तक प्रतीक्षा करू? ·· पदीन लौट जाऊँ या तेजेन चला जाऊ? · नहीं अब लौट नहीं सकता। मुझे हर हालत मे लाल सेना में जाना ही है। मैं चर्नीशोव और अशीर के सामने जाऊगा यदि उन लोगो को मेरा विश्वास नहीं तो वे मुझे गोली मार सकते है? मैं अब लौटूंगा नहीं ·· । एक घण्टे के करीब और बीत गया। कोई उत्तर नहीं आया। उसने सोचा एक बार फिर सन्देश भेजू? उसने दो और सवारों को तैयार होने के लिये हुक्म दिया। सवारों ने रकाबों में पाव रखे ही थे कि सामने पाँच सवार राबिना की ओर से आते दिखाई दिये। अरतैक ने सान्त्वना का दीर्घ श्वास लिया।

अरतैक राबिना से अपनी ओर आते इन सवारों को लगातार दूरबीन से देख कर पहचानने का यत्न कर रहा था। वे अभी बहुत दूर थे। कभी दृष्टि से ओझल हो जाते और फिर पहले से कुछ स्पष्ट और नजदीक दिखाई देने लगते। बीच की भूमि ऊची नीची होने के कारण गहराई में चले जाने पर वे दिखाई न पड़ते थे। कुछ देर बाद अरतैक ने अपने दोनों सवारों को पहचान लिया। बाकी तीन को वह पहचान न सका। उसकी आँखें उत्सुकता के कारण थकी जा रही थीं। सवारों के कुछ और समीप आने पर वे कुछ पहचाने हुये जान पड़े। इनमे से दो तो ······

"अशीर! तिर्शको!"—अरतैक चिल्ला उठा और उन लोगों की ओर दौड़ पड़ा।

व्यग्र उत्सुकता में अरतैक की आँखें धोखा खा गई थीं। इन सवारों में न अशीर था और न तिर्शको; और न कोई उसका अपना आदमी। वह लाल सेना के पाँच सवार थे जो अपने मोर्चे के आस पास जांच पड़ताल के लिये गश्त कर रहे थे। लेकिन अशीर और तिर्शको का नाम परिचय शब्द (पासवर्ड) का काम कर गये।

दो घण्टे बाद अरतैक लाल सेना के मुख्य दफ्तर में बैठा था। सावंद, अशीर और तिर्शको उसे घेरे हुये थे। तिर्शको इस कम्पनी का कमान

अफसर था। वह कीचड मे लथपथ कहीं से लौटा ही था और मुह हाथ धोता हुआ अरतैक से बातचीत कर रहा था—"तुम्हे चार्दीजोव जा कर हमारे कमाण्डर-इन-चीफ से मिलना होगा। वही तुम्हे किसी रेजीमेंट मे नियुक्त करेगा।"

"कमाण्डर-इन-चीफ? मे क्या जानू कौन है कमाण्डर इन-चीफ? और वह मुझे क्या जाने?"

"घबराओ नहीं। तुम्हारे साथ आदमी जायगे और फिर कमाण्डर-इन-चीफ को भी तुम शायद पहचान लो, उसका नाम है—चर्नाशोव!··· क्यों पहचान लोगे?"

अरतैक का चेहरा खिल उठा।

*   *   *

चर्नाशोव और अरतैक आमू नदी के किनारे टहलते हुये बातचीत कर रहे थे। उन्होंने आपस मे युद्ध की स्थिति, ब्रिटिश सेना की दखल देने की नीति सफेद सेना की शक्ति और लाल सेना के पीछे के मोर्चे, सभी विषयों पर बात-चीत की। अरतैक आमू नदी के विस्तृत प्रवाह की ओर विस्मय से देख रहा था। अब तक उसने इस नदी की चर्चा ही सुनी थी, देखने का यह पहला ही अवसर था। दृष्टि की पहुच तक मटियाले जल की लहरें बल खाती चली जा रही थीं। दोनों किनारों पर सधा हुआ, बहुत लम्बा फौलादी पुल तना हुआ था। उसी समय परले पार से एक भारी मालगाड़ी प्रबल वेग से दौडती पुल के भीतर घुस गई। गाडी के बोझ और चाल का कुछ भी प्रभाव पुल पर न जान पड़ता था। पुल के नीचे चौडे-चौडे दृढ़ खम्भे स्वय छोटे मोटे मकानों की तरह थे। उसे याद आ रहे थे अपने गाव के आस पास की नहरों पर बने हुये बासों और रस्सी के छोटे-छोटे पुल जो एक आदमी या एक गधे के गुजरने के बोझ से ही लचक लचक जाते थे। वह सोच रहा था—धन्य है तू, इस पुल को बनाने वाले।

तेजेन्का नदी की ही भाति आमू से भी कई नहरें निकली हुई थीं परन्तु यह नहरें स्वय तेजेन्का नदी से भी बडी और चौडी थीं। इन नहरों मे पाल उडाती नावें आ जा रही थीं। आमू में बडे-बडे स्टीमर सैकडो आदमी और हज़ारों मन बोझ उठाये दौड़ रहे थे। किनारों पर मछली मार डोंगे लगर डाले खड़े थे। इन पर से बड़ी बडी मछलिया उतारी जा रही थीं। मटियाले

जल मे हवा के थपेड़ो से बौखलाई लहरे एक दूसरे पर चढ जाना चाहती थी और उनकी भिडन्त से सफेद फेन उठ रहा था। लहरे आती और अपना फेन किनारों पर छोड जाती। दूसरी लहर आकर उस फेन को समेट ले जाती। अरतैक जल के इस विस्तार को देख विमूटसा हो बोल उठा—

"भैया चर्नीशोव, पानी है यहा! इससे तो पृथ्वी और आकाश सभी भर जाय और यह खत्म न हो! कहा से आता है इतना पानी और कहा समाता होगा?"

"क्यों?"—चर्नीशोव ने उत्तर दिया—"यह कोई छोटी मोटी नदी तो है नहीं। अफगानिस्तान क्या, हिन्दुस्तान की सीमा तक का चक्कर लगाती है। इसके जल से कर्की का इलाका, चार्दीजोव का इलाका पलता है फिर यह दैनू दानिता, खीवा तौशेज की भूमियों को सींचती है। तब कहीं जाकर अराल के समुद्र मे गिर जाती है।"

"समुद्र मे दिन और रात बरसों से इतना पानी गिर रहा है और उसका पेट नहीं भरा। तभी लोग कहते हैं, समुद्र का पेट कभी नहीं भरता।"

"नही भरता तभी ठीक है यदि समुद्र अघा कर यह पानी लौटाना शुरू कर दे तो पृथ्वी पर खडे होने की जगह न रहे।"

अरतैक चुप था परन्तु उसकी कल्पना मे तेजेन के इलाके के अपने गावों की सूखी धरती घूम रही थी जो जल बिना बरसो दरारों से फटा करती है। वहा कोपेतदाग की छोटी पहाडी से निकलने वाले सोते के जल की नालियो पर चुल्लू चुल्लू भर जल के लिये झगडे होते रहते हैं और हर साल इन झगडों में कई खून हो जाते हैं। पर्नीन के रेतीले मैदानों में जल के बिना सैकडो पशु प्यासे मर जाते हैं? पानी के बिना कितने काफिले अपनी लम्बी यात्राओं मे प्यासे मर जाते हैं? और यहा आमू नदी का विस्तृत जल पर्याप्त स्थान न पाने के कारण क्रोध मे गर्ज रहा है, लहरें आपस में भिड रही हैं और जाकर समुद्र मे स्थान ढूँढ रही हैं? यदि समुद्र मे गिर कर व्यर्थ होने वाला आमू का यह जल, अखाल और तेजेन की ओर बहे तो क्या हानि है? यदि ऐसा हो सके तो तेजेन की उपजाऊ धरती धूप मे सूख कर जल के बिना चटकेगी नहीं। हमारी धरती अघा कर फूलों से मुस्करा उठेगी। हमारे किसान भूख और प्यास मे न तडपेंगे।"

अरतैक ने सुना था कि आमू नदी की बडी महिमा है। उसके जल मे

अनेक रोगों का नाश हो जाता है। उसमें अपार शक्ति है। शायद इस विश्वास से, या किसी दूसरे भाव से आमू को सम्बोधन कर वह बोल उठी—"हे सुन्दर और समृद्ध नदी, तू इतनी कठोर और निर्दय क्यों है ? हमारे प्यासे सूखे गावों की ओर भी एक नजर डाल !"

यह सुनकर चर्नीशोव मुस्करा दिया अरतैक को यह भला न लगा—'तुम्हे हसी क्यों आ रही है ?"—उसने पूछा।

"क्या नदी के कान हैं जो तुम्हारी बात सुनेगी।"

"क्यो नहीं, यह लहरे इसके कान नहीं तो क्या है ? यह गरज रही है तो सुन नहीं सकेगी ?"

"मान लिया। परन्तु यदि भूमि को जोते बोये बिना उससे अन्न मागो तो मिलेगा ?"

अब अरतैक चुप रह गया। चर्नीशोव बोला—"आमू का जल तुर्क-मानिस्तान पहुचाने के लिये हमे बंद बाधने होंगे और नहरे खोदनी होंगी।"

"यह कौन कर पायेगा ! किस मे है इतना सामर्थ्य ?"

"सोवियत में जनता की सम्मिलित शक्ति मे है यह सामर्थ्य। और सोवियत यह काम करेगी।"

"तुम्हारी यह बात भी उतनी ही भोलेपन की है जितनी कि मेरी थी।"

"खेतों से फसल पाने के लिये तुम्हे मेहनत करनी पडती है या नहीं ?"

"खेत में पानी आये तभी तो श्रम करके फसल पाई जा सकती है।"

"ठीक है, जैसे फसल के लिये श्रम की आवश्यकता है वैसेही खेतों में पानी पहुचाने के लिये भी श्रम की आवश्यकता है। यह काम अकेले आदमी के बस का नहीं परन्तु यदि हम लोग इसके लिये सगठित रूप से श्रम करें तो देश के कोने कोने में जल पहुच सकता है।"

"अगर मेरे श्रम से तेजेन मे पानी पहुच सके, मैं उम्र भर नहर खोदने के लिये तैयार हू।"

"तुम्हारी तरह जी जान से परीश्रम करने के लिये तैयार करोडो आदमी हमारे देश में हैं। उनके श्रम से हम सभी कुछ कर सकते हैं। यदि यह विदेशी यहा आकर दखल न दे और हमारे देश की जनता का श्रम चूसने

वाले, हमारे देश के जमींदार और पूंजीपति हमारी जनता को अपनी भलाई के लिये सगठित होकर काम करने दे तो हम सब कुछ कर सकते हैं। परन्तु जो लोग हमारी जनता का श्रम हथिया कर शासन का अधिकार भोगते आये हैं और गुलछर्रे उडाते आये हैं, हमारी राह में रोडे अटका रहे हैं। पहले उनके हाथ से मुक्ति पाना आवश्यक है।"

अरतैक चुपचाप आमू के जल की ओर दृष्टि लगाये खडा रह गया। चर्नीशोव ने उसे पुकारा—"अब लौटोगे नही ?"

अरतैक आमू के जल की ओरसे अपनी प्यासी आखे न हटा पा रहा था। जैसे भूखे बच्चो के लिये मिठाई की ओर से दृष्टि हटाना कठिन हो जाता है। जब लौटना ही पडा तो, भविष्य मे उस जल को पाने की आशा मे उसने उस जल को स्पर्श कर उससे अपना मुह धो अपने को शात करने का प्रयत्न किया।

२८

कई दिन, सप्ताह और मास बीत गये। दुशाक में लाल सेना से मार खाने के बाद ब्रिटिश सेना ने फिर आगे बढ़ने का साहस न किया। सन १९१९ में मार्च महीने के अन्त में एक रात यह ब्रिटिश सेना अपनी जगह डेनिकिन की सेना को छोड़ चुपचाप खिसक गई। यह लोग अपनी याद के रुप में पीछे अपनी केवल एक पल्टन क्रास्नोवोदस्क में छोड़ गये। यो तो तुर्किस्तान भर में इनके दलालों का जाल बिछा था, जो जनता में भ्रम फैलाकर सोवियत के विरुद्ध असंतोष फैला रहे थे। यह लोग सोवियत के कार्यक्रम को विदेशियों के बल पर बरबाद करने की और सोवियत को हटाने की चेष्टा कर रहे थे। सफेद सेना को विदेशियों की सहायता से सोवियत को हटाने की चेष्टा करते देख तुर्कमान जनता समझने लगी थी कि न तो यह विदेशी हमारे हित चिन्तक हो सकते हैं और न इन विदेशियों के नौकर सफेद सेना वाले ही। तिस पर लाल सेना से मुठभेड़ में ब्रिटिश फौजों को जन धन का नुकसान भी बहुत उठाना पड़ रहा था। इसलिये अंग्रेजों ने तुर्कमानिस्तान में भी अपनी पुरानी साम्राज्यवादी चाल चलने का ही निश्चय किया सोवियत के विरुद्ध अपनी बन्दूक सफेद सेना के कंधों पर रखकर ही चलाई जाये। ब्रिटेन की अपनी इस चाल में भी सफलता न मिली। कम्युनिस्टपार्टी के नेताओं के सैनिक नेतृत्व में लाल सेना और रूसी और तुर्कमानी जनता ने शीघ्र ही ब्रिटेन की कठपुतलियों, इन सफेद सेनाओं, को भी मैदान में भगा दिया।

जुलाई, १९१९ में कास्पियनपार की लाल सेना के अफसरों ने अपनी सरकार को रिपोर्टें भेजी —

"कास्पियन-पार की हमारी बहादुर सेना दुरुह अड़चनों को पार कर कहाक पहुंच गई है। इस सेना के एक भाग ने भागते हुए शत्रु के पिछले भाग पर हमला बोल उसे मुख्य सेना से काट कर तितर बितर कर दिया...

"कहाक में हमारी सेना ने सफेद सेना की सब रसद और युद्ध का सामान छीन लिया है......

"सफेद सेना को हमने पूरी तरह परास्त कर धूल में मिला दिया है।

उसके कुछ दल तितर-बितर हालत में भाग कर समीप के पहाड़ों और रेगिस्तान में जा छिपे हैं। हम उनका पीछा कर, चुन चुन कर उन्हें समाप्त कर रहे हैं।"

क्रास्नोवोदस्क में अभी ब्रिटिश फौज की एक पल्टन शेष थी। परन्तु क्रास्नोवोदस्की कास्पियन-पार से सैकड़ो मील दूर है और मार्ग में रेगिस्तान और उजाड़ पहाड़ फैले हुए हैं। इन सब अड़चनो को लाँघ कर शत्रु पर धावा बोलना आसान काम न था। सफेद सेना हार कर भागते समय जितना भी बन पड़ता नुकसान कर जाती। शहरों और गोदामों को जला देती पुलों और बाँधों को तोड़ जाती। इस पर भी लाल सेना उनका पीछा न छोड़ा।

इस ऐतिहासिक युद्ध में भाग लेने वाली लाल सेना की कम्पनियों के सबसे योग्य और बहादुर कमाण्डरों में अरतैक बबाली का भी नाम था। अरतैक की रेजीमेण्ट का कमिस्सार तिशेको था। अशीर और मावेद उसके मुख्य सहायकों में थे। इस सेना ने सफेद सेना को पराजय पर पराजय देकर अपनी तुर्कमान मातृभूमि को स्वतन्त्र करके ही चैन की साँस ली।

लाल सेना की इस पल्टन का मोर्चा कजान्दिक में रेलवे लाइन के समीप लगा हुआ था। मोर्चे के चारो ओर की धरती दूर दूर तक तोपों के गोलों से खुदे गढ़ों और लड़ाई के मोर्चों के लिये खोदी गई टेढ़ी मेढ़ी खन्दकों से ऊबड़ खाबड़ हो रही थी। लाइन पर एक छिन्न भिन्न फौलादी ट्रेन खड़ी हुई थी और परखचे उड़ी हुई गाड़ियाँ लाइन के चारों ओर बिखरी हुई थीं। जहाँ तहाँ लड़ाई के टूटे हुए हथियार बिखरे हुए थे। तोपों के पहिये और जले हुए कुन्दों वाली राइफलें सब ओर पड़ी नजर आती रहतीं। सम्पूर्ण प्रदेश लड़ाई की आग से झुलसा हुआ जान पड़ता था। परन्तु इस मोर्चे पर डटी हुई सेना के लोग इस प्रकार की परिस्थितियों और वातावरण के प्रति अभ्यस्त हो चुके थे। उनकी वर्दियाँ तार तार हो रही थी और पहाड़ों से आती बर्फानी हवा उनके शरीर को छेदे दे रही थी। रात में पूरी नींद सोना उनके लिए दूभर था परन्तु इस पर भी सिपाही खिन्न और हताश न थे। रात पड़ने पर कहीं कोई आदमी इकतारा या दुतारा बजाने लगता और दूसरे सिपाही गोल बाँध कर उसके चारों ओर नाचने लगते। कहीं बहुत से सिपाही टोलियाँ बना गीत छेड़ देते। भय और कठनाइयों की उन्हें कोई चिन्ता न थी, क्योंकि यह लोग अपने मानवी अधिकारों के लिए, मनुष्य बनने के लिये, स्वयं अपनी इच्छा से अपने शोषकों से लड़ रहे थे।

एक दिन सुबह ही लाल सेना के इस मोर्चे का मुख्य सेनापति (कमाण्डर इन-चीफ) अपने सहायक और सलाहकार अफसरों और अर्दलियों को लिये स्टेशन के तार घर से बाहर निकला और उसने खबर दी की क्रान्ति की युद्ध समिति का सदस्य, एक बहुत जिम्मेवार व्यक्ति कामरेड कुइबशेव इस मोर्चे के निरीक्षण के लिये आ रहा है। छावनी में खबर पहुंचते ही सब दृश्य एक दम बदल गया। सिपाही अपनी फटी पुरानी वर्दियों को झाड पोंछ कर पहनने लगे। बूटों, पेटियों और बटनो पर पालिश होने लगी। घोडों के जीनसाज और रकाबें ठीक से बाँधी जाने लगीं और पल्टन के डाक्टर दौड़-दौड़ कर सफाई देखने और बावर्चीखाने का इन्तजाम ठीक कराने लगे।

खबर पा कर सब कम्पनियों के कमाण्डर भी हजामत बना, वर्दी ठीक कर एक साथ इकट्ठे हो, स्टेशन पर आ पहुँचे।

कमाण्डर इन-चीफ स्टेशन पर खडा अपने सलाहकारों से बात कर रहा था। उसके चेहरे पर गहरी चिन्ता और उलझन दिखाई दे रही थी। बातचीत करते समय वह बार बार अश्काबाद से आने वाली लाइन की ओर देख रहा था। सब ओर स्तब्ध उत्सुकता का आतंक छा रहा था।

अरतैक और तिशेको एक साथ खडे थे। तिशेको पर भी परिस्थिति का प्रभाव पड रहा था। शरीर के तनाव से उसके रोंगटे खडे हो रहे थे।

अरतेक ने उसकी ओर देख मुस्करा कर पूछा—"तिशेको, क्या बहुत जाडा मालूम हो रहा है?"

"हां, देखो तो हवा कितनी सर्द है? कपडों को छेदे दे रही है!"

"कपडे तो मेरे भी तुम्हारे जैसे ही हैं।"

"अरे भाई घबराने की तो बात ही है"—तिशेको ने स्वीकार किया—"यह आदमी तुर्किस्तान की क्रान्तिकारी युद्ध समिति का सदस्य है, तुर्किस्तान की केन्द्रीय पार्टी की कार्य-कारिणी का मेम्बर है जानते भी हो?"

"मैं जानता हूँ कामरेड कुइबशेव दौरे पर आ रहा है परन्तु वह यहां खामुखा नुकताचीनी करने और हमें फटकार बताने तो नहीं आ रहा।"

"यह तो ठीक है। वह हमारा उत्साह बढाने आ रहा है। वह हमें जल्दी से जल्दी लड़ाई जीतने के लिये उपाय बतायेगा। फिर भी भाई एक बड़े आदमी का कुछ रोब होता ही है। दुश्मन की गोली का सामना कर लेना और बात है? यह उत्तरदायित्व की बात है।"

अरतैक तिशेंको की परेशानी पर मुस्कराता रहा परन्तु जब स्पेशल ट्रेन सनसनाती हुई स्टेशन पर आ पहुँची तो वह स्वयम भी स्तब्ध सा रह गया। मोर्चे का कमाण्डर-इन-चीफ का० चर्नीशोव स्थानीय अफसरों के साथ कुइबशेव की गाडी की ओर गया। स्पेशल ट्रेन में साथ चलने वाले सिग्नेलर तुरत गाडी से उतरे और उन्होंने स्टेशन के टेलीफोन से तार लेकर कुइबशेव की गाडी में टेलीफोन लगा दिया। अरतैक भी कौतुहल से उस गाडी की खिडकियों की ओर देख रहा था। खिड़की में से उसे एक दुबला पतला आदमी फौजी कोट पहने दिखाई दिया। उसका माथा ऊंचा और चौडा था, सिर पर बाल बहुत कम थे। यह आदमी खिडकी में से चुपचाप पहाडियों की ओर देख रहा था। अरतैक ने कुइबशेव को पहचान लिया। फौजी अखबार में वह उस का चित्र कई बार देख चुका था।

कुछ देर बाद चर्नीशोव उस गाडी से बाहर निकला। उसका चेहरा प्रसन्न और उत्साहित था। अरतैक और तिशेंको को देख वह इनकी ओर बढ आया। इनसे हाथ मिला वह इनकी पल्टन के बारे मे पूछताछ करने लगा।

मौका देख अरतैक ने मुस्करा कर पूछा—'साथी कमाण्डर-इन-चीफ, यह कामरेड कुइबशेव क्या हम जैसे लोगो से भी बात कर लेता है ?"

चर्नीशोव ने भी मुस्करा दिया—"तुम से बात करेगा तो अपने आप ही देख लेना।"

"मुझसे बात करेगा ?"—अरतैक ने विस्मय से पूछा।

"हाँ"

अरतैक चुप रह गया। और फिर सोच कर गम्भीर स्वर में बोला—'साथी कमाण्डर इन चीफ, अगर मेरे काम से तुम सतुष्ट नहीं हो, या मुझ पर तुम्हें कुछ सदेह है तो तुम स्वयम ही मुझसे साफ साफ बात कर सकते थे !

"तुम्हारी बात मैं नहीं समझा"—अब चर्नीशोव के चेहरे पर विस्मय दिखाई दे रहा था—"क्या कहते हो तुम ?"

"तुम जानते हो मैं अजीजखा के साथ था। मैंने सफेद सेना में भी काम किया है। मैंने इन बातों को कभी छिपाया भी नहीं।"—अरतैक का चेहरा लाल हो गया—"अब यह बाते मुझे कामरेड कुइबशेव से भी

सामने स्वीकार करनी पड़ेगी। यह अपमान मैं न सह सकूंगा।"

चर्नीशोव के माथे पर बल पड़ गये—"अरतैक बबाली, क्या कूढमगज आदमी हो तुम ? खबरदार अगर तुमने इन बेहूदा बातों को दोहराया। मैं किसी भी आदमी के मुंह से ऐसी बात सुनने के लिये तैयार नहीं हूँ। कामरेड कमिस्सार !" --चर्नीशोव ने तिशेंको की ओर देखा—"सेना के सिपाहियों को तुम क्या राजनैतिक शिक्षा दे रहे हो ? इतने बड़े जिम्मेवार अफसरों के मन से भी तुम व्यर्थ और मिथ्या भावनायें अब तक दूर नहीं कर सके !"

तिशेंको ने फौजी सैल्यूट कर उत्तर दिया—"मुझे अपनी भूल के लिये अफसोस है कमाण्डर-इन चीफ।"

अरतैक हैरान रह गया—बात ने यह क्या रूप ले लिया ? वह फिर बोला—"कामरेड कमाण्डर-इन-चीफ मैं कुछ कहना चाहता हूँ !"

"क्या कहना चाहते हो ? . . .कहो !"

"इस मामले मे कमिस्सार तिशेंको का कोई दोष नहीं !"

"यह कमिस्सार का ही दोष है"—दृढता से चर्नीशोव बोला—"कमिस्सार का कर्तव्य है कि लाल सेना के सिपाहियों और अफसरों को उचित राजनैतिक शिक्षा दे कर उनके व्यर्थ सन्देह को दूर करे। कमिस्सार तिशेंको, मैं तुम्हे इस उपेक्षा के प्रति चेतावनी दे रहा हूँ, याद रहे !"

"आप की बात ठीक है कमाण्डर इन चीफ़"—तिशेंको ने फिर सैल्यूट कर स्वीकार किया।

अरतैक मूढसा रह गया। अपनी परेशानी मे वह यह भी न देख सका कि चर्नीशोव ने आंख से तिशेंको को क्या इशारा किया और तिशेंको ने इशारे में क्या उत्तर दिया।

"अच्छा भाई"—चर्नीशोव का स्वर फिर कोमल होगया—"तुम लोग अपनी पल्टन में लौट कर तैयार रहो। हो सकता है, कामरेड कुहनशेव तुम लोगों से बातचीत करने वहीं आये।"

अरतैक खिन्न मन से लौट पड़ा। रास्ते मे वह तिशेंको से बोला—"भाई तिशेंको, जो कजरौटे को छुयेगा, उसके हाथ काले होंगे। मुआफ़ करना, मेरे कारण आज तुम्हें भी इतना सुनना पड़ा। इसके लिये मुझे अफसोस है परन्तु इसमें मेरा क्या वस था ?"

"अरतैक, अभी पांच मिनिट नहीं हुये कि हम दोनों पर डांट पड़ी है"-तिशेंको ने उत्तर दिया— 'तुम फिर वैसी ही बातें कर रहे हो। कमाण्डर-इन चीफ की बात बिलकुल ठीक है। तुम्हारे माथे पर तो कोई मोहर लगी नहीं। मनुष्य अपनी समझ और विश्वास के अनुसार ही काम करता है। तुम्हें अजीज पर विश्वास था इसलिये तुम उसका साथ दे रहे थे। बात समझ आ जाने पर तुमने उसका साथ छोड़ दिया। कौन नहीं जानता कि पूरे एक बरस से तुम जान हथेली पर लिये सोवियत और जनता की रक्षा के लिये लड़ रहे हो! इस पर भी तुम समझो कि तुम पर शत्रु का साथ देने का दाग लगा हुआ है तो, क्या इलाज? अजीज के साथ कुछ दिन रहने का तो तुम्हारे मन पर इतना प्रभाव है परन्तु सोवियत के पक्ष में रहने की बात ही भूल जाते हो। आखिर यह क्या बात है?"

"कोढ़ का भी कोई इलाज होता है?"—आह भर अरतैक ने पूछा।

"मरने पर तो शरीर के साथ कोढ़ भी खत्म हो जाता है!"—तिशेंको ने समझाया—"सोवियत के लिये तुमने कितनी बार मौत का सामना किया? कोढ़ अभी तक धुला नहीं? अजीज के साथ का कोढ़ तो तभी दूर हो गया था जब तुम उसे लात मार आये थे। अब तो तुम पूर्ण स्वस्थ सोवियत सैनिक हो! उस बात का चर्चा अब न करना, याद रहे।"

"अच्छा भाई अब नहीं करूँगा।"

कुद्रशेव बहुत देर तक गाड़ी में ही बैठा स्थानीय मोर्चे के सम्बन्ध में रिपोर्ट सुन कर पूछताछ करता रहा। अपने मन को समझाने के लिये अरतैक को काफी समय मिल गया। वह सोचता रहा—कुद्रशेव यह प्रश्न करेगा तो मैं यह उत्तर दूंगा, वह बात पूछेगा तो ऐसा उत्तर दूंगा। परन्तु जब उसने कमाण्डरों को अपनी पल्टन की ओर आते देखा तो सब कुछ भूल गया।

कुद्रशेव जब बिलकुल समीप आ गया तो अरतैक ने अपने घोड़े की रकाबों पर तन कर अपनी पल्टन को सलामी देने का हुक्म दिया—"पल्टन सावधान!"

कुद्रशेव ने पल्टन के सवारों को एक सिरे से दूसरे तक पैनी नजर से देखा। अरतैक ने उसके सामने आकर फौजी सलाम किया और अटेंशन (सावधान) में खड़ा रहा।

कुइबशेव ने हुक्म दिया—"स्टैंड एटईज" आराम से हो जाओ! और हाथ बढा कर अरतैक से मिलाया। कुइबशेव बहुत देर तक अरतैक और तिशेंको को उनके नाम से सम्बोधन कर, मुस्करा मुस्करा कर उनसे बात करता रहा। वह बात बात मे मजाक कर देता और उसकी बातों से दूसरे लोग भी मुस्करा देते।

कुइबशेव के चले जाने पर भी अरतैक उसकी आखों की गम्भीरता और बात करने के सरल ढग को याद कर सोचता रहा—यह है असल फौलादी आदमी, जो किसी भी परिस्थिति से घबरा नहीं सकता। ऐसे व्यक्ति का नेतृत्व मिले तो मेरे जैसे दिहाती किसान भी काम लायक सिपाही बन सकते हैं,

कुइबशेव के शब्द उसे याद आ रहे थे—"कामरेड कमाण्डर, सोवियत सरकार जानती है कि आपकी सेना दुर्गम और बीहड रास्तों पर, जान की बाजी लगा कर लडती हुई एक हजार मील से अधिक सफर तय कर चुकी है। क्रास्नवोदस्क पहुचने के लिये अभी आप लोगों को सैकडों मील रेगिस्तान पार करना होगा। रास्ते मे कई और विकट मोर्चे पड सकते हैं। आपका क्या ख्याल है, आप के सवार थक नहीं गये होंगे?"

अरतैक ने उत्तर देने का यत्न किया—'क्रान्ति'' 'क्रान्ति युद्ध, युद्ध कमेटी के मेम्बर '' ''।"

कुइबशेव बोला उठा—"अरे भाई, वह इतना बड़ा नाम रहने दो न! मेरा नाम कुइबशेव है। मेरा नाम ले कर बात करो!"

"कामरेड कुइबशेव, हमारे यहाँ कहावत है—तलवार मियान में पडी रहे तो जग खा जाती है। हमारे सवार तो खाली बैठे रहने से ही घबराते हैं। हम लोग तो किसान है। किसान तो तभी आराम करता है जब फसल बटोर कर घर ले आता है।"—अरतैक ने उत्तर दिया।

'अच्छा!"—कुइबशेव जोर से हंस कर बोला—"तो आप सफेद सेना को अपनी फसल समझते हैं, खूब!"

"नहीं नहीं, हमारे यहाँ एक दूसरी कहावत भी है, वैरी, रोग, सांप चिंगारी, कब हू छोटे न गानै विचारी!"

"हू, तो आप इन सफेद सांपों को कुचले बिना आराम न करेंगे?"

"कभी नहीं।'

"इस कूच में आप मुझे साथ ले चल सकते हैं ?"—मुस्कराकर कुइवशेवने पूछा ।

"क्या कीजियेगा अपना समय नष्ट करके ? कूच में मुसीबत भी रहती है । आप क्यों यह सब झेलें ?"

"मैं स्वयं देखना चाहता हूं हमारी लाल सेना और उसकी तुर्कमानी पल्टन और रिसाले कैसी वीरता से शत्रु को पछाड़ते हैं ।"

कुइवशेव ने यह बात तुर्कमानी पल्टनका दिल रखने के लिये ही नहीं कही थी । वह अरतैक के सवारों के साथ कूच में शामिल हो गया । सैनिकों में सनसनी फैल गई—"कामरेड कुइवशेव पल्टन के साथ कूच कर रहा है ।" और उनके हौसले दूने-चौगने हो गये ।

'अक्चा कुइमा' स्टेशन पर लाल सेना ने सफेद सेना पर सामने और बाईं बगल से एक साथ चोट की । सफेद सेना सामना किये बिना ही भाग निकली और 'पेरेवाल' से भी आगे भागती चली गई ।

अक्चा कुइमा और पेरेवाल के बीच में कुइवशेव तार के खम्भों पर मीलों के नम्बर देखता जा रहा था । दो सौ सात नम्बर के खम्भे के पास वह रेलवे लाइन से तीस कदम परे हट अपने घोड़े से उतर गया और सिर से टोपी उतार हाथ में ले ली । वहां रेत पर कोई भी चिन्ह दिखाई न दे रहे थे । परन्तु उसके साथ चलने वाले दूसरे अफसरों ने भी वैसा ही किया । गले में आंसू भर आने के कारण भर्राये हुये स्वर में कुइवशेव बोला—"कम्युनिस्ट पार्टी, उसके नेता लेनिन, स्टैलिन और लाल सेना की ओर से हम लोग कामरेड शामयान और उसके साथी छब्बीस कमिस्सारों के प्रति, जो दगाबाज ब्रिटिश साम्राज्यवादियों द्वारा इस स्थान पर गोली मार कर दफना दिये गये थे, हम आदर प्रकट करते हैं । हम प्रतिज्ञा करते हैं कि जब तक देश और जनता के शत्रुओं को समाप्त नहीं कर देंगे और बाकू को शोषकों के पंजे से स्वतंत्र कर अपने वीर साथियों की इस समाधि पर स्वतंत्र मानवता का हंसिये हथौड़े का लाल झण्डा न फहरा देंगे, आराम न लेंगे ।"

वीरों के इस स्मृतिस्थान को पूरी पल्टन ने सलामी दी और बाकू को स्वतंत्र करने की प्रतिज्ञा कर आगे बढ़ी ।

'लाल सेना के' आदिन में पहुंचने की घटना अरतैक कैसे भूल सकता था ? शत्रु पर लाल रिसाले के हमला करने का समय निश्चित हो चुका था ।

लाल पैदल फौज की स्थिति जानने और उन्हें इस हमले की सूचना देने के लिये अरतैक ने सवार भेज दिये थे। हमले का समय बिल-कुल समीप आ रहा था परन्तु पैदल सेना को सूचना देने गये सवार अभी तक न लौटे थे। अरतैक बहुत चिन्तित था। चारों ओर खूब घना कोहरा छाया हुआ था। कुइबशेव का अनुमान था कि सूचना देने गये सवार कोहरे में राह भूल गये हैं। पैदल सेना हमला करने के लिये अपने स्थान पर तैयार खड़ी सूचना और आज्ञा की प्रतीक्षा कर रही है। कुछ सवारों और अरतैक को साथ ले कुइबशेव ने स्वयम ही उस ओर जाने का निश्चय किया।

कुइबशेव के पल्टन के साथ होने पर अरतैक बिलकुल निर्भय रहता और उसका हौंसला बढ़ा रहता। परन्तु कुइबशेव की उचित रक्षा के उत्तर दायित्व का बोझ भी कम न था। इस गहरे धुन्द में, जब चार हाथ परे की चीज भी दिखाई न देती थी, और साथ केवल बीस ही सवार थे, पार्टी की युद्ध समिति के एक बहुत महत्व पूर्ण व्यक्ति को साथ ले जाना अरतैक को निरापद मालूम न हो रहा था उसने कुइबशेव से पीछे रहने के लिये अनुराध किया परन्तु कुइबशेव ने निरपेक्ष शान्ति से उत्तर दिया "तुम परवाह मत करो, मेरे साथ आओ।" अरतैक चुप रह गया।

कुइबशेव आगे आगे चल रहा था और शीघ्र ही उसने पैदल सेना की जगह का पता लगा लिया। कोहरा भी कुछ झीना होने लगा था। सफेद सेना के मोर्चे और उनकी फौलादी ट्रेन का इधर आना जाना भी सूझ पड़ने लगा था। कुइबशेवने हमला बोलने का स्थान और मार्ग निश्चय किया और पैदल सेना को यह सब कुछ समझा देने के लिये एक सवार उस ओर भेज दिया।

सफेद सेना की खोजी पार्टी ने अपने अफसरों को सूचना देदी थी कि लाल सेना चार मील के अन्तर पर पहुंच चुकी है। सफेद सेना के अफसरों को इस बात पर विश्वास ही न हुआ। उन्हें सन्देह हुआ कि खोजी पार्टी का नेता शरारत कर हमारी सेना को डराना चाहता है। इन अफसरों ने आज्ञा दी कि उसे गिरफ्तार कर लिया जाय। इस अफसर के गिरफ्तार किये जाने से पहले ही सफेद सेना पर लाल तोप खानों के गोले आ पड़े और लाल सेना ने हमला बोल दिया।

बहुत घमासान लड़ाई हुई। कुइबशेव पूरे मोर्चे पर बिजली की तरह

नाचता फिर रहा था। वह कभी रिसाले के पीछे दिखाई देता और कभी पैदल सेना के साथ। जहां भी वह अपनी सेना का हमला धीमा होता देखता, तुरत स्वयं पहुंच जाता। अरतेक भी कुइबशेव की ढाल बना, उसके शरीर पर आते वार को अपने ऊपर लेने के लिये आतुर, उसके साथ बना रहा।

सफेद सेना ने सूर्य छिपे तक सामना किया परन्तु अंधेरा होते होते उनके पांव उखड़ गये। लाल सेना के हाथ हजारों सफेद सैनिक कैद हो गये और लड़ाई का भी बहुत सा सामान उनके हाथ लगा।

अगले दिन सूर्योदय के समय क्रास्नोवोदस्क लाल सेना की आंखों के सामने झलमला रहा था और लाल सेना अपने लक्ष पर टूट पड़ने के लिये तैयार खड़ी थी।

क्रास्नोवोदस्क के दायें बायें दोनो ओर पहाड़ हैं। पीछे की ओर कास्पियन समुद्र राह रोके है। लाल सेना शहर पर केवल सामने से ही हमला कर सकती थी। और इस रास्ते में एक जबरदस्त किला मौजूद था। शहर के चारों ओर मोर्चे बने थे और लम्बे कांटे लगी तारों के घेरे बने हुए थे। मोर्चों पर दूर और नजदीक मार करने वाली तोपें कतारों में जड़ी हुई थीं। शहर के पीछे समुद्र में पन्द्रह जंगी जहाज बड़ी बड़ी तोपें लिये तैयार खड़े थे। सफेद सेना की सबसे बहादुर "शेर दिल" "चीता दल" "खूँखार दल" वगैरा पल्टनें और एक ब्रिटिश पल्टन भी क्रास्नोवोदस्क में डटी हुई थीं। सफेद सेना के सबसे बड़े सेनापति डनिकिन के जनरलों को विश्वास था कि क्रास्नोवोदस्क का किला अजेय है।

लाल सेना ने अपना हमला ६ फरवरी १९२० की रात में आरम्भ किया। आधी रात के समय राइफलों के फायर की पहली बौछार हुई और कुछ ही देर में भारी भारी तोपों के फायरों से पहाड़ गूँजने लगे।

सुबह होते ही बरफ पड़ने लगी। घाटी की हवा जले बारूद की चिरांध से भारी हो गई। आकाश बादलों से पटा हुआ था।

लाल सेना छोटी छोटी पहाड़ियों और कोहरे की आड़ लेकर तेजी से आगे बढ़ रही थी। सफेद सेना दोनों ओर की पहाड़ियों पर जमी हुई थी। नीचे लाल सेना की गति विधि उन्हें स्पष्ट दिखाई न दे रही थी पर वे आंखों

की तरह दनादन गोली-गोला बरसा रहे थे। लाल सेना इस मार पर भी न रुकी और उन्होंने सफेद सेना का पहला मोर्चा छीन ही लिया। उजेला हो जाने के कारण सफेद सेना के लिये लाल सेना पर निशाना लेना और आसान हो गया। गोला-गोली मूसलाधार बरसने लगे। समुद्र में खड़े पन्द्रह जहाज भी शहर के पीछे से लगातार गोले बरसा रहे थे। अब लाल सेना के लिए और आगे बढ़ना सम्भव न रहा।

लाल सेना का एक छोटा तोपखाना चट्टानों की आड़ ले एक पहाड़ी पर चढ़ गया और उसने जहाजों पर निशाना बाँध गोले बरसाने शुरु कर दिये। एक जहाज में आग लग गई। काजल से काले धुयें के गुबार आकाश की ओर उठने लगे। जहाज के गोला गोदाम में आग पहुंचने पर गोले फट फट कर आस पास के जहाजों पर और शहर में भी गिरने लगे। शत्रु के मोर्चों में गड़बड़ी और घबराहट फैल गई। अवसर देख लाल सेना की पैदल पल्टन ने शहर पर हल्ला बोल दिया।

अरतैक ने अपने रिसाले को सफेद सेना के एक बड़े मोर्चे पर हमला करने का हुक्म दिया। सवार हाथों में नंगी तलवारें लिये बाजों के झुण्ड की तरह झपट पड़े। अरतैक रिसाले के बीचों-बीच स्वयं हमले का नेतृत्व कर रहा था। एक जहाज ने इस रिसाले पर छर्रे भरे हुए गोले बरसाने शुरु किए। एक गोला अरतैक के बिलकुल सामने आकर फटा। गोले के धक्के से अरतैक का घोड़ा पीछे की ओर धसक गया परन्तु अरतैक ने उसे सम्भाल कर एड़ी लगाई और फिर आगे बढ़ाया। दूसरा गोला फटा और लोहे का एक बड़ा टुकड़ा घोड़े के सीने में धस गया। घोड़ा गिर पड़ा और अरतैक भी दूर जा पड़ा।

तिशेंको समीप ही था। वह तुरन्त अपने घोड़े से कूद पड़ा और अरतैक की बाँह में बाँह दे उसे खड़ा करने की कोशिश करने लगा। वह बार बार अरतैक का नाम लेकर पुकार रहा था परन्तु अरतैक सुन नहीं रहा था। उसका चेहरा पीला पड़ गया था।

"अरतैक उठो, देखो हमने मोर्चा ले लिया"—तिशेंको, ऊँचे स्वर में चिल्लाया।

"हूँ" करके अरतैक ने आँखें खोलने की चेष्टा की। उसकी आँखें पथराई हुई थीं, वह कुछ देख न पाया। उसकी गर्दन फिर झुक गई।

इतने में "हुर्रा हुर्रा"—लाल सेना का गगन भेदी विजय का नारा गूँज उठा। अरतैक की आँखें खुल गईं परन्तु अब भी वे पथराई हुई थीं।

तिशोको तुम हो ?"—अरतैक ने बहुत धीमे स्वर में पूछा।

"हाँ, अरतैक मैं हूँ हम जीत गये।"—उत्साह से ऊँचे स्वर में तिशोको ने उत्तर दिया। अरतैक अपनी गर्दन न उठा सका। तिशोको उसे अपनी बाँहों में सम्भाले था। अरतैक के सवार तीरों की तेजी से झपटते हुए उसके समीप से निकल आगे बढ़ रहे थे, चारों ओर शत्रुओं की लाशें पड़ी थीं। अरतैक के चेहरे पर जीवन की हल्की छाया झलक आई थी। उसकी आँखें आधी खुल गई थीं।

दोपहर बीत गई। हल्की हवा ने बादलों को तितर बितर कर दिया। वर्षा से भीगे भीगे सूर्य की किरणें शहर पर फैलने लगीं। किरणों से चम चमाते समुद्र की सतह पर सफेद सेना के भागते हुए जहाज बहुत दूरी पर धब्बे जैसे दिखाई दे रहे थे। इन जहाजों से बरसे आखिरी गोलों में से एक गोला स्टेशन के समीप बने पैट्रोल के गोदाम पर पड़ गया था। गोदाम में आग लग गई थी और काजल का एक विस्तार धरती से आकाश तक फैल रहा था। इस काले पर्दे पर शोषितों की विजय का लाल झण्डा नवजीवन के दीपक की शिखा की तरह झलमल कर रहा था।

तिशोको की बाहों में सम्भला हुआ जख्मी अरतैक अधमुँदी आँखों से आशा की इस लाल प्रकाश शिखा को देख रहा था। इस प्रकाश से उसकी कल्पना में कास्पियन समुद्र से लेकर आमू नदी और तेजेन तक का प्रदेश जगमगा उठा। उसके बीते सम्पूर्ण जीवन के दृश्य प्रकाशित हो उठे—अपनी जनता के लिये स्वतंत्रता से जी सकने के अधिकार के संघर्ष का मार्ग उद्भासित हो उठा। जीवन की भूलों और पश्चात्ताप की छाया, विश्वस्त मित्रों के साथ मिलकर जीवन की स्वतंत्रता के लिये लड़ कर सफलता पाने के प्रकाश में मिट गई......।
